

## अथ सुआ-खंड ॥ ५ ॥

पदुभावति तहँ खेल दुलारी । सुआ मँदिर महँ देख मँजारी ॥  
 कहेसि चलउँ जउ लहि तन पाँखा । जिउ लैइ उडा ताकि बन-ढाँखा ॥  
 जाइ परा बन-खँड जिउ लीन्हे । मिले पंखि बहु आदर कीन्हे ॥  
 आनि घरे आगइ सब साखा । भुगुति न भेटइ जउ लहि राखा ॥  
 ८ पाई भुगुति सुकृत्त मन भण्ड । अहा जो दुख विसरि सब गण्ड ॥  
 अइ गोसाईं तूँ अइस विधाता । जावँत जिउ सब कर मख-दाता ॥  
 पाहन महे न पतंग विसारा । जहँ तौहि सवँर देहि तूँ चारा ॥

तउ लहि सोग विछोह कर भोजन परा न पेट ।

पुनि विसरा भा सवँरना जनु सपने मइ भेट ॥ ६८ ॥

पदुभावति पहेँ आइ भँडारी । कहेसि मँदिर महेँ परी मँजारी ॥  
 १० सुआ जो उतर देत जहा पूँछा । उडि गा पिँजर न धोलइ छूँछा ॥  
 रानी मुना छलि जिउ गण्ड । जनु निसि परी असत दिन भण्ड ॥  
 गहनहि गही चाँद कइ करा । आँसु गगन जनु नखतन्ह भरा ॥  
 टूट पालि सरवर बहि लागे । कवँल धूड मधुकर उडि मागे ।  
 अइ विधि आँसु नखत होइ चुए । गगन छाँडि सरवर मरि उए ।  
 १५ छिद्रि चुरे मोतिन्ह कइ माला । अब संकेत भोधा चहुँ पाला ॥

उडि यह सुभटा कहै बसा खोजहु सखि सो पासु ।

दहुँ हइ धरती की सरग पवन न पावइ तासु ॥ ६९ ॥

चहँ पास समुभावहिँ सखी । कहाँ सौ अय पाइअ गा पँखी ॥  
 जउ लहि पिंजर अहा परेवा । रहा बाँद कीन्हैसि निति सेवा ॥  
 तेहु बँद हुति छूटइ पावा । पुनि फिरि बंद होइ कित आवा ॥ 20  
 वह उडान-फर तहिअइ खाए । जब भा पंखि पाँख तन पाए ॥  
 पिंजर जेहि क सउँपि तेहि गण्ड । जो जा कर सो ता कर भण्ड ॥  
 दस बाटइँ जेहि पिंजर माहाँ । कइसइ बाँच मँजारी पाहाँ ॥  
 ग्रहि धरती अस केतन लीले । तस पेट गाढ बहुरि नहिँ ढीले ॥

जहाँ न राति न दिवस हइ जहाँ न पवन न पानि ।

तेहि वन होइ सुअटा वसा को रे मिलावइ आनि ॥ ७० ॥

सुअइ तहाँ दिन दस कलि काटी । आइ विआध ढुका लैइ टाटी ॥ 25  
 पइग पइग भुईँ चाँपत आवा । पंखिन्ह देखि हिअइ डर खावा ॥  
 देखहु किछु अचरज अनभला । तरिवर एक आवत हइ चला ॥  
 ग्रहि वन रहत गई हम आऊ । तरिवर चलत न देखा काऊ ॥  
 आजु जो तरिवर चल भल नाहीँ । आवहु ग्रहि वन छाँडि पराहीं ॥  
 वेइ तउ उडे अउरु वन ताका । पंडित सुआ भूलि मन थाका ॥ 30  
 साखा देखि राजु जनु पावा । बइठ निचिंत चला वह आवा ॥

पाँच वान कर खोँचा लासा भरे सौ पाँच ।

पाँख भरे तन अरुभा कित मारइ विनु बाँच ॥ ७१ ॥

बँद भा सुआ करत सुख केली । चूरि पाँख धरि भेलैसि डेली ॥  
 तहवाँ पंखि बहुत खरभरहीँ । आपु आपु महँ रोदन करहीँ ॥ 35  
 विख-दाना कित देइ अँगूरा । जेहि भा मरन डहन धर चूरा ॥  
 जउँ न होत चारा कइ आसा । कित चिरि-हार ढुकत लैइ लासा ॥  
 ग्रइ विख-चारइ सब बुधि ठगी । अउ भा काल हाथ लैइ लगी ॥  
 ग्रहि झूठी माया मन भूला । चूरइ पाँख जइस तन फूला ॥  
 यह मन कठिन मरइ नहिँ मारा । जार न देखु देखु पइ चारा ॥

हम तउ बुद्धि गवाई विख-चारा अस खाइ ।

- 40 तू सुअटा पंडित हता तू कित फाँदा आइ ॥ ७२ ॥  
 मुअइ कहा हम-हूँ अस भूले । टूट हिँडोल गरब जेहि भूले ॥  
 केला के बन लीन्ह बसेरा । परा साथ तहँ बइरिन्ह केरा ॥  
 मुख कुरआर फरहुरी खाना । विख भा जवहिँ बिआध तुलाना ॥  
 काहें क भोग-भिरिख अस फरा । आइ लाइ पंखिन्ह कहैं घरा ॥  
 45 होइ निचिंत बइठे तेहि आठा । तब जाना खोँचा हिण गाडा ॥  
 मुख निचिंत जोरत धन करना । यह न चिंत आगइ हइ मरना ॥  
 भूले हम-हूँ गरब तेहि माहों । सो बिसरा पावा जेहि पाहों ॥

चरत न खुरक कीन्ह जव तब रे चरा मुख सोइ ।

अब जो फाँद परा गिउ तब रोए का होइ ॥ ७३ ॥

- मुनि कह उतर आँसु सब पोँछे । कउनु पंख बाँधे बुधि ओछे ॥  
 50 पंखिन्ह जउं बुधि होइ उँजिआरी । पदा सुआ कित घरइ मँजारी ॥  
 कित तीतर बन जीम उपेला । सो कित हँकारि फाँद गिउ मेला ॥  
 ता दिन व्याध भण्ड जिय-लेवा । उठे पाँख भा नाउँ परेवा ॥  
 मद बिआधि विसिना संग खांधू । समइ सुगुति न सम बिआंधू ॥  
 हमहिँ लोभ बह मेला चारा । हमहिँ गरब बह चाहइ मारा ॥  
 55 हम निचिंत बह आउ छपाना । कउनु बिआधहि दोस अपाना ॥  
 सो अउगुन कित कीजिए जिय दीजिअ जेहि काज ।  
 अब कहना किछु नाहीँ मसटि भली पंखि-राज ॥ ७४ ॥

रति सुआ छंद ॥ १ ॥

अथ राजा-रतन-सेन-जनम खंड ॥ ६ ॥

चितर-सेन चितउर गढ राजा । कइ गढ कोट चितर जेइ साजा ॥  
तेहि कुल रतन-सेन उँजिआरा । धनि जननी जनमा अस वारा ॥  
पंडित गुनि सामुदरिक देखहि । देखि रूप अउ लगन विसेखहि ॥  
रतन-सेन बहु नग अउतरा । रतन जोति मनि माँथइ घरा ॥  
पादिक-पदारथ लिखी सो जोरी । चाँद सुरुज जस होइ अँजोरी ॥ 5  
जस मालति कहँ भवँर विओगी । तस ओहि लागि होइ यह जोगी ॥  
सिंघल-दीप जाइ वह पावइ । सिद्ध होइ चितउर लेइ आवइ ॥

भोज भोग जस माना विकरम साका कीन्ह ।

पराखि सो रतन पारखी सबइ लखन लिखि दीन्ह ॥ ७५ ॥

इति राजा-रतन-सेन-जनम खंड ॥ ६ ॥

---



## अथ वनिजारा खंड ॥ ७ ॥

चितउर गड कर एक वनिजारा । सिंघल-दीप चला बरपारा ॥  
 बाम्हन हत एक नसट भिखारी । सो पुनि चला चलत बरपारी ॥  
 रिनि काह कर लीन्हैसि कादी । मकु तहँ गए होइ किछु बादी ॥  
 मारग कठिन बहुत दुख मग्रऊ । नोंधि समुदर दीप ओहि गग्रऊ ॥  
 १० देखि हाट किछु घमु न थोरा । सबइ बहुत किछु देखु न थोरा ॥  
 पर सुठि जँच वनिज तहँ केरा । धनी पाउ निधनी मुख हेरा ॥  
 लाख करोरिन्ह बसतु बिकाही । सहसन्ह केरि न कोइ ओनाही ॥  
 सब-ही लीन्ह बिसाहना अउ घर कीन्ह पहोर ।

बाम्हन तहवाँ लेइ का गोंठि सोंठि सुठि थोर ॥ ७६ ॥

भुर-इ ठाड कोहै क हउं आवा । वनिज न मिला रहा पछिवावा ॥  
 १० लाम जानि आप्रउं प्रहि हाटा । मूर गवाँइ चलेउं तेहि बाटा ॥  
 का मई मरन सिखाओन आप्रउं मरइ मीबु हवि लिखी ॥  
 अपने चलत सो कीन्ह न देख मूर मइ हानी ॥  
 का मई जेहि बर-कइ पूजी ॥  
 जेहि बर-कइ बरू ॥

तब-हिँ बिआध सुआ लैइ आवा । कंचन वरन अनूप सोहावा ॥  
 बेँचइ लाग हाटि लैइ ओही । मोल रतन मानिक जेहि होही ॥  
 सुअ को पूँछइ पतँग मदारे । चलन देख आछइ मन मारे ॥  
 बाम्हन आइ सुआ सउँ पूँछा । दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूँछा ॥ 20  
 कहु परवते जौ गुन तोहि पाहाँ । गुन न छपाइअ हिरदइ माहाँ ॥  
 हम तुम्ह जाति बराम्हन दोऊ । जाति-हि जाति पूँछ सव कोऊ ॥  
 पंडित हहु तो सुनावहु वेदू । विनु पूँछे पाइअ नहिँ भेदू ॥  
 हउँ बाम्हन अउ पंडित कहु आपन गुन सोइ ।

पढे के आगे जो पढइ दून लाभ तेहि होइ ॥ ७८ ॥

तब गुन मोहिँ अहा हो देवा । जब पिंजर हुति छूट परेवा ॥ 25  
 अब गुन कउनु जौ बँद जजमाना । घालि मँजूसा बेँचइ आना ॥  
 पंडित होइ सौ हाट न चढा । चहउँ विकान भूलि गा पढा ॥  
 दुइ मारग देखउँ ग्रहि हाटा । दइउ चलावइ दहुँ केहि चाटा ॥  
 रोअत रक्त भण्ड मुख राता । तन भा पिअर कहउँ का वाता ॥  
 राते सावँ कंठ दुइ गीवा । तहँ दुइ फाँद डरउँ सुठि जीवा ॥ 30  
 अब हउँ कंठ फाँद गिउ चीन्हा । दहुँ गिउ फाँद चाह का कीन्हा ॥

पढि गुनि देखा बहुत मई हइ आगे डरु सोइ ।

धुंध जगत सव जानि कह भूलि रहा बुधि खोइ ॥ ७९ ॥

सुनि बाम्हन विनवा चिरि-हारू । करु पंखिन्ह कहँ मया न मारू ॥  
 कित रे निठुर जिउ बधसि परावा । हतिआ केर न तोहि डरु आवा ॥  
 कहसि पंखि-खाधुक मानावा । निठुर तेइ जौ पर-मँस खावा ॥ 35  
 आवहि रोइ जाहि कह रोना । तब-हुँ न तजहि भोग सुख सोना ॥  
 अउ जानहि तन होइहि नाख । पोखहि माँस पराए माँख ॥  
 जउँ न होत अस पर-मँस खाधू । कित पंखिन्ह कहँ धरत बिआधू ॥  
 जौ रे बिआध पंखिन्ह निति धरई । सो बेँचत मन लोभ न करई ॥

बाम्हन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ ।

40 मिला आइ साथिन्ह कहँ मा चितउर के पंथ ॥ ८० ॥

तब लागि चितर-सेन सिउ साजा । रतन-सेन चितउर मा राजा ॥

आइ बात तेहि आगे चली । राजा बनिज आग्र सिंघली ॥

हहिँ गज-मोँति मरी सब सीपी । अउरु बसतु बहु सिंघल-दीपी ॥

बाम्हन एक सुआ लैइ आवा । कंचन बरन अनूप सौहावा ॥

45 राते सावँ कंठ दुइ कौंठा । राते डहिन लिखा सब पाठा ॥

अउ दुइ नयन सौहावन रावा । राते ठोर अमीँ-रस बावा ॥

मसतक टीका कौंध जनेऊ । कवि बिआस पंडित सहदेऊ ॥

बोलि अरय सोँ बोलई सुनत सीस पइ डोल ।

राज-मंदिर महुँ चाहिअ अस यह सुआ अमोल ॥ ८१ ॥

मई रजाप्रसु जन दउराए । बाम्हन सुआ बेगि लैइ आए ॥

50 बिपर असीसि विनति अउधारा । सुआ जीउ नहिँ करउँ निरास ॥

पइ यह पेट मअउ विसुआसी । जैइ सब नाअ तपा सनिआसी ॥

ढासन सेज जहाँ जेहि नाहीँ । भुईँ परि रहइ लाइ गिउ बाहीँ ॥

आँध रहइ जो देख न नयना । गूँग रहइ मुख आउ न बयना ॥

बाहिर रहइ जो सवन न सुना । पइ यह पेट न रह निरगुना ॥

55 पइ कइ फेरा निति बहु दोखी । बारहि धार फिरइ न सँतोखी ॥

सो मोहिँ लेइ मंगावई लावइ भूख पिआस ।

जउँ न होत अस बहरी कैहु काहू कइ आस ॥ ८२ ॥

सुअइ असीस दीन्ह बढ साजू । बढ परतापु अखंडित राजू ॥

मागवंत विधि बढ अउतारा । जहाँ माग तहँ रूप जोहारा ॥

कोइ कैहु पास आस कइ गवैना । जो निरास दिद आसन मवैना ॥

60 कोइ बिनु पूछे बोलि जौ बोला । होइ बोलि मोँटी के मोला ॥

पाँडे गुनि जानि बेद मति मेऊ । पूछे बात कहइ सहदेऊ ॥

गुनी न कोई आपु सराहा । जो सौ विकाइ कहा पइ चाहा ॥

जउ लहि गुन परगट नहि होई । तउ लहि मरम न जानइ कोई ॥

चतुर-वेद हउँ पंडित हीरा-मनि मोहि नाउँ ।

पदुमावति सउँ मई रवउँ सेव करउँ तेहि ठाउँ ॥ ८३ ॥

रतन-सेन हीरा-मनि चीन्हा । लाख टका वाम्हन कहँ दीन्हा ॥ 65

विपर असिस देइ कीन्ह पयाना । सुआ सौ राज-मंदिर महुँ आना ॥

बरनउँ कहा सुआ कइ भाखा । धनि सौ नाउँ हीरा-मनि राखा ॥

जो बोलइ राजा मुख जोआ । जनउँ मोति हिअ हार परोआ ॥

जउँ बोलइ सब मानिक मूँगा । नाहि त मवन बाँधि रह गूँगा ॥

मनहुँ मारि मुख अंत्रित मेला । गुरु होइ आपु कीन्ह जग चेला ॥ 70

सुरुज चाँद कइ कथा जो कहा । पेस क कहनि लाइ चित गहा ॥

जो जो सुनइ धुनइ सिर राजा पिरिति अगाहि ।

अस गुनवंत नही भल (सुअटा) वाउर करिहइ काहि ॥ ८४ ॥

इति घनिजारा खंड ॥ ७ ॥

### अथ नागमती-सुआ-संवाद खंड ॥ ८ ॥

दिन दस पाँच तहाँ जो भए । राजां कतहुँ अहेरइ गए ॥  
 नाग-मती रुपवंती रानी । सब रनिवास पाट परधानी ॥  
 फइ सिंगार कर दरपन लीन्हा । दरसन देखि गरब जिउ कीन्हा ॥  
 हँसत सुआ पहुँ आई सो नारी । दीन्ह कसउटी अउपन-वारी ॥  
 ३ मलहि सुआ अउ प्यारे नाहों । मोरहि रूप कोई जग माहों ॥  
 सुआ भानि कसि कहु कस सोना । सिंघल-दीप तोर कस लोना ॥  
 कउनु दिसिटि तोरी रूप-मनी । दहुँ हउँ लोनि कि बेइ पदुमनी ॥  
 जउँ न कहसि सव सुअटा तोहि राजा फइ आन ।

हइ कोई ग्रहि जगत महँ मोरहि रूप समान ॥ ८५ ॥

सवैरे रूप पदुमावति केरा । हँसा सुआ रानी मुख हेरा ॥  
 10 जेहि सरवर महँ हंस न आवा । बकुली तेहि जल हंस कहावा ॥  
 दई कीन्ह अस जगत अनूपा । एक एक तई आगरि रूपा ॥  
 फइ मन गरब न छाजा काह । चाँद घटा अउ लागेउ राह ॥  
 लोन बिलोन तहाँ को कहा । सोनी सोइ फँत जेहि चहा ॥  
 का पूछहु सिंघल फइ नारी । दिनहि न पूजइ निसि अंधिआरी ॥  
 15 पुहुप सुगंध सो तिन्ह फइ कापा । जहाँ माँथ का भरनउँ पाया ॥  
 गदीं सो सोनइ सोँघइ भरीं सो रूपइ माग ।  
 सुनव रुखि भइ रानी दिअइ लोन अस लाग ॥ ८६ ॥

जउं यह सुआ मंदिर महँ अहई । कव-हुँ होइ राजा सउं कहई ॥  
 सुनि राजा पुनि होइ विओगी । छाँडइ राज चलइ होइ जोगी ॥  
 बिख राखे नहिँ होत अँगूरु । सबद न देइ विरह तमचूरु ॥  
 धाइ धामिनी बेगि हँकारी । ओहि सउं पा हिअ रिस न सँभारी ॥ 20  
 देखु सुआ यह हइ मँद-चाला । भण्ड न ता कर जा कर पाला ॥  
 मुख कह आन पेट बस आना । तेहि अउगुन दस हाटि विकाना ॥  
 पंखि न राखिअ होइ कु-भाखी । लैइ तहँ मारु जहाँ नहिँ साखी ॥  
 जेहि दिन कहँ हउं निति डरउं रहनि छपावउं घर ।

लैइ चह दीन्ह कवल कहँ मो कहँ होइ मँजूर ॥ ८७ ॥  
 धाइ सुआ लैइ मारइ गई । समुझि गिआन हिअइ मति भई ॥ 25  
 सुआ सो राजा कर विसरामी । मारि न जाइ चहइ जेहि सामी ॥  
 यह पंडित खंडित पइ रागू । दोस ताहि जेहि स्रभ न आगू ॥  
 जो तिआई के काज न जाना । परइ धोख पाछे पछिताना ॥  
 नागमती नागिनि-बुधि ताऊ । सुआ मँजूर होइ नहिँ काऊ ॥  
 जो न कत कइ आग्रसु माहाँ । कउनु भरोस नारि कइ बाहाँ ॥ 30  
 मकु यह खोज होइ निसि आई । तुरइ रोग हरि माँथइ जाई ॥  
 दुइ सो छपाए ना छपहिँ एक हतिआ एक पापु ।

अंत-हु करहिँ विनास पुनि सइ साखी देइ आपु ॥ ८८ ॥  
 राखा सुआ धाइ मति साजा । भण्ड खोज निसि आण्ड राजा ॥  
 रानी उतर मान सउं दीन्हा । पंडित सुआ मँजारी लीन्हा ॥  
 मँहँ पूँछी सिंघल पदुमिनी । उतर दीन्ह तुम्ह को नागिनी ॥ 35  
 वह जस दिन तुम्ह निसि अँधिआरी । जहाँ बसंत करील कौ बारी ॥  
 का तौर पुरुख रहनि कर राऊ । उलू न जान दिवस कर भाऊ ॥  
 का वह पंखि कोटि मँहँ गोटी । अस बडि बोलि जीभ कह छोटी ॥  
 रुहिर चुअइ जो जो कह बाता । भोजन बिनु भोजन मुख राता ॥

माँथइ नहिँ बइसारिअ सुठि सुआ जउँ लोन ।

40 कान टूट जेहि आभरन का लोइ करम सो सोन ॥ ८६ ॥

राजइ सुनि बिओग तस माना । जइस हिअइ बिकरम पछिताना ॥

बह हीरा-मनि पंडित सुआ । जो बोलइ मुख अंत्रित चूआ ॥

पंडित दुख-खंडित निरदोखा । पंडित हुते परइ नहिँ धोखा ॥

पंडित फेरि जीम मुख सुधी । पंडित बात कहइ न निबूधी ॥

45 पंडित सु-मति देइ पैय लावा । जो कु-पंथ तेहि पंडित न भावा ॥

पंडित राते बदन सरेखा । जो हतिआर रुहिर सो देखा ॥

की परान घट आनहु मती । की चलि होहु सुआ संग सती ॥

जनि जानहु कइ अउगुन मंदिर होइ सुख-राज ।

आग्रमु मेँटि कंत कर का कर भा न अकाज ॥ ८७ ॥

चाँद जइस धनि उँजिअरि अही । भा पिउ रोस गहन अस गही ॥

50 परम सौहाग निवाहि न पारी । भा सौहाग सेवा जव हारी ॥

प्रवनिक दोस विरचि पिउ रुठा । जो पिउ आपन कहइ सो भूठा ॥

अइसइ गरब न भूलइ कोई । जेहि डर बहुत पिआरी सोई ॥

रानी आइ धाइ के पास । सुआ सुआ सेवैरि कइ आसा ॥

परा पिरिति कंचन मँह सीसा । विथरि न मिलइ सावँ पइ दीसा ॥

55 कहाँ सौनार पास जेहि जाउँ । देइ सौहाग करइ प्रक ठाऊँ ॥

मँह पिउ पिरिति भरोसइ गरब कीन्ह जिअ माँह ।

तेहि रिस हउँ पाहेली रुसैउ नागरि नाँह ॥ ८८ ॥

उतर धाइ तय दीन्ह रिसाई । रिस आपु-हि बुधि अउराहि खाई ॥

मँह जौ कहा रिस करहु न घाला । को न मगुउ ग्रहि रिस कर घाला ॥

तँ रिस मरी न देखेसि आगू । रिस मँह का कहँ मगुउ सौहागू ॥

60 बिरस विरोध रिस-हि पइ होई । रिस मारइ तेहि मार न कोई ॥

जेहि रिस तेहि रस जोगि न जाई । विनु रस हरदि होइ पिआरई ॥

जेहि कइ रिस मरिअइ रस जीजइ । सो रस तजि रिस कोह न कीजइ ॥

कंत सौहाग न पाइअ साधा । पावइ सोइ जो ओहि चित बाँधा ॥

रहइ जो पिउ के आग्रसु अउ वरतइ होइ खीन ।

सोइ चाँद अस निरमर जरम न होइ मलीन ॥ ६२ ॥

जुआ-हारि समुभी मन रानी । सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी ॥ 65

मानु मती हउँ गरव न कीन्हा । कंत तुम्हार मरम मँइ लीन्हा ॥

सेवा करइ जो बरह-उ मासा । प्रतनिक अउगुन करहु विनासा ॥

जउँ तुम्ह देइ नाइ कइ गीवा । छाँडहु नहिँ विनु मारे जीवा ॥

मिलत-हि मँह जनु अहउ निरारे । तुम्ह सउँ अहहि अँदेस पिआरे ॥

मँइ जाना तुम्ह मो-हीँ माहाँ । देखउँ ताकि त सब हिअ माहाँ ॥ 70

का रानी का चेरी कोई । जा कहँ मया करहु भल सोई ॥

तुम्ह सउँ कोइ न जीता हारे वररुचि भोज ।

पहिलइ आपु जो खोअई करइ तुम्हारा खोज ॥ ६३ ॥



## अथ राजा-सुआ-संवाद खंड ॥ ९ ॥

राजइ कहा सच कहू ध्या । विलु सत कस जस सेवैरि भूआ ॥  
 होइ मुख राव सच कह पावा । जहाँ सच तहँ धरम सँघावा ॥  
 बाँधी सिमिटि अहइ सत केरी । लक्ष्मी आहि सच कह चेरी ॥  
 सच जहाँ साहस सिधि पावा । अउ सत-वादी पुरुख कहावा ॥  
 ४ सत कहै सती सँवारइ सरा । आगि लाइ चहुँ दिसि सत जरा ॥  
 दुइ जग तरा सच जेइ राखा । अउरु पिआर दइहि सत-भाखा ॥  
 सो सत छाँड जो धरम विनासा । का मति हिअइ कीन्ह सत-नासा ॥

तुम्ह सयान अउ पंडित अ-सत न माखहु काउ ।

सच कहहु तुम्ह मो सउँ दहूँ का कर अनियाउ ॥ ६४ ॥

सच कहत राजा त्रिउ जाऊ । पइ मुख अ-सत न माखउँ काऊ ॥  
 १० इउँ सत लैइ निसरा ग्रहि पवै । सिंघल-दीप राज घर हवै ॥  
 पदुमावति राजा कह बारी । पदुम-गंध ससि विधि अउतारी ॥  
 ससि-मुख अंग मलय-गिरि रानी । कनक सुगंध दुआदस बानी ॥  
 हहि पदुमिनि जो सिंघल माहौ । सुगंध सुरूप सो वेहि कह छाहौ ॥  
 हीरा-मनि इउँ वेहि क परेवा । फौटा फूट करत वेहि सेवा ॥  
 १५ अउ पापउँ मानुस कह भाखा । नाहि त पंखि मूठि भर पाँखा ॥

जउ लहि जियउँ राति दिन सवैरि मरउँ ओहि नाउँ ।

सुख राठा तन हरिअर दुहै जगत पइ जाउँ ॥ ६५ ॥

हीरा-मनि जो कवँल बखाना । सुनि राजा होइ भवँर भुलाना ॥  
 आगे आउ पंखि उँजिआरे । कहे सौ दीप पनिग के मारे ॥  
 रहा जो कनक सुवासिक ठाऊँ । कस न होइ हीरा-मनि नाऊँ ॥  
 को राजा कस दीप उतंगू । जेहि रे सुनत मन भण्ड पतंगू ॥ 20  
 सुनि सौ समुद चखु भण्ड किलकिला । कवँलहि चहउँ भवँर होइ मिला ॥  
 कहु सुगंध धनि कस निरमरी । दहुँ अलि संग कि अव-हीँ करी ॥  
 अउ कहु तहँ जो पदुमिनि लोनी । घर घर सब के होहिँ जस होनी ॥  
 सबइ बखान तहाँ कर कहत सौ मो सउँ आउ ।

चहउँ दीप वह देखा सुनत उठा तस चाउ ॥ ६६ ॥  
 का राजा हउँ वरनउँ तास । सिंघल-दीप आहि कविलास ॥ 25  
 जो गा तहाँ भुलानेउ सोई । गइ जुग वीति न बहुरा कोई ॥  
 घर घर पदुमिनि छतिस-उ जाती । सदा वसंत दिवस अउ राती ॥  
 जेहि जेहि वरन फूल फुलवारी । तेहि तेहि वरन सु-गंध सौ नारी ॥  
 गंधरव-सेन तहाँ बड राजा । अछरिन्ह माँह इंदर विधि साजा ॥  
 सो पदुमावति ता करि वारी । अउ सब दीप माँह उँजिआरी ॥ 30  
 चहूँ खंड के वर जो ओनाहीँ । गरवहि राजा बोलइ नाहीँ ॥

उअत सर जस देखी चाँद छपइ तेहि धूप ।

अइसइ सबइ जाहिँ छपि पदुमावति के रूप ॥ ६७ ॥  
 सुनि रवि नाउँ रतन भा राता । पंडित फेरि इहइ कहु वाता ॥  
 तुई सुरंग मूरति वह कही । चित महँ लागि चितर होइ रही ॥  
 जनु होइ सुरुज आइ मन वसी । सब घट पूरि हिअइ परगसी ॥ 35  
 अब हउँ सुरुज चाँद वह छाया । जल विनु मीन रक्त विनु काया ॥  
 किरिनि करा भा पेम अँकूरु । जउँ ससि सरग मिलउँ होइ सरू ॥  
 सहस-उ करा रूप मन भूला । जहँ जहँ दिसिदि कवँल जनु फूला ॥  
 तहाँ भवँर जिउ कवँला गंधी । भइ ससि राहु केरि रिनि-बंधी ॥

तीनि लोक चउदह खंड सचइ परइ मोहिँ बूझि ।

40 पेम छाँडि किल्लु अउरुन (लोना) जो देखउँ मन बूझि ॥ ६८ ॥

पेम सुनत मन भूलु न राजा । कठिन पेम सिर देइ तो छाजा ॥

पेम फाँद जउँ परइ न छूटा । जीउ दीन्ह बहु फाँद न दूटा ॥

गिरिगिट छंद घरइ दुख तेढा । खन खन रात पीत खन सेढा ॥

जानि पुछारि जो मा बन-बासी । रोवँ रोवँ परे फाँद नग-बासी ॥

45 पाँखन्ह फिरि फिरि परा सो फाँद । उडि न सकइ अरुमइ भइ बाँद ॥

मुष्टउँ मुष्टउँ अह-निसि चिललाई । ओहि रोस नागन्ह धरि खाई ॥

पाँडक गुआ कंठ वह चीन्हा । जेहि गिउ परा चाहि जिउ दीन्हा ॥

बीतर गिउ जो फाँद हइ निति-हि पुकारइ दोख ।

सौ कित हँकारि फाँद गिउ (मेलइ) कित मारे होइ मोख ॥ ६९ ॥

राजइ लीन्ह ऊमि कइ सौंसा । अइस बोलि जनि बोलु निरासा ॥

50 भलेहि पेम हइ कठिन दुहेला । दुइ जग तरा पेम जेइ खेला ॥

बीतर दुख जो पेम भयु राखा । गंजन मरन सहइ जो चाखा ॥

जो नहिँ सीस पेम पँय लावा । सो पिरिपुमिँ मई फाँदे क आवा ॥

अप भई पेम फाँद सिर मैला । पाउँ न ठेलु राखु कइ चेला ॥

पेम-चार सो कहइ जो देखा । जेइ न देख का जान बिसेखा ॥

55 तब लागि दुख पिरितम नहिँ भँटा । मिला तो गाउ जनम दुख भँटा ॥

जस अनूप तुई देखी नख-सिख बरन सिँगार ।

हइ मोहिँ आस मिलइ कइ जउँ भैरवइ करतार ॥ १०० ॥

## अथ नखसिख खंड ॥ १० ॥

का सिँगार ओहि वरनउँ राजा । ओहि क सिँगार ओही पइ छाजा ॥  
 प्रथम-हि सीस कसतुरी केसा । बलि वासुकि को अउरु नरेसा ॥  
 भवँर केस वह मालति रानी । बिसहर लरहिँ लेहिँ अरधानी ॥  
 बेनी छोरि भारु जो वारा । सरग पतार होइ अंधिआरा ॥  
 कोवल कुटिल केस नग कारे । लहरइँ भरे भुअंग विसारे ॥ 5  
 बेधे जानु मलय-गिरि वासा । सीस चढे लोटहिँ चहुँ पासा ॥  
 घुँघुर-वार अलकइँ बिख-भरी । सँकरइँ पेम चहहिँ गिष्ट्र परी ॥

अस फँद-वारि केस वैइ (राजा) परा सीस गिष्ट्र फाँद ।

असट-उ कूरी नाग सव उरभ केस के बाँद ॥ १०१ ॥  
 वरनउँ माँग सीस उपराहीँ । सेँदुर अव-हिँ चढा जेहि नाहीँ ॥  
 विनु सेँदुर अस जानउँ दिआ । उंजिअर पंथ रइनि महुँ किआ ॥ 10  
 कंचन-रेख कसउटी कसी । जनु घन महुँ दाविँनि परगसी ॥  
 सुरुज किरन जनु गगन विसेखी । जहुँना माँभ सरसुती देखी ॥  
 खाँडइँ धार रुहिर जनु भरा । करवत लेइ बेनी पर धरा ॥  
 तेहि पर पूरि धरी जो मोती । जहुँना माँभ गाँग कइ सोती ॥  
 करवत तपा लीन्ह होइ चूरु । मकु सौ रुहिर लेइ देइ सेँदूरु ॥ 15

कनक दुआदस बानि होइ चह सोहाग वह माँग ।

सेवा करहिँ नखत अउ (तरई) उए गगन जस गाँग ॥ १०२ ॥

कहँ लिलाट दुइज कह जोती । दुइजहिँ जोति कहाँ जग ओती ॥  
 सहस-किरात जो मुरुज दिपाए । देखि लिलाट सौऊ छपि जाए ॥  
 का सरि वरनक दिष्टउँ मयंकू । चाँद कलंकी यह निकलंकू ॥  
 20 ओहि चाँदहि पुनि राहु गरासा । यह बिनु राहु सदा परगासा ॥  
 तेहि लिलाट पर तिलक रईठा । दुइज पाट जानउँ घुष ढीठा ॥  
 कनक पाट जनु बईटै राजा । सवइ सिंगार अतर लैइ साजा ॥  
 ओहि आगइ धिर रहइ न कोऊ । दहूँ का कहँ अस जुरा सँजोऊ ॥  
 खरग धनुख चक धान अउ जग-भारन तेहि नाउँ ।

सुनि कह परामुखि कह(राजा) मो कहँ भए कु-ठाउँ ॥ १०३ ॥

25 मउँहइ सावँ धनुख जनु ताना । जा सउँ हेर मारु बिख वाना ॥  
 ओही धनुख ओहि मउँहहिँ बदा । फेइ हविआर काल अस गदा ॥  
 ओही धनुख किसुन पहुँ अहा । ओही धनुख राषउ कर गहा ॥  
 ओही धनुख राखीन संचारा । ओही धनुख कंसासुर मारा ॥  
 ओही धनुख बेधा हुत राह । मारा ओही सहस्तर-बाह ॥  
 30 ओही धनुख मई ता पहुँ चीन्हा । धानुक आपु घोम जग कीन्हा ॥  
 ओहि मउँहहिँ सरि कोइ न जीवा । अद्वरहँ छपीँ छपीँ गोपीवा ॥  
 मउँह धनुख धन धानुक दोसर सरि न कराइ ।

गगन धनुख जो उगवइ लाजइ सो छपि जाइ ॥ १०४ ॥

नयन भौंक सरि पूज न कोऊ । मान समुँद अस उलथहिँ दोऊ ॥  
 राते कवल करहिँ अलि भयो । धूमहिँ माति चहहिँ अपसवौ ॥  
 35 उठहिँ तुरंग लैहिँ नहिँ बागा । जानउँ उलथि गगन कहँ लागा ॥  
 पवन भ्रकोरहिँ देइ हिलोरा । सरग लाइ मुई लाइ बहोरा ॥  
 जग डोलइ डोलत नयनाहाँ । उलटि अठार चाह पल माहाँ ॥  
 जवहिँ किराहिँ गगन गहिँ पोरा । अस चेइ मउँह मँवर के जोरा ॥  
 समुँद हिलोर फाहिँ जनु मूले । खंजन सराहिँ मिरिग वन भूले ॥

सु-भरसमुँद अस नयन दुइ मानिक भरे तरंग ।

आवहिँ तीर फिरावहीँ काल भवँर तेहि संग ॥ १०५ ॥ 40

वरुनी का वरनउँ इमि वनी । साधी वान जानु दुहुँ अनी ॥

जुरी राम राओन कइ सहना । बीच समुँद भए दुइ नइना ॥

वारहिँ पार वनाउरि साधे । जा सउँ हेर लाग बिख-वाँधे ॥

उन्ह वानहिँ अस को को न मारा । वेधि रहा सगर-उ संसारा ॥

गगन नखत जस जाहिँ न गने । वैइ सव वान ओही के हने ॥ 45

धरती वान वेधि सव राखे । साखा ठाढ ओही सव साखे ॥

रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढे । सूतहिँ सूत वेध अस गाढे ॥

वरुनि वान अस उपनी वेधी रन वन-ढंख ।

सउजहिँ तन सव रोवाँ पंखिहिँ तन सव पंख ॥ १०६ ॥

नासिक खरग देउँ केहि जोगू । खरग खीन वह वदन सँजोगू ॥

नासिक देखि लजानेउ सूआ । सूक आइ बेसर होइ ऊआ ॥ 50

सुआ जो पिअर हिरा-मनि लाजा । अउरु भाउ का वरनउँ राजा ॥

सुआ सो नाक कठोर पँवारी । वह कोवँल तिल पुहुप सँवारी ॥

पुहुप सु-गंध करहिँ सव आसा । मकु हिरिकाइ लेइ हम वासा ॥

अधर दसन पइ नासिक सोभा । दारिउँ देखि सुआ मन लोभा ॥

खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीँ । दहुँ वह रस को पाउ को नाहीँ ॥ 55

देखि अमीँ-रस अधरन्ह भण्ड नासिका कीर ।

पवन वास पहुँचावई असरम छाँड न तीर ॥ १०७ ॥

अधर सुरंग अमीँ-रस भरे । विंव सुरंग लाजि वन फरे ॥

फूल दुपहरी जानउँ राता । फूल भरहिँ जो जो कह बाता ॥

हीरा लेहिँ सु-विदरुम धारा । बिहँसत जगत होइ उँजिआरा ॥

भइ मजीँठ पानन्ह रँग लागे । कुसुम रंग थिर रहइ न आगे ॥ 60

अस कइ अधर अमीँ भरि राखे । अज-हुँ अछूत न काहू चाखे ॥

तँबोल रँग दारहिँ रसा । केहि मुख जोग सौ अंत्रित बसा ॥  
राता जगत देखि रँग-राती । रुहिर भरे आछहिँ बिहँसाती ॥

अमीँ अधर अस राजा सब जग आस करेह ।

केहि कहँ कवल बिगासा को मधुकर रस लेह ॥ १०८ ॥

- 63 दसन चउक बइठे जनु हीरा । अउ बिच बिच रँग सावँ गँभीरा ॥  
जनु भादउ निसि दाविँनि दीसी । चमकि उठइ तस बनी बतीसी ॥  
बह सौ जोति हीरा उपराहीँ । हीरा देहि सौ तेहि परिछाहीँ ॥  
जेहि दिन दसन-जोति निरमई । बहुतइ जोति जोति बह भई ॥  
रवि ससि नखत दिपाहिँ तेहि जोती । रवन पदारथ मानिक मोती ॥  
70 जहँ जहँ बिहँसि सौभाओन हँसी । तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी ॥  
दाविँनि चमकि न सरिवरि पूजा । पुनि ओहि जोति होइ को दूजा ॥

(बिहँसत) हँसत दसन तस चमकइ पाहन उठइ भरकि ।

दारिउँ सरि जौ न कइ सका फाटैउ दिआ तरकि ॥ १०९ ॥

- रसना कहँ जौ कह रस-चाता । अंत्रित बयन सुनत मन राता ॥  
हरइ सौ सुर चातक कोकिला । बीन बंसि बेइ बयन न मिला ॥  
75 चातक कोकिल रहहिँ जौ नाहीँ । सुनि बेइ बयन लाजि छपि जाहीँ ॥  
भरे पेम-मधु बोलइ बोला । सुनइ सौ माति घूबिँ कइ डोला ॥  
चतुर बेद मति सब ओहि पाहौ । रिग जनु सावँ अयरवन माहौ ॥  
प्रक प्रक बोल अरथ चउ-गुना । ईंदर मोहि बरम्हा सिर घुना ॥  
अमर पिँगल मारथ अउ गीता । अरथ जौ जेहि पंडित नहिँ जीता ॥

मावसती ब्पाकरन सब पिँगल पाठ पुरान ।

- 80 बेद मेद सउँ बात कह तस जनु लागहिँ बान ॥ ११० ॥  
पुनि बरनउँ का सुरँग कपोला । प्रक नारँग के दुअ-उ अमोला ॥  
पुहुप पंग रस अंत्रित साधे । केइ यह सुरँग खिरउरा बाँधे ॥  
तेहि कपोल बाएँ तिल परा । जेइ तिल देख सौ तिल तिल जरा ॥

जनु घुँघुँची ओहि तिल कर-मुहाँ । विरह-गान साधेउ सामुहाँ ॥  
 अगिन-गान तिल जानउँ सुभा । एक कटाछ लाख दस जूभा ॥ 85  
 सो तिल गाल मेदि नहिँ गप्रऊ । अब वह गाल काल जग भप्रऊ ॥  
 देखत नयन परी परिछाहीँ । तेहि तहँ रात सावँ उपराहीँ ॥  
 सो तिल देखि कपोल पर गगन रहा धुव गाडि ।  
 खनहिँ उठइ खन बूढइ डोलइ नहिँ तिल छाडि ॥ १११ ॥  
 सवन सीप दुइ दीप सँवारे । कुंडल कनक रचे उँजिआरे ॥  
 मनि-कुंडल चमकहिँ अति लोने । जनु कउँधा लउकहिँ दुहुँ कोने ॥ 90  
 दुहुँ दिसि चाँद सुरुज चमकाहीँ । नखतन्ह भरे निरखि नहिँ जाहीँ ॥  
 तेहि पर खूँट दीप दुइ वारे । दुइ धुव दुहुँ खूँट बइसारे ॥  
 पहिरे खुंभी सिंघल-दीपी । जानउँ भरी कचपची सीपी ॥  
 खन खन जोहि चीर सिर गहा । काँपत बीजु दुहुँ दिसि रहा ॥  
 डरपहिँ देओ-लोक सिंघला । परइ न टूटि बीजु ग्रहि कला ॥ 95  
 करहिँ नखत सब सेवा सवन दीन्ह अस दो-उ ।  
 चाँद सुरुज अस गहने अउरु जगत का कोउ ॥ ११२ ॥  
 बरनउँ गीउ कूँज कइ रीसी । कंचन तार लागु जनु सीसी ॥  
 कूँदइ फेरि जानु गिउ काढी । हरइ पुछारि ठगी जनु ठाढी ॥  
 जनु हिअ काढि परेवा ठाढा । तेहि तहँ अधिक भाउ गिउ बाढा ॥  
 चाक चढाइ साँच जनु कीन्हा । वाग तुरंग जानु गहि लीन्हा ॥ 100  
 गिउ मजूर तम-चूर जो हारे । उह-इ पुकारहिँ साँभ सकारे ॥  
 पुनि तेहि ठाउँ परी तिरि रेखा । घूँट जो पीक लीक सब देखा ॥  
 धनि ओहि गीउ दीन्ह विधि भाऊ । दहुँ का सउँ लैइ करइ मेराऊ ॥  
 कंठ सिरी-मुकुताओली (माला) सोहइ अभरन गीउ ।  
 को होइ हार कंठ (ओहि)लागइ को तपु साधा जीउ ॥ ११३ ॥  
 कनक-डंड दुइ भुजा कलाई । जानउँ फेरि कुँदेइ भाई ॥ 105



कदलि-खंभ कइ जानउँ जोरी । अउ राती ओहि कवँल-हयोरी ॥  
 जानउँ रक्त हयोरी बूडी । रवि परमात तात बेइ जूडी ॥  
 हिआ काठि जनु लनिहिसि हाया । रुहिर भरी अँगुरी तेहि साथा ॥  
 अउ पहिरे नग-जरी अँगूठी । जग बिनु जीउ जीउ ओहि मूठी ॥  
 ११० बाँह कंगन टाढ सलोनी । डोलत बाँह भाउ गति लोनी ॥  
 जानउँ गति बेदिन देखराई । बाँह डौलाइ जीउ लेंद जाई ॥

भुजउपमा पउ-नारिन (पूजइ) खीन भई तेहि चित्त ।

ठाउँहि ठाउँ बेध मइ (हिरदइ) ऊभि साँस लेंद नित्त ॥ ११४ ॥

हिआ थार कुच कंचन लाइ । कनिक कचउरि उठइ कइ चाइ ॥  
 कुंदन बेल साजि जनु कुंदे । अंगित भरे रतन दुइ मूदे ॥  
 ११५ बेधे भवैर कंठ केतकी । चाहहिँ बेध कीन्ह कंचकी ॥  
 जोवन बान लेहिँ नहिँ बागा । चाहहिँ हुलसि हिअइ महुँ लागी ॥  
 अगिन-वान दुइ जानउँ साथे । जग बेधहिँ जउँ होहिँ न बाँधे ॥  
 उतंग जमीर होइ रखवारी । छुद को सकइ राजा कइ बारी ॥  
 दारिउँ दाख करे अन-चाखे । अस नारंग दहुँ का कहँ राखे ॥

राजा बहुत भए तपि लाइ लाइ भुईँ माँय ।

१२० काहू छुअइ न पाएउ गए मरोरत हाथ ॥ ११५ ॥  
 पेट पतर जनु चंदन लावा । कुँकुइ केसर धरन सौहावा ॥  
 खीर अहार न कर सु-कुवाँरा । पान फूल लेंद रहइ अघारा ॥  
 सार्व-भुअगिनि रोचौबली । नामी निकसि कवँल कहँ चली ॥  
 आइ दुहुँ नारंग चिच भई । देखि मजूर ठमकि रहि गई ॥  
 १२५ जनउँ चढी भवैरन्ह कइ पाँती । चंदन-खाम बास गइ माँती ॥  
 कइ कालिंदरि बिरह सताई । चलि पयाग थरइल बिच आई ॥  
 नामी कुँडर बानारसी । सउँह को होइ मीनु तेहि बसी ॥  
 सिर करवत तन करसी (लेंद लेंद) बहुत सीम तेइ आस ।  
 बहुत धूँ घुँटि छुप्र देखे उतर न देइ निरास ॥ ११६ ॥

बहरिनि पीठि लीन्ह वैह पाछे । जनु फिरि चली अपहरा काछे ॥  
 मलयागिरि कइ पीठि सँवारे । बेनी नाग चढा जनु कारे ॥ 130  
 लहरइ देत पीठि जनु चढा । चीर ओढावा केँ चुलि मढा ॥  
 दहुँ का कहँ अस बेनी कीन्ही । चंदन वास भुअंगइ लीन्ही ॥  
 किरिसुन करा चढा ओहि माँथे । तव सो छूट अव छूट न नाथे ॥  
 कारे कवँल गहे मुख देखा । ससि पाछे जनु राहु बिसेखा ॥  
 को देखइ पावइ वह नागू । सो देखइ माँथहि मनि भागू ॥ 135

पंनग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ वईठ ।

छात सिँ घासन राज धन ता कहँ होइ जो डीठ ॥ ११७ ॥  
 लंक पुहुमि अस आहि न काहू । केहरि कहउँ न ओहि सरि ता-हू ॥  
 वसा लंक वरनइ जग भीनी । तेहि तई अधिक लंक वह खीनी ॥  
 परिहँसि पिअर भए तेहि वसा । लिए डंक लोगहि कहँ डसा ॥  
 मानउँ नलिनि खंड दुइ भए । दुहुँ विच लंक तार रहि गए ॥ 140  
 हिअ सो मोड चलइ वह तागा । पइग देत कित सहि सक लाग़ा ॥  
 छुदर-घंट मोहहि नर राजा । इंदर-अखाड आइ जनु वाजा ॥  
 मानउँ बीन गहे काविनी । गाओहि सवइ राग रागिनी ॥  
 सिंघ न जीतइ लंक सरि हारि लीन्ह वन वास ।

तेहि रिस रक्त पिअइ मनुस खाइ मारि कइ माँस ॥ ११८ ॥

नाभी कुँडर सो मलय-समीरू । समुद भवँर जस भवँइ गँभीरू ॥ 145  
 बहुतइ भवँर ववँडर भए । पहुँचि न सके सरग कहँ गए ॥  
 चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू । दहुँ को पाउ को राजा भोजू ॥  
 को ओहि लागि हँवंचल सीमा । का कहँ लिखी अइस को रीमा ॥  
 तीवइ कवँल-सु-गंध सरीरू । समुद लहरि सोहइ तन-चीरू ॥  
 भूलहि रतन पाट के भोँपा । साजि मयन दहुँ का पहुँ कोपा ॥ 150  
 अबहिँ सो अहइ कवँल कइ करी । न जनउँ कवनु भवँर कहँ धरी ॥

}

बेधि रहा जग चासना परमल मेद सु-गंध ।

तेहि अरधानि भँवर सब लुपुधे तजहिँ न बंध ॥ ११६ ॥

घरनउँ नितँव लंक कइ सोमा । अउ गज-गवँन देखि सब लोमा ॥

जुरे जंघ सोमा अति पाए । केला खॉम फेरि जनु लाए ॥

155 कँवल-चरन अति-रात बिसेखी । रहइ पाट पर पुहुमि न देखी ॥

देओता हाथ हाथ पगु लेहीँ । जहँ पगु घरइ सीस तहँ देहीँ ॥

याँयइ भाग कौ दहुँ अस पावा । कँवल-चरन लैइ सीस चढावा ॥

एरा चाँद सुरुज उँजिआरा । पाइल बीच करहिँ, मनकारा ॥

मनवट चिह्निया नखत तराईँ । पहुँचि सकइ को पाइन तारैँ ॥

वरानि सिँ गार न जानैउँ नखसिख जइस अमोग ।

तस जग किछू न पाछउँ उपम देउँ ओहि जोग ॥ १२० ॥

इति नखसिख संह ॥ १० ॥

## अथ पेम खंड ॥ ११ ॥

सुनत-हि राजा गा मुरुछाई । जानउँ लहरि मुरुज कइ आई ॥  
 पेम-घाओ दुख जान न कोई । जेहि लागइ जानइ पइ सोई ॥  
 परा सौ पेम-समुंद अपारा । लहरहिँ लहर होइ विसँभारा ॥  
 बिरह भँवर होइ भाउँरि देई । खन खन जीउ हिलोरा लेई ॥  
 खनहिँ निसाँस बूडि जिउ जाई । खनहिँ उठइ निसँसइ वउराई ॥ 5  
 खनहिँ पीत खन होइ मुख सेता । खनहिँ चेत खन होइ अचेता ॥  
 कठिन मरन तहँ पेम-वैवसथा । ना जिउ जाइ न दसउँ-अवसथा ॥  
 जनउँ लोहारइ लीन्ह जिउ हरइ तरासइ ताहि ।

प्रतना बोल न आओ मुख करइ तराहि तराहि ॥ १२१ ॥  
 जहँ लगि कुडुव लोग अउ नेगी । राजा राइ आग्र सब बेगी ॥  
 जावँत गुनी गारुरी आए । ओम्हा बइद सयान बोलाए ॥ 10  
 चरचहिँ चैसटा परखहिँ नारी । निअर नाहिँ ओखद तेहि वारी ॥  
 हइ राजहि लखिमन कइ करा । सकति-धान मोहइ हिप्र परा ॥  
 तहँ सौ राम हनिवँत बडि दूरी । को लैइ आउ सजीअनि मूरी ॥  
 विनउ करहिँ जेते गढ-पती । का जिउ कीन्ह कउनि मति मती ॥  
 कहउ सौ पीर काहि बिनु खाँगा । समुद सुमेरु आउ तुम्ह माँगा ॥ 15  
 धावन तहाँ पठावहु देहु लाख दस रोक ।  
 हइ सौ बेल जेहि वारी आनहु सबहिँ बरोक ॥ १२२ ॥

जो मा चेत उठा चरगागा । बाउर जनउँ सोइ अस जागा ॥  
 आवत जग बालक जस रोआ । उठा रोइ हा ग्यान सौ खोआ ॥  
 हउँ तो अहा अमर-पुर जहवाँ । इहाँ मरन-पुर आछउँ कहवाँ ॥  
 २० कैइ उपकार मरन कर कीन्हा । सकति हँकारि जीउ हरि लीन्हा ॥  
 सोअत अहा जहाँ सुख साखा । कस न तहाँ सोअत विधि राखा ॥  
 अर जिउ तहाँ इहाँ तन खना । कय लगि रहइ परान बिहना ॥  
 जो जिउ घटिहि काल के हाथा । घटन नाँक पइ जीअन साथा ॥  
 अहुठ हाथ तन सरवर हिआ कवल तेहि माँह ।

नयनहिँ जानउँ नीअरे कर पहुँचत अउगाह ॥ १२३ ॥

२५ सबन्ह कहा मन समुझहु राजा । काल सेति कइ जूझ न छाजा ॥  
 ता सउँ जूझ जात जो जीता । जात न किसुन तजी गोपीता ॥  
 अउ न नेहु फाहू सउँ फीजिय । नाउँ भीठ खाए जिउ दीजिय ॥  
 पहिलइ सुख नेहहि जब जोरा । पुनि होइ कठिन निचाहत ओरा ॥  
 अहुठ हाथ तन जइस मुनेरू । पहुँचि न जाइ परा तस फेरू ॥  
 ३० गगन दिसिट सो जाइ पहुँचा । पेम अदिसिट गगन तई ऊँचा ॥  
 पुष तई ऊँच पेम-पुष ऊआ । सिर देइ पाउँ देइ सो छूआ ॥  
 तुम्ह राजा अउ सुखिआ करहु राज सुख भोग ।

प्रहि रे पंथ सो पहुँचइ सहइ जो दुख बीओग ॥ १२४ ॥

मुअइ कहा मुनु मो सउँ राजा । कनप पिरीति कठिन हइ काजा ॥  
 तुम्ह अर-ही जेइअ घर पोई । कवल न चइठ चइठ तई कोई ॥  
 ३५ जानहिँ मँवर जौ तेहि पँथ लूटे । जीउ दीन्ह अउ दिष्ट-उ न छूटे ॥  
 कठिन आहि सिपल कर राजू । पाइअ नाहिँ राज के साजू ॥  
 ओहि पँथ जाइ जो होइ उदासी । जोगी जती तपा सनिआसी ॥  
 जोग जोरि यह पाइत भोगू । तजि सौ भोग कोई करत न जोगू ॥  
 तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा । जोगी भोगिहि कित बनि आवा ॥

साधहि सिद्धि न पाइअ जउ लहि साध न तप्प ।

सो पइ जानइ वापुरा सीस जौ करइ कलप्प ॥ १२५ ॥ 40

का भा जोग कहानी कथे । निकसु न घीउ वाजु दधि मथे ॥

जउ लहि आप हिराइ न कोई । तउ लहि हेरत पाउ न सोई ॥

पेम पहार कठिन विधि गढा । सो पइ चढइ सीस सउँ चढा ॥

पंथ सूरि कर उठा अँकूरु । चोर चढइ कइ चढ मनसूरु ॥

तुई राजा का पहिरसि कंथा । तोरइ घरहि माँझ दस पंथा ॥ 45

काम करोध तिसिना मद माया । पाँच-उ चोर न छाडहि काया ॥

नउ सेँधइ जेहि घर मँझिआरा । घर मूसहि निसि कइ उँजिआरा ॥

अजहूँ जाग अजाना होत आउ निसि भोर ।

पुनि किछु हाथ न लागिहइ मूसि जाहि जव चोर ॥ १२६ ॥

सुनि सौ वात राजा मन जागा । पलक न मार टकटका लागा ॥

नयनहिँ ढरहिँ मोति अउ मूँगा । जस गुड खाइ रहा होइ गूँगा ॥ 50

हिअ कइ जोति दीप वह स्रभा । यह जो दीप अँधेरा वृभा ॥

उलटि दिसिटि माया सउँ रूठी । पलटि न फिरइ जानि कइ भूठी ॥

जउ पइ नाहीँ असथिर दसा । जग उजार का कीजिअ वसा ॥

गुरु विरह-चिनगी पइ मेला । जो सुलगाइ लेइ सो चेला ॥

अव कइ पनिग भिरिँग कइ करा । भँवर होउँ जेहि कारन जरा ॥ 55

फूल फूल फिरि पूँछउँ जो पहुँचउँ वह केत ।

तन नेउछाउरि कइ मिलउँ जउँ मधुकर जिउ देत ॥ १२७ ॥

## अथ जोगी खंड ॥ १२ ॥

- तजा राज राजा भा जोगी । अउ किंगरी कर गहेउ बिओगी ॥  
 तन बिसँभर मन वाउर लटा । उरुभा पेम परी सिर जटा ॥  
 चंद-चदन अउ चंदन देहा । मसम चढाइ कीन्ह तन खेहा ॥  
 भेखल सींगी चकर धँधारी । जोगोटा रुदराछ अधारी ॥  
 ५ कंधा पहिरि चंड कर गहा । सिद्ध होइ कहँ गोरख कहा ॥  
 मुँदरा सवन कंड जप-माला । फर उदपान काँध बघ-छाला ॥  
 पावँरि पाँप लीन्ह सिर छावा । छप्पर लीन्ह भेस कइ रावा ॥  
 चला भुगुति माँगइ कहँ साजि कया तप जोग ।  
 सिद्ध होउं पदुमावति (पाए) हिरदइ जेहि क बिओग ॥ १२८ ॥  
 गनक कहहिँ गनि गवँन न आजू । दिन लेइ चलहु होइ सिध काजू ॥  
 १० पेम-भंय दिन घडी न देखा । तर देखइ जव होइ सरेखा ॥  
 जेहि तन पेम कहाँ तेहि माँघ । कया न रकत न नयनन्ह आँघ ॥  
 पंडित भूल न जानइ चालू । जीउ लेत दिन पूँछ न कालू ॥  
 सती कि पउरी पूँछइ पाँडे । अउ घर पशठि न सईतइ माँडे ॥  
 मरइ जो चलइ गंग-गाति लेई । तेहि दिन कहाँ घडी को देई ॥  
 १५ मई घर-चार कहाँ कर पावा । घर काया पुनि अंत परावा ॥  
 हउं रे पछेरू पंखी जेहि वन मोर निबाहु ।  
 खेति चला तेहि वन कहँ तुम्ह आपन घर जाहु ॥ १२९ ॥

चहुँ दिस आनि साँटिया फेरी । भइ कटकाई राजा केरी ॥  
 जावँत अहहिँ सकल उरगाना । साँवर लेहु दूर हइ जाना ॥  
 सिंघल-दीप जाइ सब चाहा । मोल न पाउव जहाँ बेसाहा ॥  
 सब निवहइ तहँ आपुन साँटी । साँटी विनु सो रह मुख माटी ॥ 20  
 राजा चला साजि कइ जोगू । साजउ बेगि चलउ सब लोगू ॥  
 गरव जो चढेहु तुरइ कइ पीठी । अब भुईँ चलहु सरग सउँ डीठी ॥  
 मंतर लेहु होहु संग-लागू । गुदर जाइ सब होहिहिँ आगू ॥  
 का निचिंत रे मानुसइ अपनी चिंता आछ ।

लेहु सजुग होइ अगुमन पुनि पछिताउ न पाछ ॥ १३० ॥  
 विनवई रतन-सेन कइ माया । माथइ छात पाट निति पाया ॥ 25  
 बेलसहु नउ लख लच्छि पिआरी । राज छाडि जनि होहु भिखारी ॥  
 निति चंदन लागइ जेहि देहा । सो तन देखि भरत अब खेहा ॥  
 सब दिन रहैहु करत तुम्ह भोगू । सो कइसइ साधव तप जोगू ॥  
 कइसइ धूप सहव विनु छाँहा । कइसइ नीँद परिहि भुईँ माँहा ॥  
 कइसइ ओढव काँथरि कंथा । कइसइ पाउँ चलव तुम्ह पंथा ॥ 30  
 कइसइ सहव खनहि खन भूखा । कइसइ खाव कुरुकुटा रूखा ॥  
 राज पाट दर परिगह तुम-हीँ सउँ उँजिआर ।

वइठि भोग रस मानहु कइ न चलहु अँधिआर ॥ १३१ ॥  
 मोहिँ यह लोभ सुनाउ न माया । का कर सुख का कर यह काया ॥  
 जो निआन तन होइहि छारा । माटी पोखि मरइ को भारा ॥  
 का भूलउँ प्रहि चंदन चोवा । वइरी जहाँ अंग के रोवाँ ॥ 35  
 हाथ पाउँ सरवन अउ आँखी । ए सब भरहिँ आपु पुनि साखी ॥  
 सत सत तन बोलहिँ दोख । कहु कइसइ होइहि गति मोख ॥  
 जउ भल होत राज अउ भोगू । गोपिचंद नहिँ साधत जोगू ॥  
 उह-उ सिसिटि जउ देख परेवा । तजा राज कजरी-वन सेवा ॥



देखि अंत अस होइइ गुरु दीन्ह उपदेस ।

40 सिधल-दीप जाव मई माता मोर थदेस ॥ १३२ ॥

रोअहि नारा-मती रनिवाख । कैइ तुम्ह कंत दीन्ह बन-वाख ॥

अब को हमहि करिहि मोगिनी । हम-हैं साथ होव जोगिनी ॥

कइ हम लावहु अपनइ साधा । कइ अब मारि चलहु सई दया ॥

तुम्ह अस बिछुइ पीउ पिरीता । जहवाँ राम तहाँ संग सीता ॥

45 जव लहि जिउ संग छाड न काया । करिहउँ सेव पखरिहउँ पाया ॥

भले-हि पदुमिनी रूप अनूपा । हम तई कोइ न आगरि रूपा ॥

मवई मलहि पुरुखन्ह कइ डीठी । जिन्ह जाना तिन्ह दीन्ह न पीठी ॥

देहि असीस सबइ मिलि तुम्ह माँथइ निति छाव ।

राज करहु गढ चितउर राखहु पिअ अहिवात ॥ १३३ ॥

तुम्ह विरिआ मति हीन तुम्हारी । मूरख सो जो मतइ घर नारी ॥

50 राखउ जो सीता संग लाई । राओन हरी कउन सिधि पाई ॥

यह संसार गुपन जस मेरा । अंत न आपन को कैहि केरा ॥

राजा भरयारि मुनि न अजानी । जेहि के घर सोरह सद रानी ॥

कुचन्ह लिए तरवा सौहराई । मा जोगी कौउ संग न लाई ॥

जोगिहि कहा भोग सउँ काजू । चहइ न मेहरी चहइ न राजू ॥

55 जूड कुरुडटा पइ भरु चहा । जोगिहि ताव मात सउँ कहा ॥

कहा न मानइ राजा तजी सवाई मीर ।

चला छाडि सब रोअत फिरि कइ देइ न धीर ॥ १३४ ॥

रोअइ मठा न बहुरइ वारा । रठन चला जग मा अंधियारा ॥

बार मोर रज बाउर-रचा । सो लैइ चला मुखा परवत्ता ॥

रोअहि रानी तजहि पराना । फोरहि बलई करहि खरिहाना ॥

60 अब हम का कहै करव सिंगारु ॥

जा चला का कर यह जीऊ ॥

मरइ चहहिँ पइ मरइ न पावहिँ । उठइ आगि सब लोग बुझावहिँ ॥  
 घरी एक सुठि भण्ड अँदोरा । पुनि पाछइ बीता होइ रोरा ॥

टूट मनइ नउ मोती फूट मनइ दस काँच ।

लीन्ह समेटि सब अमरन होइ गा दुख कर नाँच ॥ १३५ ॥

निकसा राजा सिंगी पूरी । छाडि नगर मेला होइ दूरी ॥ 65

राष्ट्र रंक सब भए विओगी । सोरह सहस कुँअर भण्ड जोगी ॥

माया मोह हरी सई हाथा । देखेन्हि वृष्णि निआन न साथी ॥

छाडेन्हि लोग कुँअर सब कोऊ । भण्ड निनार दुख सुख तजि दोऊ ॥

सँवरइ राजा सोई अकेला । जेहि रे पंथ खेलइ होइ चेला ॥

नगर नगर अउ गाउँहि गावाँ । चला छाडि सब ठाउँहि ठावाँ ॥ 70

का कर घर का कर मढ-माया । ता कर सब जा कर जिउ काया ॥

चला कटक जोगिन्ह कर कइ गेरुआ सब भेसु ।

कोस बीस चारि-हुँ दिसि जानउँ फूला टेँसु ॥ १३६ ॥

आगइ सगुन सगुनिअइ ताका । दहिउ माँछ रूपइ कर टाका ॥

भरे कलस तरुनी चलि आई । दहिउ लेहु ग्वालनि गोहराई ॥

मालिनि आइ मउर लेइ गाँथइ । खंजन बइठ नाग केँ गाँथइ ॥ 75

दहिनइ मिरिग आइ गा धाई । प्रतीहार बोला खर पाई ॥

विरिख सँवरिआ दाहिन बोला । बाईँ दिसि गीदर तहँ छोला ॥

बाणँ अकासी धौबइनि आई । लोवा दरस आइ देखराई ॥

बाणँ कुररी दहिनइ कूचा । पहुँचइ भुगुति जइस मन रुना ॥

जा कहँ सगुन होहिँ अस अउ गवँनइ जेहि आस ।

असट-उ महासिद्धि तेहि जस कवि कहा विश्वास ॥ १३७ ॥ 80

भण्ड पयान चला पुनि राजा । सिंगि-नाद जोगिन्ह कर भाजा ॥

कहहिँ आजु किछु थोर पयाना । कान्हि पयान दूरि हइ जाना ॥

ओहिँ मैलान जउ पहुँचइ कोई । तव हम कहव पुरुष भल सोई ॥

हहि आगइ परबत कइ पाटी । विषम पहार अगम सुठि पाटी ॥  
 ८५ विच विच नदी खोइ अउ नारा । ठाउँहि ठाउँ उठहि बटपारा ॥  
 हनुवत केर सुनय पुनि हौका । दहुँ को पार होइ को थाका ॥  
 अस मन जानि सँभारहु आगू । अगुआ केर होहु पछ-लागू ॥  
 करहि पयान मोर उठि पंथ कोस दस जाहि ।

पंथी पंथा जे चलहि ते का रहहि ओनाहि ॥ १३८ ॥  
 करहु दिसिटि थिर होहु घटाऊ । आगू देखु घरहु भुई पाऊ ॥  
 ९० जो रे उबट होइ परहि भुलाने । गछ मारे पंथ चलहि न जाने ॥  
 पायन्ह पहिरि लेहु सब पवरी । काँट चुभइ न गडइ अँकरवरी ॥  
 परेउ आइ अर बन-खंड माहाँ । डंडाकरन बीभू-वन जाहाँ ॥  
 सपन दाँख-वन चहुँ दिसि फूला । बहु दुख मिलिहि उहाँ कर भूला ॥  
 भाँखर जहाँ सो छाडहु पंथा । हिलगि मकोइ न फारहु कंथा ॥  
 ९५ दहिनइ बिदर चंदेरी पाएँ । दहुँ केहि होव चाट दुहुँ ठाएँ ॥

एक बाट गइ सिंघल दोसर लंक समीप ।

हहि आगइ पंथ दूअऊ दहुँ गवँजव केहि दीप ॥ १३९ ॥  
 तत-खन बोला सुआ सेरखा । अगुआ सोई पंथ जेइ देखा ॥  
 सो का उडइ न जेहि तन पाँख । लेइ सो पलासहि चोडइ साख ॥  
 जस अंधा अंधइ कर संगी । पंथ न पाउ होइ सह-लंगी ॥  
 १०० सुनु मति काज चइसि जउ साजा । बीजा-नगर बिजइ-गिरि राजा ॥  
 पूछहु जहाँ गोँड अउ कोला । तजु पाएँ अधिआर खटोला ॥  
 दक्खिन दहिनइ रहहि तिलंगा । उत्तर माँझहि करहकटेगा ॥  
 माँझ रतनपुर सीह-दुआरा । भारखंड देइ बाउँ पहारा ॥  
 आगइ बाउँ उडइसा पाएँ देखु सो बाट ।

दहिनापरत देइ कइ उतरु समुद के घाट ॥ १४० ॥

## अथ राजा-गजपति-संवाद खंड ॥ १३ ॥

होत पयान जाइ दिन केरा । मिरगारन महुँ होत वसेरा ॥  
 कुस-साँथरि भइ सेज सुपेती । करवट आइ वनी भुइँ सेती ॥  
 कया मइल तस पुहुमि मलीजइ । चलि दस कोस ओस तन भीजइ ॥  
 ठावँ ठावँ सब सोअहिँ चेला । राजा जागइ आपु अकेला ॥  
 जेहि के हिअइ पेम-रँग जामा । का तेहि भूख नीँद विसरामा ॥ 5  
 वन अँधिआर रइनि अँधिआरी । भादउ विरह भण्ड अति भारी ॥  
 किँ गरी हाथ गहे बइरागी । पाँच तंत धुनि यह एक लागी ॥

नयन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप ।

जइस सेवातिहि सेवई वन चातक जल सीप ॥ १४१ ॥  
 मासेक लाग चलत तेहि बाटा । उतरे जाइ समुद के घाटा ॥  
 रतन-सेन भा जोगी जती । सुनि भेँटइ आवा गज-पती ॥ 10  
 जोगी आपु कटक सब चेला । कवन दीप कहँ चाहहिँ खेला ॥  
 भलेहिँ आपु अघ माया कीजिअ । पहुनाई कहँ आपसु दीजिअ ॥  
 सुनहु गज-पती उतरु हमारा । हम तुम्ह एक-इ भाउ निनारा ॥  
 नैवतहु तेहि जेहि महुँ यह भाऊ । जो निरभउ तेहि लाउ नसाऊ ॥  
 इह-इ बहुत जउ बोहित पावउँ । तुम्ह तई सिंघल-दीप सिधावउँ ॥ 15

जहाँ मोहिँ निजु जाना कटक होउँ लेइ पार ।

जउ रे जिअउँ तब लेइ फिरउँ मरउँ त ओहि के बार ॥ १४२ ॥

- गज-पति कहा सीस पर माँगा । प्रवनी बोलि न होइहि खाँगा ॥  
 ए सब देखै आनि नउ-गढे । फूल सोई जौ महेसहि चढे ॥  
 पद गोसाईं सउँ एक विनावी । मारग कठिन जाव कैहि भाँती ॥
- ॥० सात समुंदर अस्मद् अपारा । मारहिँ मगर भच्छ धरिआरा ॥  
 उठइ लहरि नहिँ जाइ सँमारी । भागहिँ कोइ निवहइ बइपारी ॥  
 तुम्ह सुखिआ अपनइ घर राजा । प्रत जोखीउँ सहहुँ कैहि काजा ॥  
 सिंघल-दीप जाइ सो कोई । हाथ लिए आपन जिउ होई ॥  
 खार खीर दधि जल-उदधि सुर किलकिला अकूत ।  
 कोचि नौघइ समुद ए (सात-उ) हह का कर अस घूत ॥ १४३ ॥
- २५ गज-पति यह मन-सकती सीऊ । पद जेहि पेम कहाँ तेहि जीऊ ॥  
 जो पहिलइ सिर देइ पगु धरई । मूए केरि मीसु का करई ॥
- ३ मुख सँकलपि दुख साँवरि लीन्हा । तउ पपान सिंघल फहँ कीन्हा ॥  
 भवैर जान पद कवल पिराती । जेहि महँ बिथा पेम फइ धीती ॥  
 अउ जेइ समुद पेम कर देखा । तेइ प्रहि समुद बूँद परि-लेखा ॥
- ३० सात समुद सब कीन्ह सँभारु । जउ धरती का गरुअ पहारु ॥  
 जेइ पद जिउ बाँधा सत बेरा । बरु जिउ जाइ फिरइ नहिँ फेरा ॥  
 रंग नाथ हउँ जा कर हाथ ओही के नाथ ।  
 गहे नाथ सो खोचई फेरत फिरइ न माय ॥ १४४ ॥
- पेम-समुंदर अहस अउगाहा । जहाँ न पार न पार न थाहा ॥  
 जउ वह समुद गाह प्रहि परे । जउ अउगाह हंस दिअ तरे ॥
- ३५ हउँ पद्ममावति कर भिख-भंगा । दिसिटि न आउ समुद अउ गंगा ॥  
 जेहि कारन गिउ काँपरि-कंया । जहाँ सो मिलाइ जाउँ तेहि पंथा ॥  
 अब प्रहि समुद परेउँ होइ मरा । पेम मोर पानी बइ करा ॥  
 मर होइ बहा फवहुँ लेइ जाऊ । ओहि के पंथ कोउ धरि खाऊ ॥  
 अस मन जानि समुद महँ परऊँ । जउ कोइ खाइ बेगि निसतरऊँ ॥

सरग सीस धर धरती हिआ सौ पेम-समुंद ।

नयन कउडिआ होइ रहे लैइ लैइ उठहिँ सौ बुंद ॥ १४५ ॥ 40

कठिन विओग जोग दुख-दाह । जरत मरत होइ ओर निवाह ॥

डर लज्जा तहँ दुअ-उ गवाँनी । देखइ किछु न आगि न पानी ॥

आगि देखि ओहि आगइ धावा । पानि देखि तेहि सउँह धसावा ॥

जस वाउर न बुझाए बूझा । जउनहि भाँति जाइ का स्रझा ॥

मगर मच्छ डर हिअइ न लेखा । आपुहि चहइ पारभा देखा ॥ 45

अउ न खाहिँ ओहि सिंघ सेँ दूरा । काठ-हु चाहि अधिक सो भूरा ॥

काया माया संग न आथी । जेहि जिउ सउँपा सोई साथी ॥

जो किछु दरब अहा संग दान दीन्ह संसार ।

का जानी कैहि सत सती दइउ उतारइ पार ॥ १४६ ॥

धनि जीअन अउ ता कर हीआ । ऊँच जगत महँ जा कर दीआ ॥

दिआ सौ सब जप तप उपराहीँ । दिआ बराबर जग किछु नाहीँ ॥ 50

एक दिआ तइँ दस-गुन लाहा । दिआ देखि सब जग मुख चाहा ॥

दिआ करइ आगइ उँजिआरा । जहाँ न दिआ तहाँ अँधिआरा ॥

दिआ मँदिर निसि करइ अँजोरा । दिआ नाहिँ घर मूसहिँ चोरा ॥

हातिम करन दिआ जो सीखा । दिआ रहा धरमिन्ह महँ लीखा ॥

दिआ सौ काज दुहँ जग आवा । इहाँ जो दिआ ओही जग पावा ॥ 55

निरमर पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिआ किछु हाथ ।

किछु न कोइ लैइ जाइहि दिआ जाइ पइ साथ ॥ १४७ ॥

सत न डोल देखा गज-पती । राजा दत्त सत्त दुहँ सती ॥

आपुन नाहिँ कया पइ कंथा । जीउ दीन्ह अगुमन तेहि पंथा ॥

निहचइ चला भरम डर खोई । साहस जहाँ सिद्ध तहँ होई ॥

निहचइ चला छाडि कइ राजू । बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू ॥ 60

चढा बेगि अउ बोहित पेले । धनि चैइ पुरुख पेम-पंथ खेले ॥

पेम-पंथ जउ पहुँचइ पारा । बहुरि न आइ मिलइ तेहि छारा ॥  
 तिन्ह पावा ऊतिम कबिलाग्र । जहाँ न मीचु सदा सुख बाग्र ॥  
 ग्रहि जीअन कइ आस का जस सपना तिल आयु ।  
 मुहमद जिअत-हि जे सुए तिन्ह पुरुखन्ह कहँ साधु ॥ १४८ ॥

शक्ति राजा-गजपति-संवाद खंड ॥ १३ ॥

---

## अथ वोहित खंड ॥ १४ ॥

जस रथ रेँगि चलइ गज ठाटी । वोहित चले समुद मे पाटी ॥  
 धावहिँ वोहित मन उपराहीँ । सहस कोस एक पल महँ जाहीँ ॥  
 समुद अपार सरग जनु लागा । सरग न घालि गनइ बइरागा ॥  
 ततखन चाल्ह एक देखरावा । जनु धवला-गिरि परवत आवा ॥  
 उठी हिलोर जो चाल्ह नराजी । लहरि अकास लागि भुईँ वाजी ॥ 5  
 राजा सेँति कुअँर सब कहहीँ । अस अस मच्छ समुद महँ अहहीँ ॥  
 तेहि रे पंथ हम चाहहिँ गवँना । होहु सँजत बहुरि नहिँ अवना ॥

गुरु हमार तुम्ह राजा हम चेला तुम्ह नाथ ।

जहाँ पाउँ गुरु राखइ चेला राखइ माँथ ॥ १४६ ॥

केवट हँसे सौ सुनत गवेँजा । समुद न जानु कुआँ कर मेँजा ॥  
 यह तउ चाल्ह न लागइ कोहू । का कहिहहु जब देखिहहु रोहू ॥ 10  
 अव-हीँ तइ तुम्ह देखे नाहीँ । जेहि मुख अइसे सहस समाहीँ ॥  
 राज-पंखि तेहि पर मेँडराहीँ । सहस कोस जेहि कइ परिछाहीँ ॥  
 जेइ बेइ मच्छ ठोर गहि लेहीँ । सावक-मुख चारा लेइ देहीँ ॥  
 गरजइ गगन पंखि जउ बोलहिँ । डोलहिँ समुद डयन जउ डोलहिँ ॥  
 तहाँ न चाँद न सुरुज असभा । चढ़इ सौ जो अस अगुमन बूझा ॥ 15

दस महँ एक जाइ कोइ करम धरम सत नेम ।

बोहित पार होइहि जउ तउ कसल अउ खेम ॥ १५० ॥



- राजद कहा कीन्ह सो पेमा । जेहि रे कहाँ कर कुसल सेमा ॥  
 तुम्ह खेबहु जउ खेबहु पारहु । जइसइ आपु तरहु मोहिँ तारहु ॥  
 मोहिँ कुसल कर सोच न आता । कुसल होत जउ जनम न होता ॥  
 २० धरती सरग जाँव पट दोऊ । जो तेहि बिच जिउ बाँच न कोऊ ॥  
 हउँ अब कुसल एक पद मोंगउँ । पेम-पंच सत बाँधि न खाँगउँ ॥  
 जउ सत हिअ तउ नयनहिँ दीआ । समुद न डरइ पदति मरजीआ ॥  
 रहै लगि हेरउँ समुद दिशोरी । जहँ लगि रतन पदारथ जोरी ॥  
 सपत पवार खोजि जस फाँडै बंद गरंथ ।  
 सात सरग चढि घावउँ पद्मावति जेहि पंच ॥ १४१ ॥

इति येतदित संद ॥ १४ ॥

## अथ सात-समुद्र खंड ॥ १५ ॥

सायर तरइ हिअइ सत पूरा । जउ जिउ सत कायर पुनि छरा ॥  
 तेहि सब बोहित पूर चलाए । जेहि सत पवन पंख जनु लाए ॥  
 सत साथी सत गुरु सहिवारू । सतइ खेइ लेइ लावइ पारू ॥  
 सतइ ताकु सब आगू पाछू । जहँ जहँ मगर मच्छ अउ काछू ॥  
 उठइ लहरि जनु ठाढ पहारा । चढइ सरग अउ परइ पतारा ॥ 5  
 डोलहिँ बोहित लहरइँ खाहीँ । खन तरकहिँ खन होहिँ उपराहीँ ॥  
 राजइ सो सत हिरदइ बाँधा । जेहि सत टेकि करइ गिरि काँधा ॥  
 खार समुद सो नाँधा आग्र समुद जहँ खीर ।

मिले समुद वेइ सात-उ बेहर बेहर नीर ॥ १५२ ॥  
 खीर-समुद का बरनउँ नीरू । सेत सरूप पिअत जस खीरू ॥  
 उलथहिँ मानिक मोती हीरा । दरब देखि मन होइ न थीरा ॥ 10  
 मनुआ चाह दरब अउ भोगू । पंथ भुलाइ विनासइ जोगू ॥  
 जोगी मनहिँ उह-इ रिस मारइ । दरब हाथ कह समुद पवारइ ॥  
 दरब लेइ सो असथिर राजा । जो जोगी तेहि के कहि काजा ॥  
 पंथिहि पंथ दरब रिपु होई । ठग बटपार चोर सँग सोई ॥  
 पंथी सो जो दरब सउँ रूसे । दरब समेटि बहुत अस मूसे ॥ 15

खीर-समुद सब नाँधा आग्र समुद दधि माँह ।

जो हहिँ नेह क बाउर ना तेहि धूप न छाँह ॥ १५३ ॥

पेम समुदर देखत तस डहा । पेम क लुबुध दगध इमि सहा ॥  
 जो डाढा धनि वह जीऊ । दधि जमाइ मैथि काढइ घीऊ ॥  
 दधि प्रक घूँद जाम सब खीरू । काँजी बूँद बिनासइ नीरू ॥  
 २० साँस डीढ़ मन-मैथनी गाढी । हिअइ चोट बिनु फूट न साढी ॥  
 जेहि जिउ पेम चँदन तेहि आगि । पेम बिहून फिरइ डरि भागी ॥  
 पेम क आगि जरइ जउ कोई । ता फर दुख न आविरथा होई ॥  
 जो जानइ सत आपुहि जारा । निसत हिअइ सत करइ न पारा ॥  
 दधि समुंद पुनि पार मे पेमहि कहाँ सँभार ।

भावइ पानी सिर परइ भावइ परहिँ अंगार ॥ १५४ ॥

२५ आए उदधि समुदर अपारा । धरती सरग जरइ तेहि भारा ॥  
 आगि जो उपनी उह-इ समुंदा । लंका जरी उह-इ प्रक धुंदा ॥  
 बिरह जो उपना उह-ई काढा । खन न धुभाइ जगत तस घाढा ॥  
 जिन्ह सौ बिरह तेहि आगि न डीठी । सउँह जरइ फिरि देइ न पीठी ॥  
 जग महुँ कठिन सरग कइ धारा । तेहि तई अधिक बिरह कइ भारा ॥  
 ३० अगम पंथ जउ अइस न होई । साधि किए पावइ सब कोई ॥  
 तेहि रे समुद महुँ राजा परा । चहइ जरा पइ रोवँ न जरा ॥  
 तलफइ तेल कराइ जिमि इमि तलफइ सब नीर ।

यह जौ मलय-गिरि पेम का बेधा समुद समीर ॥ १५५ ॥

मुरा समुद महुँ राजा आवा । महुँआ मद-आवा देखरावा ॥  
 जो तेहि पियइ सौ भावँरे लेई । सीस फिरइ पँथ पइगु न देई ॥  
 ३५ पेम-मुरा जेहि के जिअ भाहों । कित बइठइ महुँआ की छाहों ॥  
 गुरु के पास दाख रस रसा । बहरी बयुर मारि मन कमा ॥  
 बिरहइ दगधि कीन्ह तन भाठी । हाड जराइ दीन्ह जस काठी ॥  
 नयन नीर सउँ पोती किया । तस मद चुआ परा जउँ दिआ ॥  
 बिरह मुरागनि भूँजइ माँस । गिरि गिरि परहिँ रकव कइ भाँस ॥

मुहमद मद जो परेम का गए दीप तहँ राखि ।

सीस न देइ पतंग होइ तउ लहि जाइ न चाखि ॥ १५६ ॥ 40

पुनि किलकिला समुद महुँ आए । गा धीरज देखत डरु खाए ॥

भा किलकिल अस उठइ हलोरा । जनु अकास टूटइ चहुँ ओरा ॥

उडइ लहरि परवत कइ नाई । होइ फिरइ जोजन लख ताई ॥

धरती लेत सरग लहि वाढा । सकल समुद जानउँ भा ठाढा ॥

नीर होइ तर ऊपर सोई । महा-अरंभ समुद जस होई ॥ 45

फिरत समुद जोजन लख ताका । जइसइ फिरइ कोम्हार क चाका ॥

भा परलउ निअराना जउ-ही । मरइ सो ता कहँ परलउ तउ-ही ॥

गइ अउसान सवहिँ कइ देखि समुद कइ वाढि ।

निअर होत जनु लीलइ रहा नयन अस काढि ॥ १५७ ॥

हीरा-मनि राजा सउँ बोला । इह-ई समुद आहि सत-डोला ॥

सिंघल-दीप जो नाहिँ निवाहू । इह-इ ठावँ साँकर सव काहू ॥ 50

इह-इ किलकिला समुद गँभीरू । जेहि गुन होइ सो पावइ तीरू ॥

इह-इ समुदर-पंथ मँझ-धारा । खाँडइ कइ असि धार निरारा ॥

तीस सहसर कोस कइ पाटा । तस साँकर चलि सकइ न चाँटा ॥

खाँडइ चाहि पइनि पइनाई । वार चाहि पातरि पतराई ॥

इह-इ ठावँ कहँ गुरु सँग लीजिअ । गुरु सँग होइ पार तउ कीजिअ ॥ 55

मरन जिअन एही पँथ एही आस निरास ।

परा सो गण्ड पतारहि तरा सो गा कविलास ॥ १५८ ॥

राजइ दीन्ह कटक कहँ वीरा । सु-पुरुष होहु करहु मन धीरा ॥

ठाकुर जेहि क खर भा कोई । कटक खर पुनि आपु-हि होई ॥

जउ लहि सती न जिउ सत बाँधा । तउ लहि देइ कहार न काँधा ॥

पेम-समुद महुँ बाँधा बेरा । णइ सब समुद बूँद जेहि केरा ॥ 60

ना हउँ सरग क चाहउँ राजू । ना मोहिँ नरक सितेँ किछु काजू ॥

चाहउँ ओहि कर दरसन पावा । जेइ मोहिँ आनि पेम-पैथ लावा ॥  
 काठहि काह गाढ का दीला । बूढ न समुद मगर नहिँ लीला ॥  
 गहि समुदर घसि लीन्हैसि मा पाछइ सब कोइ ।

कोइ काह न सँभारई आपुनि आपुनि होइ ॥ १५६ ॥

- 65 कोइ घोदित जस पवन उडाहीँ । कोई चमकि बीजु बर जाहीँ ॥  
 कोई जस मल घाव तुसारू । कोई जइस बइल गरिशारू ॥  
 कोई हरुअ जानु रथ हाँका । कोई गरुअ मार होइ थाका ॥  
 कोई रे गहिँ जानउँ चाँटी । कोई टूटि होहिँ सरि माटी ॥  
 कोई खाहिँ पवन कर झोला । कोई करहिँ पाव बर डोला ॥  
 70 कोई परहिँ भँवर जल माँहा । फिरत रहहिँ कोइ देइ न बाँहा ॥  
 राजा कर मा अगुमन खेवा । खेवक आगइ सुआ परेवा ॥

कोइ दिन मिला सवेरई कोइ आवा पछ-राति ।

जा कर जो हुत साजु जस सो उवरा तेहि माँति ॥ १६० ॥

- 9.1 सतएँ समुद मानसर आए । सत जो कीन्ह सहस सिधि पाए ॥  
 देखि मानसर रूप सौहावा । हिअ हुलास पुरइनि होइ छावा ॥  
 75 गा अधिआर रहनि मति छूटी । मा भितुसार किरिन रवि कूटी ॥  
 असतु असतु साथी सब पोले । अंध जो अहे नयन विधि खोले ॥  
 कबँल विगसि तहँ विहँसी देही । भँवर दसन होइ होइ रस लेही ॥  
 हँसहिँ हंस अउ करहिँ किरीटा । बुनहिँ रतन मुकुटाहलि हीरा ॥  
 जो अस साथि आव तप जोगू । पूजइ आस मान रस भोगू ॥  
 भँवर जो मनसा मानसर लीन्ह कबँल रस आइ ।

- 80 पुन जो हिआउन कइ सका भूर काठ तस खाइ ॥ १६१ ॥

रति सात-समुदर खंड ॥ १५ ॥

## अथ सिंघल-दीप-भाउ खंड ॥ १६ ॥

पूछा राजइ कहु गुरु सुआ । न जनउँ आजु कहा दहु उआ ॥  
 पवन वास सीतल लैइ आवा । काया दहत चँदन जनु लावा ॥  
 कबहुँ न अइस जुडान सरीरु । परा अगिनि महँ मलय-समीरु ॥  
 निकसत आउ किरिन रवि रेखा । तिमिर गए निरमर जग देखा ॥  
 उठइ मेघ अस जानउँ आगइ । चमकइ वीजु गगन पर लागइ ॥ 5  
 तेहि ऊपर जनु ससि परगासा । अउ सौ चाँद कचपची गरासा ॥  
 अउरु नखत चहुँ दिसि उँजिआरी । ठावँहिँ ठावँ दीप अस वारी ॥

अउरु दखिन दिसि निअर-हि कंचन मेरु देखाउ ।

जनु वसंत रितु आवइ तस वसंत जग आउ ॥ १६२ ॥  
 तूँ राजा जस विकरम आदी । तूँ हरिचंद बइनु सत-वादी ॥  
 गोपिचंद तुहँ जीता जोगा । अउ भरथरी न पूज विओगा ॥ 10  
 गोरख सिद्धि दीन्ह तौहि हाथू । तारी गुरु मछंदर-नाथू ॥  
 जीता पेम तेँ पुहुमि अकास । दिसिटि परा सिंघल कविलास ॥  
 वैइ जौ मेघ गढ लाग अकासा । बिजुरी कनइ कोट चहुँ पासा ॥  
 तेहि पर ससि जो कचपचि भरा । राज-मँदिर सोनइ नग जरा ॥  
 अउर-उ नखत कहैसि चहुँ पासा । सब रानिन्ह कइ आहि अवासा ॥ 15

गगन सरोवर ससि कवँल कुमुद तराईँ पास ।

तूँ रवि ऊआ भवँर होइ पवन भिला लैइ वास ॥ १६३ ॥

- १ सो गद देखु गगन तहँ जँचा । नयन देखि कर नाहि पहुँचा ॥  
 विशुरी चकर फिरहिँ चहुँ फेरे । अउ जमकात फिरहिँ जम करे ॥  
 धाइ जो बाजा कइ मन साधा । मारा चकर भगुठ दुइ आधा ॥  
 २० चाँद सुरुज अउ नखत तराई । तेहि डर अंतरिस फिरहिँ सवाई ॥  
 पवन जाइ तहँ पहुँचा चहा । मारा तइस दूटि भुई बहा ॥  
 अगिनि उठी जरि बुझी निआना । धुआँ उठा उठि बीच मिलाना ॥  
 पानि उठा तहँ जाइ न छूआ । बहुरा रोइ आइ भुई चूआ ॥

रामन चहा सउँह कइ (हरा) उतरि गए दस माथ ।

संकर धरा ललाट भुई अउरु को जोगी-नाथ ॥ १६४ ॥

- २५ तहाँ देखु पदुमावति रामा । भवँ न जाइ न पंखी नामा ॥  
 अब सिधि एक देउँ तोहि जोगू । पहिलइ दरस होइ तउ भोगू ॥  
 फँचन मेरु देखावति जहाँ । महादेव कर मंडप तहाँ ॥  
 ओहि क खंड जस परपत मेरु । मेरु-हि लागि होइ अति फेरु ॥  
 माघ मास पाछिल परत लागे । सिरी पंचमी होइहि आगे ॥  
 ३० उपरिहि महादेव कर वारु । पूजइ जाइ सकल संसारु ॥  
 पदुमावति पुनि पूजइ आना । होइहि ओहि मिखु दिसिदि भैरावा ॥  
 तुम्ह गऐनहु ओहि मंडप हउँ पदुमावति पास ।

पूजइ आइ बसंत जउ तउ पूजिहि मन आस ॥ १६५ ॥

- राजइ कहा दरस जउ पावउँ । परचत काह गगन कहँ धावउँ ॥  
 जोहि परबत पर दरसन लहना । सिर सउँ चढउँ पाउँ का कहना ॥  
 ३५ मो-हँ भाउ ऊँच सउँ ठाऊँ । ऊँचइ सेउँ विरीतम नाऊँ ॥  
 पुस्तहि चाहिथ ऊँच दियाऊ । दिन दिन ऊँचइ राखइ पाऊ ॥  
 सदा ऊँच पइ सेइथ वारु । ऊँचइ सउँ कीजिथ बेरवारु ॥  
 ऊँचइ चढ़इ ऊँच खंड छम्हा । ऊँचइ पास ऊँच मति बुझा ॥  
 ऊँचइ संग संगति निति कीजिभ । ऊँचइ लाइ जीउ पुनि दीजिभ ॥

दिन दिन ऊँच होइ सो जेहि ऊँचइ पर चाउ ।

ऊँच चढत जउ खसि परइ ऊँच न छाँडिअ काउं ॥ १६६ ॥ 40

हीरा-मनि दैइ बचा कहानी । चलेउ जहाँ पदुमावति रानी ॥

राजा चलेउ सवँरि सो लता । परवत कहँ जो चलेउ परवता ॥

का परवत चढि देखइ राजा । ऊँच मँडप सोनइ सब साजा ॥

अँवित फल सब लागु अपूरी । अउ तहँ लागु सजीअनि मूरी ॥

चउ-मुख मँडप चहँ केवारा । बइठे देवता चहँ दुआरा ॥ 45

भीतर मँडप चारि खँभ लागे । जिन्ह वेइ छुअइ पाप तिन्ह भागे ॥

संख घंट घन बाजहिँ सोई । अउ बहु होम जाप तहँ होई ॥

महादेव कर मँडप जगत जातरा आउ ।

जस हीँ छा मन जेहि कह सो तइसइ फल पाउ ॥ १६७ ॥

इति सिंघल-दीप-भाउ खंड ॥ १६ ॥



## अथ मंडप-गवँन खंड ॥ १७ ॥

- राजा भाउर बिरह बिद्योगी । चेला सहस तीस सँग जोगी ॥  
 पदुमावति के दरसन आसा । दँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा ॥  
 पुरुष बार होइ कइ सिर नावा । नावत सीस देव पहुँ आवा ॥  
 नमो नमो नारायन देवा । का मोहिँ जोग सकउँ कइ सेवा ॥  
 ४ तुहँ दयाल सब के उपराहीँ । सेवा केरि आस तौहि नाहीँ ॥  
 ना मोहिँ गुन न जीम रस-चाता । तुहँ दयाल गुन निरगुन दाता ॥  
 पुरबहु मोरि दरस कइ आसा । हउँ मारग जोअउँ हरि साँसा ॥  
 वैहि विधि विनय न जानउँ जेहि विधि असतुति वोरि ।  
 करु सु-दिसिटि अउ किरिपा हीँ छा पूजइ मोरि ॥ १६८ ॥  
 कइ असतुति जउ बहुत मनावा । सबद अकूत मँडप महुँ आवा ॥  
 १० मानुस पेम मगुअ बइकुंठी । नाहिँ त काह छार एक मुंठी ॥  
 पेमहि माँह बिरह अउ रसा । मयन के घर मधु अंजित बसा ॥  
 निसत घाइ जउ भरउ तौ काहा । सत जउ करइ बइठि होइ लाहा ॥  
 एक बार जउ मन देइ सेवा । सेवहि फल परसन होइ देवा ॥  
 सुनि कइ सबद मँडप भनकारा । बइठहु आइ पुरुष के बारा ॥  
 १५ पिंडु बडाइ छार जेत आँटी । माटी होहु अंत जो माटी ॥  
 माटी मोल न किछु लहइ अउ माटी सब मोल ।  
 दिसिटि जौ माटी सउँ फरइ माटी होइ अमोल ॥ १६९ ॥

बइठि सिंघ-छाला होइ तपा । पदुमावति पदुमावति जपा ॥  
 दिसिटि समाधि ओही सउँ लागी । जेहि दरसन कारन बहरागी ॥  
 किँ गरि गहे बजावइ भूरी । भोर साँभ सिंगी निति पूरी ॥  
 कंधा ज़रइ आगि जानु लाई । विरह धँधोर जरत न चुगलाई ॥ 20  
 नयन रात निसि मारग जागे । चक्रित चकोर जानु ससि लागे ॥  
 कुंडल गहे सीस भुईं लावा । पावँरि होउँ जहाँ ओहि पावा ॥  
 जटा छोरि कइ बार बौहारउँ । जेहि पँथ आउ सीस तहँ वारउँ ॥  
 चारि-हु चकर फिरइ मन (खोजत) डँड न रहइ थिर मार ।  
 होइ कइ भसम पवन सँग (धावउँ) जहाँ परान अधार ॥ १७० ॥

इति मंडप-गवैन खंड ॥ १७ ॥

## अथ पदुमावति-विओग खंड ॥ १८ ॥

पदुमावति तेहि जोग सँजोगा । परी पेम बस गहे विओगा ॥  
नींद न परइ रहनि जो आवा । सेज केवाँछ जानु कोउ लावा ॥  
ढहइ चाँद अउ चंदन चीरू । दगध करइ तन बिरह गँभीरू ॥  
कलप-समान-रहनि तेहि बाढी । तिल तिल जो जुग जुग पर-गाढी ॥  
८ गहे बीन मकु रहनि बिहाई । ससि-चाहन तब रहइ ओनाई ॥  
पुनि घनि सिंघ उरेइ लागइ । अइसी बिधा रहनि सब जागइ ॥  
फहाँ हो भँवर कवँल-रस लेवा । आइ परहु होइ धिरिनि परेवा ॥

सो घनि बिरह पतँग भइ जरा चहइ तेहि दीप ।

कंत न आउ भिरिँग होइ को चंदन तन लीप ॥ १७१ ॥

परी बिरह-वन जानहुँ घेरी । अगम असक जहाँ लगि हेरी ॥  
१० चतुर दिसा चितवइ जनु भूली । सो वन कवन जौ मालति फूली ॥  
कवँल भँवर उह-ई वन पावइ । को मिलाइ तन-सपनि सुभावइ ॥  
अंग अनल अस कवँल सरीरा । हिअ भा पिअर पेम बइ पीरा ॥  
बहइ दरस रवि कीन्ह बिगाछ । भँवर दिसिटि महुँ कवँल अकाछ ॥  
पूछइ धाइ बारि कहु पाता । तुहँ जस कवँल-कली रँग राता ॥  
१५ कैसर बरन हिआ भा तोरा । मानहुँ मनहिँ मप्रउ किछु मोरा ॥  
पवन न पावइ संचरइ भँवर न तहाँ बईठ ।  
भूलि कुरंगिनि कस मप्रउ मनहुँ सिंघ तुहँ डीठ ॥ १७२ ॥

धाइ सिंघ वरु खातेउ मारी । कइ तसि रहति आहि जस वारी ॥  
 जोवन सुनेउँ कि नवल वसंतू । तेहि वन परेउ हसति मइमंतू ॥  
 अब जोवन चारी को राखा । कुंजल विरह विधाँसइ साखा ॥  
 मइँ जानेउँ जोवन रस-भोगू । जोवन कठिन सँताप विश्रोगू ॥ 20  
 जोवन गरुअ अपेल पहारू । सहि न जाइ जोवन कर भारू ॥  
 जोवन अस मइमंत न कोई । नवँइ हसति जउ आँकुस होई ॥  
 जोवन भर भादउ जस गंगा । लहरइ देइ समाइ न अंगा ॥  
 परिउँ अथाह धाइ हउँ जोवन उदधि गँभीर ।

तेहि चितवउँ चारि-हु दिसि को गहि लावइ तीर ॥ १७३ ॥

पदुमावति तू समुद सयानी । तोहि सरि समुद न पूजइ रानी ॥ 25  
 नदी समाहिँ समुद मँहँ आई । समुद डोलि कहु कहाँ समाई ॥  
 अब-हीँ कवल-करी हिअ तोरा । अइहइ भँवर जौ तो कहँ जोरा ॥  
 जोवन-तुरी हाथ गहि लीजिअ । जहाँ जाइ तहँ जान न दीजिअ ॥  
 जोवन जोर मात गज अहई । गहहु ग्यान आँकुस जिमि रहई ॥  
 अबहिँ वारि तुँ पेम न खेला । का जानसि कस होइ दुहेला ॥ 30  
 गगन दिसिटि करु नाइ तराहीँ । सुरुज देखु कर आवइ नाहीँ ॥

जव लगि पीउ मिलइ तोही साधु पेम कइ पीर ।

जइस सीप सेवाती कहँ तपइ समुद मँभ नीर ॥ १७४ ॥ :

दहइ धाइ जोवन अउ जीऊ । होई परइ अगिनि मँहँ धीऊ ॥  
 करवत सहउँ होत दुइ आधा । सहि न जाइ जोवन कइ दाधा ॥  
 विरहा सुभर समुद असँभारा । भँवर मेलि जिउ लहरहिँ मारा ॥ 35  
 विरह नाग होइ सिर चढि डसा । अउ होइ अगिनि चाँद मँहँ वसा ॥  
 जोवन पंखी विरह विआधू । केहर भण्ड कुरंगिनि खाधू ॥  
 कनक-पानि कित जोवन कीन्हा । अउटन कठिन विरह ओहि दीन्हा ॥  
 जोवन जलहि विरह मसि छूआ । फूलहिँ भँवर फरहिँ भा स्रआ ॥

जोवन चाँद उआ जस बिरह भाउ सँग राहु ।

10 घटतहि घटत छीन मइ कहै न पारउँ काहु ॥ १७५ ॥

नयन जो बाक फिरहि चहुँ ओरा । चरचह धाइ समाइ न कोरा ॥

कहेसि पेम जउ उपना धारी । बाँधहु सत मन डोल न मारी ॥

जेहि जित महुँ सत होइ पहारु । परइ पहार न बाँकइ बारु ॥

सती जो जरइ पेम पिअ लागी । जउ सत हिअ तउ सीतल आगी ॥

15 जोवन चाँद जो चउदस-करा । बिरह क विनगि चाँद पुनि जरा ॥

पवन-बंध सो जोगी जती । काम-बंध सो कामिनि सती ॥

आउ वसंत फूल फुलवारी । देख्यो-भार सब जइहहि बारी ॥

तुम्ह पुनि जाहु वसंत सेइ पूजि मनानहु देउ ।

जीउ पाइ जग जनम कइ पीउ पाइ कइ सेउ ॥ १७६ ॥

जय लागि अवधि चाह सो आई । दिन जुग पर बिरहिनि कहँ जाई ॥

20 नींद भूख अह-निसि गइ दोऊ । हिअई मारि जस कलपइ कोऊ ॥

रोअँ रोअँ जनु लागहि चँटे । छत छत बेधहि जनु कँटे ॥

दगधि कराइ जरइ जस धीऊ । बेगि न आउ मलइ-गिरि पीऊ ॥

कवन देख्यो कहँ जाइ परासउँ । जेहि सुमेरु हिअ लाइ गरासउँ ॥

गुपुठ जो फल साँसहि परगटे । अथ होइ सुमर चहहि पुनि घटे ॥

25 भाउ सँजोग जो रे अस मरना । भोगी गए भोग का करना ॥

जोवन चंचल दीठ हइ करइ निकाजइ काज ।

धनि कुलवंति जो कुल धरइ कइ जोवन मन लाज ॥ १७७ ॥

इति पटुमाधवि-विश्रोग चंड ॥ १८ ॥

## अथ पदुमावति-सुआ-भेंट खंड ॥ १९ ॥

तेहि विओग हीरा-मनि आवा । पदुमावति जानहुँ जिउ पावा ॥  
 कंठ लाइ सखा सो रोई । अधिक मोह जउ मिलइ विछोई ॥  
 बुझा उठा दुख हिअई गँभीरु । नयनहिँ आइ चुआ होइ नीरु ॥  
 रही रोइ जउँ पदुमिनि रानी । हँसि पूँछहिँ सव सखी सयानी ॥  
 मिले रहस चाहिअ भा दूना । कित रोइअ जउ मिला विछूना ॥ ५  
 तेहि क उतर पदुमावति कहा । विछुरन दुख जो हिअई भरि रहा ॥  
 मिलत हिअई आप्रउ सुख भरा । वह दुख नयन नीर होइ दरा ॥  
 विछुरंता जब भेंटइ सो जानइ जेहि नेह ।

सुख सुहेला उगवइ दुख भरइ जिमि मेह ॥ १७८ ॥  
 पुनि रानी हँसि कूसर पूँछा । कित गवँनेहु पीँजर कह छूँछा ॥  
 रानी तुम्ह जुग जुग सुख पाटू । छाज न पंखिहि पीँजर ठाटू ॥ १०  
 जउँ भा पंख कहाँ थिरु रहना । चाहइ उडा पाँख जउँ डहना ॥  
 पीँजर महँ जो परेवा घेरा । आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा ॥  
 दिवस-क आइ हाथ पइ मेला । तेहि डर बनोवास कहँ खेला ॥  
 तहाँ विआध आइ नर साधा । छूट न पाउ मीचु कर बाँधा ॥  
 वेइ धरि बेँचा बाम्हन हाथा । जंबू-दीप गप्रउँ तेहि साथ ॥ १५  
 तहाँ चितर चितर-गढ चितर-सेन कर राज ।  
 टीका दीन्ह पुतर कहँ आपु लीन्ह सिउ-साज ॥ १७९ ॥

बइठ जौ राज पिता के ठाऊँ । राजा रतन-सेन ओहि नाऊ ॥  
 का बरनउँ धनि देस दियारा । जहँ अस नग उपना उँजिआरा ॥  
 धनि माता अउ पिता बखाना । जेहि के बंस अंस अस आना ॥

- 20 लखन बतीस-उ कुल निरभरा । बरनि न जाइ रूप अउ करा ॥  
 चेइ हउँ लीन्ह अहा अस भागू । चाहइ सोनइ मिला सौहागू ॥  
 सौ नग देखि हीँ छा मद मोरी । हइ यह रतन पदारथ जोरी ॥  
 हइ ससि जोग इहइ पइ भानू । तहँ तौहार मई कीन्ह बखानू ॥

कहाँ रतन रतना-गिरी कंचन कहाँ सुमेरु ।

दइउ जौ जोरी दुहुँ लिखी मिली सौ कउन-हुँ फेरु ॥ १८० ॥

सुनि पइ विरह-चिनगि ओहि परी । रतन पाउ जउ कंचन-करी ॥  
 कठिन पेम विरहा दुख भारी । राज छाडि भा जोगि भिखारी ॥  
 मालति लागि भँवर जस होई । होइ बाउर निसरा सुधि खोई ॥  
 कहैसि पतंग होइ धनि लेऊँ । सिंगल-दीप जाइ जिउ देऊँ ॥

- 30 सुनि ओहि फोउ न छाडि अकेला । सोरह सहस कुअर भग्न चेला ॥  
 अउरु गनइ को संग सहाई । महादेशो-भट भेला जाई ॥  
 धरुज पुरुस दरस कइ ताई । चितवइ चाँद चकोर कि नाई ॥  
 तुम्ह बारी रस जोग जेहि कँलहि जस अरधानि ।

तस धरुज परगास कइ भँवर मिलाग्रउँ आनि ॥ १८१ ॥

हीरा-मनि जौ कही यह बाता । सुनि कइ रतन पदारथ राता ॥  
 जस धरुज देखइ होइ थोपा । तस भा विरह काम-दल कोपा ॥

- 35 पइ सुनि जोगी फेर बखानू । पदुमावति मन भा अभिमानू ॥  
 कंचन जउ कमिअइ कइ ताता । तब जानहु दहुँ पीव कि राता ॥  
 कंचन-करी न फाँसुहिँ लोभा । जउ नग होइ पावइ तब सोभा ॥  
 नग कर मरम सौ जरिया जाना । बुरइ जौ अम नग हीर बखाना ॥  
 को अस हाथ सिंघ-मुख घालइ । को यह बाव पिता सउँ चालइ ॥

सरग ईंदर डरि काँपइ वासुकि डरइ पतार ।

कहँ अस वर पिरिधुमीँ मोहिँ जोग संसार ॥ १८२ ॥ 40

तू रानी ससि कंचन-करा । वह नग रतन सर निरमरा ॥

विरह वजागि बीच का कोई । आगि जो छुअइ जाइ जरि सोई ॥

आगि बुझाइ धोइ जल काढ़इ । वह न बुझाइ आगि अति वाढ़इ ॥

विरह कि आगि सर नहिँ टीका । रातिहिँ दिवस फिरइ अउ धीका ॥

खनहिँ सरग खन जाइ पतारा । थिर न रहइ तेहि आगि अपारा ॥ 45

धनि सो जीउ दगध इमि सहा । अकसर जरइ न दोसर कहा ॥

सुलगि सुलगि भीतर होइ सावाँ । परगट होइ न कहा दुख नावाँ ॥

कहा कहउँ हउँ ओहि सउँ जेहि दुख कीन्ह न मेट ।

तेहि दिन आगि करउँ ग्रहि(वाहर) होइ जेहि दिन सो भेँट ॥ १८३ ॥

सुनि कइ धनि जारी अस काया । तन भउ साँच हिअई भउ माया ॥

देखउँ जाइ जरइ जस भानू । कंचन जरइ अधिक होइ वानू ॥ 50

अव जउ मरइ सो पेम विओगी । हतिआ मोहिँ जेहि कारन जोगी ॥

हीरा-मनि जो कही तुम्ह वाता । रहिहउँ रतन-पदारथ राता ॥

जउ वह जोग सँभारइ छाला । देखउँ भुगुति देहउँ जय-माला ॥

आउ वसंत कुसल सउँ पावउँ । पूजा मिस मंडप कहँ आवउँ ॥

गुरु के वइन फूल मई गाँथे । देखउँ नयन चढावउँ माँथे ॥ 55

कवल-भँवर तुम्ह वरना मई पुनि माना सोइ ।

चाँद सर कहँ चाहिअ जउ रे सर वह होइ ॥ १८४ ॥

हीरा-मनि जो कही यह वाता । पाग्रउ पान भग्रउ मुख राता ॥

चला सुआ तव रानी कहा । भा जो पराउ सो कइसइ रहा ॥

जो निति चलइ सँवारइ पाँखा । आहु जो रहा कान्हि को राखा ॥

न जनउँ आहु कहाँ दहुँ ऊआ । आग्रउ मिलइ चलेहु मिलि सुआ ॥ 60

मिलि कइ विछुर मरन कइ आना । कित आग्रउ जउ चलेहु निदाना ॥



अनु रानी हउँ रहँतेउँ राँधा । कइसइ रहउँ बचा कर बाँधा ॥  
ता करि दिसिदि अइस तुम्ह सेवा । जइस कूँज मन सहज परेवा ॥

बसइ मीन जल धरती अंघा बसइ अकास ।

जउ पिरीति पइ दोउ महँ अंत होहिँ प्रक पास ॥ १८५ ॥

७७ आवा सुआ बइठ जहँ जोगी । मारग नयन बिओग बिओगी ॥  
आइ परेवई कहा सँदेख । गोरख मिला मिला उपदेख ॥  
तुम्ह कहँ गुरु मया यहु कीन्हा । कीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा ॥  
सबद एक होइ कहा अकेला । गुरु जस भिंग पनिग जस चेला ॥  
भिगी ओहि पंखी पइ लेई । एकहि चार गहइ जिउ देई ॥

७० ता कहँ गुरु करइ असि माया । नउ अउतार देइ नइ काया ॥  
होइ अमर अस मर कइ जीआ । मँवर कँवल मिलि कइ मधु पीआ ॥

आवइ रिदू बसंत जब तब मधुकर तब बासु ।

जोगी जोग जो इमि करइ सिद्धि समाप्त तासु ॥ १८६ ॥

इति पदुमायति-सुआ-भेँट खंड ॥ १६ ॥

## अथ वसंत खंड ॥ २० ॥

दइअ दइअ कइ सौ रितु गवाँई । सिरी-पंचमी पूजी आई ॥  
 भण्ड हुलास नउल रितु माहाँ । खन न सोहाइ धूप अउ छाहाँ ॥  
 पदुमावति सब सखी हँकारी । जावँत सिँघलन्दीप कइ वारी ॥  
 आजु वसंत नउल रितु-राजा । पंचमि होइ जगत सब साजा ॥  
 नउल सिँगार बनाफर कीन्हा । सीस परासहि सेँदुर दीन्हा ॥ 5  
 विगसि फूल फूले बहु वासा । भवँर आई लुबुधे चहुँ पासा ॥  
 पिअर पात दुख भरे निपाते । सुख पल्लउ उपने होइ राते ॥

अवधि आई सो पूजी जो इच्छा मन कीन्ह ।

चलहु देउ-मढ गोहने चहउँ सौ पूजा दीन्ह ॥ १८७ ॥

फिरी आन रितु-वाजन वाजे । अउ सिँगार वारिन्ह सब साजे ॥  
 कवल-करी पदुमावति रानी । होइ मालति जानहुँ विगसानी ॥ 10  
 तारा-मँडर पहिरि भल चोला । अउ पहिरइ ससि नखत अमोला ॥  
 सखी कुमोद सहस दस संगी । सबइ सुगंध चढाए अंगा ॥  
 सब राजा रायन्ह कइ वारी । वरन वरन पहिरहिँ सब सारी ॥  
 सबइ सरूप पदुमिनी जाती । पान फूल सेँदुर सब राती ॥  
 करहिँ कुरेल सुरंग रंगीली । अउ चोआ चंदन सब गीली ॥ 15

चहुँ दिसि रही सुवासना फुलवारी अस फूल ।

वेइ वसंत सउँ भूलीँ गा वसंत ओहिँ भूल ॥ १८८ ॥

- मइ आहाँ पद्मावति चली । छचिस कुरि मई गोहन भली ॥  
 मइ गउरी सँग पहिरि पटोरा । बौमनि ठाउँ सहस अँग मोरा ॥  
 थगरगारि गज-गवन करेई । बइसिनि पाउँ हंस-गति देई ॥  
 २० चंदेलिनि ठमकहि पगु दारा । चलि चउहानि होइ भनकारा ॥  
 चली सौनारि सौहाग सौहाती । अउ कलगारि पेम-मधु माती ॥  
 वानिनि देइ सेदुर भल माँगा । कइधिनि चली समाहि न आँगा ॥  
 पटइनि पहिरि मुरँग तन चोला । अउ बरइनि मुख खात तमोला ॥  
 चली पउन सब गोहने फूल डार लेइ हाथ ।  
 धौमुनाथ कइ पूजा पद्मावति के साथ ॥ १८६ ॥
- २५ ठठेरिनि चलि बहु ठाठर कीन्हे । चली अहीरिनि काजर दीन्हे ॥  
 गूजरि चलि गोरस कइ माती । तंगेलिनि चलि रँग महु राती ॥  
 चली लोहारिनि पदनई नयना । माँटिनि चली मधुर मुख पयना ॥  
 गंधिनि चली सुगंध लगाए । छीपिनि छीपई चीर रँगाए ॥  
 रँगरेजिनि तन राती सारी । चली चोर सउँ नाउनि बारी ॥  
 ३० मालिनि चली फूल लेइ गाँये । तेलिनि चली फुलाप्रल माँये ॥  
 कइ सिँ गार बहु बैसया चली । जहँ लागि भूँदी बिकमी कली ॥  
 नटिनि डोमिनि डोलिनी सहनाइनि भेरिकारि ।  
 निरतत तंत विनोद सउँ बिहँसत खेलत नारि ॥ १८७ ॥
- कनैल सहाय चली फूलगारी । फर फूलन्ह कइ इच्छा-बारी ॥  
 आपु आपु मई करहि जोहारु । यह बसंत सन कहै तेनहारु ॥  
 ३५ चहइ मनोरा मूमक होई । फर अउ फूल लिप्रउ सब कोई ॥  
 फागु खेलि पुनि दाहय होरी । सेतव रोह उडाउव भोरी ॥  
 थाजु साजि पुनि दिवस न दूजा । खेल बसंत लेहु कइ पूजा ॥  
 मा आप्मु पद्मावति केरा । बहुरि न थाइ करव हम फेरा ॥  
 तम हम कहै होइहि रखगारी । पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी ॥

पुनि रे चलत्र घर आपुन पूजि विसेसर देउ ।

जेहि का होइ खेलना आजु खेल हँसि लेउ ॥ १६१ ॥ 40

काहु गही आव कइ डारा । काहु विरह चाँप अति भारा ॥  
 को नारंग कोइ भार चिरउँजी । कोइ कटहरि वडहर कोइ नउँजी ॥  
 कोइ दारिउँ कोइ दाख सो खीरी । कोइ सदाफर तुरँज जँभीरी ॥  
 कोइ जइफर कोइ लउँग सुपारी । कोइ कमरख कोइ गुआ छोहारी ॥  
 कोइ विजउर कोइ नरिअर जूरी । कोइ इविँली कोइ महुअ खजूरी ॥ 45  
 कोई हरिफा-रेउरि कसउँदा । कोइ अउँरा कोइ राइ-करउँदा ॥  
 काहु गही केरा कइ धउरी । काहु हाथ परी निँउ-कउरी ॥

काहु पाई निअरई काहु कहँ गइ दूर ।

काहु खेल भण्ड विख काहु अंत्रित-मूर ॥ १६२ ॥

पुनि वीनहिँ सब फूल सहेली । जो जेहि आस पास सब बेली ॥  
 कोइ केवरा कोइ चाँप नैवारी । कोइ केतकि मालति फुलवारी ॥ 50  
 कोइ सतिवरगं कूँद अउ करना । कोइ चवैँइलि नगेसरि वरना ॥  
 कोइ सो गुलाल सुदरसन कूजा । कोइ सोनिजरद भल पूजा ॥  
 कोइ सो मउलसिरि पुहुप वकउरी । कोइ रूप-माँजरि अउ गउरी ॥  
 कोइ सिंगार-हार तेहि पाँहा । कोइ सेवती कदम कि छाँहा ॥  
 कोइ चंदन फूलहिँ जनु फूलीँ । कोइ अजान वीरउ तर भूलीँ ॥ 55

(कोइ) फूल पाउ कोइ पाती जेहि क हाथ जो आँट ।

(कोइ सो) हार चीर उरभाना जहाँ छुअइ तहँ काँट ॥ १६३ ॥

फर फूलन्ह सब डार ओढाईँ । भूँड वाँधि कइ पंचम गाईँ ॥  
 वाजहिँ ढोल दुंदु अउ भेरी । माँदर तूर भाँभ चहुँ फेरी ॥  
 सिंग संख डफ वाजन वाजे । वंसकार महुअरि सुर साजे ॥ 60  
 अउरु कहिअ जित वाजन भले । भाँति भाँति सब वाजत चले ॥  
 रथहिँ चढीँ सब रूप सोहाईँ । लेइ वसंत मढ-मँडफ सिधाईँ ॥

नउल बसंत नउल वेइ बारी। सेँदुर यूका होइ धमारी ॥  
 खनहिँ चलहिँ खन चौंवर होई। नाँच कोड भूला सप कोई ॥  
 सेँदुर-सेइ उठा तस गगन भगुउ सव राति ।

राति सकल महि घरती राति बिरिख बन पाति ॥ १६४ ॥

६५ ग्रहि विधि खेलत सिंघल-रानी। महादेओ मढ जाइ तुलानी ॥  
 सकल देखोवा देखइ लागे। दिसिदि पाप सव तिन्ह के मागे ॥  
 ग्रहि कबिलास मुनी अपद्वरी। कहौ तई आईँ परमेसरी ॥  
 कोई कहइ पदुमिनी आईँ। कोई कहइ ससि नखत तराईँ ॥  
 कोई फइ फूल कोई फूलबारी। भूले सवइ देखि सप बारी ॥

१० प्रक सरूप अउ सेँदुर सारी। जानहुँ दिआ सकल महि बारी ॥  
 गुरुधि परइ जावँत जे जोइइ। जानहुँ मिरिग दिआराहिँ मोइइ ॥  
 कोई परा मयँर होइ बास लीन्ह जनु चाँद ।

कोई पतँग मा दीपक होइ अघ-जर तन काँप ॥ १६५ ॥

पद्ममावति गइ देखो-दुआरु। मीतर मँडफ कीन्ह पइसारु ॥  
 देखोहि साँसउ मा जिउ केरा। मागउँ कोहि दिसि मँडफ घेरा ॥  
 एक जोहार कीन्ह अउ दूजा। विसरइ आइ चढाई पूजा ॥  
 कर फूलन्ह सव मँडफ मरावा। चंदन अगर देखो अन्हवावा ॥  
 मरि सेँदुर आगइ मइ खरी। परसि देखो पुनि पाग्रन्ह परी ॥  
 अउरु सहेली सवइ बिआहीँ। मो कहँ देखो कतहुँ पर नाहीँ ॥  
 हउँ निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा। गुन निरगुन दावा तुम्ह देवा ॥

पर सँजोग मोहिँ मिरवहु कलस जात हउँ मानि ।

१० जेहि दिन हीँछा पूजइ बेगि चढानउँ आनि ॥ १६६ ॥  
 हीँछि हीँछि भिनरा जस जानी। पुनि कर जोरि ठाठि भइ रानी ॥  
 उतर को देइ देखो मरि गगुउ। सवइ अकूत मँडफ महुँ मगुउ ॥  
 फाटि पभारा जइस परेवा। मरि मा ईस अउरु को देवा ॥

भग्न बिनु जिउ सब नाउत ओझा । बिख भइ पूरि काल भा गोझा ॥  
 जो देखइ जनु विसहर डँसा । देखि चरित पदुमावति हँसा ॥ 85  
 भल हम आइ मनावा देवा । गा जनु सोइ को मानइ सेवा ॥  
 को हीँछा पुरवइ दुख धोआ । जेहि मनि आग्र सोई तन सोआ ॥  
 जेहि धरि सखीँ उठावहिँ सीस विकल नहिँ डोल ।

धर जिउ कोइ न जानइ मुख रे बकत कुबोल ॥ १६७ ॥  
 ततखन एक सखी बिहँसानी । कउतुक एक न देखहु रानी ॥  
 पुरुष द्वार मढ जोगी छाए । न जनउँ कउन देस तहँ आए ॥ 90  
 जनु उन्ह जोग तंत अब खेला । सिद्ध होइ निसरे सब चेला ॥  
 उन्ह महँ एक गुरु जो कहावा । जनु गुड देइ काहू वडरावा ॥  
 कुअर वतीस-उ लखन सो राता । दसएँ लखन कहइ एक वाता ॥  
 जानहुँ आहि गोपिचंद जोगी । कह सो आहि भरथरी विओगी ॥  
 वह जो पिँगला कजरी-आरन । यह सो सिँधला दहुँ केहि कारन ॥ 95  
 यह मूरति यह मुदरा हम न देख अउधूत ।

जानहुँ होहिँ न जोगी कोइ राजा कर पूत ॥ १६८ ॥  
 सुनि सो बात रानी रथ चढी । कहँ अस जोगि जो देखउँ मढी ॥  
 लेइ सँग सखीँ कीन्ह तहँ फेरा । जोगिन्ह आइ आछरिन्ह घेरा ॥  
 नयन कचूर पेम-मद भरे । भइ सो दिसिटि जोगी सउँ ढरे ॥  
 जोगिहि दिसिटि दिसिटि सउँ लीन्हा । नयन रूप नयनहिँ जिउ दीन्हा ॥ 100  
 जो मद चहत परा तेहि पालइँ । सुधि न रही ओहि एक पिआलइँ ॥  
 परा माँति गोरख कर चेला । जिउ तन छाडि सरग कहँ खेला ॥  
 किँ गरी गहे जो हुत बहरागी । मरतिहिँ कर उहइ धुनि लागी ॥  
 जेहि धंधा जा कर मन लागइ सपनेहुँ स्रम सो धंध ।  
 तेहि कारन तपसी तप साधहिँ करहिँ पेम मन बंध ॥ १६९ ॥  
 पदुमावति जस सुना बखानू । सहसहुँ करा देखेसि तस भानू ॥ 105

- मेलैमि चंदन मकु खन जागा । अधिकउ सोव सीर तन लाग्या ॥  
 तन चंदन आखर हिअ लिखे । भीख लेइ तुई जोग न सिखे ॥  
 चार आई तब गा तू सोई । कइसइ भुगुति परापति होई ॥  
 अब जउं खर अइउ ससि रावा । आग्रहु चदि सौ गगन पुनि सावा ॥  
 ११० लिखि कइ बात सखिन्ह सउं कही । इहइ ठाउँ हउं चारति अही ॥  
 परगट होउं तउ होइ अस भंगू । जगत दिआ कर होइ पतंगू ॥  
 जा सउं हउं चरु हेरउं सोइ ठाउँ जिउ देइ ।

प्रहि दुख कतहुं न निसरउं को हतिआ असि लेइ ॥ २०० ॥

- फीन्ह पयान सगन्ह रय हाँका । परबत छाडि सिँघल-नाड ताका ॥  
 मप्र घलि सबइ देखौता बली । हतिआरिन हतिआ लेइ बली ॥  
 ११५ को अस हितू मृए गइ बाही । जउं पइ जिउ आपुन तन नाही ॥  
 जउ लहि जिउ आपुन सन कोई । विनु जिउँ सनइ निरापुन होई ॥  
 माइ पंधु अउ भीत पियारा । विनु जिउँ घडी न राखइ पारा ॥  
 विनु जिउँ पीँड छार करि कूरा । छार मिलावइ सो हित पूरा ॥  
 चेहि जिउँ विनु अन मर मा राजा । को उठि बढि गरय सउं गाजा ॥

परी कया भई रोअई कहाँ रेजिउ बलिभीउ ।

को उठाइ बइसारइ बाहु पिरीतम जीउ ॥ २०१ ॥

- पदुमावति सौ मंदिर परईठी । हंसत सिँघासन जाइ बईठी ॥  
 निसि सुती मुनि कया निहारी । मा बिहान अउ सरी हँकारी ॥  
 देखौ पूजि जस आग्रउं काली । सपन एरु निसि देखेउं आली ॥  
 अनु समि उदउ पुरुन दिसि लीन्हा । अउ रवि उदउ पछिउं दिसि कीन्हा ॥  
 १२० पुनि बलि घर बाँद पहिँ आया । बाँद सुरुज दुहुँ मप्र भेरावा ॥  
 दिन अउ राति जानु मप्र एका । राम आइ राखौन-नाड छेँका ॥  
 तस किन्हु कहा न जाग्र निखेधा । अरखन-वान राहु गा बेधा ॥

जनहुँ लंक सव लूसी हनू विधाँसी वारि ।

जागि उठेउँ अस देखत सखि कहू सपन विचारि ॥ २०२ ॥

सखी सौ बोली सपन विचारी । जौ गइहु कान्हि देखौ कर वारी ॥

पूजि मनाइहु बहुत विनाती । परसन आइ भण्ड तुम्ह राती ॥ 130

सरुज पुरुष चाँद तुम्ह रानी । अस वर दइउ मेरावइ आनी ॥

पछिउँ खंड कर राजा कोई । सो आइहि वर तुम्ह कहँ होई ॥

किछु पुनि जूझ लागि तुम्ह रामा । राओन सउँ होइहि सँगरामा ॥

चाँद सरुज सउँ होइ विआहू । वारि विधंसव वेधव राहू ॥

जस ऊखा कहँ अनिरुध मिला । मेटि न जाइ लिखा परविला ॥ 135

सुख सौहाग हइ तुम्ह कहँ पान फूल रस भोगु ।

आजु कान्हि भा चाहिअ अस सपने क सँजोगु ॥ २०३ ॥

इति चसंत खंड ॥ २० ॥



## अथ राजा-रतनसेन-सती खंड ॥ २१ ॥

- कइ बसंत पदुमारति गई । राजहि तब बसंत सुधि भई ॥  
जो जागा न बसंत न बारी । नहिँ सो खेल न खेलन-हारी ॥  
ना उन्ह कइ यह रूप सोई । गइ हेराइ पुनि दिमिटि न आई ॥  
फूल भरे छात्री फूलनारी । दिसिटि परी उकठी सन छारी ॥  
८ कैई यह बसंत बसंत उजारा । गा सो चाँद अथवा लैइ तारा ॥  
अर तैहि बिनु जग भा अँध-रूपा । यह सुख छाँइ जरउँ हउँ धूपा ॥  
निरह दबाँ को जरत सिरावा । को पीतम सउँ करइ मेरावा ॥  
दियइ देस जो चंदन खैररा मिलि कइ लिखा बिछोड ।  
हाप भीँजि सिर पुनि सो रोअइ जो निचित्र अस सोड ॥ २०४ ॥  
जस बिछोड जल भीन दुहेला । जल हुति फाटि अगिनि मई मेला ॥  
१० चंदन आँक दाग होइ परे । घुमहिँ न ते आखर परजरे ॥  
जनु सर आगि होइ होइ लागे । सव बन दागि सिंघ बन दागे ॥  
जरहिँ मिरग बन-खंड तैहि ज्वाला । अउ ते जराहिँ बइठ तैहि छांला ॥  
कित ते आँक लिखे जिन्ह सोआ । महु आँकन्ह तैहि करत बिछोआ ॥  
जइस दुखैत फहँ साइँतला । मापउनलहि कामकंदला ॥  
१५ भगुन अंग नल जइस दमापति । नयनाँ मूँदि छपी पदुमारति ॥  
आइ बसंता छपि रहा होइ फूलन्ह के मेस ।  
कैहि विधि पापउँ भँवर होइ कउनु सो गुरु उपदेस ॥ २०५ ॥

रोअइ रतन माल जनु चूरा । जहँ होअ ठाढ होइ तहँ कूरा ॥  
 कहाँ वसंत सौ कोकिल बइना । कहाँ कुसुम अलि बेधी नइना ॥  
 कहाँ सौ मूरति परी जो डीठी । काढि लीन्ह जिउ हिअइ पईठी ॥  
 कहाँ सौ दरस परस जेहि लाहा । जउँ सौ वसंत करीलहि काहा ॥ 20  
 पात बिछोड रुख जो फूला । सो महुआ रोअइ अस भूला ॥  
 टपकहिँ महुअ आँसु तस परहीं । होइ महुआ वसंत जउँ भरहीं ॥  
 मोर वसंत सौ पदुमिनि वारी । जेहि बिनु भएउ वसंत उजारी ॥

पावा नउल वसंत पुनि बहु आरति बहु चोपु ।

अइस न जाना अंत होइ पात भरहिँ होइ कोपु ॥ २०६ ॥

अरे मलेछ विसुआसी देवा । कित मई आइ कीन्ह तौरि सेवा ॥ 26  
 आपुनि नाउ चढइ जो देई । सो तउ पार उतारइ खेई ॥  
 सुफल लागि पगु टेकैँ तोरा । सुआ क सेवँरि तूँ भा मोरा ॥  
 पाहन चढि जो चहइ भा पारा । सो अइसइ चूडइ मँक धारा ॥  
 पाहन सेवा कहा पसीजा । जरम न पलुहइ जउँ निति भीँ जा ॥  
 बाउर सोइ जो पाहन पूजा । सकति क भार लेइ सिर दूजा ॥ 30  
 कोहै न पूजिअ सोइ निरासा । मुए जिअत मन जा करि आसा ॥

सिंघ तरेँदा जेई गहा पार भए तेहि साथ ।

ते पइ चूडे वारि ही भेँड पूँछि जिन्ह हाथ ॥ २०७ ॥

देओ कहा सुनु वउरे राजा । देओहि अगुमन मारा गाजा ॥  
 जो पहिलई अपुनइ सिर परई । सो का काहु क धरहरि कई ॥  
 पदुमावति राजा कइ वारी । आइ सखिन्ह सउँ मँडफ उधारी ॥ 35  
 जइसइ चाँद गोहन सब तारा । परैँ भुलाइ देखि उँजिआरा ॥  
 चमकइ दसन वीजु कइ नाई । नयन-चकर जमकात भवँई ॥  
 हउँ तेहि दीप पतंग होइ परा । जिउ जम काढि सरग लैइ धरा ॥  
 बहुरि न जानउँ दहुँ का भई । दहुँ कविलास कि कहँ अपसई ॥

अब हउँ मरउँ निसासी हिअइ न आवइ सौंस ।

४० रोगिआ की को चालइ बरदहि जहाँ उपास ॥ २०८ ॥

अनु हउँ दोस देउँ का काह । संगी कया मया नहिँ ताह ॥

हवैउ पिआरा भीत बिछोई । साथ न लागि आपु गा सोई ॥

का मई कीन्ह जौ काया पोखी । दुखन मोहिँ आपु निरदोखी ॥

फागु बसंत खेलि गइ गोरी । मो तनु लाइ आगि देइ होरी ॥

४५ अब अस काहि छार सिर मेलउँ । छारइ होउँ फागु तस खेलउँ ॥

कित तप कीन्ह छाडि कइ राजू । आहर गछउ न मा सिध काजू ॥

पाछउँ नहिँ होइ जोगी जती । अब सर चढउँ जरउँ जस सती ॥

आइ पिरितम फिरि गया मिला न आइ बसंत ।

अब तन होरी घालि कइ जारि करउँ मसमंत ॥ २०९ ॥

फकनू पंखि जइस सर साजा । तस सर साजि जरइ बह राजा ॥

५० सकल देखौता आइ तुलाने । दइँ कस होइ देखौ-असयाने ॥

बिरइ अगिनि बजराणि अग्निका । जरइ सर न बुझाए बूझा ॥

तेहि के जरत जौ उरइ बजामी । तीनउँ लोक जरिहिँ तेहि लागी ॥

अब-हि कि घडी चिनगि पइ छूटिहि । जरिहि पहाड पहन सब फूटिहि ॥

देखौता सयइ मसम होइ जाहीँ । छार समेटेइ पाउब नाहीँ ॥

घरती सरग होइ सब ताता । हर होई ग्रहि राख बिधाता ॥

सुदमद चिनगि परेम कइ मुनि महि गगन डेराइ ।

घनि बिरहिन अउ घनि हिआ जइँ अस अगिनि समाइ ॥ २१० ॥

हनुवैत पीर लंक बैई जारी । परबत उहइ अहा रखवारी ॥

भइत तहाँ होइ लंका ताका । छठएँ मास देइ उठि हाँका ॥

तेहि कइ आगि उह-उ पुनि जरा । लंका छाडि पलंका परा ॥

५० जाइ तहाँ बैई कहा सदेख । पारपती अउ जहाँ महेख ॥

जोगी आदि बिभोगी कोई । तुम्हरेइ मँडफ आगि तैइ बोई ॥

२१.६२.६४. ]

राजा-स्तनसेन-सती खंड

[ ६३

जरे लँगूर सु-राते ऊहाँ । निकसि जौ भाग भण्डूँ कर-सूहा ॥

वैहि वजरागि जरइ हउँ लागा । वजर-अंग जरतहि उठि भागा ॥

राश्रीन-लंका हउँ डही वैइँ मोहिँ डाढन आइ ।

घन-द पहार होत हइ रावट को राखइ गहि पाइ ॥ २११ ॥

इति राजा-स्तन-सेन-सती खंड ॥ २१ ॥

---

## अथ पारवती-महेश खंड ॥ २२ ॥

ततस्त्वन पहुँचे आइ महेस् । चाहन बइल कुसटि करि मेघ ।  
 कौथरि कया हठावरि बाँधे । मूँड माल अउ हतिआ कौंधे ॥  
 सेस-नाग जो कंटइ माला । तनु बिभूति हसती कर छाता ॥  
 पहुँची रुदर-कवेल कइ गटा । ससि मौयइ अउ सुरसरि जटा ॥  
 5 चवैर घंट अउ डवैरु हाथा । गउरी पारवती धनि साथी ॥  
 अउ हनुवंत बीर संग आवा । धरे मेस जनु बंदर-छावा ॥  
 अउतहि कहेन्हि न लावहु आगी । ता करि सपत जरहु जेहि लागी ॥

कइ तप करइ न पाखु कइ रे नसाणहु जोगु ।

जिअत जीउ कस कादहु कहहु सौ मोहि विओगु ॥ २१२ ॥  
 कहैसि कौ मोहि पातहि विरमावा । हतिआ केरि न डर सोहि आवा ॥  
 10 जरइ देहु दुख जरउँ अपारा । निमित्त परउँ जाइ प्रक धारा ॥  
 जइस भरपरी लाग पिंगला । मो कहै पदुमावती सिपला ॥  
 भई पुनि तजा राज अउ भोगू । मुनि सो नाउँ लीन्ह तप जोगू ॥  
 प्रहि मइ सेष्टउँ आइ निरासा । गइ सौ पूजि मन पूजि न आसा ॥  
 तेइ यह जिउ डाढ़े पर दाया । आया निकसि रहा घट आया ॥  
 15 जो अध-जर सौ विलंब न लावा । करत विलंब बहुत दुख पावा ॥

प्रतना बोलि कहत मूख उठी विरह कइ आगि ।

जउँ महेस न बुझावत सकल जगत हुत लागि ॥ २१३ ॥

पारवती मन उपना चाऊ । देखउँ कुअँर केर सत-भाऊ ॥  
 दहूँ यह बीच कि पेमहि पूजा । तन मन एक कि मारग दूजा ॥  
 भइ सु-रूप जानहुँ अपछरा । विहँसि कुअँर कर आँचर धरा ॥  
 सुनहु कुअँर मो सउँ एक वाता । जस रँग मोहिँ न अउरहिँ राता ॥ 20  
 अउ विधि रूप दीन्ह हइ तो का । उठा सौ सवद जाइ सिउ-लोका ॥  
 तब हउँ तो कहँ ईंदर पठाई । गइ पदुमिनि तुँ आछरि पाई ॥  
 अब तबु जरन मरन तप जोगू । मो सउँ मानु जरम भरि भोगू ॥  
 हउँ आछरि कविलास कइ जेहि सरि पूज न कोइ ।

मोहिँ तजि सँवरि जो ओहि मरसि कउनु लाभ तोहि होइ ॥ २१४ ॥  
 भलैहि रँग आछरि तोहि राता । मोहिँ दोसरइ सउँ भाओ न वाता ॥ 25  
 मोहिँ ओहि सँवरि मुअइ अस लाहा । नइन जो देखसि पूँछसि काहा ॥  
 अबहिँ ताहि जिउ देइ न पावा । तोहि असि आछरि ठाढि मनावा ॥  
 जउँ जिउ दइहउँ ओहि कइ आसा । न जनउँ काह होइहि कविलासा ॥  
 हउँ कविलास काह लँइ करउँ । सो कविलास लागि जेहि मरउँ ॥  
 ओहि के चार जीउ नहिँ वारउँ । सिर उतारि नेओछाओरि डारउँ ॥ 30  
 ता कर चाह कहइ जो आई । दुअउ जगत तेहि देउँ बडाई ॥

ओहि न मोरि किछु आसा हउँ ओहि आस करेउँ ।

तेहि निरास पीतम कहँ जिउ न देउँ का देउँ ॥ २१५ ॥

गउरइ हँसि महेस सउँ कहा । निहचइ ग्रहु विरहानल दहा ॥  
 निहचइ यह ओहि कारन तपा । परिमल पेम न आछइ छपा ॥  
 निहचइ पेम पीर ग्रहु जागा । कसई कसउटी कंचन लागा ॥ 35  
 वदन पिअर जल डभकहिँ नइना । परगट दुअउ पेम के वइना ॥  
 यह ग्रहि जरम लागि ओहि सीभा । चहइ न अउरहि उहई रीभा ॥  
 महादेओ देओन्ह के पिता । तुम्हरे सरन राम रन जिता ॥  
 एहू कहँ तस मया करेहू । पुरचहु आस कि हतिआ लेहू ॥

हतिआ दुइ जौ चढाग्रहु फौंदह अजहुँ न गई अपराधु ।

40 वेसरि प्रहू लेहु माथई जउँ रे लेइ कइ साधु ॥ २१६ ॥

सुनि कइ महादेश्यो कइ माया । सिद्ध पुरुख राजइ मन लाखा ॥

सिद्धहि अंग न पइठइ मारपी । सिद्ध पलक नहिँ लावहिँ आँखी ॥

सिद्धहि संग होइ नहिँ छाया । सिद्ध होइ नहिँ भूख न माया ॥

जउँ जग सिद्धि गौसाईँ कीन्दी । परगट गुप्त रहइ को चीन्दी ॥

45 बइल चढा कुसिदी कर भेद्य । गिरिजा-पति सत आदि महेद्य ॥

चीन्हइ सोइ रहइ तेहि खोजा । जस विकरम अउ राजा भोजा ॥

कइ जिउ तंत मंत सउँ हेरा । गप्रउ हेराय जौ वह मा भेरा ॥

बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलइ सोइ जो भेट ।

जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सउँ भेट ॥ २१७ ॥

सतखन रतनसेन गहवरा । छाँडि डफार पाउँ सेइ परा ॥

50 मातइ पितइ जरम कित पाला । जउँ अस फौंद पेम मिथ पाला ॥

घरती सरग मिले हुत दोऊ । कित निनार कइ दीन्हि विछोऊ ॥

पदिक पदारथ कर हुत खोआ । दूटहिँ रतन रतन तस रोआ ॥

गगन मेघ जस बरसहिँ मली । पुहुमी पूरि सलिल होइ चली ॥

साग्र उपटि सिखर ने पाटी । जरइ पानि पाहन दिअ फाटी ॥

55 पउन पानि होइ होइ सब गरहीँ । पेम फौंद केहु जनि परहीँ ॥

तस रोअइ जौ जरइ जिउ गरइ रक्त अउ माँसु ।

रोअ रोअ सब रोअहिँ सोत सोत भरि आँसु ॥ २१८ ॥

रोअत घूडि उठा संसारु । महादेश्यो तब मप्रउ मयारु ॥

कहेसि न रोउ बहुत तई रोआ । अब ईसर मा दारिद-खोआ ॥

जो दुख सदइ होइ सुख ओ फा । दुख बिनु सुख न जाइ सिउ-लोका ॥

60 अथ तू मिद भया सुधि पारै । दरपन कया छूटि गइ कारै ॥

कइउं पाव अब हो उपदेसी । सागि पंथ भूले परदेसी ॥

जउँ लहि चोर सेँधि नहिँ देई । राजा केर न मूसइ पेई ॥  
चढइ त जाइ वार वह खूंदी । परइ त सेँधि सीस सउँ मूंदी ॥

कहउँ सो तोहि सिंघल-गढ हइ खंड सात चढाउ ।

फिरइ न कोई जिअत जिउ सरग पंथ देइ पाउ ॥ २१६ ॥

गढ तस बाँक जइस तोरि काया । परखि देखु यह ओहि कइ छाया ॥ 65

पाइअ नाहिँ जूझि हठ कीन्हे । जेहँ पावा तेहँ आपुहिँ चीन्हे ॥

नउ पउरी तेहि गढ मँझिआरा । अउ तहँ फिरहिँ पाँच कौटवारा ॥

दसउँ दुआर गुप्त एक नाँकी । अगम चढाउ वाट सुठि बाँकी ॥

भेदी कोइ जाइ ओहि घाँटी । जउँ लहि भेद चढइ होइ चाँटी ॥

गढ तर एक कुंड अउगाहा । तेहि महुँ पंथ कहउँ तोहि पाँहा ॥ 70

चोर पइठि जस सेँधि सँवारी । जुआ पइत जिउ लाउ जुआरी ॥

जस मरजिआ समुँद धसइ हाथ आउ तब सीपु ।

हुँदि लेहु वह सरग दुआरी अउ चढु सिंघल-दीपु ॥ २२० ॥

दसउँ दुआर तारु का लेखा । उलटि दिसिटि जो लाउ सो देखा ॥

जाइ सो जाइ साँस मन बंदी । जस धँसि लीन्ह कान्ह कालंदी ॥

तूँ मन नाथ मारु कइ साँसा । जउँ पइ मरहु आपु करु नासा ॥ 75

परगट लोकचार कहु वाता । गुप्त लाउ मन जा सउँ राता ॥

हउँ हउँ कहत मेँटि सच खोई । जउँ तूँ नाहिँ आहि सव सोई ॥

जिअतहिँ जो रे मरइ एक वारा । पुनि को मीचु को मारइ पारा ॥

आपुहि गुरु सो आपुहि चेला । आपुहि सव अउ आपु अकेला ॥

आपुहि मीचु जिअन पुनि आपुहि तन मन सोइ ।

—पुहि आपु करइ जो चाहइ कहाँ क दोसर कोइ ॥ २२१ ॥ 80



## अथ राजा-गढ़-छेँका खंड ॥ २३ ॥

- सिद्धि-गोटिका राजह पावा । अउ भइ सिद्धि गनेस मनावे ॥  
जब संकर सिधि दीन्ह को टेका । परी हल जोगिन्ह गढ़ छेँका ॥  
सबइ पदुमिनी देखहिँ चढ़ी । सिंघल घेरि कीन्ह उठि भढ़ी ॥  
जस खर-फरा चोर मति कीन्ही । तेहि बिधि सेँधि चाह गढ़ दीन्ही ॥  
५ गुप्त जो चोर रहइ सो साँचा । परगट होइ जीउ नहिँ बाँचा ॥  
पउरि पउरि गढ़ लाग केवारा । अउ राजा सउँ भई पुकारा ॥  
जोगी आइ छेँकि गढ़ मेले । न जनउँ फउनु देस कहँ खेले ॥  
भएउ रजाएमु देखहु को अस भिखारी दीठ ।  
जाइ बरजि तिन्ह आवहु जन दुइ जाहिँ वसीठ ॥ २२२ ॥  
उतरि बसिठ दुइ आइ जौहारे । कइ तुम्ह जोगी कइ बनिजारे ॥  
१० भएउ रजाएमु आगइ खेलहु । गढ़ तर छाँडि अनत होइ मेलहु ॥  
अस लागेहु कैहि के सिखि दीन्हे । आएहु भरइ हाथ जिउ लीन्हे ॥  
इहाँ ईंदर अस राजा वपा । जउँ-हि रिसाइ घर डरि छपा ॥  
इहु बनिजार तो बनिज बेसाइहु । मरि बइपार लेहु जो चाहहु ॥  
जोगी इहु तो जुगुति सउँ माँगहु । मृगुति लेहु लेइ मारग लागहु ॥  
१५ इहाँ दैओता अस गढ़ हारी । तुम्ह पतंग को आहि भिखारी ॥  
तुम्ह जोगी बइरागी कहत न मानहु कोहु ।  
लेहु माँगि किछु मिच्छा खलि अनत कहँ होहु ॥ २२३ ॥

जोगिहि कोहु न चाहिअ तब न मोहिँ रिस लागि ।

40 पेम-यंथ जेहि पानि हइ कहा करइ तेहि भागि ॥ २२६ ॥

यसिठहि जाइ कही असि बाता । राजा सुनत कोहु मा राता ॥

ठाउँहिँ ठाउँ कुअर सब भाखे । केई अर लागि जोगी जिउ राखे ॥

अब-हूँ बेगि करहु संजोऊ । तस मारहु हविआ किन होऊ ॥

मँतिरिन्ह कहा रहहु मन यूम्हे । पति न होइ जोगिहिँ सउँ जूम्हे ॥

45 बेई मारहिँ तो काह भिखारी । लाज होइ जउँ मानिअ हारी ॥

ना भल सुअइ न मारइ मोख । दुहूँ बात तुम्ह लागिहि दोख ॥

रहइ देहु जउँ गढ तर मेली । जोगी कित आछहिँ बिनु खेली ॥

रहइ देहु जो गढ तर अनि चालहु यह बात ।

तिन्हहिँ जो पाहन भख करहिँ अस केहि के मुख दाँत ॥ २२७ ॥

गढ जो यसिठ पुनि यहुरि न आए । राजइ कहा बहुत दिन लाए ॥

50 न जनउँ सरग बात दहुँ काहा । काहु न आइ कही किरि चाहा ॥

पाँख न कया पउन नहिँ पाया । केहि विधि मिलउँ होउँ केहि छाया ॥

सँवरि रक्त नइनाहिँ मरि पूआ । रोइ हँकोरसि माँझी घूआ ॥

परहिँ जो आँसु रक्त कइ टूटी । अबहुँ सो राती थीर-बहूटी ॥

उहइ रक्त लिखि दीन्ही पाती । सुअइ जो लीन्ह चोँच मइ राती ॥

55 बाँधा कंठ पढा जरि काँठा । विरह क जरा जाइ कई नाठा ॥

मसि नइना लिखनी भरुनि रोइ रोइ लिखा अकथ ।

आखर दइहिँ न कोइ गइइ (सो) दीन्ह पोरवा हत्य ॥ २२८ ॥

अउ मुख सउँ चच कईसु पोरवा । पहिलइ मोरि बहुत कइ सेवा ॥

पुनि सँवराइ कईसु अस दूजे । जो बलि दीन्ह देखीतन्ह पूजे ॥

सो अबहुँ तइसइ बलि लाग्ना । कय लागि कया सन मइ जागा ॥

60 भलेहि ईस तुम्ह-हूँ बलि दीन्हा । जहँ तुम्ह भाउ तहाँ बलि कीन्हा ॥

जउँ तुम्ह मया कीन्ह पगु दारा । दिसिदि देखाइ बान-बिख मारा ॥

जो अस जा कर आसा-मुखी । दुख भहँ अइस न मारइ दुखी ॥

नइन भिखारि न मानहिँ सीखा । अगुमन दउरि लीन्ह पइ भीखा ॥

नइनहिँ नइन जो वेधि गइ नहिँ निकसहिँ वेइ वान ।

हिअइ जो आखर तुम्ह लिखे ते सुठि घटहिँ परान ॥ २२६ ॥

तेइ बिख-वान लिखउँ कहँ तई । रक्त जो चुआ भीँ ज दुनिआई ॥ 65

जानु सौ गारइ रक्त पसेऊ । सुखी न जान दुखी कर भेऊ ॥

जैहि न पीर तेहि का करि चीता । प्रीतम निठुर होइ अस नीता ॥

का सउँ कहउँ बिरह कइ भाखा । जा सउँ कहउँ होइ जरि राखा ॥

बिरह आगि तन जर वर जरइ । नइन नीर सायर सब भरइ ॥

पाती लिखी सबरि तुम्ह नावाँ । रक्त लिखे आखर भग्न स्यावाँ ॥ 70

आखर जरहिँ न कोई छूआ । तब दुख देखि चला लैइ सूआ ॥

अब सुठि मरउँ छूँछि गइ पाती पेम पिआरे हाथ ।

भेँटि होति दुख रोइ सुनावत जीउ जात जउँ साथ ॥ २३० ॥

कंचन तार बाँधि गिअँ पाती । लैइ गा सुआ जहाँ धनि राती ॥

जइसइ कवल सुरुज कइ आसा । नीर कंठ लहि मरइ पिआसा ॥

बिसरा भोगु सेज सुख बाछ । जहाँ भवर सब तहाँ हुलाछ ॥ 75

तब लगि धीर सुना नहिँ पीऊ । सुनतहि घरी रहइ नहिँ जीऊ ॥

तब लगि सुख हिण पेम न जामा । जहाँ पेम गा सुख बिसरामा ॥

अगर चंदन सुठि दहइ सरीरू । अउ भा अगिनि क्या कर चीरू ॥

कथा कहानी सुनि सुठि जरा । जानहुँ बिउ बइसंदर परा ॥

बिरह न आपु सँभारइ मइल चीर सिर रूख ।

पिउ पिउ करत रात दिन पपिहा भइ मुख सूख ॥ २३१ ॥ 80

ततखन हीरामनि गा आई । मरत पिआस छाँह जनु पाई ॥

भल तुम्ह सुआ कीन्ह हइ फेरा । गाढ न जानेउँ प्रीतम केरा ॥

बाटहि जानहुँ बिखम पहारा । हिरदइ मिला न होइ निनारा ॥

- मरम पानि कर जान पिआसा । जो जल मँहँ ता कहँ का आसा ॥  
 85 का रानी यह पूँछहु यावा । जनि कौइ होइ पेम कर राता ॥  
 तुम्हरे दरसन लागि ब्रिओगी । अहा सौ महादेओ मठ जोगी ॥  
 तुम्ह बसंत लैइ तहाँ सिधार्ह । देख्यो पूजि पुनि ओ पढ़ँ आई ॥  
 दिसिटि बान तस मारैहु घाइ रहा तेहि ठाउँ ।  
 दोसरि बार न बोला लैइ पद्मावति नाउँ ॥ २३२ ॥  
 रोअहिँ रोअँ बान बेइ फूटे । सोवहिँ सोत रुहिर मुख छूटे ॥  
 90 नदनन्ह चली रक्त कइ धारा । कंथा भीँजि मग्नउ रतनारा ॥  
 छरुज घूडि उठा परभाता । अउ मँजीठ टेँछ बन राता ॥  
 मग्नउ बसंत रात बनफती । अउ राते सब जोगी जती ॥  
 पुहुमि जौ भीँज भई सय गेरू । अउ तहँ अहा सौ रात पखेरू ॥  
 रातौ सती अगिनि सब फापा । गगन मेघ राते तेहि छापा ॥  
 95 ईशुर भा पहार तस भीँजा । पइ तुम्हार नहिँ रोअँ पसीजा ॥  
 तहाँ चकोर कोकिला तिन्ह हिय मया पईटि ।  
 नदन रक्त भरि आए तुम्ह फिरि कीन्ह न दीटि ॥ २३३ ॥  
 अइस बसंत तुम्हई पइ खेलहु । रक्त पराय सेँदुर मेलहु ॥  
 तुम्ह तउ खेलि मँदिर कहँ आईँ । ओहि क मरम पइ जानु गौसाईँ ॥  
 कहैसि मरइ को बारहिँ पारा । एकहि बार होउँ जरि छारा ॥  
 100 सर रचि चहा आगि जो लाई । महादेओ गउरइ सुधि पाई ॥  
 आइ पुआइ दीन्ह पँथ तहवाँ । मरन खेल कर आगम जहवाँ ॥  
 उलटा पँथ पेम कइ बारा । चढ़इ सरग सो परइ पतारा ॥  
 अच घँमि लीन्ह चहइ तेहि आसा । पावइ आस कि मरइ निरासा ॥  
 पावी लिखि जौ पठार्ह लिखा सयइ दुख रोइ ।  
 दहुँ जिउ रहइ कि निसरइ काह रजाग्रमु होइ ॥ २३४ ॥  
 105 कहि कइ मुअइ छोडि दइ पावी । जानहुँ दीप ह्युअत तस तावी ॥

गिअहिँ जो बाँधे कंचन तागे । राते स्यावँ कंठ जरि लागे ॥  
 अगिनि साँस सँग निसरी ताती । तरुअर जरहिँ तहाँ को पाती ॥  
 रोइ रोइ सुअइ कही सब वाता । रक्त क आँसुहिँ भा मुख राता ॥  
 देखु कंठ जरि लागु सो गेरा । सो कस जरइ विरह अस घेरा ॥  
 जरि जरि हाड भए सब चूना । तहाँ माँस को रक्त बिहूना ॥ ११०  
 बेइ तोहि लागि क्या असि जारी । तपत मीन जल रहइ न पारी ॥

तेहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन दाहि ।

तूँ अस निठुर निछोही वात न पूँछी ताहि ॥ २३५ ॥

कहेसि सुआ मो सउँ सुनु वाता । चहउँ तो आजु मिलउँ जस राता ॥  
 पइ सो मरमु न जानइ भोरा । जानइ प्रीति जो मरि कइ जोरा ॥  
 हउँ जानति हउँ अब-हूँ काँचा । ना जेहि प्रीति रंग थिरु राँचा ॥ ११५  
 ना जेहि होइ भँवर कर रंगू । ना जेहि दीपक होइ पतंगू ॥  
 ना जेहि करा भिगि कइ होई । ना जेहि अगहि जिअइ मरि सोई ॥  
 ना जेहि पेम अउटि एक भएउ । ना जेहि हिअइ माँह डर गएउ ॥  
 ना जेहि भएउ मलइ गिरि वासा । ना जेहि रवि होइ चढेउ अकासा ॥

तेहि का कहिअ रहन खन जो हइ पीतम लागि ।

जहाँ सुनइ तहँ लेइ धाँसि कहा पानि का आगि ॥ २३६ ॥ १२०

पुनि धनि कनक पानि मसि माँगी । उतर लिखत भीँजी तनु आँगी ॥  
 तेहि कंचन कहँ चहिअ सोहागा । जउँ निरमल नग होइ सो लागे ॥  
 हउँ जो गइउँ मढ मंडप भोरी । तहवाँ तुई न गाँठि गहि जोरी ॥  
 गा विसँभारि देखि कइ नइना । सखिन्ह लाज का बोलउँ बइना ॥  
 खेलहि मिसु मई चंदन घाला । मकु जागसि तो देउँ जइ-माला ॥ १२५  
 तवहुँ न जागा गा तूँ सोई । जागइ भँटि न सोअइ होई ॥  
 अब तउ ससि होइ चढेउँ अकासा । जो जिउ देइ सो आवइ पासा ॥

तब लागि भुगुति न लेइ सका राओन सिअ प्रक साथ ।

कउन भरोसई अथ कहउँ जीउ पराए हाथ ॥ २३७ ॥

- अथ जउँ छर गगन चदि आवइ । राहु होइ तउ ससि कहँ पावइ ॥  
 130 बहुतई अइस जीउ पर खेला । तँ जोगी केहि माँह अकेला ॥  
 विकरम घँसा पैम कइ चारा । चंपावति कहँ गण्ड पतारा ॥  
 सुदइ-वच्छ मगधावति लागी । कँकन पूरि होइ गा बहरागी ॥  
 राज-कुअँर कंचन-पुर गण्ड । मिरगावति कहँ जोगी भण्ड ॥  
 साध कुअँर गंधावति जोगू । मधु मालति कहँ कीन्ह बिओगू ॥  
 135 पैमावति कहँ सर सुर साधा । उछा लागि अनिरुध वर बाँधा ॥  
 हउँ रानी पदुमावती साव सरग पर बास ।

हाथ चढउँ हउँ ताहि के प्रथम करइ अपुनास ॥ २३८ ॥

- हउँ पुनि अहउँ अइसि तोहि रातो । आधी भेंटि पिरीतम पाती ॥  
 रोहि जउँ प्रीति निबाहइ आँटा । भँवर न देखु केत मई काँटा ॥  
 होहु पतंग अघर गहि दीआ । लेहु समुँद घँसि होइ मरजीआ ॥  
 140 राति रंग जिमि दीपक पाती । नदन लाउ होइ सीप सेवाती ॥  
 आतक होइ धुकार पिआसा । पीउ न पानि सेवाति क आसा ॥  
 सारस होहु बिछुरि जस जोरी । रदनि होहु जल चकइ चकोरी ॥  
 होहु चकोर दिसिदि ससि पाहौ । अउ रवि होहु फँवल ओहि माहौ ॥  
 हम-हुँ अइसि हउँ तो सउँ सकसि त प्रीति निबाहु ।

राहु बेधि अरखुन होइ जिति दुरपदी बिआहु ॥ २३९ ॥

- 145 राजा इहाँ तइस तप भूरा । मा जरि चिरइ छार कर कूरा ॥  
 मउन लगाए गण्ड विमोही । मा बिलु जिउ जिउ दीन्हैसि ओही ॥  
 गहि पिंगला सुखुमना नारी । सुभ समाधि लागि गइ तारी ॥  
 धँद-हि समुँद होइ जस मेरा । गा हेराइ तस मिलइ न हेरा ॥  
 रंग-हि पानि मिला जस होई । आपुहि खोइ रहा होइ सोई ॥

सुअइ आइ देखा भा नाख । नइन रक्त भरि आण्ड आँख ॥ 150

सदा पिरीतम गाढ करेई । वह न भूल भूला जिउ देई ॥

मूरि सजीअनि आनि कइ अउ मुख मेला नीर ।

गरु पाँख जस भारइ अँविरित बरसा कीर ॥ २४० ॥

सुआ अहा जेहि आस सो पावा । बहुरी साँस पेट जिउ आवा ॥

देखेसि जागि सुअइ सिर नावा । पाति दीन्ह मुख वचन सुनावा ॥

गुरु सवंद दुइ सरवन मेला । गुरु बोलाउ वेगि चलु चेला ॥ 155

तोहि अलि कीन्ह आपु भा केवा । हउँ पठवा कइ वीच परेवा ॥

पउन साँस तो सउँ मन लाई । जोचइ मारग दिसिटि बिछाई ॥

जस तुम्ह कया कीन्ह अगि-डाह । सो सब गुरु कहँ भण्ड अगाह ॥

तब उडंत-छाला लिखि दीन्हा । वेगि आउ चाहउँ सिधि कीन्हा ॥

आवहु स्यावँ सुलक्खनेँ जीउ बसइ तुम्ह नाउँ ।

नइनहिँ भीतर पंथ हइ हिरदहि भीतर ठाउँ ॥ २४१ ॥ 160

सुनि कइ असि पदुमावति मया । भा बसंत उपनी नइ कया ॥

सुआ क बोलि पउन होइ लागा । उठा सोइ हनुवँत होइ जागा ॥

चाँद मिलन कइ दीन्हैसि आसा । सहसहु कराँ सर परगासा ॥

पतरि लीन्ह लैइ सीस चढावा । दिसिटि चकोर चाँद जनु पावा ॥

आस पिआसा जो जेहि केरा । जउँ भिभिकार ओही सो हेरा ॥ 165

अब यह कउन पानि मई पीआ । भा तन पाँख पनग मरि जीआ ॥

उठा फूलि हिरदइ न समाना । कंथा टूक टूक विहराना ॥

जहाँ पिरीतम वेइ बसहिँ यह जिउ बलि तैहि बाट ।

जउँ सो बोलावइ पाउँ सउँ हउँ तहँ चलउँ ललाट ॥ २४२ ॥

जो पंथ मिला सो मुंद उहइ धँसि लेई ॥

जहँ वह बँड जहँ पाओ न थाहा ॥ 170

बाउर ब्रह्म न आगू ॥

- लीन्हैसि घँसि सुधौंस मन मारा । गुरु भौखंदर-नाथ सँमारा ॥  
 चेला परइ न छाँडइ पाछू । चेला मच्छ गुरु जस काछू ॥  
 जनु घँसि लीन्ह सभुँद मरजीआ । उधरइ नइन बरइ जनु दीआ ॥  
 १७५ खोजि लीन्ह सो सरग दुआरा । बजर जौ मूँदे जाग्र उधारा ॥  
 बाँक चढाउ सरग गढ चढत गाग्रउ होइ मोर ।  
 भइ पुकार गढ ऊपर चढे सँधि देइ चोर ॥ २४३ ॥  
 राजइ सुना जोगि गढ चढे । पूँछी यास पंडित जो पढे ॥  
 जोगी गढ जौ सँधि देइ आवहि । कहहु सो सबद सिद्धि जिन्ह पावहि ॥  
 कहहि बेद पढ पंडित बेदी । जोगि भवैर जस मालति-बेदी ॥  
 १८० जइसइ चोर सँधि सिर मेलहि । तसि ग्रइ दोउ जीउ पर खेलहि ॥  
 पर्य न चलहि बेद जस लिखे । चढे सरग खरी चढि सिखे ॥  
 चोरहि होइ खरी पर मोख । देइ जौ खरी वेहि नहि दोख ॥  
 चोर पुकारि बेधि घर मूँसा । खोलहि राज-मँडार-मँजुसा ॥  
 जइस मँडारहि मूँसाहि चढहि रहनि देइ सँधि ।  
 तइस चहिअ पुनि उन्ह कहँ मारहु खरी बेधि ॥ २४४ ॥  
 इति राजा-गढ-छेका खंड ॥ २३ ॥



## अथ मंत्री खंड ॥ २४ ॥

राँधि जौ मंत्री बोलइ सोई । अस जौ चोर सिद्ध पइ कोई ॥  
 सिद्ध निसंक रहनि पइ भवँही । ताकहिँ जहाँ तहाँ उपसवही ॥  
 सिद्ध निडर पइ असइ जीआ । खरग देखि कह नावँहिँ गीआ ॥  
 सिद्ध जाहिँ पइ जिउ वधि जहाँ । अउरहिँ मरन पंख अस कहाँ ॥  
 चढहिँ जौ कोपि गगन उपराही । थोरइ साज मरहिँ सो नाही ॥ 5  
 जंबुक कहँ जउँ चढिअहिँ राजा । सिंघ साजि कहँ चढिअ त छाजा ॥  
 सिद्ध अमर काया जस पारा । छरहिँ मरहिँ पइ जाहिँ न मारा ॥  
 छरहिँ काज किरिसुन कर साजा राजा धरहिँ रिसाइ ।

सिद्ध गिद्ध जेहिँ दिसिटि गगन पर बिनु छर किछु न वसाइ ॥ २४५ ॥  
 आवहु करी गुदर मिस साजू । चढहु वजाइ जहाँ लगि राजू ॥  
 होहु सँजोइल कुअँर जौ भोगी । सब दर छेँ कि धरहु अब जोगी ॥ 10  
 चउविस लाख छतर-पति साजे । छपन कोटि दर बाजन बाजे ॥  
 बाइस सहस सिंघली चाले । गिरिह पहार पुहुमि सब हाले ॥  
 जगत बराबर देइ सब चाँपा । डरा इँदर बासुकि हिअ काँपा ॥  
 पदुम कोटि रथ साजे आवहिँ । गिरि होइ खेह गगन कहँ धावहिँ ॥  
 जनु भुइँ-चाल चलत तहँ परा । कुरमहिँ पीठि टूटि हिअ डरा ॥ 15

छतरहिँ सरग छाइ गा सरज गण्ड अलोपि ।

दिनहिँ राति असि देखी चढा इँदर होइ कोपि ॥ २४६ ॥

- देखि कटक अउ मइमत हाथी । बोले रतन-सेन के साथी ॥  
 होत आउ दर बहुत अदम्मा । अस जानत हहिँ होइहइ जूम्मा ॥  
 राजा तू जोगी होइ खेला । इहइ दिवस कहँ हम मग्न चेला ॥  
 २० जहाँ गाढ ठाकुर कहँ होई । संग न छाडइ सेवक सोई ॥  
 जो हम मरन दिवस मन ताका । आज आइ सो पूजी ताका ॥  
 बरु जिउ जाउ जाग्रु जनि बोला । राजा सच सुमेरु न डोला ॥  
 गुरु केर जउँ आग्रसु पावहिँ । सउँह होइ हम चकर चलावहिँ ॥

आजु करहिँ रन भारथ सच बचा दइ राखि ।

सच करइ सब कउतुक सच भरइ पुनि साखि ॥ २४७ ॥

- २५ गुरु कहा चेला सिध होइ । पेम बार होइ करी न कोइ ॥  
 जा कहँ सीस नाइ कइ दीजिय । रंग न होय ऊम जउँ कीजिय ॥  
 जेहि जिअँ पेम पानि मा सोई । जेहि रँग मिलइ तेही रँग होई ॥  
 जउँ पइ जाइ पेम सउँ जूम्मा । कित तपि मरहिँ सिद्ध जेई बूम्मा ॥  
 यह सच बहुत जो जूम्हि न करियइ । खरग देखि पानी होइ दरियइ ॥  
 ३० पानिहि काइ खरग कइ धारा । लउटि पानि सोई जो मारा ॥  
 पानी सेँति आगि का करई । जाइ बुम्माइ पानि जउँ परई ॥

सीस दीन्ह मई अगुमन पेम पाग्रु सिर मेलि ।

अन सौ पिराति निवाहउँ चलउँ सिद्ध होइ खेलि ॥ २४८ ॥

- राजहि छेँकि धरे सच जोगी । दुख ऊपर दुख सहइ बिओगी ॥  
 ना जिउ धडक धरत हइ कोई । न जनउँ मरन जिअन कम होई ॥  
 ३५ नाग-फाँम उन्ह मेली गीआ । हरण न विममउ एकउ जीआ ॥  
 जेई जिउ दीन्ह सौ लेउ निरासा । बिसरइ नहिँ जउँ लहि तन साँगा ॥  
 कर किँगरी वेइ संत बजाया । नेह गीत बैरागी गाया ॥  
 भलेहिँ आनि गिय मेली फाँसी । हिअई न सोच रोस रिस नासी ॥  
 मई गिअ-फाँद ओही दिन मेली । जेहि दिन पेम-पंथ होइ खेला ॥

परगट गुप्त सकल महि पूरि रहा सब ठाउँ ।

जहँ देखउँ ओहि देखउँ दोसर नहिँ कहँ जाउँ ॥ २४६ ॥ 40

जब लागि गुरु मई अहा न चीन्हा । कोटि अंतर पट हुत विच दीन्हा ॥

जउँ चीन्हा तउ अउरु न कोई । तन मन जिउ जौवन सब सोई ॥

हउँ हउँ कहत घोख अंतराहीँ । जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीं ॥

मारइ गुरु कि गुरु जिआवा । अउरु कौ मार मरइ सब आवा ॥

खरी मेलि हसति गुरु पूरु । हउँ नहिँ जानउँ जानइ गुरु ॥ 45

गुरु हसति पर चढा सौ पेखा । जगत जौ नास्ति नास्ति सब देखा ॥

अंध मीन जस जल महँ धावा । जल जीअन पुनि दिसिदि न आवा ॥

गुरु मोर मोरइ सिर देइ तुरंगहि ठाठ ।

भीतर करहि डोलावई बाहर नाँचइ काठ ॥ २५० ॥

सो पदुमावति गुरु हउँ चेला । जोगतंत जेहि कारन खेला ॥

तजि ओहि वार न जानउँ दूजा । जेहि दिन मिलइ जातरा पूजा ॥ 50

जीउ काढि भुईँ धरउँ ललाट । ओहि कहँ देउँ हिआ महँ पाट ॥

को मोहिँ लैइ सौ छुआवइ पाया । नउ अउतार देइ नइ काया ॥

जीउ चाहि सो अधिक पिआरी । माँगइ जीउ देउँ बलिहारी ॥

माँगइ सीस देउँ सई गीआ । अधिक नवउँ जउँ मारइ जीआ ॥

अपने जिउ कर लोभ न मोही । पेम-चार होइ माँगउँ ओही ॥ 55

दरसन ओहिक दिआ जस हउँ रे भिखारि पतंग ।

जउँ करवत सिर सारइ मरत न मोरउँ अंग ॥ २५१ ॥

पदुमावति कवँला ससि जोती । हँसइ फूल रोअइ तव मोती ॥

चरजा पितइ हँसी अरु रोजू । लागे दूत होइ निति खोजू ॥

जउ हिँ सुरुज कहँ लागेउ राह । तउ हिँ कवँल मन भण्ड अगाह ॥

विरह अगस्ती विसमउ भण्ड । सरवर हरख खखि सब गण्ड ॥ 60

परगट ढारि सकइ नहिँ आँख । घटि घटि माँसु गुप्त होइ नाख ॥

जस दिन माँझ रहनि होई आई । विगसत कवँल गण्ड कुम्हिलाई ॥  
 राता बदन गण्ड होई सेता । मँवर भवँति रहि गई अचेता ॥  
 चितहिँ जो चितर कीन्ह धनि रोअँ रोअँ अंग समेटि ।

सहस साल दुख आदि मरि मुरुझि परी गइ भेटि ॥ २५२ ॥

65 पदुमावति संग सखी सयानी । गनि कइ नखत पीर ससि जानी ॥  
 जानहिँ मरम कवँल कर कोई । देखि बिथा विरहिनि कइ रोई ॥  
 विरहा कठिन काल कइ कला । विरह न सहइ काल पर मला ॥  
 काल काढि जिउ लेइ सिघारा । विरह काल मारे पर मारा ॥  
 विरह आगि पर मेलइ आगी । विरह घाउ पर घाउ बजागी ॥  
 70 विरह बान पर बान बिसारा । विरह रोग पर रोग सँचारा ॥  
 विरह साल पर साल नवेला । विरह काल पर काल दुहेला ॥  
 तन राओन होई गढ चढा विरह मण्ड हनुवंत ।

जारे ऊपर जारई तजइ न कइ भसमंत ॥ २५३ ॥

कौइ कुमोद कर परसहिँ पाया । कौइ मलयागिरि छिडकहिँ काया ॥  
 कौइ मुख सीतल नीर चुआवहिँ । कौइ अंचल सउँ पउन डोलावहिँ ॥  
 75 कौइ मुख अविरित आनि निचोआ । जनु विरु दीन्ह अधिक धनि सोआ ॥  
 जोवहिँ साँस खनहिँ खन सखी । कब जिउ फिरइ पउन अउ पँखी ॥  
 विरह काल होई हिअई पईठा । जीउ काढि लेइ हाथ पईठा ॥  
 खन एक भूँटि बाँध खन खोला । खनहिँ जीम मुख जाइ न घोला ॥  
 खनहिँ वजर के बानन्ह मारा । कँपि कँपि नारि मरइ बिकरारा ॥  
 कइसेहु विरह न छाढइ मा ससि गहन गिरास ।

80 नखत चहुँ दिसि रोअहिँ अँधिअर धरति अकास ॥ २५४ ॥

परी चारि इमि गहन गिरासी । शुनि बिधि जाति हिअई परगासी ॥  
 निसँसि ऊमि मरि लीन्हैसि साँसा । मइ अघार जीअन कइ आसा ॥  
 बिनवैहिँ सखी छूटे ससि राह । तुम्हरी जोति जोति सय काह ॥

तू ससि-वदन जगत उँजिआरी । केइ हरि लीन्ह कीन्ह अँधिआरी ॥  
 तू गजगाविँनि गरव गहीली । अब कस अस छाडइ सत ढीली ॥ 85  
 तइ हरि लंक हराई केहरि । अब कस हारि करसि हइ हे हरि ॥  
 तू कोकिल-वइनी जग मोहा । को व्याधा होइ गहइ विछोहा ॥

कवँल करी तू पदुमिनि गइ निसि भण्ड विहान ।

अबहुँ न संपुट खोलैसि जो रे उठा जग भान ॥ २५५ ॥  
 भान नाउँ सुनि कवँल विगासा । फिरि कइ भवँर लीन्ह मधु वासा ॥  
 सरद चाँद मुख जीभ उघेली । खंजन नइन उठे कइ केली ॥ 90  
 विरह न बोल आउ मुख ताई । मरि मरि बोलि जीउ वरिआई ॥  
 दवइ विरह दारुन हिअ काँपा । खोलि न जाइ विरह दुख भाँपा ॥  
 उदधि समुंद जस तरँग देखावा । चखु घूमहिँ मुख वात न आवा ॥  
 यह सुठि लहरि लहरि पर धावा । भवँर परा जिउ थाह न पावा ॥  
 सखी आनि विख देहु त मरऊँ । जिउ नहिँ पेट ताहि डर डरऊँ ॥ 95

खनहिँ उठइ खन बूडइ अस हिअ कवँल सँकेत ।

हीरामनिहि बौलावहु सखी गहन जिउ लेत ॥ २५६ ॥  
 पुरइनि धाइ सुनत खन धाई । हीरामनिहि बेगि लैइ आई ॥  
 जनहुँ वइद ओखद लैइ आवा । रोगिआ रोग मरत जिउ पावा ॥  
 सुनत असीस नइन धनि खोली । विरह बइन कोइल जिमि बोली ॥ 100  
 कवँलहि विरह बिथा जसि वाढी । केसरि वरन पिअरि हिअ गाढी ॥  
 कित कवँलहि भा पेम अँकूरु । जउँ पइ गहन लीन्ह दिन सरू ॥  
 पुरइनि छाँह कवँल कइ करी । सकल विभास आस तुम्ह हरी ॥  
 पुरुख गँभीर न बोलहिँ काहू । जउँ बोलहिँ तउ अउरु निवाहू ॥

प्रतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई अचेत ।

पुनि कइ चेत सँभारी उहइ वकत मुख लेत ॥ २५७ ॥  
 अउरु दगध का कहउँ अपारा । सुनइ सौ जरइ कठिन असि भारा ॥ 105

होइ हनिवत पइठ हइ कोई । लंका डाहि लागु तनु सोई ॥  
 लंका बुझी आगि जउं लागी । यह न बुझइ तस उपज बजागी ॥  
 जनहुँ अगिनि के उठहिँ पहारा । बेइ सब लागहिँ अंग अँगारा ॥  
 कैपि कैपि माँसु सुराग पुरोधा । रकत कि आँसु माँसु सब रोधा ॥  
 ११० खन प्रक मारि माँसु अस भूँजा । खनहिँ जियाइ सिंघ अस गूँजा ॥  
 यह रे दगध हुति उतिम मरीजिअ । दगध न सहिअ जीउ बरु दीजिअ ॥  
 जहँ लगि चंदन मलइ-गिरि अउ साप्र सय नीर ।

सय मिलि आइ बुझावहिँ बुझइ न आगि सरीर ॥ २५८ ॥

हीरामनि जो देखी नारी । प्रीति बेलि उपनी हिअ धारी ॥  
 फहैसि फस न तुम्ह होइ दुहैली । अरुभी पेम प्रीति कइ बेली ॥  
 ११५ प्रीति-बेलि जनि अरुझइ कोई । अरुमा सुझइ न छूटइ सोई ॥  
 प्रीति-बेलि अइसइ तनु डाढा । पलुहत सुख बाढत दुख बाढा ॥  
 प्रीति-बेलि कइ अमर सौं पोरै । दिन दिन बढ़ै खीन नहिँ होई ॥  
 प्रीति-बेलि सँग चिरइ अपारा । सरग पतार जरइ तैहिँ झारा ॥  
 प्रीति अकेलि बेलि चटि छाया । दोसर बेलि न सरिवरि पाया ॥  
 प्रीति-बेलि उरमाइ जब तब सौं छौंइ सुख साख ।

मिलइ पिरीतम आइ कइ दाख बेलि रस चाख ॥ २५९ ॥

पदुमावति उठि टेकइ पाया । तुम्ह हुति हो प्रीतम कइ छाया ॥  
 कहत लाज अउ रहइ न जीऊ । प्रकदिसि आगि दोसरि दिसि सीऊ ॥  
 तुम्ह सौं मोर खेवक गुरु देख । उतरउँ पार तेही विधि खेऊ ॥  
 सर उदइ-गिरि चढत सुलाना । गहने गहा कवँल कुम्हिलाना ॥  
 १२० ओहट होइ मरउँ तैहिँ मूरी । यह सुठि मरन जो निअराहि दूरी ॥  
 घट महँ निकट निकट भा भेरू । मिलैहु न मिलइ परा तस फेरू ॥  
 दामवती नल हंस मिलावा । तब हीरामनि नाउँ कहावा ॥

मूरि सजीवनि दूरि इमि साली सकती चानु ।

प्राण मुकुत अव होत हइ वेगि देखावहु आनु ॥ २६० ॥  
 हीरामनि भुईँ धरा लिलाटू । तुम्ह रानी जुग जुग सुख पाटू ॥  
 जेहि के हाथ जरी अउ मूरी । सो जोगी नाहीँ अव दूरी ॥ १३०  
 पिता तुम्हार राज कर भोगी । पूजइ विपर मरावइ जोगी ॥  
 पवँरि पंथ कौतवार वईठा । पेम क लुबुध सुरंग पईठा ॥  
 चढत रइनि गढ होइ गा भोरू । आवत वार धरा कइ चोरू ॥  
 अव लैइ देन गए ओहि छरी । तेहि सौँ अगाह धिया तुम्ह पूरी ॥  
 अव तुम्ह जीउ कया वह जोगी । कया क रोग जान पइ रोगी ॥ १३५  
 रूप तुम्हार जीउ लैइ आपन पिंड कमावा फेरि ।

आपु हेराइ रहा तेहि खंडहि काल न पावइ हेरि ॥ २६१ ॥  
 हीरामनि जो बात यह कही । सुरुज के गहन चाँद पुनि गही ॥  
 सुरुज के दुख जो ससि भइ दुखी । सो कित दुख मानइ करमुखी ॥  
 अव जउँ जोगि मरइ मोहिँ नेहा । मोहिँ ओहि साथ धरति गगनेहा ॥  
 रहइ तो करउँ जरम भरि सेवा । चलइ तो यह जिउ साथ परेवा ॥ १४०  
 कउनु सौ करनी कहु गुरु सोई । पर-काया परवेस जो होई ॥  
 पलटि सौ पंथ कउनु विधि खेला । चेला गुरु गुरु होइ चेला ॥  
 कउनु खंड अस रहा लुकाई । आवइ काल हेरि फिरि जाई ॥  
 चेला सिद्धि सौ पावई गुरु सउँ करइ उछेद ।

गुरु करइ जउँ किरिया कहइ सौ चेलहि भेद ॥ २६२ ॥  
 अनु रानी तुम्ह गुरु वह चेला । मोहिँ पूछेहु कइ सिद्ध नवेला ॥ १४५  
 तुम्ह चेला कहँ परसन भईँ । दरसन देइ मँडफ चलि गईँ ॥  
 रूप तुम्हार सौ चेलइ डीठा । चित समाइ होइ चितर पईठा ॥  
 जीउ काहि तुम्ह लैइ उपसई । वह भा कया जीउ तुम्ह भई ॥  
 कया जो लागु धूप अउ सीऊ । कया न जानु जानु पइ जीऊ ॥

- 150 भोग तुम्हार मिला वह जाई । ओहि कइ बिथा सो तुम्ह कहँ आई ॥  
 तुम्ह ओहि घट वह तुम्ह घट माँहा । काल कहाँ पावइ ओहि आँहा ॥  
 अत वह जोगि अमर भा पर-काया परबेसु ।  
 आवइ काल तुम्हहिँ तिन्ह (देखे) फिरि कइ करइ अदेसु ॥ २६३ ॥  
 सुनि जोगी कइ अमर करनी । नेउरी बिरह-बिथा कइ मरनी ॥  
 कवँल-करी होइ बिगसा जीऊ । जनु रवि देखि छूटि गा सीऊ ॥  
 155 जो अस सिद्ध को मारइ पारा । नीऊ रस तई जो होय आरा ॥  
 कहउ जाइ अब मोर सँदेख । तजहु जोग अब होहु नरेख ॥  
 जनि जानहु हउं तुम्ह सउं दूरी । नइनहिँ माँझ गडी वह घरी ॥  
 तुम्ह परसेव घटइ घट केरा । मोहिँ जिउ घटत न लागइ बेरा ॥  
 तुम्ह कहँ राज-पाट भई साजा । अब तुम्ह मोर दुअउ जग राजा ॥  
 जउं रे जिअहिँ मिलि कैलि करहिँ मरहिँ तो एकइ दोउ ।  
 160 तुम्ह पिअ जिउ जनि होउ किछु मोहिँ जिउ होउ सो होउ ॥ २६४ ॥



## अथ सूरी खंड ॥ २५ ॥

वाँधि तपा आनेउ जहँ सूरी । जुरी आइ सब सिंघल पूरी ॥  
 पहिलइँ गुरु देइ कहँ आना । देखि रूप सब कौउ पछिताना ॥  
 लोग कहहिँ यह होअइ न जोगी । राजकुअँर कौउ अहइ विओगी ॥  
 काहू लागि भण्डु हइ तपा । हिअइँ सौ माल करइ मुख जपा ॥  
 जस मारइ कहँ वाजा तूरु । सूरी देखि हँसा मन सूरु ॥ 5  
 चमके दसन भण्डु उँजिआरा । जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा ॥  
 जोगी केर करहु पइ खोजू । मकु न होअइ यह राजा भोजू ॥  
 सब पूँछहिँ कहु जोगी जाति जरम अउ नाओँ ।

जहाँ ठाओँ रोअइ कर हँसा सौ कहु केहि भाओँ ॥ २६५ ॥

का पूँछहु अब जाति हमारी । हम जोगी अउ तपा भिखारी ॥  
 जोगिहि कवन जाति हो राजा । गारिहि कोह न मारहि लाजा ॥ 10  
 निलज भिखारि लाज जिन्ह खोई । तिन्ह के खोज परउ जनि कोई ॥  
 जा कर जीउ मरइ पर वसा । सूरी देखि सौ कस नहिँ हँसा ॥  
 आजु नेह सउँ होइ निवेरा । आजु पुहुमि तजि गगन बसेरा ॥  
 आजु कया-पिंजर वँध टूटा । आजु परान-परेवा छूटा ॥  
 आजु नेह सउँ होइ निरारा । आजु पेम सँग चला पिआरा ॥ 15

आजु अवधि सरि पूजी कइ जो चलउँ मुख रात ।

वेगि होहु मोहिँ मारहु का चालहु बहु बात ॥ २६६ ॥

- कहहिँ सवँरु जेहि चाहसि सवँरा । हम तोहि कराहिँ केति कर भवँरा ॥  
 कहसि ओही सवँरुँ हरि केरा । मुअई जिअत आहँ जेहि केरा ॥  
 जहाँ सुनउँ पदुमावति रामा । यह जिउ नैबझावरि तेहि नामा ॥  
 20 रकत क बूँद कया जत अहहीँ । पदुमावति पदुमावति कहहीँ ॥  
 रहहिँ त बूँद बूँद मई ठाऊँ । परहिँ त सोई लैइ लैइ नाऊँ ॥  
 रोअँ रोअँ तनु ता सउँ ओथा । सतहि सत बेधि जिउ सोषा ॥  
 हाडहि हाड सबद सो होई । नस नस माँह उठइ धुनि सोई ॥  
 राइ विरह गा ता कर गूद माँसु कइ खान ।  
 हउँ होइ साँच रहा अब यह होइ रूप समान ॥ २६७ ॥
- III जोगिहिँ जउहिँ गाढ अस परा । महादेशी कर आसन टरा ॥  
 अउ हँसि पारवती सउँ कहा । जानहुँ छर गहन अस गहा ॥  
 आजु चन्द्र गढ ऊपर तपा । राजई गहा छर तब छपा ॥  
 जग देखइ कउतुक कइ आजू । कीन्ह तपा मारइ कहँ साजू ॥  
 पारवती सुनि पाँपुन परी । चलहु महेस देखहिँ प्रक घरी ॥  
 30 भेस माट माटिन कर कीन्हा । अउ हनुवंत पीर सँग लीन्हा ॥  
 आइ गुपुत होइ देखन लागे । दहुँ मूरति कस सती समागे ॥  
 कटक अश्रम देखि कइ (आपनि) राजा गरय करेइ ।  
 दइउ क दसा न देखिअद दहुँ का कहँ जइ देइ ॥ २६८ ॥  
 अस बोलई रहा होइ तपा । पदुमावति पदुमावति जपा ॥  
 मन समाधि अस ता सउँ लागी । जेहि दरसन कारन बदरागी ॥  
 35 रहा समाइ रूप ओहि नाऊँ । अउरु न सूझ चार जहँ जाऊँ ॥  
 अउ महेस कहँ करउँ अदेख । जेहि ग्रहि पंथ दीन्ह उपदेख ॥  
 पारवती सुनि सच सराहा । अउ फिरि मुख महेस कर चाहा ॥  
 हई महेस पइ भई महेमी । कित सिर नाचहिँ यह परदेसी ॥  
 मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारइ नाऊँ । तुम्ह चुप कीन्ह सुनहु ग्रहि ठाऊँ ॥

भारत हँइ परदेसी राखि लेहु ग्रहि बेरि ।

कोइ काहु कर नाहीँ जो होइ जाइ निवेरि ॥ २६६ ॥ 40

लैइ सँदेस सुअटा गा तहाँ । सूरी देन गए लैइ जहाँ ॥

देखि रतन हीरामनि रोआ । रतन ग्यान ठगि लोगन्ह खोआ ॥

देखि रोदन हीरामनि केरा । रोअहिँ सव राजा मुख हेरा ॥

माँगाहिँ सव विधिना पहुँ रोई । करु उपकार छोडावइ कोई ॥

कहि सँदेस सव विनति सुनाई । विकल बहुत किछु कहा न जाई ॥ 45

कादि पुरान वइसि लैइ हाथा । मरइ तो मरउँ जिअउँ तेहि साथा ॥

सुनि सँदेस राजा तव हँसा । प्रान प्रान घट घट महँ वसा ॥

हीरामनि अउ भाट दसउँधी भए जिउ पर एक ठाउँ ।

चलहु जाइ कह वतकही जहाँ वइठु हहिँ राउ ॥ २७० ॥

राजा रहा दीठि कइ अउँधी । रहि न सका तव भाट दसउँधी ॥

कहेसि मेलि कइ हाथ कटारी । पुरुस न आछहिँ वइठि पिटारी ॥ 50

कान्ह कोपि कइ मारा कंस । गूँग कि फूँक न बाजइ वंस ॥

गँधरव-सेन जहाँ रिस बाढा । जाइ भाट आगई भा ठाढा ॥

ठाढ देखि सव राजा राऊ । वाएँ हाथ दीन्ह बर-भाऊ ॥

गँधरव-सेन तुँ राजा महा । हउँ महेस भूरति अस कहा ॥

जोगी पानि आगि तूँ राजा । आगिहि पानि जूझ नहिँ छाजा ॥ 55

आगि बुझाई पानि सउँ तूँ राजा मन बूझ ।

तोरइ वार खपर हइ (लीन्हे) भिखिआ देहि न जूझ ॥ २७१ ॥

भइ अगिआँ को भाट अभाऊ । वाएँ हाथ दीन्ह बरभाऊ ॥

को जोगी अस नगरी मोरी । जो देइ सेँधि चढइ गढ चोरी ॥

इँदर डरइ निति नावइ माथा । किरिसुन डरइ कालि जेई नाथा ॥

बरँभा डरइ चतुर-मुख जास । अउ पातार डरइ बलि वास ॥ 60

मेघ डरहिँ विजुरी जिन्ह डीठी । कुरुम डरइ धरती जेहि पीठी ॥

धरति डरइ मंदर अरु मेरु । चंद सुरुज अउ गगन कुबेरु ॥  
चहउँ तो सब भंजउँ गहि केसा । अउ को कीट पतंग नरेसा ॥

घोला माट नरेस सुनु गरब न छाजा जीउँ ।

कुंभकरन कह खोपडी भूढत बाँचा भीउँ ॥ २७२ ॥

65 राखोन गरब विरोधा राम् । उहई गरब भण्ड सँगराम् ॥  
तेहि राखोन अस को परिवंदा । जेहि दस सीस बीस बहुदंदा ॥  
सरज जेहि कह तपइ रसोई । बहसुंदर निति धोती धोई ॥  
सक सउँटिआ ससि मसिआरा । पउनु करइ निति बार बौहारा ॥  
मीचु लाइ कह पाटी बाँधी । रहा न ओ सउँ दोसरि काँधी ॥  
70 जो अस बजर डरइ नहिँ टारा । सोउ मुआ दुइ तपसिन्ह मारा ॥  
नाती पूत फोटि दस अहा । रोअनिहार न एकउ रहा ॥

ओछ जानि कह काहुही जानि कोइ गरब कोइ ।

ओछे पारहँ दइउ इइ जीव-पतर जो देइ ॥ २७३ ॥

अउरु जो माट उहाँ हुत आगे । विनइ उठा राजा रिस लागे ॥  
माट आहि ईसुर कह कला । राजा सब राखहिँ अरगला ॥  
75 माट मीँचु जो आपनि दीसा । ता सउँ कउनु करइ रिस रीसा ॥  
भण्ड रजाप्रसु गंधरव-सेनी । काह मीँचु कह चढा नितेनी ॥  
काहे अनबानी अस धाई । करइ विटंड मटंत न करई ॥  
जाति करा कित अउगुन लावसि । बाएँ हाथ राज बरमावसि ॥  
माट नाउँ का मारउँ जीवा । अबहूँ पोल नाइ कह गीवा ॥  
तूँ रे माट यह जोगी तौहि प्रहि कहाँक संग ।

80 कहाँ छरइ अस पावा कहा भण्ड चित मंग ॥ २७४ ॥

जो सत पूँछसि गंधरव-राजा । सत पइ कहउँ परइ किन गाजा ॥  
माटाहि कहा मीँचु सन डरना । हाथ कटार पेट हनि मरना ॥  
जंबुदीप जो चितउर देख । चिदर-सेन बढ सहौ नरेअ ॥

रतन-सेन यह ता कर वेटा । कुल चहुआन जाइ नहिँ मेटा ॥  
 साँडे अचल सुमेरु पहारु । टरइ न जउँ लागइ संसारु ॥ 85  
 दान सुमेरु देत नहिँ खाँगा । जो ओहि माँग न अउरहि माँगा ॥  
 दाहिन हाथ उठाएउँ ताही । अउरु कौ अस वरभावउँ जाही ॥  
 नाउँ महापातर मोहिँ तेहि क भिखारी दीठ ।

जउँ खरि बात कहत रिस (लागइ) खरिअइ कहहिँ वसीठ ॥ २७५ ॥  
 ततखन सुनि महेस मन लाजा । भाट कला होइ विनवा राजा ॥  
 गँधर्व-सेन तुँ राजा महा । हउँ महेस मूरति सुनु कहा ॥ 90  
 पइ जो बात होइ भलि आगइ । कहा चाहि का भा रिस लागइ ॥  
 राज-कुअर यह होइ न जोगी । सुनि पदुमावति भएउ विओगी ॥  
 जंबूदीप राज-धर वेटा । जो हइ लिखा सौ जाए न मेटा ॥  
 तोरइ सुअइ जाइ ग्रहि आना । अउ जा कर बरोक तुँ माना ॥  
 पुनि यह बात सुनी सिउ लोका । करहु विआह धरम बड तो का ॥ 95

खपर लिए उहई पइ माँगइ मुएहु न छाडइ बारु ।  
 घूमि देखु जो कनक कचउरी देहु भीख नहिँ मारु ॥ २७६ ॥  
 भाट भेस ईसुर जस भाखा । हनुवँत वीर रहइ नहिँ राखा ॥  
 लीन्ह चूरि ततखन बइ सरी । धरि मुख मेलैसि जानहुँ मूरी ॥  
 महादेओ रन घंट बजावा । सुनि कइ सबद वरमह चलि आवा ॥  
 चढे अतर लैइ विसुन मुरारी । ईंदर-लोक सब लाग गोहारी ॥ 100  
 फन-पति फन पतार सउँ काढा । असटउ कुली नाग भा ठाढा ॥  
 तैँतिस कोटि देओता साजा । अउ छानवइ मेघु-दल गाजा ॥  
 अपन कोटि बइसुंदर वरा । सवा लाख परबत फरहरा ॥  
 नवइ नाथ चलि आवहीँ अउ चउरासी सिद्ध ।  
 अहुटि बजर जर धरती गगन गरु अउ गिद्ध ॥ २७७ ॥

- 105 जोगी धरि मेले सब पाछैं । अउरु माल आए रन काछैं ॥  
 मंत्रिन्ह कहा सुनहु हो राजा । देखहु अब जोगिन्ह के काजा ॥  
 हम जो कहा बड ता कर जूझू । होत आउ दर बहुत सबझू ॥  
 सन एक महुँ छरहट होइ बीता । दर महुँ छरहि रहइ सो जीता ॥  
 कइ धीरज राजा तब कोपा । अंगद आई पाँचो रन रोपा ॥
- 110 हसति पाँच जो अगुमन घाए । ते अंगद धरि छँड फिराए ॥  
 दीन्ह अडारि सरग कहँ गए । लउटि न बहुरे तहँ के भए ॥  
 देखत रहे अचंमउ जोगी हसति बहुरि नहिँ आए ॥  
 जोगिन्ह कर अस जूझव पुहुमि न लागहिँ पाँप ॥ २७० ॥  
 कहाहिँ घात जोगिहिँ हम पाई । सन एक महुँ चाहत हहिँ धाई ॥  
 जउँ लहि घामहिँ अस का खेलहु । हसतिन्ह केर जूह सब पेलहु ॥
- 115 जस गज पेलि होइ रन आगई । तस बगमेल करहु संग लागई ॥  
 हसति कि जूह जउहिँ अगुसारी । हनुवैत तउहिँ लंगूर पसारी ॥  
 जउहिँ सो सदन जीति रन आई । सवाहि लपेटि लंगूर चलाई ॥  
 बहुतक टूटि भए नउ खंडा । बहुतक जाइ परे ब्रह्मंडा ॥  
 बहुतक फिरा करहिँ अंतरीखा । अहे जो लाख भए ते लीखा ॥  
 बहुतक परे समुंद महुँ परत न पावा रोज ।
- 120 जहाँ गरब तहँ बेरा जहाँ हँसी तहँ रोज ॥ २७६ ॥  
 फिरि आगई का देखइ राजा । ईसुर केर घंट रन बाजा ॥  
 सुना संघ सो निमुन जउँ पूरा । आगई हनुवैत केर लंगूरा ॥  
 लीन्हई फिरहिँ सरग ब्रह्मंडा । सरग पतार लोक प्रितमंडा ॥  
 बलि वामुकि अउ ईंदर नरंदू । गरह नखत छरज अउ चंदू ॥
- 125 जायैत दानउ राकम पुरी । अहुठउ बजर आई रन जुरी ॥  
 जिन्ह कर गरब करत हुत राजा । सो सब फिरि बहरी होइ साजा ॥  
 जइहाँ महादेशो रन खरा । नारी घालि आई पाँ परा ॥

केहि कारन रिस कीजिअ हउँ सेवक अउ चेर ।

जेहि चाहिअ तेहि दीजिअ वारि गोसाईँ केर ॥ २८० ॥

तउ मेहस उठि कीन्ह वसीठी । पहिलई कडुइ अंत होइ मीठी ॥

तूँ गंधर्व राजा जग पूजा । गुन चउदह सिख देइ को दूजा ॥ 130

हीरामनि जो तुम्हार परेवा । गा चितउर गढ कीन्हसि सेवा ॥

तेहि बोलाइ पूछहु ओहि देख । अउ पूछहु जोगिन्ह कर मेख ॥

हमरे कहत रहइ नहिँ मानू । वह बोलाइ सोई परवाँनू ॥

जहाँ बारि तहँ आउ वरोका । करहु बिआह धरम घड तो का ॥

जो पहिले मन मान न फाँधी । परखि रतन गाँठी तब धाँधी ॥ 135

रतन छपाए ना छपइ पारख होइ सौ परीख ।

घालि कसउटी दीजिअइ कनक कचउरी भीख ॥ २८१ ॥

हीरामनि जो राजइ सुना । रोस चुभान हिअइ महँ गुना ॥

अगिआँ भई बोलावहु सोई । पंडित हुतई दोख नहिँ होई ॥

भइ अगिआँ जन सहसक धाए । हीरामनिहि बेगि लैइ आए ॥

खोला आगई आनि मँजूसा । मिला निकसि बहु दिन कर रुसा ॥ 140

असतुति करत मिला बहु भाँती । राजइ सुना हिअइ भइ साँती ॥

जानहुँ जरत अगिनि जल परा । होइ फुलवारि रहसि हिअ भरा ॥

राजई मिलि पूछी हँसि वाता । कस तन पीत भग्न मुख राता ॥

चतुर बेद तुम्ह पंडित पढे सासतर बेद ।

कहाँ चढे जोगिन्ह का आनि कीन्ह गढ भेद ॥ २८२ ॥

हीरामनि रसना रस खोला । देइ असीस अउ असतुति बोला ॥ 145

इंदर राज-राजेसुर महा । सउँहीँ रिस किछु जाग्र न कहा ॥

पइ जेहि बात होइ भलि आगई । सेवक निडर कहइ रिस लागई ॥

सुआ सुफल अबिँरित पइ खोजा । होइ न विकरम राजा भोजा ॥

हउँ सेवक तुम्ह आदि गोसाईँ । सेवा करउँ जिअउँ जब ताई ॥

- 150 जेई जिउ दीन्ह देखावा देख । सो पइ जिअ महँ बसइ नरेख ॥  
 जो मन सँवरइ एकइ तूही । सोई पंखि जगत रत-मूही ॥  
 नइन बइन सरवन बुधी सबइ तोर परसाद ।  
 सेवा मोर इहइ निति बोलउँ आसिरवाद ॥ २८३ ॥  
 जउ पंखी रसना रस रसा । तेहि क जीभ अवि रित पइ बसा ॥  
 तेहि सेवक के करमहिँ दोख । सेवा करत करइ पति रोख ॥  
 155 अउ जेहि दोस न दोसहि लागे । सो डरि तहाँ जीउ लैइ भागे ॥  
 जउँ पंखी कहवाँ थिर रहना । ताकइ जहाँ जाइ जो डहना ॥  
 सपत दीप फिरि देखेउँ राजा । जंबू-दीप जाइ पुनि बाजा ॥  
 तहँ चितउर गढ देखेउँ ऊँचा । ऊँच राज सरि तोहि पहुँचा ॥  
 रतन-सेन यहु तहाँ नरेख । आप्रउँ लैइ जोगी कर भेष ॥  
 सुआ सुफल पइ आना हइ ता तेँ मुख रात ।  
 160 कपा पीत सो तेहि डर सँवरउँ बिकरम पात ॥ २८४ ॥  
 पहिलई मप्रउ भाट सत-भासी । पुनि घोला हीरामनि साखी ॥  
 राजहि मा निसचइ मन माना । बाँधा रतन छोरि कइ आना ॥  
 कुल पूछा चउहान कुलीना । रतन न बाँधई होइ मलीना ॥  
 हीरा दसन पान रँग पाके । बिहँसत सबहिँ चीजु बर ताके ॥  
 165 सुंदरा सवन मइन सउँ चाँपे । राज-बइन उघरे सब भाँपे ॥  
 आना काटर एक तुखारु । कहा सौ फेरइ मा असवारु ॥  
 फेरा तुरइ छतीसउ सूरी । सबहिँ सराहा सिंगल-पूरी ॥  
 कुअर बतीसउ लखना सहस करा जस मानु ।  
 कहा कसउटी कसिअइ कंचन बारह बानु ॥ २८५ ॥  
 देखि सुरुज पर कँल सँजोगू । असतु असतु बोला सब लोगू ॥  
 170 मिला सौ पंस अंस उज्जिआरा । मा बरोक अउ तिलक सँवारा ॥  
 अनिरुध कहँ जो लिपी जइमारा । को भेटइ बानामुर हारा ॥



२२-१७२-१७६. ]

सूरी खंड

[ १२३

आजु बरी अनिरुध कहँ ऊखा । देओ अनंद दइति सिर दूखा ॥  
सरग सूर भुईँ सरवर केवा । वन-खँड भवँर भप्रउ रसलेवा ॥  
पछिउँ क वार पुरुव कइ वारी । लिखी जौ जोरी होइ न निनारी ॥  
मानुस साज लाख पइ साजा । साजा विधि सोई पइ वाजा ॥ १७५  
गए जौ वाजन वाजत जेहि मारन रन माँह ।  
फिरि वाजे ते वाजे मंगलचार उनाँह ॥ २८६ ॥

इति सूरी खंड ॥ २५ ॥

---

# पटुमावति

## शब्दसूची

# पटुमावति

## शब्दसूची

अ.

अँकरवरी-कर्करी-कंकरी १२. ६१.

अँकूल-अङ्कुर-अँकुआ ६. ३७; ११.

४४: २४. १०१.

अँग-अङ्ग-अंग २०. १८; २२. ४२:

२४. १०८.

अँगचई-अङ्गीकरोति-अंगीकार करती है-  
सहती है २. १६८.

अँगार-अङ्गार-अँगारा १५. २४.

अँगारा-अङ्गार-२४. १०८.

अँगूठी-अङ्गुलीयक-अंगुलिअ १. १०२;

१०. १०६.

अँगुरी-अङ्गुली १०. १०८.

अँगूरा-अंगूर ५. ३५.

अँगूरू-अंगूर ८. १६.

अँजीरी-अंजीर २. ७४.

अँजोर-आज्वल-उज्ज्वल १. १३६.

अँजोरा-आज्वल्य-आजल-उजेला १३.

५३.

अँजोरी-उज्ज्वल ६. ५.

अँतरिख-अन्तरिख-अंतरिख १. १०८;

१६. २०.

अँतर-अन्तर २४. ४१.

अँतरहीं-अन्तरे हि-भीतर २४. ४३.

अँतरीखा-अन्तरिख २५. ११६.

अँदेस-अँदेसा, संशय ८. ६६.

अँदोरा-आन्दोलन-अंदोलण-कोलाहल

(अ-आ; P. 80) १२. ६३.

अँधकूपा-अन्धकूप २१. ६.

अँधिअर-अंधकार-अन्धवार-अंधिआर-

अंधेरा २४. ८०.

अँधिआर-अन्धकार-अंधेरा १२. ३२,

१०१.

६४, १०२, १०४, १२४, १२८,  
१३२, १४५, १५५, १७०.  
अउगाह-अवगाध-ओगाध, ओगाठ  
अवगाह, अगाध, १. १४३; अति  
कठिन, दुर्गम ११. २४; १३. ३४.  
अउगाहा-अवगाढ-अवगाह-ओगाढ-  
अथाह २. ४६; कठिन १३. ३३;  
अगाध २२. ७०; २३. १७०.  
अउगाहि-अवगाह-हूय कर १. ८.  
अउगुन-अवगुण १. ८८; ५. ५६; ८.  
२२, ४८, ६७; २५. ७८.  
अउटन-आवत्तन-ओटना (तु० अवटा-  
आवत्ता) १८. ३८.  
अउटि-आवत्त-ओटा कर २३. ११८.  
अउतरा-अवतार हुआ-उतरा ६. ४.  
अउतरी-अवतार हुआ-उतरी ३. ६.  
अउतहि-आते ही २२. ७.  
अउतार-अवतार १६. ७०; २४. ५२.  
अउतारा-अवतार दिया १. १६२; ७.  
५८; अवतार ३. २३.  
अउतारी-अवतार दिया २. ३; ३. १,  
२८; ६. ११.  
अउतारू-अवतार १. ४.  
अउधानू-अवधान-गर्भाधान-गर्भस्थिति  
३. ६.  
अउधारा-अवधारण किया-आरंभ किया  
७. ५०;  
अउँधी-अधः-अधं २५. ४६.

अउधूत-अवधूत-अवधूय-विरक्त २. ४८;  
२० ६६.  
अउपन चारी-ओपने वाली-सोने के वर्ण  
को दिखाने वाली (ओप्पा-शाण पर  
घिसना) ८. ४.  
अउर-अपर-अवर-और ६. ४०.  
अउरहि-अपरं हि-और को २२. ३७.  
अउँरा-आमलक-औरा २०. ४६.  
अउरहि-अपरासु-औरों में २२. २०.  
अउरहि-अपरं हि-दूसरे को ८. ५७;  
अपरस्य-दूसरे को, २४. ४; अपर-  
स्मात्-और से २५. ८६.  
अउरू-अपर-अवर-और १. ४०, ५५,  
६५, ६६; २. ३०, ४२, ८५, ७६,  
१४६; ५. ३०; ७. ४३; ६. ६; १०.  
२, ५१, ६६; १६. ७, ८, १५, २४;  
१६. ३०; २०. ६०, ७८, ८३; २३.  
३४; २४. ४२, ४४, १०३, १०५;  
२५. ३५, ७३, ८७, १०५.  
अउस्तान-अवसान-स्थिरता १५. ४८.  
अकत्थ-अकथ्य २३. ५६.  
अकसर-एकसर-अकेला १६. ४६.  
अकाज-अकृत्य-अकज, (अकय)-  
अमङ्गल ८. ४८.  
अकास-आकाश-आकास (गा) २. २१;  
३. ४८; १४. ५; १५. ४२; १६.  
५५; २४. ८०.  
अकासा-आकाश १. १६६; २. १८,

अधिआरकटोला-अन्धकटोला-अन्धकों

का स्थान । अन्धक-यदुमशियों का

उपभेद १३. ६, १५. ७५

अधिआरा-अन्धकार १. ८४, १०. ४,

१२. ५७, १३. ५२

अधिआरी-अन्धकारिणी-अंधेरी ८, १४,

३६, १३. ६, २४. ८४,

अंधेर-अन्धकार-अंधेरा १. १३६

अंधेरा-अन्धकार १२. ५१

अंधराज-आधराज-अधराह २. १८, २४

अंधिरया-आवृषा-आविहा-आन्धर्य-

वेकापदा १५. २७

अंधित-अमृत (P 137, 295) २३.

१५२, २४. ७५, २५. १४८

अध-अधे (सबोधन) ४. ११, ५. ६

अधस-अधस-अधस १ ४८ ६२, ६४, ७८,

७८, १३६, १४२ २ १६ ५ ६

६. ४६, १०. १४८ १३ ३३ १५.

३०, १६. ३, १६ ५४, २१. २४,

२३. १६, ६२, ६० १३० २४. ३

अधस-अधसोहि-अधसो ही ४ ५५ ८

५२, ६. ३२, २१ २८ २४ ११६

अधसि-अधसि २३. १३७, १४४

अधसि-अधसि-अधसि १८ ६

अधसि-अधसि १४, ११

अधस-अधस-अधस १८ २०

अध-अध-अध-अध १. ७, १० १०

१६, २७, २५, २६, ३४, ३८, ४८

४८, ५४, ६६, ७६, ८०, ८२, ८४,

८८, ९६, १०३, १४६, १४९, १५२,

१६८, १७०, १७४, २. ३, ११, १२,

१५, २५, ३५, ३७, ४१, ४२, ५४,

५६, ७४, ७८, ८३, ८४, ८७, ८८,

८२, ८५, १०२, १३६, १५०, १५४,

१६३, १६४, १६७, १६९, १६५,

३. ८, २६, ३०, ३५, ४. २१, ३६,

४७, ५. ३७, ६ ३, ७. ८, २४,

३७, ४६, ८. २, १२, ६४, ६. ४,

८, १५, २३, २७, ३०, १०. १६,

२४, ६५, ७६, १०६, १०८, १५१,

१६. ६ २७, ३२, ३५, ५०, १२. १,

३. १३, ३६, ३८, ६०, ७०, ८०,

८५, १०१, १३. २६, ३५, ४६, ४६,

६१, १४. १६, १५. ४, ५, ११,

७८, १६ ६, १०, १८, २०, ४४,

४७, १७ ८, १६, १८ ३, ३३

३६ १६. १६, २०, ४४, २०. ३,

६, ११, १५, २१, २३, ३५, ५१,

५३, ५८, ७०, ७५, ११७, १२२,

१२४, १२६ २१. १२, २६, ६०,

२२. २, ४, ५, ६, १२, २१, ४६,

५६ ६७, ७२, ७६, २३. १, ६,

७८, ५७, ७८, ८१, ८२, ८३,

१४३, १४७, २४. १७, ७६, १२७,

१३०, १४६, २५. ८, ६, २६,

३०, ३६, ३७, ४८ ६०, ६२, ६३,

६४, १०२, १०४, १२४, १२८,  
१३२, १४५, १५५, १७०.  
अउगाह-अवगाध-ओगाध, ओगाढ  
अवगाह, अगाध, १. १४३; अति  
कठिन, दुर्गम ११. २४; १३. ३४.  
अउगाहा-अवगाढ-अवगाह-ओगाढ-  
अथाह २. ४६; कठिन १३. ३३;  
अगाध २२. ७०; २३. १७०.  
अउगाहि-अवगाह-द्वय कर १. =.  
अउगुन-अवगुण १. ८८; ५. ५६; ८.  
२२, ४८, ६७; २५. ७८.  
अउटन-आवर्त्तन-ओटना (तु० अवट्टा-  
आवर्त्ता) १८. ३८.  
अउटि-आवर्त्त-ओटा कर २३. ११८.  
अउतरा-अवतार हुआ-उतरा ६. ४.  
अउतरी-अवतार हुआ-उतरी ३. ६.  
अउतहि-आते ही २२. ७.  
अउतार-अवतार १६. ७०; २४. ५२.  
अउतारा-अवतार दिया १. १६२; ७.  
५८; अवतार ३. २३.  
अउतारी-अवतार दिया २. ३; ३. १,  
२८; ६. ११.  
अउतारू-अवतार १. ४.  
अउधानू-अवधान-गर्भाधान-गर्भस्थिति  
३. ६.  
अउधारा-अवधारण किया-आरंभ किया  
७. ५०;  
अउँधी-अधः-अधं २५. ४६.

अउधूत-अवधूत-अवधूव-विरक्त २. ४८;  
२० ६६.  
अउपन चारी-ओपने वाली-सोने के वर्ण  
को दिखाने वाली (ओप्पा-शाण पर  
धिसना) ८. ४.  
अउर-अपर-अवर-और ६. ४०.  
अउरहि-अपरं हि-और को २२. ३७.  
अउँरा-आमलक-औरा २०. ४६.  
अउरहि-अपराध-औरों में २२. २०.  
अउरहि-अपरं हि-दूसरे को ८. ५७;  
अपरस्य-दूसरे को, २४. ४; अपर-  
स्मात्-और से २५. ८६.  
अउरू-अपर-अवर-और १. ४०, ५५,  
६५, ६६; २. ३०, ४२, ८५, ७६,  
१४६; ५. ३०; ७. ४३; ६. ६; १०.  
२, ५१, ६६; १६. ७, ८, १५, २४;  
१६. ३०; २०. ६०, ७८, ८३; २३.  
३४; २४. ४२, ४४, १०३, १०५;  
२५. ३५, ७३, ८७, १०५.  
अउसान-अवसान-स्थिरता १५. ४८.  
अकथ-अकथ्य २३. ५६.  
अकसर-एकसर-अकेला १६. ४६.  
अकाज-अकृत्य-अकज, (अकय)-  
अमङ्गल ८. ४८.  
अकास-आकाश-आकास (गा) २. २१;  
३. ४८; १४. ५; १५. ४२; १६.  
५५; २४. ८०.  
अकासा-आकाश १. १६६; २. १८,

अधिआरकटोला-अन्धकटोला-अन्धकों  
का स्थान । अन्धक-यदुवंशियों का  
उपभेद १३. ६, १५. ७५  
अधिआरा-अन्धकार १. ८४, १०. ४,  
१२. ५७, १३. ५२  
अधिआरी-अन्धकारिणी-अंधेरी ८. १४,  
३६, १३. ६, २४. ८४,  
अंधेर-अन्धकार-अंधेरा १. १३६  
अंधेरा-अन्धकार ११. ५१  
अयराउ-आग्रराज-अग्रराह २. १८, २४.  
अयिरथा-आवृथा-आविहा-आवृथ-  
वेपावदा १५. २२  
अयिरित-अमृत (P 137, 295) २३.  
१५२, २४. ७५, २५. १४८  
अइ-अये (सबोधन) ४. ११, ५. ६  
अइस-ईरा-ऐसा १. ४८, ६२, ६४, ७८,  
७८, १३६, १४२, २. १६, ५. ६,  
६. ४६, १०. १४८, १३. ३३, १५.  
१०, १६. ३, १६. ५४, २१. २४,  
२३. २६, ६२, ६७, १३०, २४. ३  
अइसह-ईराहि-ऐसे ही ४. ५५, ८  
५२, ६. ३२, २१. ७८ २४. ११६  
अइमि-ऐसी २३. १३७, १४४  
अइमी-ईराहि-ऐसी १८ ६  
अइमे-ऐसे १४. ११  
अइह-आपाह-आवेगा १८ २७.  
अउ-अपर-अवर-आर १. ७, १०,  
१४, २२, २५, २६, ३४, ३८

४८, ५४, ६६, ७६, ८०, ८२, ६४,  
६८, ६६, १०३, १४६, १५१, १५२,  
१६८, १७०, १७४, २. ३, ११, १२,  
१५, २५, ३५, ३७, ४१, ४२, ५४,  
५६, ७४, ७८, ८३, ८४, ८७, ८८,  
६२, ६५, १०२, १३६, १५०, १५४,  
१६३, १६४, १८७, १६१, १६५,  
३. ८, २६, ३०, ३५, ४. २१, ३६,  
४७, ५. ३७, ६. ३, ७. ८, २४,  
३७, ४६, ८. ५, १२, १४, ६. ४,  
८, १५, २३, २७, ३०, १०. १६,  
२४, ६५, ७६, १०६, १०८, १५३,  
११. ६, २७, ३२, ३५, ५०, १२. १,  
३, १३, ३६, ३८, ६०, ७०, ८०,  
८५, १०१, १३. २६, ३५, ४६, ४६,  
६१, १४. १६, १५. ४, ५, ११,  
७८; १६. ६, १०, १८, २०, ४४,  
४७, १७. ८, १६, १८ ३, ३३  
३६; १६. १६, २०, ४४, २०. २,  
६, ११, १५, २१, २३, ३५, ५१,  
५३, ५८, ७०, ७५ ११७, १२२,  
१२४, १२६, २१. १२, ५६, ६०,  
२२. २, ४, ५ १२, २१, ४६,  
५६, ६७, ७२, ७६, २३. १, ६,  
७६, ५७, ७८, ६१, ६२, ६३,  
८ १२७,

१०४.

अचेता-अचित्त-मूर्च्छित ११.६; २४.६३.

अद्युतरि-विना क्षत्र का करके १. ४३.

अद्युरई-अप्सरा-अद्युरा १०. ३१.

अद्युरिन-अप्सरा-अद्युरी २. १६३.

अद्युरिन्ह-अप्सराओं ६. २६; P. 328

अद्युरी-अप्सरा २. ६४; ३. ४८.

अद्युत-अद्युत-विना क्षत्रा-पवित्र १०.

६१.

अजहुँ-अद्य-अज-आज तक, अद्य; (ज-

द्य, P. 280) १०. ६१; २२. ४०.

अजहुँ-अद्य भी ११. ४८.

अजान-वृत्त का नाम २०. ५५.

अजाना-अज्ञान-अजाण-मूर्ख ११. ४८.

अजानी-अज्ञानिनी-अयानी १२. ५२.

अजूध्या-अयोध्या ३. २४.

अंचल-आंचल-परदा २. ११०; ३. ७;

२४. ७४.

अठारह-अष्टादश १. ३२.

अडार-अट्ट-अडह-अगणित-अडलक

(सुधा०)-जो डाली में न समाय-

ढेर का ढेर १०. ३७.

अडारि-अधारण-प्रक्षेपण-कैंक २५.

१११.

अतर-अस्त्र-अत्य-जो मन्त्र से चलाया

जाय १०. २२; १५. १००.

अति १. ७३, १०३, १६५; २. २५, २६,

४६, ५५, ७५, १६५; ३. ३६; १०.

६०, १५४; १३. ६; १६. २८; १६.

४३; २०. ४१.

अतिरात-अतिरक्त-(रक्त) १०. १५५.

अथरवन-अथर्वण वेद-अथर्वण १०. ७७.

अथवा-अस्तमित-(अस्तमन-अत्यवण)

अस्त हो गया (स्त-स्थ P. 307) २१.५.

अथाह-अत्याह-अगाध (P. 88, 333,

505) १८. २४.

अदल-न्याय १. ६१, ११३, ११४,

११५;

अदिसिट-अदष्ट-अदित् ११. ३०.

अदेस-आदेश १. १७३; १२. ४०;

१६. ६७.

अदेसु-अदेश-अदेसा-चिन्ता २४. १५२

अदेसू-आदेश २५. ३६.

अधजर-अर्धज्वलित-अधजल-आधा-

जला २०. ७२; २२. १५.

अधर-अहर-ओठ ३. ४६; १०. ५४,

५७, ६१, ६४; २३. १३६.

अधरन्ह-ओठों के १०. ५६.

अधार-आधार ७. १६; २४. ८२.

अधारा-आधार १०. १२२.

अधारी-आधार १. १६५; १२. ४.

अधिक-अधिग-ज्यादह २. २५, २६; ३.

२२; १०. ६६, १३८; १३. ४६;

१५. २६. १६. २, ५०; २४. ५३,

५४, ७५.

अधिकउ-अधिकतर २०. १०६.



१२१; १६. १३; २३. ११६, १२७.

अकासी-आकाशीय-आकाश की १२.

७८.

अकास्-आकाश २. १८५; ३. १६;

१६. १२; १८. १३.

अकूत-अनाकूत-जो कूता न जा सके;

√कू-√कूट; १३. २४; २०. ८२.

(आकूत-आकूय, हृत्वा, अकस्माद्  
वाणी) १७. ६.

अकेला-एकाकी-एकल १२. ६६; १३.

४; १६. २६, ६८; २२. ७६; २३.

१३०.

अकेलि-अकेली २४. ११६.

अखंडित-अखण्डित-अखंडित ७. ५७.

अगम-अगम्य-अगम्य २. १२४; १२.

८४; १५. ३०; १८. ६; २२. ६८.

अगर-अगर-सुगन्धित वृक्ष १. २५; २.

६२, १०२; २०. ७६; २३. ७८.

अगरधारि-अगरवालिन-अगर वाले की

स्त्री २०. १६.

अगस्ती-अगस्त्य ऋषि-अगस्थि २४.

६०.

अगाध-अगाध-अगाध-अमीम २४.

१३४.

अगाहि-अगाध-अपार ७. ७२.

अगाह-आगाह-विजित, नवर २३.

१२८; २४. ५६.

अगिधौ-आशा-आशा (आ-शा, P ३३०)

२५. ५७, ११८, १३६.

अगिधौ-अगिधौ-आशा ३. ५५.

अगिडाह-अगिदाह-अगिडाह २३. १५८.

अगिनवाण-अगिवाण १०. ८५, ११७.

अगिनि-अग्नि-अग्नि-आग १. ३; १६.

३. २२, २३, ७८, ६४, १०७; १८.

१३, ३६; २१. ६, ५१, ५६; २४.

१०८; २५. १४२.

अगिलहि-आग (ल)-आगे को १. १११;

अगुधौ-अगध वा अगुध-गुह १. १५४;

१२. ८७, ६७.

अगुमन-आगमन-आगमन, आगे (प्रारंभ)

ही से १२. २४; १३. ५८; १४. १५;

१५. ७१; २५. ११०. आगमन २१.

३३; आगे २३. ३६, ६१; २४. ३२.

अगुसारी-अगुसारी २५. ११६.

अयाह-अघना, पूर्ण होना-नृत्य होना

(आघात-पूर) १. २०.

अंग-अङ्ग-अवयव, शरीर २. ५८, ४.

२६, ३. ४२; ६. १९; १२. १५;

१८. १३; २१. १५, २४, ५६, ६४.

अंगद-अङ्गद-बोदा का नाम २५. १०६,

११०.

अंगा-अङ्ग १८. २३; २०. १२.

अचल-विचल १. १४८, २५. ८३.

अचंमउ-अचंमा-आश्रय २५. ११७.

अचरज-आश्चर्य-अचरिच ५. २७

अचेन-अचित्त-मूर्छित ४. ४६; २४.

१०४.

अचेता-अचित्त-मूर्च्छित ११.६; २४.६३.

अद्यतरि-विना चत्र का करके १. ४३.

अद्युरई-अप्सरा-अच्छरा १०. ३१.

अद्युरिन-अप्सरा-अद्यरी २. १६३.

अद्युरिन्ह-अप्सराओं ६. २६; P. 328

अद्युरी-अप्सरा २. ६४; ३. ४८.

अद्युत-अच्छुअ-विना छाया-पवित्र १०.

६१.

अजहुँ-अय-अज-आज तक, अय; (ज-

य, P. 280) १०. ६१; २२. ४०.

अजहुँ-अय भी ११. ४८.

अज्ञान-वृत्त का नाम २०. ५५.

अज्ञाना-अज्ञान-अज्ञाण-सूख ११. ४८.

अज्ञानी-अज्ञानिनी-अयानी १२. ५२.

अजूध्या-अयोध्या ३. २४.

अंचल-आंचल-परदा २. ११०; ३. ७;

२४. ७४.

अठारह-अष्टादश १. ३२.

अडार-अटट-अडह-अगणित-अडलक

(सुधा०)-जो डाली में न समाय-

ढेर का ढेर १०. ३७.

अडारि-अधारण-प्रक्षेपण-फेंक २५.

१११.

अतर-अस्त्र-अत्य-जो मन्त्र से चलाया

जाय १०. २२; १५. १००.

अति १. ७३, १०३, १६५; २. २५, २६,

४६, ५५, ७५, १६५; ३. ३६; १०.

६०, १५४; १३. ६; १६. २८; १६.

४३; २०. ४१.

अतिरात-अतिरक्त-(रक्त) १०. १५५.

अथरवन-अथर्वण वेद-अथर्वण १०. ७७.

अथवा-अस्तमित-(अस्तमन-अत्यवण)

अस्त हो गया (स्त-स्थ P. 307) २१. ५.

अथाह-अत्थाह-अगाध (P. 88, 333,

505) १८. २४.

अदल-न्याय १. ६१, ११३, ११४,

११५;

अदिसिट-अदष्ट-अदिट्ट ११. ३०.

अदेस-आदेश १. १७३; १२. ४०:

१६. ६७.

अदेसु-अदेश-अदेसा-चिन्ता २४. १५२

अदेसु-आदेश २५. ३६.

अधजर-अर्धज्वलित-अद्धजल-आधा-

जला २०. ७२; २२. १५.

अधर-अहर-ओठ ३. ४६; १०. ५४.

५७, ६१, ६४; २३. १३६.

अधरन्ह-ओठों के १०. ५६.

अधार-आधार ७. १६; २४. ८२.

अधारा-आधार १०. १२२.

अधारी-आधार १. १६५; १२. ४.

अधिक-अधिग-ज्यादह २. २५, २६; ३.

२२; १०. ६६, १३८; १३. ४६:

१५. २६. १६. २, ५०; २४. ५३,

५४, ७५.

अधिकउ-अधिकतर २०. १०६.



अपारा-अपार १. ६, ७३, ७७, १६५;  
 ११. ३; १३. २०; १५. २५; १६.  
 ४५; २२. १०; २४. १०५, ११८.  
 अपारू-अपार ( $\sqrt{\text{पू}}$ ) १. १७२.  
 अपुनइ-अपने २१. ३४.  
 अपुनास-अप्य (आत्मन् P. 277, 401)-  
 अपना नाश २३. १३६.  
 अपूर्व-अपूर्व-अपुव्य (P. 132) २.  
 ११३.  
 अपूरि-आपूरि-भरपूर २. ३२, ७१.  
 अपूरी-भरपूर २. १८२; १६. ४४.  
 अपेल-जो न पेला (हटाया, पेल गतौ,  
 म+हँर) जा सके १८. २१.  
 अव १. ५४; ३. ६६; ४. ३६; ५.  
 १५, १७, ४८, ५६; ७. २६, ३१;  
 ६. ३६, ५३; १०. ८६, १३३; ११.  
 २२, ३४, ५५; १२. २२, २७, ४२,  
 ४३, ६०, ६२; १३. १२, ३७; १४.  
 २१; १६. २६; १८. १६, ५४; १९.  
 ५१; २०. ६१, १०६, ११६; २१.  
 ६, ४०, ४५, ४७, ४८; २२. २३,  
 ५८, ६०, ६१; २३. २१, ४२, ७२,  
 १०३, १२७, १२८, १२९, १६६;  
 २४. १०, ३२, ८५, ८६, १२८,  
 १३०, १३४, १३५, १३६. १५६,  
 १५६; २५. ६, २४, १०६.  
 अवरण-अवरण-वरण रहित अथवा अवर्ण-  
 अवरण-वरण से परे १. ४६.

अवहि-अभी २१. ५३; २३. ११७.  
 अवहि-अभी ३. ८०; १०. ६, १५१;  
 १८. ३०; २२. २७; २३. २८.  
 अवही-अभी ६. २२; १४. ११; १८.  
 २७.  
 अवहुँ-अव भी २३. ५३; २४. ८८.  
 अवहुँ-अव भी १. ७८; २३. ४३, ५६,  
 ११५; २५. ७६.  
 अवा-अवूक सिदीक १. १०.  
 अंवा-आम्र-(अंवर P. 137); आम्म-  
 आँव १६. ५५.  
 अंग्रित-अमृत ७. ७०; ८. ४२; १०.  
 ६२, ७३, ८२, ११४; १६. ४४;  
 १७. ११; २. ३१, ५०, ५६, ७३,  
 ८०, १४६, १५२.  
 अंग्रितमूर-अमृतमूल २०. ४८.  
 अवासा-आवास-निवासस्थान २. ६०;  
 १६. १५.  
 अमरन-आमरण १०. १०४; १२. ६४.  
 अमाऊ-अमागू-अमागिन्-अमाइ-  
 अमागा २५. ५७.  
 अभिमानू अभिमान १६. ३५.  
 अभोग-आभोग-पूर्ण-पवित्र १०. १६०.  
 अमर १. १२०; २. १४६, १५२; ८.  
 ७६; १६. ७१; २४. ७, ११७, १५२.  
 अमरपुर-मुक्तिस्थान ११. १६.  
 अमावस-(अमावास) अमावास्या-  
 अमावस्ता-अमावस (लोप के लिये

अनघासे-विना चासे-पत्र १०, ११६

अनगा-अघा-कम ३, ४३

अनत-अन्यत-अघो २३, १०, १०

अनद-आनन्द २५, १०२

अनद-आनन्द १, २२

अनघन-जो बनने के योग्य न हो-अनुपम  
(अथवा अनव-विशेष अधिक नवीन  
वस्तु दूसरी न हो) २, १०१, १०६

अनघानी-अनुचित वाली २५, ७७

अनमली-तुला फल देने वाला ५, ७७,

अनल-अग्नि १८, १२

अनघ-अनघ के आश्रय १०, ११६

अनार्ह-आनन्द-कैलास २, २१

अनिघा-अनघा-अनघा १, ८

अनिघा-अनघा, कृष्ण का पौत्र, मधु  
मन का पुत्र २०, ११६, २३, ११६  
२५, १०१, १०२

अनी-अनघा-अनघा-मेला १०, ४१

अनु-अन-आप (अथ आश्रय अथवा  
अथ शब्दार्थ) १६, २१ आश्रय  
२१ ४१ अनुजा २३, १०, आन-  
अनघ-आप २५, १४२

अनूप-अनघ-अनुपम १, ६६ २, २६,  
१४, ७३ ६६ २०० ७, १० ४४  
६, २१

अनूपा-अनुपम-अनघा १, ६२ २,  
२१, ८, ११, १२, ४६

अनेग-अनेक १, ८० २, ६६

अंत १, ४१, १०६, २, २४, ३, ६८,  
४, ७३, १२, १४, ४०, २१, १७,  
१२, १६, २२, २१, २४, २३, १६,  
२५, १२६

अंतहु-अन्त मे ८, ३२

अंतरिख-अन्तरिख १, १३

अंघ-अघा १, ६४, १५, ७१, २३,  
१०१, २४, ४७

अघा-अनघ १०, ६६

अघा १, ४३, १२, ६६

अघ १, १७

अंस-अनघ-अनघा २५, १००

अनघा-अनघा-अनघा (अनघ अनघा-  
स्वाति, P ३१३) २०, ७६

अनघा-स्वाति के लिए ४, १

अनघा-अनघा १०, ११६, २२, १६

अनघा-अनघा २०, ६७

अनघा-अनघा १२, ४१, १३, २७

अनघा १०, २४

अनघा २, १२४, ३, ७२, ४, १४, ७,  
१० ७५, २२

अनघा-अनघा-अनघा २२, ४०

अनघा-अनघा-अनघा-अनघा  
का मू० ७१, ३६

अनघा-अनघा-अनघा-अनघा  
१०, ३४

अनघा-अनघा २, २२

अनघा-१५, ३

अपारा-अपार १. ६, ७३, ७७, १६५;  
 ११. ३; १३. २०; १५. २५; १६.  
 ४५; २२. १०; २४. १०५, ११८.  
 अपारु-अपार (√ष्ट) १. १७२.  
 अपुनइ-अपने २१. ३४.  
 अपुनास-अप्प (आत्मन् P. 277, 401)-  
 अपना नाश २३. १३६.  
 अपूरव-अपूर्व-अपुव्य (P. 132) २.  
 ११३.  
 अपूरि-आपूरि-भरपूर २. ३२, ७१.  
 अपूरी-भरपूर २. १८२; १६. ४४.  
 अपेल-जो न पेला (हृदाया, पेल् गतौ,  
 म+ईर) जा सके १८. २१.  
 अव १. ५४; ३. ६६; ४. ३६; ५.  
 १५, १७, ४८, ५६; ७. २६, ३१;  
 ६. ३६, ५३; १०. ८६, १३३; ११.  
 २२, ३४, ५५; १२. २२, २७, ४२,  
 ४३, ६०, ६२; १३. १२, ३७; १४.  
 २१; १६. २६; १८. १६, ५४; १९.  
 ५१; २०. ६१, १०६, ११६; २१.  
 ६, ४०, ४५, ४७, ४८; २२. २३,  
 ५८, ६०, ६१; २३. २१, ४२, ७२,  
 १०३, १२७, १२८, १२९, १६६;  
 २४. १०, ३२, ८५, ८६, १२८,  
 १३०, १३४, १३५, १३६, १५६,  
 १५६; २५. ६, २४, १०६.  
 अवरण-अवर्ण-वर्ण रहित अथवा अवर्ण्य-  
 अवर्ण-वर्णन से परे १. ४६.

अवहि-अभी २१. ५३; २३. ११७.  
 अवहिँ-अभी ३. ८०; १०. ६, १५१;  
 १८. ३०; २२. २७; २३. २८.  
 अवहीँ-अभी ६. २२; १४. ११; १८.  
 २७.  
 अवहुँ-अव भी २३. ५३; २४. ८८.  
 अवहुँ-अव भी १. ७८; २३. ४३, ५६,  
 ११५; २५. ७६.  
 अवा-अव्ययक सिदीक १. १०.  
 अंवा-आम्र-(अंवर P. 137); आम्म-  
 आँव १६. ५५.  
 अंघ्रित-अमृत ७. ७०; ८. ४२; १०.  
 ६२, ७३, ८२, ११४; १६. ४४;  
 १७. ११; २. ३१, ५०, ५६, ७३,  
 ८०, १४६, १५२.  
 अंघ्रितमूर-अमृतमूल २०. ४८.  
 अवासा-आवास-निवासस्थान २. ६०;  
 १६. १५.  
 अभरण-आभरण १०. १०४; १२. ६४.  
 अभाऊ-अभागू-अभागिन्-अभाइ-  
 अभागा २५. ५७.  
 अभिमानू अभिमान १६. ३५.  
 अभोग-आभोग-पूर्ण-पवित्र १०. १६०.  
 अमर १. १२०; २. १४६, १५२; ८.  
 ७६; १६. ७१; २४. ७, ११७, १५२.  
 अमरपुर-मुक्तिस्थान ११. १६.  
 अमावस-(अमावास) अमावास्या-  
 अमावस्ता-अमावस (लोप के लिये

तु० आधोच-अवपात P. 150)  
 भावस (अलोप, P. 149) ३. १३.  
 अमी<sup>०</sup>-अमृत-अमिश १. २७; १०. ६१,  
 ६४.  
 अमी<sup>०</sup>रस-अमृतरस-अमिररस ७. ४६;  
 १०. ५६, ५७.  
 अमोल-अमूल्य-अमोक्ष (रूप-ज्ञ P  
 246, क-उ P. 83, उ-प्रो P. 197)  
 २. ७२; ७. ४८, १७. १८.  
 अमोला-अमूल्य १. ६२, १८१; १०.  
 ८१; २०. ११.  
 अमर-अमर २४. १५१.  
 अरहल-पुरु स्थान का नाम, जहाँ धमुना  
 गंगा से घट गई है; (अङ्ग धमियोगे;  
 इह के लिये देखो P. 595) १०.  
 १२६.  
 अरगला-अगला-अगला-अगली-अव-  
 रोधक २५, ७४.  
 अरधानि-आमाय (मा+आ)-अमाय-  
 सुगन्ध १०. ११२; १६. १२.  
 अरधानी-अरधानि ४. २६, १०. १;  
 अरजुन-पाण्डव अर्जुन-अर्जुन २३.  
 १८४.  
 अरजुनधान-२०. १२७.  
 अरघ-अर्घ-अर्घ ७. ४८; १०. ७८, ७९.  
 अरघाए-अर्घ दिव्य ३. १८.  
 अरम-आरम १. १८५.  
 अर-अर २३. १२; २४. १८, २५. ६२.

अरुभार-उलम्बता है (रुध+अव; वलोप  
 के लिये तु० अरु-अवट; एम्-एवम्  
 P. 149) ६. ४२; २४. ११५.  
 अरुमा-अवल्ह हुआ-उलम्ब गया,  
 उलम्बा हुआ ५. ३२; २४. ११५.  
 अरुमी-उलम्ब गई २४. ११५.  
 अरुप-रूपरहित १. ४६.  
 अरे-नीच संशोषन २१. २५.  
 अलउदीन-अलाउद्दीन १. १८७.  
 अलक-अलग-लट २. १०३.  
 अलकई-अलकई-लट १०. ७.  
 अलख-अलख-अलख (तु० तिष्ठ-  
 (तिष्ठ) तीक्ष्ण; लक्ष्य-लक्ष्य  
 P. 312) १. ४६.  
 अलदशद-सैयद मुहम्मद के चेले  
 १. १५५.  
 अलि-अमर ६. २२; १०. १४; २१.  
 १८; २३. १५६.  
 अली-आलीन मुसलिम बोझा का नाम  
 १. ६३.  
 अलीपि-आलीप-अलीप-अररय  
 २४. १६.  
 अयधि-अवधि-मिति-वसन्त ऋतु का  
 समय १८. ४६; २०. ८; सीमा  
 २५. १६.  
 अयना-आगमन-आवना-आना १४. ७.  
 अयस्या-अवस्था-अवस्था ११. ७.  
 (इसके अवस्था-इयम अवस्था-

मरणावस्था, गर्भ, कौमार, पौगण्ड  
(पौगण्ड—यावत् ५-१६ वर्ष),  
कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, युद्ध,  
वर्षीयान्, मरण)

अवैराजं—अमरावती २. ४०.

अवैराजं—अमरावती २. ३०.

अस-ईदृश-अदृश-ऐसा (P. 81, 215) १.

८, ६१, ६२, ८०, १२५, १२६, १३६;

२. २४, १७६, १८४, १८६, २००;

३. ३, १६, ६५; ५. २३, ४०, ४१,

४४; ६. २, ७. ३८, ४८, ५६, ७२;

८. ११, १६, ३८, ४६, ६४; १०.

८, १०, २३, २६, ३३, ३८, ४०,

४४, ४७, ४८, ६१, ६४, ६६, ११६,

१३२, १३७, १५७; ११. १७; १२.

४०, ४४, ८०, ८७; १३. २४,

३६; १४. ६; १५. १५, ४२,

४८, ७६; १६. ५, ७; १८. १२,

२२, ५५; १९. १८, १६, २१,

३८, ३९, ४०, ४६, ७१; २०. १६,

६७, १११, ११५, १२८, १३१,

१३६; २१. ८, २१, ४५, ५६; २२.

२६, ५०; २३. ८, ११, १२, १५,

२०, ४८, ५८, ६२, ६७, १०६,

११२; २४. ४, १८, ८५, ६६,

११०, १४३, १५२; २५. ६, २५,

२६, ३३, ३४, ५४, ५८, ६६, ७०,

७७, ८०, ८७, ११२, ११४.

असटउ-अष्टपि-आठों १०. ८; १२.

८०; १५. १०१.

असत-अस्त ५. ११; असत्य ६. ८, ६.

असतु-अस्तु-एवमस्तु-ऐसा हो १५. ७६;

२५. १६६.

असतुति-स्तुति १. १२८; १७. ८, ६;

२५. १४१, १४५.

असथिर-स्थिर-थिर १. ४८; ११. ५३;

अस्थिर-चंचल १५. १३.

असमेध-अश्वमेध-अस्समेह १. १३५.

असंभार- (असम्भार्य)-असंभार-संभा-

लने के अयोग्य १८. ३५.

असरफ-सैयद अशरफ १. १३७.

असरम-आश्रम-स्थान १०. ५६.

असचारु-अश्ववार-अस्सवार (P. 64,

279, 315) सवार (अलोप P. 142)

२५. १६६.

असि-ईदृशी-अदृशि-ऐसी २. २७, ५०,

६४, ८६, १७८; ३. २, २६, ३०,

३८; १५. ५२; १६. ७०; २०.

११२; २२. २७; २३. ४१, १११,

१६१; २४. १६, १०५.

असिस-आशी; आशीर्वाद ७. ६६.

असीस-आशीर्वाद १. १०४; ३. २५;

७. ५७; २४. ६६; २५. १४५.

असीसई-आशीर्वाद देती है १. १२०.

असीसा-आशीर्वाद १. १२३.

असीसि-(शास्+आ; तु० प्रशिप्)



आशिषा कर-आशीर्वाद कर ७. २०

असुपति-अरवपति-अस्मवद् १. १५३

असुपती-अरवपति-घोषे पर चढ़ने वालों

में श्रेष्ठ २. १४

अस्म-असुस्म-अज्ञेय (शुष्य-सुज्ज)

१. १६५, २. १२४, १३ २०, १८

६, २५. १९

अस्मा-अस्म १. १३६, १४ १५, २१.

५१, अस्म-अस्मेरा २४ १८

अस्म-अस्म-(अयोप्य)-जिसकी

गणना न हो सके २५. १०७

अह-अस्ति-अस्ति (P 418) अह-

(धरमत्रि P 132 स-ह P 261,

315) अहि १. १८०, ३. ८०, ६.

१०, १०. १५१ २५. ३

अह-अस्ति-हो ६६ २०. १०६

अह-अस्ति-हो २३. ११७

अह-अस्ति-अह-अस्ति-दिनरात ८. ४६,

१८. ५०

अह-ह-अह (अस्ति) का बहुवचन

१२. १८

अह-अस्ति-हो १७. १८ २६

अह-अस्ति-हो ६६

अह-अस्ति-अह (अस्ति) का बहु

वचन १४. ६, २५ २०

अह-अह-अह-अह १. ११४, आर्मा-अह

अह का मूल-या १. १४१, ७.

१५, ११. १८, २१, १६. २१, २३.

८६, ६३, १५३, २४. ४१

अह-आसीत्-या, अह (अस्ति) का

भूतकाल ५. ५, १८, १०. २७, १३

४८, २१. २७, एक का बहुत्व में

प्रयोग २५. ७१

अह-आह २०. १२१

अहिवात-आधिपत्य-अहिवात, (स-त

२८१, प-व १७९, ध-ह १८८, आ-

अ ८१) सौभाग्य १२. ४८

अही-आसीत्, थी (अह-अस्ति का

मूल, अही ५०) १. १८६, ३. २५,

८. ४६

अहीरिनि-आर्मा-अहीरिनि-आर्मा

२०. २५

अहु-असु-असु-अहु, अ-ह P.

३३३, स-ह २८६, (मु-अहु-अहु-

असु-असु अहु, अहु अहु अहु, अहु

मुभाकर के मत में अहु-असु-अहु

उठने योग्य) ११. २४, २६

अहु-अहु-अहु (अहु-अहु, मुभा-के

मत में आचार्य-अहु-अहु ११

२८८) २५. १०५

अहु-अहु-अहु (अहु-अहु, मुभा-के मत में

आर्मा-आर्मा, अहु का विरोध)

२५. १०५

अहु-आसीत्-ये, अहु (अस्ति) का भूत

बहु-१. ११०, १८६. १४ ७६,

२५. ११६

अहेरइ-अहेर में-आखेट में (ख-ह P.

188; आ-अ 81; ट-उ 198; ट-र

241) न. १.

अहेरी-अहेर करने वाला-व्याध २.

१०८.

आ.

आँक-अंक-अक्षर (√अन्च्, Lat.

uncus; AS. ongel; Eng. angle)

२१. १०, १३.

आँकन्ह-अंक का बहुवचन (वे अंक ही)

२१. १३.

आँकुस-अक्षुश-अंकुस २. १४; १८.

२२, २६.

आँसि-अक्षि-अक्सि-अक्ख-आँख (ईक्ष्;

Lat. oc-ulus; AS. cūge) ३. ५२.

आँखी-आँख १२. ३६; २२. ४२.

आँगा-अङ्ग (अङ्गु) २०. २२.

आँगी-अङ्गिका-अङ्गिया-चोली २३.

१२१.

आँचल-अञ्चल २२. १६.

आँट-(अट्ट; अतिक्रमहिंसायाम्)-अटता

है-पड़ता है २०. ५६.

आँटा-अंटा-(परा) पड़ा १. १११; आँट-

अँटइ-समेति (√अट गतौ) २३.

१३८.

आँटी-अँटे-आत हो-पर्याप्त हो १७. १५.

आँध-अन्ध ७. ५३.

आँव-आन्न २. २५; २०. ४१.

आँवहि-आम के १. १६४.

आँसु-अश्रु-अस्तु १. १८४; ५. १२,

१४, ४६; २१. २२; २२. ५६; २३.

५३; २४. १०६.

आँसुन्ह-आंसु ४. ५३.

आँसुहिँ-अश्रुभिः-आंसुओं से २३.

१०८.

आँसू-अश्रु १२. ११; १५. ३६; २३.

१५०; २४. ६१.

आइ-एत्य-आकर, आई, आ १. १७७,

१६२; २. १६, २३, १४४; ३. ४२;

५. ६, २५, ४०; ७. २०, ४०, ४२;

८. ४, ५३; ९. ३५; १०. ५०, १२४,

१४२; १२. ७५, ७६, ७८, ६२;

१३. २, ६२; १५. ८०; १६. २३,

३२; १७. १४; १८. ७; १९. ३,

१२, १३, १४, ६६; २०. ६, ८,

३८, ७५, ८६, ६८, १२६, १३०;

२१. १६, २५, ३५, ४८, ५०, ६४;

२२. १, १३; २३. ७, ६, ५०,

१०१, १५०; २४. २१, ११२, १२०;

२५. १, ३१, १०६, १२५, १२७.

आई-आई-आवइ (आयाति) का भूत

काल में स्त्रीलिङ्ग में एकवचन २०.

१०८.

आइउँ-मै आई (भूत० उ० एक० स्त्री०)

छ. ५१.

आइहि-आवेगा-आवइ (आयाति) का भविष्य, प्रथम पुरुष, एकवचन २०, १३२.

आईँ-आवइ (आयाति) का भूत स्त्री० बहुवचन २०. ६७, ६८; २३. ६८; २४, ६७.

आई-आवइ (आयाति) का भूत काल प्रथम पुरुष, एकवचन, स्त्रीलिङ्ग ३. ५; छ. १, २, २५, ५६; ८. ३१; ११. १; १२. ७४, ७८; २१. ३; २३. ८७; २४. ६२, १५०; २५. ११७; ण्य-आकर १. १८८; २. १७; ३. ५०; १०. १२६; १८. २६; २०. १; २२. ११; २३. ८१; आई छ. ५७, (आये सुधा०) आया थाकती है १८. ४६.

आउ-आयाति-आवइ २. ३०; ३. ६०, ८०; ५. १४; ७. ५३. ६. १८, २४, १३. ३५; १६. ४, ८, ४८; १८. ८, ४७, ५३; १६. ४८; २२. ७२; २३. २४, १५६; २४. १८, ६१; २५. १०७, आयात्, आया २५. ११४; आवे ११. १५, ४८.

आउन-आयान-आवन-आवना-आना छ. १४.

आउबि-अ पिंरी छ. २३, २४.

आऊँ-(मैं आऊँ) ३. ५६.

आऊ-आयुप् २. १४२; ३. ६६; ५. २८.

आए-आवइ का भूत, बहु० पुं० १. ६१; २. ८, १२१; ३. १८, २४; ७. ४२, ४६; ११. ६, १०; १३. १२; १५. ८, १६, २५, ४१, ७३; २०. ८७, ६०; २३. ४६, ६६; २५. १०५, ११२, १३६.

आएउँ-मैं आया था, आया ७. १०, ११; ११. १६; २०. १२३; २३. १७, १५०; २५. १५६.

आएउ-आए हो (आवइ) का भूत० पुं० मध्यम पुं० बहु० २. १४१; आया २. १८४; ८. ३३; १६. ७; आये हो १६. ६०, ६१.

आएतु-आदेश ३. ६१; ८. १०, ४८, ६४; १३. १२; २०. ३८; २४. २३.

आएहु-आना २०. १०६; आये हो २३. ११.

आओ-आउ-आता है ११. ८.

आसउँ-आल्या-अस्वा-कहती हूँ (आला करती हूँ-आया एक प्रकार की चलनी सुधा०) ३. ७२.

आसर-असर-अस्वर २०. १०७; २१. १०; २३. ५६, ६४, ७०, ७१.

आगई-अग्ने-आगे २५. ५२, ६१, ११५, १२१, १२२, १४०, १४७

आगइ-अग्ने-अमनः-अग्नी-आगे १.

८८, १२४; ५. ४, ४६; १०. २३;  
१२. ७३, ८४, ८६, १०४; १३.  
४३, ५२; १५. ७१; १६. ५; २०.  
७७; २३. १०.

आगम-आगमन २३. १०१.

आगारि-आकर-आगर (सुधा० के मत में  
अमा-धेष्ट) १. १२५; ८. ११; १२.  
४६.

आगि-अग्नि-अग्नि-अग्नि ६. ५; १२.  
६२; १३. ४२; ४३; १५. २२, २६,  
२८; १६. ४२, ४३, ४४, ४५, ४८;  
२१. ११, ४४, ५६, ६१; २२. १६;  
२३. ४०, ६६, १००, १२०; २४.  
३१, ६६, १०७, ११२, १२२; २५.  
५५, ५६.

आगिहि-आग का २५. ५५.

आग्नी-अग्नि (√अन्; तु. Lat. ignis;  
Lith. ugnis; Slav. ognj) १५.  
२१; १८. ४४; २२. ७; २४. ६६.

आगू-अग्ने-आगे (अंजू गतौ) ८. २७,  
५६; १२. २३, ८७, ८६; १५. ४;  
२३. ३१, १७१.

आगे-अग्ने ७. २४, ३२, ४२; ६. १८;  
१०. ६०; १६. २६; २५. ७३.

आछ-अच्छ-अच्छी १२. २४.

आछइ-शोभित है (अच्छ की क्रिया) १.  
१६२; अच्छ, अच्छी तरह से ७.  
१६; २२. ३४.

आछरी-अप्सरा-अच्छरा (प्स-च्छ. तु.  
लिच्छु-लिप्सु P. 328) २२. २२,  
२४, २५, २७.

आछरिन्ह-अछरी-(अप्सरा) का बहु  
वचन २०. ६८.

आछहि-अच्छे लगते हैं २. ४६;  
(अच्छी-सुगन्ध, सुधा०) २. ८८;  
२३. ४७; अच्छी तरह से १०. ६३.

आछहि-अच्छा (अच्छे चन्दन के) १.  
१७५.

आज-अद्य-अज्ज, (Lat. ho-die) २४. २१.

आजु-अद्य-आज, ५. २६; १२. ८२;  
१६. १; १६. ५६, ६०; २०. ४,  
३७, ४०, १३६; २३. ११३; २४.  
२४; २५. १३, १४, १५, १६, २७.

आजुहि-आजही ४. ४६.

आजू-आज ४. १२; १२. ६; २५. २८.

आड-छोट-आवरण (अडू अभियोगे)  
५. ४४.

आडा-छोट-आवरण ५. ४४.

आतमभूत-आत्मभूत; आत्मन्-अप्प  
अत्त; देखो P. 277. 401; √अन्  
अथवा √अत्त से; (तु० O. G. ātum,  
Mod. G. Athem, Odem) ५. ४८.

आथी-अस्ति-अथि-सारवत् १३. ४६.

आदर-(आयर) मान २. ५; ५. ३.

आदि-(आइ) प्रथम १. १, ४१, १८६;  
१६. ६७; २५. १४६.

आदिल-न्यायी १. ११४.

आदिहु-आदि से १. ४१.

आदी-आदि-प्रथम १६. ६.

आधा-अर्ध-अर्ध (हु० अर्धनिके-अर्धनि-

कान्, P. 288, Lat. *ordo*, Germ.

*Ort*) १६. १६; १८. ३४; २२. १४.

आधी-अर्ध-(अर्ध-अर्ध P. 291) २३.

११७.

आधु-अर्ध-अर्ध १३. ६४.

आन-आना-आणना (ह-एण P. 376),

आपय ८. ८; २०. ६.

आन-आन-आण, आन २. १०३; ८.

२२;

आनहु-आणहि (P. 474) से आओ ८.

४७; ११. १६.

आना-आन ३. ४७; ७. २६; ८. २२.

आना-आनीत हुआ-ले आया गया ७.

६६. आनहु-(आनयति का प्रथम

पु० लिट् एक वचन) १६. १६, २२,

२४. २. आनयत्-ले आया, ले आये

१४, १६०, १६२, १६६.

आनि-आकर (P. 591) २. ४०; ४. ४,

२४; १३. १८; १४. ६२; १६. ३२;

२०. ८०; २३. १४२; २४. ३८,

७४, ६४; २४. १४०, १४४.

आनी-आनीय-आनकर-आकर ८. ६४;

२०. १३१.

आनी-ले आया (आनिनाम) १. १८६;

२. १६६;

आनु-आनय-आनी-ले आओ २४.

१२८.

आने-ले आये १. ६०.

आनेउ-आनयत्-ले आये ४२. १.

आप-आत्मा-(अन् Lat. *anima*) स्व-

यम्; अप्प (हु० माहप्प-माहात्म्य

P. 334; आत्मन्-अत्त, अप्प,

विस्तृत निरूपण के लिये देखो

P. 277, 401) ११. ४२.

आपन-अपना ४. ४०; ७. २४; ८. ४१;

१२. १६, २१; १३. २३; १४. १३६.

आपनि-अपनी २. ३८, ४०, १३८; ४.

४४; २४. ७४.

आपु-आत्मा-अप्प-आप (P. 277) १.

३७; २. १८४; ४. २७; ४. ३४;

७. ६२, ७०; ८. १२, ७२; १०.

३०; १२. ३६; १३. ४, ११; १४.

१८; १६. १६; २०. १४; २१. ४१,

४३; २२. ७४, ७६, ८०; २३. ८०,

१४६; २४. १३६.

आपुन-अपनी १२. २०; १३. ४८.

आपुन-अपना २०. ४०, ११४, ११६;

२३. ३६.

आपुनि-अपनी १४. ६४; २१. २६.

आपुहि-अपनी ही ८. ४७; १३. ४४;

अपने आप को १४. २३; अपने आप

ही ८४; २२. ७६, ८०; २३. १४६.

आभरण—आभूषण—जो पहरा जाय (भृ+  
आ; तु० Germ. *Tracht* वेष्ट; *tragen*  
पहरना) अथवा √भृ-ध्यान आकृष्ट  
करना ङ. ४०.

आयत—इस्लाम धर्म के मन्त्र १. ६२.

आरति—अर्ति—अत्ति—(√आ; तु० किति—  
कीर्ति । किन्तु अट्-आर्त । देखो P.  
289) दुःख—आतुरी—आपद—पड़ना  
(मुसीबत में) । अर्थ के लिये तु०  
Eng. *accident* घटित होना (ग्रन्थ  
का) २१. २४.

आरन—अरण्य—अरयण—वन (अरण्य,  
√आ) १. १३; २. ६.

आली—सखी (आ+लीयते) २०. १२३.

आच—आयातु; आवह (आयाति) का  
लोट में प्रथम पु० एक० १५. ७६.

आचह—आहँ २. २१; आवेगा (वर्त० का  
भ० में प्रयोग) ६. ७; आती है १६.  
८; १८. ३१; १६. ७२; २१. ४०;  
२३. ३४, ३६, १२७; आयात्—  
आवे (P. 462) २३. १२६; २४.  
१४३, १५२.

आचहँ—आयाति—आता है ३. ४८.

आचहँ—आयास्यामि—आऊँगी—वर्त० का  
भ० में प्रयोग १६. ५४.

आवत—आयाति—आता है ५. २७;  
आयन्—आते हुए ११. १८; २४.

१३३.

आवतहि—आवने में—आने में (आते ही)

१. ६६.

आवहि—आयाति—आता है ७. ३६.

आवहिँ—आयान्ति—आते हैं २. ६०,  
६१, १७८; ३. ५२; १०. ४०; २३.  
१७८; २४. १४.

आवहिँ—आयान्ति—आते हैं २५. १०४.

आवहु—आयाहि—आओ (P. 464) ५.  
२६; २३. ८, १६०; २४. ६.

आचा—आयासीत्—आया—(आवह) का  
भूत, प्रथम पु० एक०; ४. ६०; आवे  
अथवा आवेगा ५. १६, २६, आया  
३१; ७. ६, १७, ३४, ४४; ८. १०;  
६. ५२; ११. ३६; १३. १०, ५५;  
१४. ४; १५. ३३, ७२; १६. ३१;  
१७. ३, ६; १८. २; १६. १, ६५;  
२०. १२५; २२. ६, ६; २३. १५३;  
२४. ४४, ४७, ६३, ६८; २५. ६६.

आस—आशा (शस्+आ—शस्+आ) १.  
३६; ३. ४८; ७. १६, ५६, ५६; ६.  
५६; १०. ६४, १२८; १२. ८०; १३.  
६५; १५. ५६, ७६; १६. ३२; १७.  
५; २०. ४६; २२. ३२, ३६; २३.  
२४, १०३, १५३, १५६; २४. १०२.

आसन—बैठना (√आस्; तु० Lat.  
*āsa, āra*) २. ४३, ४८; ७. ५०;  
२३. २४; २५. २५.

आसपास—अश्र—अगलबगल २. ३२.

आसा-आशा ५. ३६; ८. २३; १०.

२३; १७. २, ७; २१. ३१; २२.

१३; २८, ३२; २३. ८४, १०३,

१४१, १६३; २४. ८२.

आसामुखी-दिशा (✓अस व्याप्तौ) या  
उम्मीद की ओर मुंह रखने वाला  
२३. १२.

आसिरवाद-आशीर्वाद (आशिस्; शस्त्-  
आ; शु० प्रशिप्-आशा) २५. १४२.

आहर्ह-अस्मि-हूँ २५. १८.

आहक-हाहा-गन्धर्वविशेष २. ६६.

आहर-आहार-भोजन(ह+आ) २१. ४६.

आहा-शाबाशी-वाहवाह १. ११२.

आहौं-आह्वान-(✓ह अयवा ✓ह्वा)  
हुकाने की बोली २०. २७.

आहि-अस्ति-अयि-अहि-है ४. १२०,

६. २, २५; १०. १३७, १४. ४८;

१६. १५; २०. ८४; २१. ६१; २२.

४५, ७७; २३. १५; २४. ७४.

आमीन्-मी १८. १७, आले-है

(मुखा०; अस्ति उपपुनरह) १०.

१३५.

आहि-आह २५. ६४.

ह.

ईद-इन्द-(✓इन्-इन्धन्, अयवा

✓इन्-गिरजा) १. १०६; २. ६;

१४८; ३. ३२; ६. २६; १६. ४०;

२२. २२; २३. १२, २७; २४. १३,

१६; २५. २६, १२४, १४६.

ईदरअछाड-इन्द्राचवाट (च-स्त P.  
317-319, अस्तवाट-अस्ताट; शु०  
अंधार-अन्धकार; कंसाल-कांश्य-  
ताल P. 167; ट-ड P. 198.) १०.  
१४२.

ईदरलोक २. १२२; २५. १००.

ईदरतमा २. १७७.

ईदयसन २. ६४, १८३.

ईदयसनपुरी २. २८.

इच्छा-(✓इष; Old Germ. *eiscomi*;  
*Blod. Germ. heische*; Lith. *jes-*  
*coti* इत्यादि) २०. ३३.

इच्छाधारी-इच्छावाटिका-इष्ट फल पुष्प  
को देने वाली वाटिका २०. ३३.

इत्ते-इषत्-इतने (ह से) ३. १२, १६.

ईद्-इन्दु-वन्दमा २. १५.

इमि-इम-एम-एवं-इम प्रकार (इदम्-  
इस मुखा०) १०. ४१; १५. १७,  
३२; १६. ४६, ७२; २४. ८१,  
१२८.

इरावति-पेरावत-इन्द्र का हाथी (पेरावण  
की व्युत्पत्ति पेरावन से नहीं, किन्तु  
परावण से है P. 316) २. १३.

इरिली-अमिलक-म० प्रा० अमलिआ-

इमली-धमली-अंबिली (तु० अम्ल-  
अम्बिल; आम्र-अंबिर; आताम्र-  
आअंबिर P. 137, 295; JB. 60,  
127) २. ३२; २०. ४५.

इसकंदर-सिकन्दर १. १०१.

इहइ-यही १. ३८; ६. ३३; १३. १५;  
१५. ५०, ५१, ५२, ५५; अयमेव  
१६. २३; २०. ११०; इह हि २४.  
१६; इयमेव २५. १५२.

इहई-अयं हि-यही १५. ४६.  
इहाँ-यहाँ; म० एय, एयं; सि० इति; पं०  
इत्ये; ओ० एठा; सि० एत; प्रा०  
एत्य; सं० इह; वै० इत्या (-इ-स्था) ।  
प्रा० एत्य की व्युत्पत्ति अत्र \*इत्र  
अथवा \*एत्र से नहीं किन्तु इह (-  
इत्या) से है । तु० तथ-तह; जत्य-  
जह; कथ-कह । इथि, इयी-अत्र ।  
(देखो P. 107; Fausboll, धम्मपद  
P. 350, JB. 206) ४. ५७; ११.  
१६, २२; १३. ५५; २३. १२, १५,  
२१, १४५.

ई.

ईशुर-हिङ्गुल २३. ६५.

ईटि-इष्टिका-इष्टगा-इष्ट-ईंट (P. 304)  
२. १८७.

ईस-ईश (तु० Goth. aigan, Old  
Gorm. eigan; Mod. Gorm. eigen)  
२०. ८३; २३. ६०.

ईसुर-ईश्वर-इस्तर-ईसर (H. 150)  
२२. ५८; २५. ७४, ६७, १२१.

उ.

उँचाई-उच्च (उद्+च-उच्च-√अन्च्)  
२. १२८.

उँजिअर-उज्ज्वल-उज्जाल (ज्वल्+उच्;  
अंजिअर-आज्वल) १०. १०.

उँजिअरि-उज्ज्वल-उज्जल ८. ४६.

उँजिआर-उज्ज्वलकार ('ह' के लोप के  
लिये तुलना करो 'ओआ'-ओवा-  
अवपात; किसल-किसलय; (हि० १.  
२३६; P. 150.) उज्ज्वल २. १५०;  
३. ७, ११; १२. ३२.

उँजिआरा-उज्ज्वलकार १. ८४, १२२,  
१३७; २. ५; १०. १५८; १६.  
१८; २५. १७०; उजेला १. १६२;  
२. १६१; ६. २; १०. ५६; ११.  
४७; १३. ५२; २१. ३६; २५. ६.

उँजिआरी-उज्ज्वल (स्त्री०) ५. ५०; ६.  
३०; उजेला १६. ७; २४. ८४.

उँजिआरे-उज्ज्वल १. १४६; २. ६६;  
६. १८; १०. ६६.



उग्रत-उदयन्-उदय होता हुआ (इ+उद्) ६. १२.

उग्रा-उदय हुआ १. १६१; ३. १६; १६. १; १८. ४०.

उप-उदय हुए २. ६६; ५. १४, १०. १६.

उकडी-(√कृप्+उत्)-उत्सङ्गा हुआ-(JB. 96) उत्सङ्ग-उकठ-उकठ-सूसा हुआ (उ-ठ, पथा जठर-जठर, वठर-वठर) उकठ गई-सूस गई २१. ४.

उसा-ऊषा-वाणासुर की कन्या (√उप्-वस्; पु० Lat. *suro-ra*, Lith *susz-ra*, Old High Germ. *Os tan*), २३. १३५.

उमावह-उद्गमयति-उगता है-उद्गमन होता है (गम+उत् JB 98, 15, पु० Goth *guam*, Lat. *cenio-gre-nio*; Eng. *come*) १०. १२; १६. ८.

उघरह-उद्घटने-उघरह-उघरे २३. १७४.

उघरिहि-उघरेगा १६. १०.

उघरी-सुली १. १२१.

उघरे-सुले-उद्घटित हुए २५. १६५.

उघारा-(विजन्त) मोक्ष दिये (सुल गवे सुपा० धर्मगत) २३. १७५.

उघारी-उद्घाटयति-उघारह का मूल २१. १५.

उघेली-उघारी २५. ६०.

उघेला-उघारा-मोक्षा ५. ४०

उद्गारा-उद्गालते हैं (शल+उद्, संस्कृत में उपरिगमन के धर्म में केवल एक बार मयुक्; पु० उच्चलह, उच्चलिय उल्लह, उल्लिख । उल्लह, उल्लिख की व्युत्पत्ति श्यल+उद् से है P. 337) १. ११६.

उवेद-उच्छेद-सर्वनाश (विद्+उत्; पु० Lat. *scindo*, Goth. *skinda*) २४. १४४.

उजार-उजड-उजाब-(उत्+जड-उन्मूलन) ११. ५३.

उजारा-उजाब दिया २१. ५.

उजारी-उजाब २१. २१.

उठ-उठता है (उप्+स्या-उत्था-उठ-सि० उथल; का०धोष P. 309) २. १६८.

उठह-उत्तिष्ठति-उठती है १०. ६६, ७२, ८८; ११. ५; १२. ६२; १३. ११; १५. ५, ४२; १६. ५; २३. १८; २५. ६६; २५. २३; उत्तिष्ठेत्-उठे (सुपा०) २१. ५२.

उठहि-उठते हैं १०. १५; १२. ८५; १३. ४०; २५. १०८.

उडा-६. २४; ११. १७, १८, ४४; १६. २२, २३; १६. ३; २०. ६४; २२. २१, ५७; २३. ६१, १६२, १६७; २५. ८८; २५. ७१.

उडाह-उडा कर २०. १२०.

उडाएउ-उद्यापयामास-उडाया २५. ८७.

उठावहिं—उठाती हैं २०. ८८.

उठि—उठकर २. ११२; १२. ८८; १६.

२२; २०. ११६; २१. ५८, ६३;

२३. ३; २४. १२१; २५. १२६.

उठी—उठइ का भूत एक वचन, स्त्रीलिङ्ग;

१. १३८; ३. १४; ४. २६, ५६;

१४. ५; १६. २२; २२. १६.

उठे—उठइ का भूत एक पुलिङ्ग व० २.

१८; ५. ५२; २४. ६०.

उठेउँ—उठी २०. १२८.

उठंतछाला—उठ्यंतचैल—उठने वाली

छाल—जिसे थोड़ने पर मनुष्य उठ

सकता है २३. १५६.

उठइ—उठे (धी+उत्+उठ्—उठ) १२.

६८; उड़ता है १२. ४३.

उठइसा—उठ् देश—उत्कल देश—उड़ीसा

(जहां उत्कल जातीय ब्राह्मण होते हैं)

१२. १०४.

उठहिं—उड़ते हैं १. १३, १०६.

उठा—उठइ का भूत एक पु० (JB. 51,

111, 119, 230) ५. २; १६. ११.

उठाई—उड़ा देता है १. ४५.

उठाउय—उड़ावैगी, उड़ावइ का भवि०,

उत्तम, बहु० २०. ३६.

उठानफर—जिस फल के खाने से उड़ने

की शक्ति आजाय ५. २०.

उठानू—उठ्यन—उड़ना ३. ६२.

उठाहीं—उठहिं—उठइ का बहु० १५. ६५.

उडि—उड़कर १. १०८; ५. १३, १६;

उड़ (सकता है) ६. ४५.

उडिगा—उड़ गया ५. १०.

उडे—उठइ का भूत बहु० पु० ५. ३०.

उचारि—उखाड़ कर (उच्चार्य; चर+इ+

उड़) २. १६६.

उतंग—उत्तुङ्ग—अति ऊँचे (उड़+तुङ्ग) १०.

११८.

उतंगू—उत्तुङ्ग—अति ऊँचा ६. २०.

उतर—उत्तर ३. ३१, ६५, ७३; ४. २१,

५२; ५. १०, ४६; ७. १५; ८. ३४,

३५, ५७; १०. १२८; १६. ६; २०.

८२; २३. १२१.

उतरउँ—उतरूँ—अवतरामि (वृ+अव; अथवा

वृ+उत् JB. 121, 143) २४. १२३.

उतरहिं—उतरते हैं २. ५२, ६७.

उतरा—अवतरति—उतरइ का भूत एक०

पु० १५. ७२.

उतराना—उत्तरण—ऊपर उठ आया ४.

६१.

उतराहीं—ऊपर आती हैं (उत्तराय आती

हैं, सुधा०) २. ५४.

उतरि—(गये)—उतर गये १६. २४. उतर-

कर—उत्तीर्य २३. ६.

उतरू—उतर—उतरइ (अवतरति) का

लोद्, मध्यम० एक० १२. १०४.

उतरु—उत्तर १३. १३.

उतरे—उतरइ का भूत बहु० पु० १३. ६.

उतारल-उत्ताप-शीघ्र-उतावला, तावल  
में (तप्+उत्) १. १२३.

उतारल-उतारे १३. ४८; उतारता है  
२१. २६.

उतारि-उतारि-उतार कर २२. ३०.

उत्तिम-उत्तिम-उत्तम (उद्+तम-उत्तम)  
२४. १११.

उत्तर-उत्तर दिशा १२. १०२.

उयलेहि-उलटने हैं (त्यल+उद्) २. २४.

उदरगिरि-उदरगिरि २४. १२४.

उदउ-उदय (इ+उद्) २०. १२४.

उदधि-उदधि-उदधि-मसुद (उद्, तु.  
Lat. unda, नरम्; उदन् Eng.  
water; उद-oller) १५. १५; १८.  
२४; २४. १३.

उदपान-उदक+पान-पात्र-कमण्डलु ।

धोत्र, (उदध, उदध, उदध; ध-धो  
P. 125) की श्रुति आर्द्र से नहीं,  
किन्तु उद, (उद्, उद, उदक) से  
है । तु० आर्द्र-भर-भर (इ-इ P.  
224) धर-इ-इ P. 218, 219,  
इ-इ P. 214) धर-Eng. wet  
(P. III) १२. ६.

उदय-आगमन ३. २०.

उदासी-उदासीन-विरक्त (आप्+उद्)  
११. १७.

उनर-अवनत-ओखल-अनप-मुक रही है  
(नप्+अन) २. ७७

उन्दुर-उन्दुर-मूसा; म; उंदर, उन्दिर;

गु०, उन्दर; हि० इन्दुर; सि० इन्दुरु  
(JB 76, 145) तु० इन्दुर १. १०.

उनंत-उन्नत (नम्+उद्) ३. ४१; ४. १६.

उनाह-उन्नाह-(उन्नाह; उन्नत-संनत-  
संवन्ध, सुधा०) २५. १७६.

उन्ह-उन्होंने, (ओन्ह, उन्ह, उनं, उनि,

H. 37, 2) १. १४१, १४४; २.

१६६; १०. ४४; २०. ६१, ६२;

२१. ३; २३. १८४; २४. ३५.

उपकार-(ह+उप) ११. २०; २५. ४४.

उपज-उपजी (उपयते-उप्यज-उपज);

घ-ज P. 280; त्य-प्य P. 300;

JB 52, 125, 230) २४. १०७.

उपजा-उपज हुआ १. ११६.

उपटि-उपट-उपट-(प्य-प्य यथा उडता

में इ-इ जी+उत्) २२. १४.

उपदेश-उपदेश (दिरा+उत्) १२. ४०;

२१. १६; २२. ६१.

उपदेशी-उपदेशीय-उपदेशयोग्य २२. ६१.

उपदेश-उपदेश १६. ६६; २५. १६.

उपना-उपनत हुआ-उपन हुआ, (यथा

धोत्र-अवनत; अथवा पद्+उत्;

म० उपनते) ३. ८, २१, २२; १५.

२७; १८. ४२; १६. १८; २२. १७.

उपनी-उपनत हुई १०. ४८; १५. २६;

२३. २५, १६१; २४. ११३.

उपने-उपन हुआ २०. ७.

उपराजि—उत्पन्न करके (राज्+उप)

१. ३२.

उपराजी—उत्पन्न की १. ८२.

उपराही—उपरि—ऊपर (उपरि H. 378)

१. ३५, १४८; २. १७४; १०. ६,

६७, ८७; १३. ५०; १४. २; १५.

६; १७. ५; २४. ५.

उपम—उपमा (मा+उप) १०. १६०.

उपमा १०. ११२.

उपसई—चली गई—हट गई—(सु+अप;

अ-उ, यथा पुलोणदि—प्रलोकयति

P. 104, 123; H. 56) २४. १४८.

उपसवही—चले जाते हैं २४. २.

उपाई—उपाय—उवाव (इ+उप) १. ३७.

उपास—उपवास ऊआसो, ओआसो, उव-  
वासो (उप-उ-ओ P. 155) म०

उपास; सि० उवसु; २१. ४०.

उचट—उद्घाट—भ्रष्ट मार्ग २१. ६०.

उबारा—उन्नार (भृ+उद्; द+भू-वृ P.

270; भू-वृ P. 213, 214) ३. ६८.

उभइ—उभय १. ४०, १७१.

उमर—मुहम्मदस्थानीय चार मित्रों में से  
एक का नाम १. ६१.

उम्मर—उमर १. ११५.

उरगाना—उडुकान—उडुक—जिसके सहारे  
तरा जाय—सामग्री १२. १८.

उरम्—उलम् कर (उरम्—रुध्+अव)  
१०. ८.

उरम्माइ—अवस्तुय—उरम्माइ, (स्वार्थ में  
णिच्) उलम्मा है २४. १२०.

उरम्माना—उलम्मा २०. ५६.

उरम्मा—अरम्मा—उलम्मा १२. २.

उरेह—चित्र—मूर्ति (उद्रेह—उल्लेख; लेख-  
लेह) २. ११८.

उरेहइ—लिखने लगी, (उल्लेखन, उद्रेहण)  
१८. ६.

उरेहा—उल्लेख—रचना १. ३.

उरेही—लिखी २. १८८.

उलटा—उलुल्य—विपरीत—(लुटि गतौ; तु०  
उलथा; JB. 50, 109) २३. १०२.

उलटि—ओलोट—उलटकर १०. ३७; ११.  
५२; २२. ७३;

उलथहिं—उथलते हैं; उलथइ—उथलइ—  
उथलइ (उद्+स्थल P. 327; JB.  
89) १०. ३३; १५. १०.

उलथि—उलट कर—उथल कर १०. ३७.

उलू—उलूक—उलुग (ऊ-उ तु० वेरुलिय-  
वैदूर्य; विरुथ—विरूप; तुणिहअ-  
तूणीक P. 80); ८. ३७.

उसमान—मुहम्मदस्थानीय चार मित्रों में  
से एक का नाम १. ६२.

उसांस—उच्छास—उस्सास—उसास—घोड़े  
के लिये “हूँ” ऐसा इशारा (तु०  
उससिर—उच्छसिर; उससिर—उच्छ-  
सित; सोसास—सोच्छास, P. 327)  
(√भ्वस् As. hves; Eng.

whoeez) २. १०२.

उहई-उहई-वह ही-वही १. ३३; २.  
१८६; १०. १०१; १५. १२, २६;  
२०. १०३; २१. ५७; २३. ५४,  
१६६; २४. १०४.

उहई-वह ही-वही १५. २७; १८. ११;  
२२. ३७; २५. ६५, ६६.

उहउ-वह भी १२. ३६; २१. ५६.

उहां-तत्र-तत्र-उहां-वहां १२. ६३;  
२५. ७३.

ऊ.

ऊँच-उच-ऊँचा २. ६०, १२७, १८३;  
७. ६; ११. ११; १३. ४६; १६.  
३५, ३६, ३७, ३८, ४०, ४३; २५.  
१५८.

ऊँचई-उचैः-ऊँचै से १६. १५, (ऊँचै पर)  
३६, ३७, ३८, ३९, ४०.

ऊँचा-उच ११. १०; १६. १७; २५.  
१५८.

ऊँची-उच २. ६०.

ऊआ-उदय हुआ ३. ५५; १०. ५०;  
११. ११; १६. १६; १६. ६०.

ऊई-उदय हुई ४. १६.

ऊअ-ईस-गाथा (उअनु, इअनु-इअ P

391) १. २८.

ऊआ-उआ-वायासुर की कन्या २०.  
१३५; २५. १०२.

ऊतिम-उत्तम (उद्+तम्; up-out) २.  
८; ३. १६; १३. ६३.

ऊपर-उपरि (Lat. super, Eng. over)  
१. १२४, १२७; २. ५६, १२२,  
१३५, १६२, १६६; ४. १६; १५.  
४५; १६. ६; २३. १७६; २४. ३३,  
७२; २५. २७.

ऊमि-ऊर्व-उमम-ऊम; यथा उममय-  
ऊर्वक (तु० उद्देग-उर्वेग-उर्वेव-  
उद्देय P. 235; उद्दिगा-उद्दिम, यथा  
अग्नि यमि०। हे० २, ७६ के मत में  
अग्निवर्ण-उद्दिम। संभवतः इसकी  
व्युत्पत्ति उद्देय से है। तु० वैदिक  
मद्-वृद्-उद् P. 276। उर्वण-  
उर्वण हव-उर्व, यथा किल्विण-  
चिम्बित; शुर्व-मुर्व (P. 293,  
300); ६. ४६; १०. ११२;  
२४. ८२.

ऊहां-वहां २१. ६२.

ए.

ए-यह-वे १२. ३६; १३. १८, २४.

एह-एतत्-एअ-ये ५. ३७; १५. ६०;

२३. १८०.

एक-एक [एकस्मि-एगस्मि, एके-एगे

इत्यादि P. 435; एक्कल-एक (हि० २.

१६५) एकल-अकेला P. 595] १.

१, १६, ४८, ८१, ६४, ६५, ११७,

११६, १३४, १४५, १६१, १६८;

२. ७०, १४६, १४८, १६५, १६४;

३. २६, ३७, ४०, ४६; ४. १, १४,

४०, ४५, ४६, ५६; ५. २७; ७. १,

२, ४४; ८. ११, ३२, ५५; १०.

७८, ८१, ८५; १२. ६३, ६६; १३.

७, १६, ५१; १४. २, ४, १६, २१;

१५. १६, २६; १६. २६; १७. १०,

१३; १६. ६४, ६८; २०. ७०, ७५,

८६, ६२, ६३, १०१, १२३; २२.

१०, १८, २०, ६८, ७०, ७८; २३.

११८, १२८; २४. ७८, ११०, १२२;

२५. २६, ४८, १०८, ११३, १६६.

एकह-एक एव-एक ही १. १६३, १७६;

२. ३५; १३. १३; २३. ३३; २४.

१६०; २५. १५१.

एकउ-एकोऽपि-एक भी २. ४, ८; २४.

३५; २५. ७१.

एकहि-एक ही १६. ६६; २३. ६६.

एका-एक २०. १२६.

एत-इयत्-इतना १३. २२.

एतना-इयत्-एतअ-इतना ११. ८; २२.

१६; २४. १०४.

एतनिक-एतावान्-इतना ८. ५१, ६७.

एतनी-इतनी १३. १७.

एहि-इस १. ५७, १७६; २. १०३; ४.

११, (इसी) ३२, ५१, ५२; ५. १४,

२३, २८, २६, ३८; ७. १०, २८;

८. ८, ५८; ९. १०; १०. ६५; ११.

३२; १२. ३५; १३. २६, ३४, ३७,

६४; १६. ४८; २०. ६५, ६७, ११२;

२१. ५५; २२. १३, ३७; २५. ३६,

३६, ४०, ८०, ६४.

एही-इसी १५. ५६.

एहु-अस्य, इसे २२. ३३, ३५, ४०.

एहु-अस्यापि, इस पर भी २२. ३६.

ओ.

ओ-उस २२. ५६; २३. ८७; २५. ६६.

ओखद-ओपध-ओसद (P. 223; ओप-

धि-ओपत्+धि से) १. १५; ११.

११; २४. ६८.

ओछ-ओछा-छोटा; अवचय; अवच्छद

(P. 154) २५. ७२.

ओछे-छोटे ५. ४६; २५. ७२.

ओभा-उपाध्याय- (उप+अधि+इ) उव-

ज्माय (म-ध्य; तु० मज्ज-मध्य;

विष्क-विष्प; संष्का-संष्पा-संष्क, P.

280) ११. १०; पुजारी २०. ८४.

ओठेंधि-लंगकर-उपस्थगित-ओठ्ठगिय  
(तु० \*थण्ड, थण्सु, थड्सं, थडवं,  
थड्य, ठथड्य, समुत्थडवं, ओत्थड्य  
समोत्थड्य; मूर्धन्य के साथ ठड्य ।  
थाड्ठय की व्युत्पत्ति स्वरूप धातु  
से। तु० पा० यकेति, म०, शौ०, मा०  
थड्ड; जै० म० थाड्डस्ड, P. 309,  
उप-उ-धो; तु० उगमाधो, ओगमा-  
धो, उवगमाधो-उपाध्याय; ऊघा-  
मो, ओघासो, उववासो-उपवाम-  
P. 155) २. ६३.

ओढ्य-ओढियेगा (ओढ्ठय-ओढना-अव-  
+धा; उ-घ; तु० ढंख, ढंक, ढिंक-  
प्वारुच; आढाड्-आधाति-आदधा-  
ति; आडिय-आधित-आहित; P.  
223, अव-अड-धो, यथा ओघरण-  
अवतरण P 154) १२. ३०.

ओढाई-ओडाइ; तु० म० ओढण, ओढण,  
(डाल); ओढणो, ओढणी (चादर);  
तु० ओढणो, ओढणुं; सि० ओढणु  
(-वज), ओढको (हि० ओड-आड-  
ओट), दे० ओड्ठय-उत्तरीयम् (धा+  
अव; JB. √पड्, यथा ओड्ठम् 82,  
812) २०. ४७.

ओढाया-ओडाया हुआ १०. १११.

ओठा-ठावन्-उठना १४. १६.

ओती-ठावती-उठती १०. १७.

ओदर-उदर (अ+उद्) ३. ५.

ओधा-रुद्ध-नद्ध-बांधा (ओधा-√धा+  
अव-पीछे रखना, डालना) २५. २२.

ओण-अवनत-ओणवे-मुके (तु०  
ओणविय-अवनमित-अवनत; P.  
123, म० ओणवयें, ओनवयें, ओन-  
वियें (-मुकाना); तु० नमवुं; सि०  
नवणु, नंवणु; यं० नुपाइते; ओ०  
नुमाइया; प्रा० ओणविय) ४. २७.

ओनाई-अवनम्य-ओणम्-मुककर १८. ५

ओनाई-मुक जाते हैं १२. ८८.

ओनाई-मुकते हैं (सी० तिग्मेक-नम्)  
३. ३१; उ० ७; ६. ३१.

ओप-कान्ति; ओप्प-ओप-(अर्पण) शाण  
पर चिसना, चमकाना। तु० म०  
ओपयें-अर्पण (JB. 3, 125' P.  
104) तथा उप्पेइ-उप्पिध-अर्पयन्ति  
(उ-ओ P. 125) ४. ९२.

ओपा-ओप-तप-तेज-धूप (ओपा की  
व्युत्पत्ति धातप (धा+अव) से नहीं  
है) १६. ३४.

ओर-अन्त; अपर-अपर-अडर-ओर (तट,  
किनारा; P. 154) १३. ४१.

ओरा-ओर-वार-किनारा उ० १; (अपर  
प्रान्त-अन्त में) ११. २८; २५.  
४२; अपर वा अवार-तरङ्ग १८  
४१; २३. २३.

ओस-अवश्याय-ओस (यहां पसीने का विन्दु); ओस्ता, उस्ता, ओसा; अव-  
अउ-ओ P. 154 (यलोप के लिये  
तु० ओआअ, ओवा-अवपात P.  
150; तु० म० ओल-उद्रिन्); १३. ३.

ओहट-अरघट-ओघट-ओहट; हरट-  
रहँट। तु० प्रवाद, म० पोवाद; अमर  
म० ओवणों इत्यादि (JB. 79);  
अयवा अपहस्त, (P. 564) जिसमें  
हाथ से काम न लिया जाय, पानी  
की मशीन। अप-अव, यया आअव-  
आतप (P. 199.) अव-अउ-ओ,  
यया ओआ-अवपात ओआस-  
\*अपवास; ओसित्त-अवसिक्त; ओह-  
सिअ-अपहसित इत्यादि (P. 155;  
Gray. 152); २४. १२५.

ओहिं-उनमें २०. १६.

ओहि-(वह, उसके, उसे, उस आदि.) १.  
१६, ३६, ४६, ५१, ५२, ६२, ६३,  
८७, १२४, १२८, १५८, १५६, १६०,  
१७६; २. ४, १४७, १४६, १५२,  
१६७; ३. ७८; ६. ६; ७. ४, १३; ८.  
२०, ६३; ९. १६, ४६; १०. १, २०,  
२३, २६, ३१, ७१, ७७, ८४, १०३,  
१०६, १०६, १३३, १३७, १४८,  
१६०; ११. ३७; १२. ८३; १३.  
१६, ३८, ४३, ४६; १६. २८, ३१,  
३२; १८. ३८; १९. १७, २५, २६,

४८, ६६; २०. १०१; २२. २४,  
२६, २८, ३०, ३२, ३४, ३७, ६५,  
६६; २३. २१, ६८, १४३; २४.  
४०, ५० ५१, १३४, १३६, १५०,  
१५१; २५. ३५, ८६, १३२.

ओहिक-उसका २४. ५६.

ओही-वह ही १. ६८; ७. १८; १०. १,  
२६, २७, २८, २९, ३०, ४५, ४६;  
१३. ३२, ५५; २३. १४६, १६५;  
२४. ३६, ५५; २५. १८.

क.

कैंपि-कांप कर २४. ७६, १०६.

क-का-(पठो विभक्ति) १. ३३, ७२, ८६;  
२. १४, १५, ६६, १४७, १५४,  
१८१; ५. ४३; ७. ६; ९. १४,  
५२; १२. ८; १५. १६, १७, २२;  
१८. ४५, ४६, ५८, ६१; १६. २८;  
१६. ६०; २०. ५६, १३६; २१.  
२७, ३०, ३४; २२. ७०; २३. २६,  
५५, ६८, १०८, १४१, १६२; २४.  
१३२, १३५; २५. २०, ३२, ८०,  
८८, १५३, १७४.

कह-का, की (पठो विभक्ति) १. ३६, ४५,  
५५, ७७, ८२, ११५, १४३, १४६,



१६८, १८०, १८२, १८४; २. ५१,  
 ५३, ६३, ६४, ६७, ७७, ८०, ८४,  
 ८७, १२२, १३०, १४४, १६१; ४.  
 २७, ३४, ३६, ४८; ५. १२, ३६;  
 ७. १३, ५६, ७१; ८. ८, १४, १५,  
 ३०, ५३, ६२; ९. ३, ११, १३,  
 १५, ५६; १०. १४, १७, ४२, ६७,  
 १०६, ११८, १२५, १३०, १५१,  
 १५३; ११. १, १२; १२. २५, ४७,  
 ५१, ५५; १३. २२, २५, ४७, ५६,  
 ६१, ८४; १३. २८, ३७; १४. १२;  
 १५. १२, २६, ३६, ४३, ४८, ५२,  
 ५३; १६. १५; १७. ७; १८. १२,  
 ३२, ३४; १९. ६, ३१; २०. ३,  
 १३, २४, २६, ३३, ४१, ४७; २१.  
 ३, १५, ३७, ५६, ५६; २२. ४,  
 १६, २४, २८, ५१, ६५, २३. १८,  
 २३, २४, ३७, ३८, ५३, ६८, ७४,  
 ८०, १०२, १३१, १६३; २४. ३०,  
 ६६, ६७, ८२, १०२, ११५, ११७,  
 १२१, १२०, १५३; २५. २४, २८,  
 ६४, ६७, ७४, ७६, १७४.

कह-क्या-घषवा १०. १२६; ११. ४४;  
 १८. १७; २०. ६४; २२. ८, ४७;  
 २३. ६; २४. १३. ६४; १७. ४.  
 कर (कर मका) १५. ८०.

कर-करते-हवा १. १२०, १२३, १२६,  
 १४०, १४१, १७३, १७८; २. ३३.

३८, १०५, १५१; ३. ६४, ७३,  
 ७५; ४. ४३; ५. ४६; ६. १; ७.  
 ३२, ३६; ८. ३, १२, ४८, ६८; ९.  
 ४६, ५३; १०. २४, ६१, ७२, ७६,  
 ११३; ११. ५२, ५५, ५६; १२. ७,  
 २१, ३२, ७२, १०४; १३. ६०;  
 १६. १६, २४; १७. ३, ६, १४;  
 १८. ४८, ५६; १९. २५, ३२, ३३,  
 ३६, ४६, ६१, ७१; २०. १, ३१,  
 ३७, ५७, ११०; २१. १, ८, ४६,  
 ४८; २२. ४०, ४१, ७५; २३. ५७,  
 १०५, ११४, ११७, १२४, १५२,  
 १५६, १६१; २४. ३, ६, २६, ६५,  
 ७२, ८६, ८०, १०४, (—मे सुधा०)  
 १२०, १३३, १४५, १५२; २५. १६,  
 ३२, ४६, ५०, ५१, ६६, ७२, ७६,  
 ८६, १०६, १६२.

कशियनि कायस्थ-कायस्थ को श्री (म०  
 कास्त; शु० कायत) २०. २२.

कह कह-कर करके ७. ५५.

कहसह-कीहस-कैसे [शु० कास्त-ईया;  
 जहस-याहस; (ह० ४. ४०३) तहस-  
 लाहस; तथा एहिम, एहिम; केहिम,  
 P. 131] ५. २२; ७. १५; १२.  
 २८, २६, ३१, ३७; १६. ५८, ६२;  
 २०. १०८.

कहसेह-कैसे ही-किसी तरह भी २४. ८०.

कहसा-कहसा-जल को धारण करने

वाला मेघ १०. ६०.

कउ-कइ+उ-कई २. १२६.

कउडिआ-कपर्द, कपर्दिका-कवडु-कौडी;

म० कवडा; गु०, य० कौडी; सि०

कवडिय १३. ४०.

कउतुक-कौतुक-कोउग ४. ४२; २०.

६६; २४. २४; २५. २८.

कउन-कः पुनः-कवण-कउन-कौन; म०

कोण; (नपुंसक० काय); गु० कोण;

पं० कौण (JB. 54, 76, 204); १२.

५०; २०. ६०; २३. १२८, १६६.

कउनहुँ-केनापि-किसी ने १६. २४.

कउनि-कौन ११. १४.

कउनु-कः पुनः-कौन ४. २१, ५२, ५४,

६०; ५. ४६, ५५; ७. १५, २६; ८. ७,

३०; २१. १६; २२. २४, २३. ७;

२४. १४१, १४२, १४३; २५. ७५.

ककनू-ककनुस, (पक्षि-विशेष) जिसे

फारसी में आतशजन कहते हैं २१.

४६.

कंकन-कङ्कण-कड़ा कट; तु० Lat. cinc-

lus-कक्षित; cane-cr-वृत्ति JB. 82;

२३. १३२.

कंगन-कङ्कण-कड़ा; म० कंकणी, कंगणी;

सि० कंगणु; वं०, ओ० कांकन,

कांगन; का० काङ्कम, कङ्कन (Gray.

506); १०. ११०.

कचउरि-कचौरी (कुच+उरि, कुच के

समान फूली हुई) १०. ११३.

कचउरी-कचौरी २५. ६६, १३६.

कचपत्ति-कचपची-कृत्तिका नक्षत्र १६.

१४.

कचपची-कृत्तिका नक्षत्र, जिसमें छोटे

छोटे चमकदार तारे हैं; १०. ६३;

१६. ६.

कचूर-कचूर-कचूर; एक विषविशेष,

जो हलदी में उत्पन्न होता है, और

जिसका हलदी जैसा रंग होता है;

२०. ६६.

कजरी आरन-कजलारण्य-कदलि-अरण्य

२०. ६५.

कजरीवन-कजलीवन (-काला वन)-

कदलीवन, जो हपीकेश, देहरादून,

बदरिकाश्रम और उसके उत्तरवर्ती

हिमालय प्रान्त में है १२. ३६.

कंचकी-कन्तुकी-कन्तुच-चोली २. ११०;

४. ३३.

कंचन-कंचण-सोना १. १३३, १६६,

१६७; २. १२६, १४८; ३. ३६; ७.

१७, ४४; ८. ५४; १०. ६७, ११३;

१६. ८, २७; १६. २४, ३६, ५०;

२२. ३५; २३. ७३, १०६, १२२;

२५. १६८.

कंचनकरा-कञ्चनकला-सोने की कला

(-सार) १६. ४१.

कंचनकरी-कञ्चनकलिका १६. २५, ३७.

कंचनपुर—कंचनपुर २३. १३३.

कंचनरेख—सुवर्णरेखा १०. ११.

कटक—कडग—दल—सेना—समूह २. ११;

१२. ७२; १३. ११, १६; १४. २७,

२८; २९. १७; ३०. ३२.

कटहरि—कटफल—कटकिफल—कटहर—

कटल २०. ४२.

कटाउ—(√कट्—कट्—कट्) कटाव—काट

काट कर घनेक फूल पत्तों की रचना

२. ६६, १०६.

कटालु—कटाच—कडकस—कनसियां (कट+

अचि—देवी इष्टि) २. १०६; १०. ५३.

कटार—कटार—काटने वाला भस्त्र, सि०

कटारो, दे० कटारी इरिका २४. ८७.

कटारी—कटार २. ६२; २४. ४०.

कटिन—कटिय; म० कटीय, कटीय; शु०

कटय; सि० कटनु; ४. ३६; ७. ४;

६. ४१, ४०; ११. ७, २८, ३३,

३६, ४३; १३. १६, ४१; १४. २६;

१८. २०, ३८; १९. २६; २९. ६७,

१०३.

कटार—कटार—कटिन १०. ३२.

कटार—कट—कटार—कटारी; म० कट; शु०

कट; मि० कटो; सि० कटु २४. ११६.

कट—कटग—(√कटि गती “केचित्पु इदितं

मया जुमि कृते कटतात्प्रादि वद-

मि” सि० कौ० म्या० ग० १०. ४२६)

सि० कटि; पं० कट; मि० कटु;

वि० कचो—कच; १०. ११६.

कंठ—गला; सि० कंठु; सि० कट १. ६८;

७. ३०, ३१, ४३; ६. ४७; १०.

१०४; १२. ६; १६. २; २३. ३३,

७४, १०६, १०८.

कंठ—कण्ठ—गले में २२. १.

कत—कुतः—अप० कटान—क्यों १८. ३८.

कतहुँ—कहीं पर २. ११७, ११६; ८. १)

१३. ३८; २०. ७८, ११२.

कतहुँ—कहीं पर २. ११६, ११६, ११८.

कदम—कदम्ब—कलब—कदम २. ८३; ४.

७; २०. २४.

कदलियम—केले का खंभा—कपजि—कपजि

(द-द-ल P. 245) १०. १०६.

कथा—कहानी १. ८, १३६, १०३; २.

११६; ३. २; ७. ७१; २०. ११२;

२३. ७६.

कथे—कथन से—कहने से ११. ४१.

कतार—कथ की; कथिका—कथ की कनी ।

शु० म० कणी, काण (अथ का दाना);

शु० कण, कणी, कणी; मि० कणो,

कणि; हि० कन १६. ११.

कनक—सुवर्ण २. ३३, ६८, १०६; ३.

४६; ६. १२, १६; १०. १६, २२,

८६; २३. १२१, २४. ६६, १३६.

कनककलस—सोने के कलस २. ६१.

कनकईद—सुवर्णईद—सोने का दण्ड

१०. १०३.

कनकपानि—सोने का पानी (—जवानी की पाण) १८. ३८.

कनकसिला—सोने की शिला २. १३५.

कनहारा—कर्णधार—पतवार को पकड़ने वाला १. १४२.

कनिआ—कन्या ३. ६, १६; कन्याराशि ३. २०.

कनिक—कनक—सोना १०. ११३.

कन्त—कान्त—पति—(√कम्-√चन; ह्रस्वत्व के लिये देखो P. 83) ८. १३, ३०, ४८, ६३, ६६; १२. ४१; १८. ८.

कन्या—कथरी (तु० Lat. centon; O. H. G. hadara; Germ. hader) ११. ४५; १२. ३०, ६४; १३. ५८; २३. ६०, १६७.

कंसासुर—कंस—कृष्ण का विरोधी असुर १०. २८.

कंसू—कंस २५. ५१.

कपूर—कर्पूर—कप्पुर; सि० कपुर०; गु०, सि; पं, हि०, बं, थो० कपूर; फा०—काफूर २. ५०, १०२, ११४, १८२, १८७.

कपूरू—कर्पूर २. १४६.

कपोल—कबोल—गाल २. १०६; १०. ८३, ८८.

कपोला—कपोल १०. ८१.

कव—कदा ११. २२; २३. ५६; २४. ७६.

कवहुँ—कभी ३. ८०; ८. १७; १६. ३.

कवि—कवि—कह [√क्-√स्क्; तु० पह०

कह; फा० कह Lat. cav-ere (—सावधान होना); Germ. schauen; As. sceawian (—देखना); Eng. show]

१. १५६, १६१, १६६, १७७ १८५, १६०; ७. ४७; १२. ८०.

कवितन्ह—कवित्त—कवित्त यनाने वाले कवि १. १७६.

कविलास—कैलास—कइलास अथवा कैलास—(तु० बहर वर; कइरव—कैरव; P. 61) शिवपुरी—इन्द्रपुरी २. १३, १७, ६०; १५. ५६; २०. ६७; २१. ३६; २२. २४, २६.

कविलासा—कैलास २. १४८; २२. २८.

कविलासू—कैलास पर्यंत १. २; २. १८५, १६३; ३. ११; ६. २५; १३. ६३; १६. १२.

कमरख—फलविशेष २. ७८; २०. ४४.

कमावा—(कर्म—कम्म—काम; सि० कम; सि० कम; कमाया २४. १३६.

कया—काया—काय—शरीर (√चिञ्-चयने) १. ७२, १८४; ३. ७३; १२. ८, ११; १३. ३, ५८; २०. १२०; २१. ४१; २२. २, ६०; २३. ५१, ५६, ७८, १११, १५८, १६१; २४. १३५, १४८, १४६; २५. २०, १६०.

कयापिंजर—शरीर का पिंजर २५. १४.

कर—का (तु० कृत—कैर, कैरि अथवा केरा,

केरी; कर, करि; करा, करी; सं-  
जनेर-जनका; महा० प्रा० रायकेरं-  
राजकृत इत्यादि H. Pp. 220-240)  
१. क, ३८, ४०, ४७, ५२, ५३, ६५,  
७१, ७२, ७३, ८८, १३८, १५३,  
१५५, १७६; २. ६, १०, ४०, ५६,  
६०, ११५, १८४, १८५; ३. ५४;  
४. १२; ५. ६, ८, २१; ७. १, ३,  
१४; ८. २१, २६, ४८; ९. ८, २४;  
११. २०, ३६, ४४; १२. १५, ३३,  
६१, ६४, ७१, ७२, ७३, ८१, ८३,  
८६, १३. १४, २६, ३२, ३५, ४६;  
१५. २२, ६२, ७१, ७२; १६. २७,  
३०, ४८; १८. २१; १९. १४, १६,  
३८, ६२; २०. ६६, १०२, १०४,  
१११, १२६, १३२; २२. ३, १६,  
३१, ४५, ५२; २३. २७, ६२, ६६,  
७८, ८४, ८५, १०१, ११६, १४५,  
१७१; २४. ८, ५५, ६६, १३१;  
२५. ८, १२, १७, २४, २५, ३०,  
३७, ४०, ८४, ८४, १०७, ११२,  
१२६, १३२, १४०, १५६. कर-  
हाय (✓क, पु० Lat. *corus*: Eng.  
creator, कृत्-करना) १. ५८; ३.  
६१; ४. २२; ८. ३, ४८; १०. २७;  
११. २४; १२. १, ५, ६; १६. १७;  
१८. ३१; २०. ८१; २४. ३७, ७३.  
कर-करता है प्रा०, का० कर; पह०

कर्तन; फा० कर्दन; १०. १३२.  
करह-करोति-करता है (Lat. *cor-us*-  
विधाता; create, creat; कृत्, cracy  
इत्यादि) १. ४४, ४७, ५६, ५८, ७६,  
८०, ११८; २. १६, ३६, १०४; ३.  
७२; ४. १६, ४१; ८. ५५, ६७;  
८. ७२; १०. १०३; ११. ८, ४०;  
१३. ५२, ५३; १५. ७, २३; १७.  
१२; १६; १८. ३, ५६; १९. ७०,  
७२; २१. ७; २२. ८, ८०; २३.  
३७, ४०, १३६; २४. २४, १४४,  
१५२; २५. ४, ६८, ७५, ७७, १५४.  
करह-करोति-करता है १. ७४; ७. ३६;  
१३. २६; २१. ३४; २४. ३१;  
२५. ७७.  
करह-करवाणि, कुर्याम्-करें ३. १२;  
७. ५०; करता हूं ७. ६४; कस्या  
१६. ४८; करता हूं २१. ४८; कर-  
वाणि २२. २६; कुर्याम् २४. १४०;  
करता हूं २५. ३६; करवाणि २५.  
१४६.  
करत-कुरु-करते हुए १. १६; ३. ७४;  
५. ३३; ६. १४; ११. ३८; १२.  
२८; २२. १५; २३. ३७, ८०; २५.  
१४१, १५४; करते हैं २१. १३;  
करत हुत-करता या २५. १२६.  
करता-कर्ता-रचयिता १. ४६, ७३.  
करतार-कर्ता-ब्रह्मा ६. ५६.

करतारू-कर्त्ता-परब्रह्म १. १.

करन-कर्ण १. १३०; १३. ५४.

करना-करण-गरण-क्रिया १. ७३; पुष्प  
विशेष (कनेर) २. ८७; ४. ३; एक  
प्रकार का नींबू, जिसका पुष्प श्वेत  
होता है २०. ५१; करण-सुखसा-  
धन-सामग्री ५. ४५; १८. ५५;  
आउबि करना-करने आवेगी; करण-  
कर्तुम्; (यथा एच्छण-एच्छुम् P.  
579) ४. २३.

करनी-करणी-(छि० कन, कुद, कोद-  
करना; कुदो-कर चुका है; री० कार-  
करण-क्रिया, कर्म १. १५६; कर्त्त-  
न्यता, योग्यता २४. १४१, १५३.

करपल्लव-करपल्लव-मृदु हाथ १. ६८.

करव-करेगे (करअन्वम्-कर्त्तव्यम्) १.  
८८; ८. ४०; १२. ६०; २०. ३८;  
करतव-कर्त्तव्य ११. ३३.

करवरहीं-कुलधुलाते हैं-इधर से उधर  
उड़ते हैं २. ३५.

करमुखी-कालमुखी-जिसका मुंह काला  
हो (सं काल; पा० काल; उ० कला;  
बं०, हि० काला; सि०, व्रज० कारो;  
गु० कालो; सि० कल) २४. १३८.

करमुहां-कालमुख-काले मुंह का १०.  
८४.

करमूहां-काले मुंह वाला २१. ६२.

करवट-(कर्वट-पर्वतघाटी, उससे लाञ्छ-

णिक अर्थ करवट लेना) अथवा  
कटिवट्टी-कटिवृत्ति-इधर उधर होना  
१३. २.

करवत-करपत्र-करपत्त-आरा (प-व P.  
199; म० कर्वत; उ० करोत) १०.

१३, १५, १२८; १८. ३४; २४. ५६.

करसि-करोपि-तू करता है २४. ८६.

करसी-(√कृप्-करिस्-कट्) कर्पित  
की-खिचवाई १०. १२८.

करहकटंगा-कर्णाटक १२. १०२.

करहिं-करते हैं २. ३३, ११५, १६७;

३. ३५; ४. ३४; ८. ३२; १०.

१६, ३४, ३६, ५३, ६६, १५८;

११. १४; १२. ५६, ८८; १५. ६६,

७८; २०. १५, ३४, १०४; २३.

४८; २४. २४, १६०; २५. १७,

११६.

करहि-कलाया:-कला को-कल को (म०  
कल; सि०, कल (अ); २४. ४८.

करहीं-करते हैं २. ३५; ५. ३४.

करहु-कुर्वन्तु-कुरुष्व-करो १. ५७,

१०४; ८. ५८; ११. ३२. १२. ४८,

८६; १५. ५७; २३. ४३; २५. ७,

६५, ११५, १३४; कर डालते हो

८. ६७; करते हो ८. ७१.

करां-कलाएँ-किरणें २३. १६३.

करा-कला १. ८१, १२५, १४७, १६७;

३. १०, (तत्त्व) २२, (कान्ति) ६७;

तेज ५. १२; कला ६. १७, ३८;  
लीला वा अवतार १०. १३३; दशा  
११. १२; विद्या ११. २५; अंश  
१३. १७; कान्ति १६. २०; किरण  
२०. १०२; विद्या २३. ११७; अंश  
२५. ७८; किरण २५. १६८.

कराह-करह-करती है १०. ३२.

कराह-कटाह-कडाह (ट-ड P. 198,  
ड-र P. 241, सं०, पा० कटाह;  
उ० काहै, कहाह, कदेह; वं कडाहै;  
हि०, पं०, मि० कडाही; गु० कडा,  
कडहै; सि० कुलाव १५. ३२, १८.  
५२

कराही-करते हैं (तीनों स्थानों पर  
'केलि कराही') २. ५४, ६६; १०.  
५५.

करि-की १. १५, १६; २. ८६, १२०;  
६. ३०; १६. ६३; २१. ३१; २२.  
७; २३. ६७; करके २. १६, ३७.  
२०. ११८; २२. १; २३. १५.

करिअ-करी, जो नाव को लीचने के लिये  
नाव में छापी रहती है। छोटी नावों  
में कड़ी के स्थान में रस्सी होती है,  
जिसे 'गोन' कहते हैं। आजकल  
लोग दण्डों को "करवारी" कहते  
हैं। १. १४१.

करिअह-कीजिए २५. २६.

करिय-करी (-करी-करीधार)-पनवार

एकदने घाला; धाया करिया-कदि-  
या, कड़ी एकदने वाला-महाह ३.  
८०.

करिल-कंठिल-कठिल-करिल-कृष्ण वर्ण  
४. १५.

करिहह-करिष्यति-करोगा ७. ७२.

करिहउँ-करिष्यामि-करूँगी १२. ४५.

करिहि-करिष्यति-करोगा १२. ४२.

करी-कली ३. ४१; ४. १७; ६. १२;  
१०. १५१; २५. ८८, १०२; करिये  
२५. ६, २५.

करील-करिल-कृष विरोध जो बुद्धावन  
में प्रसिद्ध है; वसन्त में सब कृष  
हरे हो जाते हैं, किन्तु इस पर पत्ता  
नहीं आता; ८. १६.

करीलहि-करील को २१. २०.

कर-कुल; करो-कर, ७. ३३; १७. ८;  
१८. ३१; २२. ७५; २५. ४४.

करह-कटु-कड़वी १. २८.

करेह-करोति-करह-करता है ३. ६४;  
४. ३२; १०. ६४; २५. १२, ७२.

करेह-करोति-करह-करता है १. ४२;  
२०. १६; २३. १५१.

करेह-करोमि-करता हूँ २२. १२.

करेह-करोमि-करते हैं ४. ११.

करेह-करह-करिये २२. १६.

करोध-कोष (गु० Lith, rus-tus-(मुन्)  
rus-tya (-कोष); Oorm, groll

(-क्रोध) ११. ४६.

करोरिन्ह—कोटि—करोड़ों ७. ७.

कलंक—कालिमा—दोष १. १६२, १६७.

कलंकी—कलंक वाला १०. १६.

कलपइ—कल्पति—कलपता है—दुःखी होता

है (√कल्पु JB. 309) १८. ५०.

कलपतरु—कल्पवृक्ष—विधि वृक्ष (√कल्प;

तु० Goth, hilpen; Eng. help);

२. १४८.

कलपसमान—कल्प के तुल्य १८. ४.

कलप्प—कल्प—कल्पन—छेदन ११. ४०.

कलचारी—कलयार की स्त्री; (कलवार

शराब बनाने और बेचने वाली

जाति) २०. २१.

कलस—कलश—घड़ा १२. ७४; २०. ८०.

कला—(चटक—चटक मटक से दोना लगा

देने वाली कला, जिससे मनुष्य

विवश हो जाय) २. ११८; अंश

१०. ६५; २४. ६७; २५. ७४, ८६.

कलाई—कोहनी से मिला हुआ निम्न भुज

भाग; छि० कालाज; (छि० कल—

सिर) १०. १०५.

कलि—कल—मधुर—प्रसादक—विश्राम (तु०

वि+कल—विकल) ५. २५.

कलीं—कली का बहु० २०. ३१.

कवन—कः पुनः—कवण—कौन (छि० की—

कौन; री० कोक; कुक—कोकह; अवे०

क; M. 398) १. ६१; १३. ११;

१८. १०, ५३; २५. १०.

कवनउ—कोई २. १६३.

कवनु—कौन १०. १५१.

कवैल—कमल (तु० म० कोवैलो, गु० कुंछुं;

सि० कोमलु—कोमल) १. १६२; २.

५३, १८१, १८४; ३. ३६, ४५; ४.

८, ३५, ३६, ५०, ६४; ५. १३; ८.

२४; ९. १७, ३८; १०. ३४, ६४,

१२३, १३४, १५१; ११. २४, ३४;

१३. २८; १५. ७७, ८०; १६. १६;

१८. ११, १२, १३; १९. ७१; २०.

३३; २३. ७४, १४३; २४. ५६,

६२, ६६, ८८, ८९, ९०, ९०२,

१२४; २५. १६६.

कवैलकरी—कमल की कली १८. २७;

२०. १०; २४. १५४.

कवैलकली—कमल की कली १८. १४.

कवैलचरन—कमल जैसे पैर १०. १५५,

१५७.

कवैलभर्वर—कमल का भ्रमर १६. ५६.

कवैलरस—कमल का रस १८. ७.

कवैलसुगंधु—कमल सुगन्ध १०. १४६.

कवैलहथोरी—कमल हस्ततल—कमल

जैसी हथेली १०. १०६.

कवैलहि—कमल से, कमल को, कमल में

६. २१; १६. ३२; २४. १००, १०१.

कवैला—कमल १. १६; ६. ३६; २४. ५७.

कस—कीदर—कैसे ४. १६; कैसा ८. ६;



६. १, कैसे १६, कैसा २०, कैसी २२; (न-क्यों नहीं) ११. २१; क्यों १८. १६, कैसा ३०; कैसा २१. २०; क्यों २२, ८; क्यों २३. १७, कैसा १०६; कैसा २४. ३४, क्यों ८५, क्यों ८६, क्यों ११४; क्यों २४. १२, कैसी ३१, क्यों १४३.  
 कसई-कपन्-कपने से २२. १५;  
 कसउँदा-कपायद-कसैला २०. ४६.  
 कसउटी-कपवटी-कसौटी-सोना कसने का पत्थर ८. ४; १०. ११; २२. ३५; २४. १३६, १६८.  
 कसतुरी-कस्तूरी १. २५; १०. २.  
 कसतूरी-कस्तूरी २. १०२, १८२.  
 कसा-कसई-कपैति का भू० (घने० कर्प-वृक्ष; वि० कापकन्-सीघता; काप-घ्न; कापगू-लीघने वाला बैल) १४. ३६.  
 कसि-कमकर ८. ६  
 कसिआइ-कमिये १६. ३६; २४. १४८.  
 कसी-कपिता-कमी गई १०. ११.  
 कहूँ-(कच; कचे-कई, कहुँ, कहूँ, काहूँ इत्यादि II 375)-के लिये १. १६, के-के लिये ६४, ६७, ८६, १८६; ३. ६६, का-के लिये ६८; ४. ४२; को-के लिये ८. ४६; ६. ५; १०. २३, ६४, ११६, १३२, १३६, १३१; १२. ५, ८, ९०; को-के लिये

खेलना-यात्रा करना) १३. ११, १२; १४. ४७, ५५; १८. २७, ३२; १६. १३; का-के लिये २०. ३४, ४८, ७८, १३२; (मुझे-मेरे लिये) २२. ११, २२; २३. १३३, १३५; २४. १६; २४. २, ५, २८, की-के लिये १७१;-को १. ३४, ३८, ८३, १०२; २. १०३; ३. ३४; ४. ४४; ७. ३८, ६५; ८. २४, ६५; १०. २४, ३५, १३६, १४६; १२. ६१, ८०; १३. २७, ६४; १४. ५७; १६. ३३, ४२; १८. ४६, ५३; १६. १६, ५४, ५६, ६७; २०. १०२, १३५, १३६; २१. १४; २२. ३२; २३. ७, १६, ८४, ६८, १२२, १२६, १२४, १५८, १८४; को-के ऊपर २४. ६, १४, २०, २६, ५६; को (-गुम में) १५०, १५६; २४. ३२, १११, १७२;-के ऊपर १. ७१; ७. ३३; ८. ७१; १६. ७०; २२. ३६; २४. १४६; को-के पास १. १४२;-के (घर में) ३. ३०;-के (-साथ) ७. ४०; की ८. २४;-के यहाँ १०. १२३;-के (-आग में) १०. १४८;-में (?) १२. १६;-की २०. ३६;-के २३. १३१; का (-कहा मानता था) २४. ३६;-कहाँ १. १८३; २. १२८; १६. ४०; २०. ६७; २१. ३६; २३.

५५, ६५; २४. ४०;—कहीं २३. १६.  
कह-कथयति-कहता है (तु० प्रा० कहइ,  
कहेइ; शौ० प्रा० कथेदि कहेदि; पा०  
कथेति; उ०, वं०, हि०, पं०, सि०  
कह-गु० केह-सि० कियनवा) ८.  
२२, ३८, ३६; कहने से ६. २; १०.  
५८, ७३, ८०; २०. ६६; कहें २५.  
४८.

कहइ-कथयति-म० कहेइ, मा० कथेदि,  
शौ०-कथेदु-कथयतु (अय-ए; अय-  
ओ, यथा ठावेइ-स्थापयति P. 153)  
२. ११६; ३. ३२; ७. ६१; ८.  
४४, ५१; ६. ५४; २०. ६८, ६३;  
२२. ३१; २३. २६; २४. १४४;  
२५. १४७.

कहई-कथयेत्-कहे ८. १७.

कहउँ-कथयामि-कहता हूँ (कहूँ) १.  
११३; २. ६, १५, १२८; ३. ५०;  
७. २६; १०. १७, ७३, १३७; १६.  
४८; २२. ६१, ६४, ७०; २३. ६८,  
१२८; २४. १०५; २५. ८१.

कहउ-कथय-कहिye ११. १५; २४. १५६.

कहत-कथयन्-कहता हुआ ६. ६, २४;  
कहते ही २२. १६, ७७; कहे का-  
कथित का २३. १६; २४. ४३; कथ-  
यन्ती २४. १०४, १२२; कहने से  
२५. ८८, कथने-कहने में १३३.

कहना-कथन-कहण; पा० कथन; उ०

कहिवा; वं० कहिते; हि० कहना;  
पं० कहना; सि० कहनु; गु० काहवुं;  
५. ५६; १६. ३४.

कहनि-कथनिका-कहानी ७. ७१.

कहव-कहेंगे १२. ८३.

कहवाँ-कहाँ ११. १६; २५. १५६.

कहसि-कहता है ७. ३५. ८. ८.

कहहिँ-कथयन्ति-कहते हैं ४. १०;

१२. ६. ८२; २३. १७६; २५. ३,

१७, ८८, ११३.

कहहीँ-कहते हैं १४. ६; २५. २०.

कहहु-कथय-कहो ३. ६१; ६. ८; २२.

८; २३. १७८.

कहाँ-कुतः (J.B. 204, 206) कथ-कहाँ

म० काम; गु० काम; त्सि० क; अय०

कहाँ; द्वि० कू; ट० कूह (तु० जत्थ-

यत्र; तत्थ-तत्र; सव्वत्थ-सर्वत्र;

अत्थ-एत्थ-इत्था, (वैदिक) P.

293) ३. ६७, ६८; ४. २०; ५.

१७; ८. ५५; १०. १७; १२. ११,

१४, १५; १३. २५; १४. १७; १५.

२४; १८. ७, २६; १६. ११, २४,

६०; २०. ३६, ६७, १२०; २१.

१८, १६, २०; २२. ८०; २३. २०;

२४. ४, ४३, १५१; २५. ८०, १४४.

कहा-(कथित-कहा गया है); १. ११४;

बोला ३. ४६, ५४, ५६; ४. ४०,

५४, ५७; ५. ४१; कहा चाहता है-

कहना चाहता है ७. ६२, ७१; ८. १३, ५८; ९. १; ११. २५, ३३; १२. ५, ५५, (कथित) ५६, ८०; १३. १७; १४. १७; १६. ३३; १८. ६, (कहा है—कहता है) ४६, ४७, ५८, ६६, ६८; (कहा नहीं जाता) २०. १२७; २१. ३३, ६०; २२. ३३; २३. ४४, ४६; २४. २५; २५. २६, (कहा न आई) ४५, ५४, ८२, (कहते हैं) ६०, (कहना चाहिये) ६१, १०६, १०७, १४६, १६६—कैसे—क्या—कथम् ७. ६७; क हि—क्या १२. ५४, ५५; कैसी १६. १, किम् क्या १६. ४८; कैसे २१. २६; किम्—क्या २३. ४०, किम् १२०; कथम्—क्यों २५. ८०, किम् १६८.

कहानी—कथानक—कथानक—कहानी ११. ४१; १६. ४१; २३. ७६.

कहार—काहार—पानी झरना पाखड़ी डोने घाली जाति १५. ५६.

कहायह—कहता है २. १४.

कहाया—कहायह का भू० ८. १०; २०. ६२; २४. १२७.

कहि—कथयित्वा—कहकर १. १७६; २. १५६; २३. १०५; २५. ४५.

कहिअ—कहे जाते हैं २०. ६०; कथ्यते—कहिये २३. १२०.

कहिअउ—कहना (कथ्यते) २३. २२.

कहिहहु—कहोगे—कहह—कथयति का भविष्य १४. १०.

कहीं—कहह का भू० प्र० व० स्त्री० (वाते कहीं) १२. ६१.

कही—कहह—कथयति का भू० प्र० प० स्त्री० १. १६६; कहे जाते हैं (कहे पाठ शब्द प्रतीत होता है) २. ४०; ६. ३४; १६. ३३, ४२, ५७; २०. ११०; २३. ४१, ५०, १०८; २४. १२७.

कहु—कथय—कह ७. २१, २४; ८. ६; ९. १, २२, २३, ३३; १२. १७; १६. १; १८. १४, २६; २०. ११८; २२. ७६; २३. २६; २४. १४१; २५. ८.

कहे—कहे गये हैं, कहे जाते हैं १. ११०, (कहह का भू० प्र० व०) १८५; कहा था ६. १८; कथनेन—कहने से १८. ४०.

कहेन्हि—कहे—(कहह का भू० प्र० व० पु०; 'वचन कहे'; अथवा 'कहा' आदिरार्थ बहुवचन) २२. ७.

कहेसि—कहने लगी ४. २, कथयन् कहा—(कहह का भू० प०) ६; १६. १५; १८. ४२; १६. २८; २२. ६, ५८; २३. ६६, ११३; २४. ११६; २५. १८, ५०.

कहेसु—कथयिष्यसि—कहना २३. ५७, ५८. कौंच—काच—कच—कच—वृषिपां १२. ६४. कौंचा—कचा—कचय; (√कच् कचने)

२३. ११५.

काँचु-काँच (VWI. P. 400) १. १६७.

काँचुहिँ-काचे-काँच में १६. ३७.

काँचे-कचे २. १४१.

काँजी-खट्टा मट्टा १५. १६.

काँटा-कण्टक-काँटा; सि० कंडी; पं० कंडा;

सि० कटुअ; √कण्ट-√कृत्; देखो

इद् किद् कटि गतौ; छि० कचो

(-कृष्ट) कांटा; १२. ६१; २०. ५६.

काँटा-कण्टक १. १६१; २३. १३८.

काँटे-कण्टक; बहु० १८. ५१.

काँठा-कण्ठा-गले की धारी ७. ४५; ६.

१४; २३. ५५.

काँथरि-कंथरी-गुदड़ी-(कंथा-फटा कपड़ा;

तु० Lat. *centon*, O. H. U. *hndra*;

Germ. *hader*) १२. ३०;

२२. २.

काँथरिकंथा-गुदड़ी (फटे कपड़ों का  
चोलना) १३. ३६.

काँदउ-कान्दूरा; काँदो अन्न; अथवा

कांदउं-गान्दम (हि० गाहम, गाद;

जल)-कीचड़; तु० म० काँदल-कीच

के पास पैदा होने वाला पौधा;

(√काद् VWI. P. 341) १. १११.

काँध ७. ४७; १२. ६.

काँधइ-स्कन्धे-कन्धे पर २२. ४०.

काँधा-स्कन्ध-खंघ-कन्धा (P. 306;

H. 145) तु० खवा (Lat. *scapula*)

गु० खभो; दे० "खवओ स्कन्धः";

√स्कन्द्-उठना; Lat. *scando*;

*scandere*-चढ़ना; *descandere*-

उतरना; *scala*-\**scad-la*-सीढ़ी;

३. ७६; १५. ७, ५६.

काँधी-स्कन्धी-कन्धा देने वाला-बरावरी

करने वाला २५. ६६, १३५.

काँधे-स्कन्धे-कन्धे पर २. १६७; २२. २.

काँप-कंपते-काँपता है; म० काँपणें; गु०,

हि० कैप, काँप; सि०, पं० कंप;

का० कोम्प; सि० कपलुं-कम्पन;

(VWI. P. 346, 350) २०. ७२.

काँपइ-कंपेत-काँपे १. ६३; कंपते-काँपने

लगती है २. १२३, १३१; १६. ४०.

काँपत-कंपते-काँप रही है १०. ६४.

काँपा-काँप गया १. १०६; २४. १३, ६२.

का-क्या २. १२१, १४०, १४२, १६६;

३. ७२, ७७; ५. ४८; ७. ८, ११,

१३, १४, २६, ३१; ८. १४, १५,

३७, ३८, ४०, ७१; ९. ७, ८, २५,

५४; १०. १, १६, २३, ४१, ५१,

८१, ६६; ११. १४, ४१, ४५, ५३;

१२. २४, ३५, ८८, ६८; १३. ५,

२६, ३०, ४४, ४८, ६४; १४. १०;

१५. ६, ६३; १६. ३४, ४३; १७.

४; १८. ३०, ५५; १९. १८, ४२;

२१. ३४, ३६, ४१, ४३; २२. २१,

५६; २३. ८४, ८५, १२०, १२४;

२४. ३१, १०५; २५. ६, १६, ७६,

६१, ११४, १२१.

का-किस ४. ५०; ८. ५६; ६. ८; १०.

२३, १०३, ११६, १३२, १४८,

१५०, १६२, १३, ६०, ६१, ७१;

१३. २४; २५. १२; का पट्टी वि०

१५. ३२, ४०; को (जिसको खेलना

हो) २०. ४०; ओका-ठसको २२.

३२; तालु का, तालु के ऐसा २२.

७३; किसकी २३. ६७; किससे २३.

६८; लोका-तव २५. ६५; तवक-

तुम्हे २५. १३४; क्यों २५. १४४.

काई-जो इकट्ठा हो जाय-मल-काई (✓

चिन्; पा० ३. १, ४१) २२. ६०.

काऊ-कापि-कमी ६. ८; १६. ४०.

काऊ-कापि, अथवा कोऽपि ५. २८;

कमी ८. २६; कमी ६. ६.

कागद-कागज १. ७.

कागा-काक-काग-कौशा; म० काऊ,

कावज; तु० काऊ; सि० कौ, (कौठ),

पं० कौ; का० काव; सि० का; दे०

“कावलो मियः काकश्च” द्वि० काय,

री० क्वाय; २. ३६.

काटुई-कवित-कचे (लंगोटा-लिहपट्ट)

कसे हुए, कच-(कस्त-कौल, म०

कास, लौक, JB. 41, 103 अथवा

कच-कौल, म० कौलपा; (✓कच,

\*kagh VWI, P. 337); कचे०

कस; Lat. cingere; Lith. kankau-

कसा; Lat. cino-tur-कवित; तु०

कंकय (कुचि के अनेक रूपों के लिये

देखो JB. 92, 104) २५. १०५.

काछू-कच्छ (कच्छप का भागविशेष)-

कच्छप (तु० वै० करपप); हि० कछु-

आ; म० कासव अथवा कौसव; सि०

कच्छमुम; पं० काक्षिम; उ० कचिम;

सि० कसुप, अथवा कस्व-कमठ

VWI, P. 390 १५. ४; २३. १७३.

काढ़े-अलंकारादि से भूपित-(स-व-

डर-धुर; अचि, मचिका, धीर, सरव,

चेय, कुचि, इड, बुधा, बुध. P.

317 318) १०. १२६.

काज-काम-काज-हि० और म० काज;

(पं०-व्य-उज P. 284) सि० काज,

५. ५६; ८. २८; १२. १००; १३.

५५; १८. ५६; २४. ८.

काजर-कजल (कद्+जल) हि० म०

काजल; सि० कजल; पं० कजला

(JB. 47, VWI. 385) २०. २१.

काजा-कार्य-काज ११. ३३; १३. २२;

१५. १३; २५. १०६.

काजू-काब-काज (-मनोरथ) १२. ६,

५४; १५. ६१; २१. ४६.

काट-कनपेट-काटे; म० काटें; पं०

कट; (✓कट-P. 289; कट-काटना

तु० Lat. curtus-कोटा; द्वि०

कुर्त खण्डित; आ० फा० कर्त-डुकड़े  
काटना) २३. ३२.

काटर-कर्तकार-कटार-कटार [√कृत्-  
Qorl-, Qorāt-; कृणत्ति; कट-  
\*karta-; अन्य भाषाओं के साथ  
तुलना के लिये देखो VWI. p. 421]  
२५. १६६.

काटा-कर्तयेत्-काटे २३. ३३.

काटि-कर्तयित्वा-काट कर २०. ८३.

काटी-बिताई ५. २५.

काठ-काष्ठ-कट्ट-काठ; म० काठी; पं०  
काठ; सि० कट; सि० काठु; का०  
कट्ट; (\*Qold tho VWI. p. 438)  
२. ११७; १५. ८०; २४. ४८.

काठहि-काष्ठ को १५. ६३.

काठहु-काष्ठादपि-काष्ठ से भी १३. ४६.

काठी-काष्ठ १५. ३७.

काढइ-कर्पति-काढता है-निकालता है;  
कृप्-कदड (P. 52; तु० उखारै-  
\*उकाढै, प्रा० उक्कड्डइ-उत्कर्पति);  
तु० म० काढयें गु० काढयुं; सि०  
काढयु; पं० कदडया; का० कडुन;  
बं० काढिते; उ० काढिवा; आ०  
कश; पै० चल; IG. Qors-कर्पति;  
अवे० कर्शइति (देखो VWI.  
P. 422) छि० काश (अ०; √अवे०;  
कश-खड़) काशगू खींचने वाला  
बैल; करने (-वाला, खींचने वाली;

JM. इसकी व्युत्पत्ति \*कनिश्ताकी-  
सं० कनिष्ठिका से मानते हैं; देखो  
p. 268) १५. १८; १६. ४३.

काढहु-निकालते हो २२. ८.

काढा-काढइ का भू० (तु० कदइ-कथ-  
ति) १५. २७; २५. १०१.

काढि-निकाल कर ३. १८; १०. ६६,  
१०८; १५. ४८; २१. ६, १६, ३८;  
२४. ५१, ६८, ७७, १४८; २५. ४६.

काढी-निकाली ३. १०; ७. ३; १०. ६८.

काढे-निकाले २. १३२.

काढेउ-काढा-निकाला १४. २४.

कान-कर्ण-कण्ण; सि० कनु; पं० कन;  
का० कन; सि० कण [√कृ; \*Qor  
VWI. p. 412] ८. ४०.

कानन्ह-कानों में २. १०६.

कान्ह-कृष्ण-कन्ह; म० कान्ह, कान्होया;  
सि० कानु; पं० कान्ह; सि० किणु;  
का० केहोन [ष्ण-एह P. 312-313  
क-अ P. 57; \*Quors-अन्धकार  
तु० कृष्ण; प्रा० फा० किर्सनन; Lott.  
Kirsna-नदीदेवता विशेष; तु० कट,  
कुरंग आदि VWI. p. 425] २२.  
७४; २५. ५१.

काम-इच्छा-अनङ्ग √Qā-चाहना, तु०  
काति, कात, काम; Lat. carus-प्रेम;  
Goth. hors-गणिका; तु० √कन्,  
√चर, (चार); चन् (चनिए, चनस्)

अवे, लुकन (VVI, P. 325) ४.

३४; ११. ४६.

कामकंदला-वेरया का नाम २१. १४.

कामदल-काम की सेना १६. ३४.

कामवर्ध-कामवर्धक १८. ४६.

कामिनि-कामिनी (√कमु; कन्या;

√Kēn-तु० कनीन, कना, कन्या;

अवे० कइन्या, कइनी, कइनीन)

१८. ४६.

कायर-कायर-काइल-कातर, काघर

(म०), काघर (म० मा०), कादर

(शौ०), कादल (मा०); तु० यर-

यराता है-कांपता है [P. 207;

\*Qon-पिघइना; कन्द, कन्दुक,

तया कदर; कदु, कदम्ब, कादम्ब की

व्युत्पत्ति \*Qod से है; कजल तथा

खदिक का इनके साथ संबंध नहीं

है; VVI, P. 320, 285] १४. १.

काया-शरीर १. १५१, ८. १५; ६. ३६;

११. ४६; १२. १५, ३३, ४५, ७१;

१३. ४७, १६. २, १६. ४६, ७०;

२१. ४३; २२. ६५; २३. ६४; २४.

७, ५२, ७३.

कारन-कारण-मि०-कदय [कय-अन्त

(i)qol-; वन-य, देखो Persson,

KZ. 33. 283] ११. ५५; १३.

१६; १६. ५१; २०. ६५, १०४;

२२. ३४; २३. ११२; २३. ४६;

२५. ३४, १२८.

कारे-कालक-कालय; काला; म० काल;

तु० कालो; उ० कळा; सि० कळ,

२. १६३; १०. ५, १३०, १३४.

काल-समय-मृत्यु; मि० काल-समय,

उड़ना, (√कल संख्याने गती व,

तु० Lat. *coller*-तेज) ३. ६२, ८०;

४. ३७; १०. २६, ४०, ८६; ११.

२३, २५; २०. ८४; २४. ६७, ६८,

७१, ७७, १२६, १४३, १५१, १५२.

कालिंदी-कालिन्दी-ममुना २२. ७४.

कालि-कालिमानाग-कालिक-कालिग

(पल्लोप P. 150) २४. ५६.

कालिंदरि-कालिन्दी (कलिन्द की कन्या;

कालिन्दी-कलन्दर के आधार पर)

१०. १२६.

काली-कल्प-कल-कल; म० काल; तु०

काल; यं० उ० कालि (कलिह वन०)

यं० कलह; का० कोलि; सि० कल०

(\*कल-सुन्दर, पूर्य; तु० कल्प,

कल्याण, कल, कलित आदि। ग्रीक

शब्दों के साथ तु० के लिये देखो

VVI, P. 356) ४. १३; २०.

१२३.

काल-काल-[मि० काल-प्राणियों का

विनाशक] १२. १२.

कालि-कल्प-कल-कल-(कलि) बीना

दुष्प्रादिन (किन्तु भाषा में इसका

अतीत और आगामी दोनों में प्रयोग होता है) १२. ८२; १६. ५६; २०. १२६, १३६.  
 काविँनि-कामिनी-कामिणी-चेरया १०. १४३.  
 काह-क्या-४. १६; १५. ६३; १६. ३३; १७. १०; २२. २८, २६; २३. ४५, १०४; २४. ३०; २५. ७६.  
 काहा-क्या १. १२१; २. ४६; १७. १२; २१. २०; २२. २६; २३. ५०.  
 काहि-कहीं भी १. ८; किसी को ७. ७२; किसके ११. १५; २१. ४५.  
 काहु-किसी १. ३६, ५२, १११; २. ११६; १८. ४०; २०. ४७; २१. ३४; २३. ५०; २५. ४०.  
 काहुहि-किसी को (के लिये) १. ४६.  
 काहुही-किसी से भी १. ११२; किसी को २५. ७२.  
 काहु-किसी १. ५३, ७३, १२६; २. १०४; ४. ५६; ७. ३, ५६; ८. १२; १०. ६१, १२०, १३७; ११. २७; १५. ५०, ६४; २०. ४१, ४७, ४८, ६२; २१. ४१; २४. ८३; १०३; २५. ४.  
 काहे-क्यों ५. ४३; ७. ६; ८. ५२; २१. ३१; २५. ७७.  
 कि-कि २. १६४; ३. ६२, ७८; ७. २०; ८. ७; ८. २२; १२. १३; १८. १८;

की (पछी) ३. ६१; १६. ३१, ४४; २०. ५४; २१. ५३; २४. १०६; २५. ५१;—का २५. ११६;—अथवा किंवा १६. ३६; २१. ३६; २२. १८, ३६; २३. १०३, १०४; २४. ४४.  
 किआ-किया ३. २०; १०. १०; १५. ३८.  
 किआह-कियाह-जिस घोड़े का रंग पके ताड़ जैसा हो ("पफतालानिभो वाजी कियाहः परिकीर्तितः" जया-दित्यकृत अश्ववैद्यक) २. १७०.  
 किप-किये हुए २. १६७; १५. ३०.  
 किंगरि-खिंगरि-खींगरी (P. 206); (किन्नकरी-किन्नकिन्न करने वाली; एक प्रकार की चिकारी जो योगी लोग हाथ में रखते हैं) १२. १; १३. ७; २०. १०३; २४. ३७.  
 किछ-कुछ १. ५६, ६०, ६१, १७६; २. ११६, १५२; ५. २७, ५६; ७. ३, ५; ८. ४०; ११. ४८; १२. ८२; १३. ४८, ५०, ५६; १५. ६१; १७. १६; १८. १५; २०. १२७, १३३; २२. ३३; २३. १६, १७१; २४. ८, १६०; २५. ४५, १४६.  
 किछू-कुछ; १०. १६०; १३. ४२.  
 कित-कुत्र-कुत-कित-कहां, क्यों [तु-किह-किध, किधर (हिन्दी)-कथा P. 103 केतु-कथा; P. 104 के



अनुसार द्वित्व विधान ] २. १०३;  
३. ६३, ७६; ४. १३, १४, २०,  
२१, २२, २३, २४, ३६, ४६, ५१;  
५. १६, ३२, ३५, ३६, ४०, ५०,  
५१, ५६; ७. ३४, ३८; ८. ४८;  
१०. १४१; ११. ३६; १५. ३२;  
१६. ५, ३, ६१; २१. १३, २५,  
४६; २२. ५०, ५१; २३. २४, ४७;  
२४. २८, १०१, १३८; २५. ३८,  
७८, ८१.

किष्कु-कैष्कु (किष्-कैष्) कया (द्वित्व  
P. 194); गु० म० कुठेम; वं० कोया;  
सि० कयी (कियी-कयि; JB 76,  
110); १. १७६.

किन-किमु न-क्यों न २३. ४३; २५.  
८१.

किमि-कैमे ३. ७३.

किरन-किरन १०. १२.

किरिन-किरिण; म० किराण; गु० किरना,  
कीयं; सि० किरिणि; पं० किरन,  
(√कृ १५. ७५; १६. ४.

किरिनि-किरण ३. १०, २१; ६. ३७.

किरिपा-रुपा; [म० कीर्वे-रूपणप्रार्थना;  
सि० कीह; JB. 152; गु० रूपण,  
कियण; म० कियण] १७. ८; २४.  
१४४.

किरितुन-रूप्य [कसिण, (रूपनमी),  
कमण, कयह, कियह P. 52, 133]

१०. १३३; २४. ८; २५. ५६.

किरीरा-किरीडा-क्रीडा (स्वरभक्ति P.  
133-135) किडा (P. 184), गु०  
खेडा-क्रीडा; (हि० खेल; पं० खेद;  
सिंह, खेल्) P. 132) १५. ७८.

किलकिल-किलकिला-जिस में किल-  
किल ऐसा शब्द प्रतीत हो १५. ४२.

किलकिला-जिसकी लहरों में किलकिल  
शब्द होता हो; (सातवीं समुद्र,  
जिसका कवि ने रत्नसेन की यात्रा में  
वर्णन किया है) ६. २१; १३. २४;  
१५. ४१, ५१.

किसिमिसि-किममिसि २. ७६.

किस्तुन-रूप्य १०. २७; ११. २६.

की-किम् (वि० की-कौन) ४. १६; ५.  
१६; ८. ४७;—की वही विभक्ति १५.  
३५; २१. ४०.

कीलु-चित्रिद-कीवह, कीव, (√कील् में  
वर्णभ्यात्यय, यथा √कुट-कूट-कुम्भ-  
हूव) चीक, चीकर २. १४६.

कीजह-कीजिये ८. १२.

कीजिह-करिये-कीजिये ११. २७, ३१;  
१३. १२; १५. ४५; १६. ३७, ३६;  
२४. २६; २५. १२८.

कीजिय-कीजिये ५. ५६.

कीट-कीडा २५. ६३.

कीन्ह-किया १. १, ८, १६, ४०, ४७,  
५३, ५६, ७८, ८६, ११२, १४६,

१६२, १६५, १७७, १८७; २. ५५;  
३. ७१; ५. ४८; ६. ८; ७. ८,  
१२, ६६, ७०; ८. ११, ५६; ९. ७;  
१०. ११५; ११. १४; १२. ३; १३.  
३०, ५६; १४. १७; १५. ३७, ७३;  
१७. २; १८. १३; १९. १२, २३,  
४८, ६७; २०. ८, ७३, ७५, ७६,  
८८, ११३; २१. २५, ४३, ४६;  
२३. ३, ६१, ८२, ८६, ११२,  
१३४, १५६, १५८; २४. ६४, ८४;  
२५. २८, ३६, १२६, १४४.

कीन्हा-किया १. ८७, १०१, १२६,  
१३५; ७. ३१; ८. ३, ६६; १०.  
३०, १००; ११. २०; १३. २७;  
१८. ३८; १९. ६७; २०. ५, १२४;  
२३. ३६, ६०, १५६; २५. ३०.

कीन्ही-की १०. १३२; २२. ४४; २३. ४.  
कीन्हे-किये (आदर किये; अथ ऐसा  
प्रयोग नहीं होता) ५. ३; किये हुए  
२०. २५; करने से २२. ६६.

कीन्हेसि-किया १. २, ३, ४, ५, ६, ७,  
८, १५, १७, ३२, ५६, ८१; ५.  
१८; २५. १३१.

कीर-तोता ३. ४५; १०. ५६; २३. १५२.  
कीरति-कीर्ति-कित्ति-यश (√कृ विसेपे)  
१. १३२; २. १५६.

कुअँर-कुमार (√मृञ् मरणे, कमु  
कान्तौ, अथवा √कुमार क्रीडायाम्

से; आ-अ P. 81) तु० म० कुँवर;  
गु० कुँवर, कुँवेर; सि० कुम्बा-  
रो; पं० कुँवर; हि० कुअँर, कुँवर  
(कुँवारा-अविवाहित); सि० कुमरुवा  
(JB 42, 152) २. १५७; १२. ६६;  
१४. ६; १६. २६; २०. ६३; २२.  
१७, १६, २०; २३. ४२, १३३,  
१३४; २४. १०; २५. १६८.

कुअँहि-कुअँ में; कूप (कु+अप, यथा  
द्वीप) कूअ-कूआ, कुआँ; म० कुवा;  
गु० कुवो; सि० खुहु; का० खुह; पं०  
खह, खुह; बं० उ० कूआ (JB. 64,  
92, 152) [\*Qou-p- कूप, कूपिका;  
तु० प्रा० फा० कौफ; अवे० कओफ;  
आ० फा० कोह; VWI. p. 372]  
२. ८०.

कुअँ-कूआँ कूवाँ, कूवा (H. 67) (तु०  
Lat. cūpa-'vat' Eng. coop 'vat'  
इसी से cooper) १४. ६.

कुँकुह-कुहुम; म० कुंकुम; गु० ककुम,  
कंकु; सि० कुंगू; पं० कुंगू; का०  
कौग; सि० कोकुं; १०. १२१.

कुँकुहि-कुहुम २. ६८.

कुच-स्तन [सङ्घचित मांसपिण्ड; तु०  
कुचति, कुचते, कुचिका, कोचयति,  
उत्कोच-उपदा आदि; \*Qou-q-,  
VWI. p. 371] २. ११०; ३.  
४६; ४. ३१; १०. ११३.

कुचन्ह-स्तन का बहुवचन १२. २३.

कुँजल-कुंजर-हाथी १८. १६.

कुटिल-कुटिल-रेटे, [कुटि कौटिल्ये;

आटंटा की व्युत्पत्ति आकुंचन से

नहीं किन्तु आकुपटा से है P. 232]

१०. ५.

कुटुंब-कुटुम्ब-कुटुम; पं० कुटुम्ब अथवा

कुटुम (गु० कुटुम); सि० कुटिसु;

कुटंसु; १. ५१; ११. ६; १२. ६८.

कुठाउँ-मर्मस्थान १०. २४.

कुँड-कुण्ड २. ४२, १४६; २३. १००.

कुँडर-कुण्ड १०. १२७, १४५.

कुँडल-कुण्डल; सि० कुंडल, कुनिर;

सि० कौंडो; (कुंडि रचये) १०. ८६.

कुँद-(कुँदहाडि) कुन्द चमेली ("कुँदे माया;

सदापुष्पो मकरन्दो मनोहरः") २.

८२, ४. १.

कुँदेर-कुँदरे से (सकड़ी के रंगविरंगे

कुँदे, जिन से सराद कर सद्द आदि

सिखीने बनाये जाते हैं) १०. १०५.

कुँदन-सर्वोत्तम सुवर्ण १०. ११४.

कुपय-अनुचित मार्ग ८. ४५.

कुयानी-सोटी बनिआई-कुसिल बाधिय

म० बाणी (JB. 46, 49, 61) ७. १२.

कुबेर-कुबेर-घन का देवता; [ \*Qabel-

ros-कबेर, गु० काबेरक W. KZ.

41, 314] २५. ६२.

कुबोल-कुम्भित बाणी २०. ८८.

कुमाखी-सोटी भापा वाला ८. २१.

कुमकरन-कुम्भकर्ण [कुम्भ; अवे० कुंभ;

आ० आ० कुंभ, कुम्भ; Qum-bb-

Qum-b-Qen-b YWI. p., 373]

२५. ६४.

कुमुद-कुमुभ; म० कोयकमल, कुमुद-

कमल; सि० कूपी; हि० कोई, कोई,

२. ६६; ४. ६२; १६. १६.

कुमोद-कुमुदिनी-कुमुहणी-कोई ४. ८;

२०. १२; २४. ७१.

कुम्हिलार्ह-कुम्हान-कुम्हाव; कुम्हा-

कुम्हा; [गु० कुम्हा-आम्हाव;

अम्हा-अम्हा; कम्हा-कम्हा; ऐसो

"कम्हा-कम्हायी भवति" निरुह;

संव, आम्हाव, आम्हाव-आम्हाव; संव-

सिंह-ताम्हासिंह इत्यादि P. 137,

295] २४. ६२.

कुम्हिलाना-कुम्हिलान, का भू०. २४.

१२४.

कुम्हार-कुम्हार-कुम्हार ५. ४२.

कुम्हल-कुम्हल-कुम्हल (गु० कुम्हल-कुम्हल

कुम्हा (तथा कम्हल-कम्हल; YWI.

p. 354) १२. ३१, ५२.

कुम्हल-कुम्हल-आलोरी-जिमका रंग वाला

जैसा हो, इसे "खीला कुम्हल" कहते

हैं (Qumra- 428; घोषा) २. १०१.

कुम्हल-कुम्हल-हरिणी ३. ४४.

कुम्हल-हरिणी १०. १४७; १८. १६; १४.

कुरमहि-कर्मस्य-कलुषकी २४. १५.

कुररी-टिटिहरी-टिटिभ-कुरला १२. ७६.

कुरहिं-कुरकराते हैं-कुरकुर करते हैं २.

३५.

कुरलही-क्रीडाहिं-क्रीडा करते हैं २. ७०.

कुरि-कुलीय-कुल की-जाति की २०. १७.

कुरम-कर्म-कुम्भ २. १२२, १३८; २५.

६१.

कुरेल-क्रीडा-किरीडा (.P. 132-135);

किरीला (P. 240), कुरीला (इ-उ

P. 117), कुरेला (ई-ए P. 121)

कुरेल; तु० म० कुलली; कुलोली-

कलोल, केलि, खेल-क्रीडा २०. १५.

कुल-(√कृ) वंश; म० कूळ; गु० उ०

कूळ; सि० कुलु; पं० कुल; ६. २;

१८. ५६; १६. २०; २५. ८४, १६३.

कुलचंती-कुलवती-लज्जाशील-खानदानी

१८. ५६.

कुली-कुल के २५. १०१.

कुलीना-कुलीन-प्रतिष्ठित २५. १६३.

कुँवरि-कुमारी २. २००.

कुसटि-कुष्ठी-कोढ वाला; [म० कोढ;

गु० कोहोड, कोड; सि० कोरिहो; ने०

कोर; वं० कुड; उ० कुडि JB. 80,

88, 92] २२. १.

कुसल-कुशल १४. १६, २१; १६. ५४.

कुसिटी-कुष्ठी-कोडि [P. 133; कोड-

\*कोट्ट-कूट्ट-कुट्ट; कोढी-कोट्टि, कुट्टि;

कोटिय-कुट्टि P. 304] २२. ४५.

कुससाँथरी-कुशसंस्तरी [स्त-थ P. 307;

तु० अवे० प्रस्तरेत-प्रस्तृत] १३. २.

कुसुंभी-कुसुम्भ रंग का २. १६६.

कुसुम-कुसुम्भ-हि० म० कुसुंय; गु०

कसुंभो; सि० खुहुंभो; पं० कुसुम्ब;

कुसुम्भ; वि० कोसुम; १०. ६०;

पुष्प २१. १८.

कुहुकहि-कुहकते हैं (मोर) २. ३६.

कुहकुह-कुहकुहाना (कुहकुह-कोयल का

शब्द) २. ३७.

कुँज-कुञ्ज-भाढी-कोना १६. ६३; वन,

अप्यवन का हरिणविशेष; संभवतः

कौञ्ज १०. ६७.

कुँजी-कुञ्जिका, कुंजी; अथवा कुंजी; गु०

कुंची; का० कुंमु; वं० कूजी; उ०

कुंभी; सि० केसि० १. १८०.

कुँद-कुन्द-(“सुकुन्दः कुन्दकुन्दुरः”

अमरः) २०. ५१.

कुँदह-कुंदा को (कुन्दा-काठ का सुडौल

गोल टुकड़ा) १०. ६८.

कुँदे-कुंदन किये गये हैं १०. ११४.

कूआँ-कूप २. ४१.

कूई-कोई-कुसुदिनी ४. ३६.

कूचा-कूर्च-कौञ्च-कौच-ताल के पत्ती,

जो पंक्ति बांध कर उढ़ते हैं (कौञ्च

√कुन्च्, \*Krr-, टेढा चलना,

उढ़ना; VWI, p. 414) [तु० कूँचा,

कूचला-भादृ; म० कूचा; गु० कुचो;

इत्यादि] १२. ७६.

कूजा-एक पुष्प २. ८३; ४. ७; २०. ४२.

कूद-कुर्दन (कुर्द झोढायाम्)-कूर-कूदना;

म० कुदणें, गु० कुदणुं; सि० कुदण,

पं० कुरया; मं० कुदन; उ० कुदिवा;

(JB, 44, 115, 123); ३. १७.

कूरा-कूट-कूट-वेर (कूरा; ट-ट P. 193

ट-ट P. 226) म० कूरा, कूट (कूट);

गु० कुडम; पं० कूरा; सि० कुड;

सि० कूह; [JB, 92, 111 तथा 80,

161; कूट, \*Qel, Bradke, Hirt,

Uhlenbeck तथा Petersson आदि

के मत के लिये देखो VWI, p.

453.] २०. ११८; २१. १७; २३.

१४५.

कूरी-कुलीय-कुलके (संभवतः कूर-

√कूर-खनी, [कू कषा; गु० Lat,

*crū-dus*, -खनी, *crūor*-खन, As

*Arāio*-शव; Eng, *raw*; Germ,

*roh*] १०. ८.

कूसर-कूराज-कुमल ४. ४७; १६. ६.

कूसल-कूराज १४. १६, १७, १६.

के-पही विमक्ति १. ६२, १०४, १४४,

१४०, १४६; २. ४२, ६५, १४०,

१४७, १६५, १६८, १६९, १७६,

१७६, १८२; ३. २७, ३१, ४२,

४६; ४. ४२; ७. २४, ६०; ८. २८,

४३, ६४; ६. १८, २३, ३२; १०.

३८, ४५, ८१, १५०; ११. २३, ३६;

१२. ३५, ४२, ७५, १०४; १३.

५, ६, १६, ३२, ३८; १४. १३,

३५, ३६; १७. २, ५, ११, १४;

१६. १७, १६, ५५; २०. २४, ६६;

२१. १६, ४२; २२. १०, ३६, ३८;

२३. ११, ४८, ११६; २४. १७,

७६, १०८, ११०, २३७, ११८;

२५. ११, १०६, १११, १५४.

केई-केन-किमने २१. ४; किन खोर्गो ने

२३. ४२.

केर-कस-किसके ३. १६; केन-किमने

१०. २६, ८२; ११. २०; १२. ४१;

२४. ८४.

केंचुलि-कम्बुलिका-सांघ की ओढनी

[Knok-, कंचते (√कच कन्चते),

कम्बुक, काञ्ची (शाम), किन्तु कंचल

तथा किञ्चिपी की ध्युपति इस प्राप्ति

से नहीं किन्तु \*कन् (-गाना, बजाना

टनटनाना) से हुई है; VWI, P.

400] १०. १११.

केत-कति-किमने (गु० अवे० चरति;

Lat, *gnat* देखो संस्कृत तति Lat.

*tot*) २. १११; केतकी पुष्प ४. १;

निकेन [√चिह्, गु० Goth, *hairus*,

(प्रकार) AB, *hūd* (प्रकार); -*hool*

*hood*, यथा *maidenhood*, *goat*

-head, Germ.-heit; मौलिक अर्थ

“दृश्य” ] अथवा पुष्प ११. ५६;

केतक-केतकी पुष्प २३. १३८.

केतकि-केतकी पुष्प-केशई २०. ५०.

केतकी-\*(s)qnit; केतकीपुष्प; म० केकत,

गु० केतक; हि०, पं० केतकी १०.

११५.

केतन-कितने ५. २३.

केति-कति-कितने (संभवतः केतकी) २.

६६; केतकी पुष्प २५. १७.

केथा-काँथरी-गुदड़ी १२. ५.

केर-के, पष्ठीविभक्ति ( छि० केर-काम;

ट० कीर; अवे० कहर्य ) १. १६०;

२. १०४; ७. ३४; १२. ८६, ८७;

१६. ३५; २२. १७, ६२; २४. २३;

२५. ७, ११४, १२१, १२२, १२८.

केरा-[का-कृत-कअथ, कय, कट-म०

केला; गु० कयोँ, कीधो, कीतो; पं०

कीता, कीना; हि० किया; सि० केदों;

सि० कळ से व्युत्पन्न, पष्ठी विभक्ति]

५. ४२; ७. ६; ८. ६; १२. ५१;

१३. १; १५. ६०; २०. ३८, (केला-

कदली) ४७, ७४; २३. ८२, १६५;

२४. १५८; २५. १८, ४३.

केरि-की १. ४८, १०२; ७. ७; ८. ४४;

६. ३६; १३. २६; १७. ५; २२. ६.

केरी-की ६. ३; १२. १७.

केरे-के १६. १८.

केला-(कदल) कदली-कअली, कयली;

म० केल; गु० केल; सि० केल्हो;

वं० कला; (JB. 39, 62, 92, 145)

२. ७७; ३. ७२; ५. ४२; १०.

१५४.

केलि-(√क्रीड्) कामक्रीडा, क्रीडा २.

५४, ६१, ६६; ३. ७२; ४. ३१,

४१; १०. ५५; २४. १६०.

केली-केलि ३. ३५; ४. १०, ३४; ५.

३३; २४. ६०.

केवट-मह्लाह-कैवर्त्त-केवट [ तु० चक्र-

वट्टी-चक्रवर्ती; नट्टग-नर्तक; वट्टय-

वर्तक; P. 289; ( केवट-छिद्र -

\*Kaiu-rt-अथवा kod + vr-जल-

चर; अथवा ‘के वर्तते’ इति देखो

Pali Diet. VVI, p. 327) W.

Ai. 1. 169.] १४. ६.

केवरा-केवड़ा २. ८२; २०. ५०.

केवा-कमल २. ७१; २३. १५६; २५.

१७३.

केवाँछ-केवाँच-कपिकच्छ (कपि-कह

P. 181 कह-के P. 61; केवच्छ-

केवाछ-केवाँछ, यथा आँख, काँख)

एक लताफल, जिसके छू जाने से

देह में खुजली उत्पन्न हो जाती है

१८. २.

केवार-कपाट [ अ-इ P. 101, इ-ए P.

119 ए-व P. 199; ट-ड P. 198;

ड-र P. 241 ] हि० किवाड़, कुवाड़;

पं० कवाड़; सं० उ० कबाट; सि०

कबुलुव २. १३६.

केयारा-किवाड़ १६. ४५; २३. ६.

केस-केश (श, स); बाल; म० केस,

कंस; सि० केसु; पं० केस, के १.

७५; २. ६३; ४. २५, ३६; १०.

३, ५, ८.

केसर-[किस-बाल; केसर-केश+र, श-स;

देखो IV, A1 I, 232, VWI p

329; गु० Lat. caesaris-सिर के

बाल Eng. hair]; पुष्प की पंखड़ी

४. ६; १०. १२१, १८. १५.

केसरि-केसर २४. १००.

केसा-केश १०. २; २५. ६३.

केहर-केसरी-केहरी (स-ह P 262);

म० कँसर, केसरी; गु० केसरी; पं०

केहर, केहरी १८. १७.

केहरि-केसरी-केसरी ३. ४७; १०. १३७,

२४. ८६;

केहि-किस-कस्य २. ६४; ७. २८; १०.

४२, ६२, ६४; १२. ५१, ६५, ६६;

१३. १६, २२, ४८; १५. १३; २०.

७४, ६६; २१. १६; २३. ११, ४८,

५१, १३०; २५. ८, १२८.

केहु-किमी को-कस्य-किमी के ७. ५६,

५६; २३. २४.

केहु-कोई (कऽपि) कोऽपि (किमी को भी

उचित प्रतीत होता है) २२. ५५.

कोपि-कोप करके-संकोप्य ४. ३६.

को-कः-कौन २. १४६; ३. ३२, ७६;

५. २४; ७. १६; ८. १३, ३६,

५८; ९. २०; १०. २, ४४, ५६,

६४, ७१, १०४, ११८, १२७,

१३५, १४७, १४८, १५७, १६६;

१२. १४, ३४, ४२, ५१, ८६; १३.

२४; १६. २४; १८. ८, ११, १६,

२४; १६. ३०, ३६, ५६; २०. ८२,

८३, ८६, ८७, ११२, ११५, ११६,

१२०; २१. ७, ४०, ६४; २२. ६,

४४, ७८; २३. २, ८, १६, २७,

६६, १०७, (क्या) ११०; २४. ४४,

५२, ८७, १५५; २५. ५७, ५८,

६३, ६६, ८७, १३०, १७१.

कोइ-कोऽपि-कोई १. १६, २३, २४,

३५, ५१, ५२, ६२, ११६, १३४,

१३६; २. १६, ४४, ४५, ४६, ४७,

१५६, १७६; ३. १६, ४८, ५६;

४. ३, ४, ५, ६, ७, ५६; ७. ७,

५६, ६०; ८. ७२; १०. ३१; ११.

३८; १२. ४६; १३. २१, ३६, ५६;

१५. ६४, ६५, ७०, ७२; २०. ४२,

४३, ४४, ४५, ४६, ५०, ५१, ५२,

५३, ५४, ५५, ५६, ६०, ६६, ७२,

८८, ६६; २२. २४, ६६, ८०; २३.

५६, ८५; २४. ७३, ७४, ७५; २५.

४०, ७२.

कोइल-कोकिल-कोयल २४. ६६.

कोइलि-कोयल २. ३७.

कोई ३. ३६; २४. ६६.

कोई-कोऽपि (तु० कौन-कः पुनः) १. २०,

२१, ३६, ४७, ५३, ५४, ५६, ११३;

२. ४६, ४७, १०४, ११६, १५१,

१५८, १६८; ३. ६२; ४. ६, ७,

४६; ७. ६२, ६३; ८. ५, ८, ५२,

६०, ७१; ९. २६; ११. २, ३४,

४२; १२. ८३; १३. २३; १५.

२२, ३०, ५८, ६५, ६६, ६७, ६८,

६९, ७०; १८. २२; १९. ४२; २०.

३५, ४६, ५२, ६३, ६८, ६९, ७०;

२०. ११६, १३२; २१. ६१; २२.

६४; २३. २६, ७१; २४. १, ३४,

४२, १०६, ११५; २५. ११, ४४.

कोउ-कोऽपि-कौन, कोई १०. ६६; १२.

५३; १३. ३८; १८. २; १९. २६;

२३. ३६; २५. २, ३.

कोऊ-कोऽपि-कोई १. १३१; ७. २२;

१०. २३, ३३; १२. ६८; १४. २०;

१८. ५०.

कोकाह-सफेद घोड़ा-("श्वेतः कोकाह

इत्युक्तः" जयादित्य कृत अश्ववैद्यक)

२. १७१.

कोकिल-कोयल; म० कोइल; कोईल

कोयाल; उ० कोयलि; सि० केविही,

कोबुहा; [Ququ-तु० कोकिल, कोक;

Lat. cuculus; Cymr. cog; Lit.

kukuoti; Lott. kukuot; Bulg. ku-

kavica; Serb. lukavica; Russ.

kukuša. VWI. p. 467; तथा

Kāu-Kēn-Kū-शब्द करना; तु०

कौति, कोक्यते, कोक-Lit. kaukti;

Russ. kavka-मैंढक; Serb. kukati-

विलाप करना; सं० कूजति, कुञ्जति

आदि VWI. p. 331] ४. ३०;

१०. ७५; २१. ८.

कोकिलघइनी-कोयल जैसी बोली वाली

२४. ८७.

कोकिलययनी-कोयल जैसी बोली वाली

२. ५६.

कोकिला-कोइला-कोयल ४. ५४; १०.

७४; २३. ६६.

कोट-सि० कोट; का० कोठ; (पा० कोट-

कोष्ठ नहीं) २. १२६; ६. १; १६. १३.

कोटवार-कोटपाल-कोतवाल २. १३१;

२४. १३२.

कोटवारा-कोतवाल २२. ६७.

कोटि-कोठि-करोड ८. ३८; २४. ११,

१४, ४१; २५. ७१, १०३.

कोड-[√कूड-जलना; (वैदिक), उससे

लाक्षणिक अर्थ "उच्छलना कूटना;"

Kī-d-Kord-d-नासिक्य वाला

रूप कुरण्डयति; कूर्दन-√कुर्द-कुइ



P 291, कोइ P. 125, कोड] २.

११६; २०. ६३.

कोने-कोण (कृण संकोचने) म० कोण;  
हि० कोना (कोहनी, बाजू का अग्र-  
भाग) १०. ६०.

कोपा-(√कुप्-कुप्-कोप) कोप किया  
(P. 79, 83, JB 80) १०. १५०;  
१६. १४, २५. १०६.

कोपि-कोप करके [Qaēp-(Qaēp, Qa-  
op, Qap) तु० कुप्यति Lat *cupo*,  
कोप आदि VVI p. 379, कुप्य-  
ति-कुप्यह; सि० को-क्रोध] २४.  
५, १६; २५. ५१.

कोपु-कूपर-कुप्पर, कोप्पर-कुंवल, कौंवल  
(म० कोपर, कौंवर) २१. २४

कोम्हार-कुम्भार-कुंभार, कुंभार-  
कम्हार-पं० कुम्हियार; सि० कुंभर,  
गु० कुंभार; पं० कुमार; सि० कुंभुर  
(कुम्भ-कूप, Germ *kump*, *kum-  
ma*) १५. ४६.

कोरा-कोर-कोइ-कोर-गोद १८. ४१.

कोराहर-कोलाहल; म० कोहाल २. ३६.

कोला-मीलों की एक जाति, जो मध्य-  
प्रदेश नागपुर की ओर पाई जाती  
है. १२. १०१.

कोवैल-कोमल, म० कौवला; गु० कोमल,  
कुम्भुम; मि० कीमलु; पं० कूला;  
का० कुमोल; (JB. 140, 145) १०.

५, ५२.

कोस-[Kaus-ध्वेयकी ओर बढ़ना; तु०  
कुरनाति VVI, p. 332; कोसना-  
क्रोशति; अवे० स्रावसइति-चिह्नाना,  
आ० फा० सुरोस-मूर्गा भिन्न हैं]  
क्रोश, पं० कोह; का० कुइ तथा  
कोस-कोप-संदूक १२. ५२, ८८;  
१३. १; १४. २.

कोह-क्रोध; पा० कौध अवे० कुहदा  
कठोर [Goth *kila*, E. *house* कुचि-  
कुचि से संबद्ध] ८. ६२; २५. १०.

कोहु-क्रोध २३. १६, ४०, ४१.

कोहु-क्रोध १४. १०; २४. २५.

कोड-कोटि-करोड़ (व्यञ्जनागम के लिये  
तु० पन्दह, पन्दरह, मा० पय्यारह-  
पय्यदश; सराप \*सापु-शाप II,  
133) १. २२; २. ११.

ख.

कैंड-खण्ड (पा० कंड; Eng. *candy*)

१. १००, १०८; २. ५२, १६२;

शुवन ६. ४०; माग (का० सुड-

डकड़ा) १६. ३८; महल २२. ६८.

कैंडयानी-भारी-जिससे पुष्पवृत्ता आदि  
सींचे जाते हैं २. ८०.

खँभ-खंभे १६. ४६.

खजूरी-खजूर-खजूर-खजूर; गु० खजुर;

सि० कदुरु [√खर्ज-Ker-g] २. ३२.

खजूरी-खजूरी-खजूरी-खजूर १. १२;

२०. ४५.

खंजन-खंजन (√खजि) ४. ३१; १६.

३६, ५५, १३६; १२. ५५; २४. ६०.

खंड-भाग, दिशा, मंजिल; भूमिखण्ड १.

६७; २. १६, १३६, १८६; ३. २७,

३४; ६. ३१; १०. १४०; १६. २८;

२०. १३२; २४. १४३.

खंडहि-खण्ड में २४. ३४.

खंडा-भुवन १. ५; भाग २. १२५; टुकड़े

२५. ११८.

खंडित-खण्डित-रहित, दूर, विभक्त,

अलग ८. २७.

खजहजा-मेवे के वृक्ष २. ३०, ७६.

खन-क्षण-खण, प्रा० खण, क्षण (उत्सव);

हि० खन, क्षन, क्षिन; सि० सण;

[हृक्षण, एक नजर का काल-in the

twinkling of an eye; Germ. Augenblick-क्षण] ११. ६; १२. ३१;

१५. ६, २७; १६. ४५; २०. २,

६३, १०६; २३. १२०; २४. ७६,

७८, ६६, ६७, ११०; २५. १०८,

११३.

खनखन-क्षणक्षण (JB. 104, 134) ६.

४३; १०. ६४; ११. ४.

खनहि-क्षण में १. ८८; ११. ५, ६;

१६. ४५; २०. ६३; २४. ७६, ७८,

७६, ६६, ११०.

खनहि-खन-क्षणक्षण १२. ३१.

खनि-खोद कर; हि० खनना; म० खणें;

गु० खण; का० खन; सि० कनिनवा

[Khonā-खन् (अथवा √Skan)

Lat. can-ālis; Eng. canal; खन्-

खनति, खात, ख (आकाश, खुदा

हुआ, छिद्र) आखु (मूषक) अवे०,

प्रा० फा० कन VVI. p. 399;

सं० कण, Qel-na भित्त है] १. ३०.

खपर-कर्पर-खप्पर-भीख मांगने का पात्र

२५. ५६, ६६.

खप्पर-कर्पर-खोपड़ी (क-ख, यथा, खंधरा-

कंधरा-खसिय-कासित; खिंखिणी-

किङ्कणी इत्यादि P. 206; तु० Lat.

parma-डाल) १२. ७; २३. १६.

खंभा-स्कम्भ-खंभ-खंभा [√स्कम्भ;

तु० विक्खंभ-विष्कम्भ, P. 302-306;

स्कम्, स्तम्, यथा छुम्, स्तुम्;

स्थाणु की व्युत्पत्ति √स्था से और

खाणु-खणु की स्थाणु से P. 309]

तु० म० खांव; गु० खाम; पं०, बं०,

उ० खंभा (JB. 68, 95, 127)

२. ६३.

खंभ १. १६, १४६, १५०; २. १६०.

खर-वृण-वास [तु० म० खर, गु०

खर-उद्दह; सि० खरदो; हि० खरां,  
घोड़े पर खरां करना; दे० "खरदियं  
रुखं च" (JB. 46, 95, 163);  
गदहा (अवे० खर (अ); पद०, आ०  
फा० खर; वा० खुर; शि० हर;  
सरि० खर, सर; ओस्ते० खरग) १.  
१११; १२. ७६.

खरग-खरग [ Qold-go, Lat. clades;  
Frankfurter तथा Rhya, KZ. 27,  
222 ff; VWI p. 438 ] १. १०१,  
१०२; २. १५५; १०. २४, ४६;  
१५. २६; २४. ३, २६, ३०.

खरफरा-खरफरा-खरफरा-आतुर-जबदबाज  
२३. ४.

खरमरही-खरमराते हैं ५. १४.

खरा-खड़ा-(उत्थित) २५. १२७.

खरि-खर-कठोर से लक्ष्य में सत्य; खरी  
सच्ची; का० खर-सत्य अवे० खरो-  
(पं० खोता-गदहा) २५. ८८.

खरी-खरी २०. ७७.

खरिअइ-खरी ही-सच्ची ही २५. ८८.

खरिहाना-खरिहाना-खरिहाना-खरि-  
हान, खरिहाना जहाँ अन्न को काट कर  
गाइते हैं (खर-गाहा जाने वाला  
अन्न; अन्न-तोड़ना जैसे "क्यों  
लक्ष्मण मचाया है") १२. ५६.

खसि-खस कर-गिर कर (का० खस-  
चढ़ना) १६. ४०.

खौंगउँ-भ्रम होऊँ-खारूँ-खजति  
(√ खजि गतिवैकल्ये) १४. ११.

खौंगा-खरू-खारू-खरू-घाटा (किम  
वस्तु का घाटा है) ११. १५; (खाली  
न जायगी-बुटि न होगी) १३. १७,  
घाटा (नहीं आता, सुमेरु के समान  
दान देता है) २५. ८६.

खौंखई-खौंखई-खौंचता है; कपेति-खसइ  
(क-ख P. 208; खस-ख P. 327;  
ख-ख) १३. १२.

खाँड-खरड-शकर २. २७, ८०.

खाँडइ-खरडे-(खरडे) तलवार (बजाने)  
में, म०, गु०, पं०, हि० खौंडा; सि०  
खनो; का० खडक; सि० कडुब;  
(ध्यात दो अनुनासिक्य पर; JB.  
95,) १. ६६, १७१; खर की १०.  
१३; १५. ५२, ५४.

खाँभ-खंभे (√ खम्भ-स्तम्भ) १०.  
१५४.

खाइ-खावे-खाय-खाइ-खाइति; का०  
खायीदू २. १५१; खाकर ५. ३६;  
७. १३; (खाता है) १०. १४४;  
११. ५०; खावे १३. ३६; खाता है  
१५. ८०; खाइगा-खा गया २५. २४.

खाई-खाइति-खाई; (P. 165), पा० खा-  
इति; नै० खाईबों; का० खान; व०  
खाना; वं० खाइते; सि० खाइछ;  
गु० खावुं; म० खावें; सि० कनवा;

जि० छ; [Qhad-कतरना; खादन;  
आ० फा० खायीदन (Hübsh-  
mann; ZDMG 38, 423); Arm.  
xacanem-काटना; VWI, p. 341,  
393; Lit. *kandu* काटना] १. २७,  
३७; २. १२४; ८. ५७; ९. ४६.  
खाऊ-खाउ-खाइ, खावे (हि० म० खाऊ-  
खादक; निन्दा में) १३. ३८.  
खाए-खाये-खाया ५. २०; खाने से ११.  
२७; (डर) गये १५. ४१.  
खाटे-खट्टे २. ७६.  
खात-खाते हुए (खादन्ती) २०. २३.  
खातेउ-खा जाता तो-खाता तो १८. १७.  
खाधू-खाद्य (द-ध P. 209) खज्ज-खा-  
जा; म० खाद, खादिला-भुक्त; गु०  
खाध-भोजनसामग्री, खादा; सि०  
खाधो; दे० “खद्धं तथा खरिथं  
भुक्कम्” [JB. 88, 95, 169, 229;  
तु० हि० खादू अथवा खादइ वैल-  
अधिक खाने वाला; निन्दा में] ५.  
५२; ७. ३८; १८. ३७.  
खान-खानि (√खन्) २५. २४.  
खाना-खादन १. ३८; ५. ४२.  
खार-चार; खार और छार; म० खार;  
सि० खारि; गु० छार; सि० छारु;  
[छार, छीर, दधि, जलोदधि, सुरा,  
किलकिला और अकूत इन सात  
समुद्रों में से एक; Kṣā-दहन, तु०

चायति, शिजन्त चापयति; चाम;  
Arm. *Samak*-शुष्क, देखो Hübsh-  
mann, Arm. Gr. I. 499] १.  
१४०; १३. २४; १५. ८.  
खारा-चार १. १६५.  
खाव-खाइयेगा १२. ३१.  
खावा-खाया ३. ६५; ५. २६; खाता है  
७. ३५.  
खाहिँ-खाते हैं १३. ४६. १५. ६६.  
खाहीं-खाते हैं १५. ६.  
खिसिद-किफिन्धा-किफिन्धा (फ-फ  
P. 302) (कुखण्ड ?) १. ६, १४८.  
खिरजिर-ख्वाज-नाम १. १५७.  
खिताब-पदवी १. ६१.  
खिरउरा-खैर के बड़े बड़े गोले (दिखो  
खिरउरी) १०. ८२.  
खिरउरी-खिरौरी-(मसालेदार खैर की  
गोली, जिससे पान में विशेष प्रकार  
का स्वाद आ जाता है, जैसे मूंग से  
मंगौरी उसी प्रकार खैर से खिरौरी;  
तु० खिरहिरी-एक पौधाविशेष)  
२. ११४.  
खिरनी-छीरिणी-खीरिणी-खिरनी; जिस-  
के फल में दूध हो २. २७.  
खीन-चीण, प्रा० मीण, खीण, छीण;  
पा० खीन, खिन्न; आ० जीन (नाश);  
हि० मीन, छीन; सि० मीनो; जि०  
खिनो (च-ख P. 318) का० खय-

जर लगाना ३. १२, ८. ६४; पतली

१०. ४६, ११२; २४. ११७.

खीनी-खीण १०. १३८.

खीर-खीर-खीर; म० खीर; सि० खीरो;

का० खिर, क्षिर; सि० किर, किरि,

JB. 93; (✓पर); अवे० ख्यीर,

पह०, आ० का० शीर; शीरी०

ओस्मे० अख्यीर; ड० अखसिर;

शि० शिरिन, ख० शीर, (Ksaro

दूध) १. ११८, खीर नाम की नदी-

जिस का पानी दूध सा हो) २.

१४४; १०. १२२, चार नाम का

समुद्र (दिलो खार) १३. २४; २५. ८.

खीरसमुद्र-दूध का समुद्र १५. ६, १६.

खीरी-खिरनी २०. ४३.

खीरू-खीर-दूध १५. ६, ११.

खीदा-खी खी शब्द करता है २. ३६.

खुमी-(✓खम्-Ksoubh) खुमिया-खाप-

कर्णफल; [गु० कुम्भ (कुम्भ) म०

खुमा; गु० कुम्भ; सि० खविषो पं०

खप्पा; मि० खप्पु; पं०, बं० खप्प;

हि० खोम्मा जो पैर में खुम जाय,

पैदिक छप-भाषी JB. 85, 89] २.

१०९; १०. ६३.

खुलक-खोटक (✓खोट-खोट-खोर)

ए-ख; घो०-उ, ट-ड, ट-र खोट

(JB 94, 95) ५. ४८.

खुरफि-खुरक-हर ३. ८०.

खूंदी-खूंदी जाय (✓खूद-\*Ksoud पैरो

से कुचलना, खूंदना-मुकियों से

तोना गु० खोदति, खोद, खूद)

२२. ६३.

खूट-(खोंटा-खोंटय) कान का एक खूटी-

दार गड़ना, जिसे पूरब में बिरिया

कहते हैं) १०. ६२.

खूरी-खुर विन्यास (✓खुर,-खुर; खू-

पकति) २५. १६७.

खेद-(✓खेद सेवायाम्) खे कर १५. १.

खेई-खे कर २१. २९.

खेऊ-खेवो २४. १२३.

खेत-खेत्र (रणखेत्र) प्रा० खेत; पा० खेत;

वा खीती; [वि✓ खयति-बैठना,

अधिकार करना, गु० Lat sedere

(बैठना) pos-sedere (स्वामी बनना)

Germ. sitzen (बैठना), be sitzen

अधिकार करना] १. १७२.

खेम-खेम-कुराल-[✓वि घर, शान्ति,

कुराल-\*स्केम, गु० Goth. haima

ग्राम; As. hām; Eng home तथा

-ham स्थानों के नामों में] १४. १९.

खेल-[✓खेल; ✓क्रीड; P. 79, 81;

Gaeobl. KZ. XXV. 29. JB. 80]

म० खेल, खेलणम् गु० खेलो; मि०

केलि, किर (✓खिड्); प्रा० क्रीडा,

खेडा; अप० खेळण, खेळद; JB.

84] खेलो-विहार करो ४. ८४;

खेलती है ५. १; खेल (लेओ) २०.  
 ३७, ४०; क्रीडा २०. ४८; २१. २;  
 खेल लीला २३. १०१.  
 खेलइ-खेलता है (खेलेगा) ४. ४६;  
 खेल के लिये ४. ५१; खेलता है  
 १२. ६६.  
 खेलउँ-खेलूं २१. ४५.  
 खेलत-खेलते हुए ४. ६, ४३; २०.  
 ३२, ६५.  
 खेलनहारी-खेलने वाली (नवयौवना-  
 स्त्री) २१. २.  
 खेलना-क्रीडा करना २०. ४०.  
 खेलव-खेलेगी ४. १४.  
 खेलहिं-खेलते हैं २. १५७; ४. ४७;  
 २३. १८०.  
 खेलहि-खेल के २३. १२५.  
 खेलहु-खेलना हो ४. १२; खेली-खेलना  
 ४. ४५; २३. १०; खेलती हो २३.  
 ६७; २५. ११४.  
 खेला-खेल किया था-अपने कृत्यों से  
 छुका दिया था १. १५६; वीरता से  
 निभाया ६. ५०; जाना चाहते हो-  
 विहार करना चाहते हो १३. ११;  
 १८. ३०; चला गया १६. १३;  
 अम्यास किया २०. ६१, १०२; जान  
 पर खेल गये-उद्योग करके मर गये  
 २३. १३०; खेल किया २४. १६;  
 मोगी का स्तौति भग ७४. ३६, ४६;

काम किया २४. १४२.  
 खेलार-खिलाड़ी २. १११.  
 खेलि-खेल-खेला-क्रीडा २. १५८; खेल  
 (लो) ४. १२, ४३, ४५; खेलकर  
 २४. ४६, ४७, ४८; खेलकर १२.  
 १६; २०. ३६; २१. ४४; २३. १६,  
 ६८; २४. ३२.  
 खेली-खेल २३. ४७.  
 खेले-१३. ६१; २३. ७.  
 खेवइ-(पारहु-खे सकते हो) १४. १८.  
 खेवक-खेने वाला-केवट (का० खेव-  
 खेना; देखो केवट) १. १५२, १५३;  
 १५. ७१; २४. १२३.  
 खेवरा-खेवराओं का अवान्तर भेद । ये  
 लोग हाथ में खप्पर रखते हैं; मद्य  
 को सय के सामने दूध बनाकर पी  
 जाते हैं (जैसे गोरखनाथी); हथेली  
 से गेहूं आदि निकालते हैं । [म०  
 में खेवड़ा (खेप) भेदे, अनाकृति,  
 अनियमित को कहते हैं] २. ४८.  
 खौरा हुआ-लगाया हुआ (खेव  
 खेवने) २१. ८.  
 खेवहु-खेवो १४. १८.  
 खेवा-खेया हुआ १. १५३; खेव्य-खेवने  
 के योग्य-जहाज १५. ७१.  
 खेह-मिट्टी-धूल [“खे आकाशे ईहा-  
 इच्छा यस्य” सुधा०] १. ७६  
 ११०; २०. ३६; २३. ३८; २४. १४

खेडा-पुलि, पृथ्वी १. ३; १२. ३, २५.

खोँचा-खोँचने का बौंस [  $\sqrt{\text{कुञ्ज}}$ ,

कुञ्ज; Lat. *crux*; Obg. *hrukki* ]

५. ३२, ४५.

खोमइ-खोवे (खोदति-खोमइ खोइ;

दलोप P. 165 से ) ८. ७२.

खोया-खो गया, खो दिया ४. २२;

११. १८; २२. ५२; २५. ४२.

खोइ-खोकर ७. ३२; २३. १४६.

खोई-खोकर १३. ५६; १६. २७, २२,

७७; खो दी २५. ११.

खोज-ईव ८. ११, १३, ७२; खोज में

२५. ११, १२०.

खोजहु-खोजो ५. १६.

खोजा-खोजह का मू० २२. ४६; २५.

१४५.

खोजि-खोजकर १४. २४; खोज (त्रिया)

२३. १७५.

खोजु-खोज १०. १४७; २४. ५८;

२५. ७.

खोपड़ी-खपर-खपर-खोपड़ी [ म०

खोपट-खोपटी (की) ] २५. ६४.

खोपा-खूपा (केरों का) ४. १५.

खोलहि-खोलते ई; म० खुल्यें; गु०,

हि०, का०, खोल-; मि० खुल-;

खोल; प० खुलह २३. १८३.

खोला-खोलह का मू० २४. ७८; २५.

१४०, १४५.

खोलि-खोला (नहीं जाता); गु० सं०

खोल-बंबी, दीमकों का घर; Arm.

*Xoyl-scorfula*; Russ. *soljata*

(भयङ्करोप); \*Qou; VWL. p.

371.] २४. ६२.

खोली-खोलह, मू० प्र० प० खी० १.

१८०; २४. ६६.

खोले-खोलह, मू० १५. ७६.

खोलेसि-खोलती है २४. ८८.

खोह-खन्दक (संभवतः  $\sqrt{\text{कुष}}$  से;

चोंच-खोह, जो छन्दर खेने के लिये

भूखां हो, खाली) २. १२१; १२. ८५.

ख्वाज-((खिजिर) नाम १. १५७.

ख्याजे-मुसलमानों की जातिविशेष

(खोजे) १. १५८.

ग.

गँडि-गन्धि-गोंद; तु० म० गोंदयें-गोंदना;

सि० गंध-२ घं० गंध-; का० गंध-; बं०

गोंत-; मि० गोंद-, २. ११२, १२०.

गँडिलोरा-चाई-गटरी मारने वाले २.

१२०.

गँधरख-गन्धर्व-पा० गन्धर्व २. ८१;

४. ८; २५. ११०.

गँधरखराज-गन्धर्वराज-गन्धर्वमेन राजा

२५. ८१.

गँधरवसेन—गन्धर्वसेन ( सिंहल देश के राजा का नाम) २. ६, १८३; ६.

२६; २५. ५२, ५४, ६०.

गँधरवसेनी—गन्धर्वसेनी—गन्धर्वसेन की २५. ७६.

गँभीर—गम्भीर—(गभीर-गहिरा) १८. २४, १०३.

गँभीरू—गम्भीर—गहिरा १०. १४५; १५. ५१; १६. ३.

गई—गई [गम्; तु० Lat. *vanio* 'आना'; As. *cum-an*; Eng. *come*: अवे० फ़जसइति-गच्छति; प्रा० फा० गम्, जम्; फा० आसदन] २२. ४०.

गइ—गह १. १०८; २. ५६, १७७; ४. २८, ५६; ६. २६; १०. १२५; १२. ६६; १५. ४८; १८. ५०; २०. ४८, ७३; २१. ३, ४४; २२. १३, २२, ६०; २३. ६४, ७२, १४७; २४. ६४, ८८.

गइउँ—गई २३. १२३.

गइहु—गई थीं २०. १२६.

गई—(चलि)—चली गई ४. ६; २४. १४६.

गई १. १३२; ३. १३; ५. २८; ८. २५; १०. १२४; २१. १; २४. ६३, १०४.

गइँनइ—गच्छेत्—जाय २३. २४.

गउरइ—गौरी—पार्वती ने २२. ३३; २३. १००.

गउरा—गौर—गोरोचन २. ६२.

गउरी—गौरी २०. १८; श्वेत वर्ण का पुष्प २०. ५३; गौरवर्ण की २२. ५.

गण—४. ४६; ७. ३; ८. १; १०. १२०, १४०, १४६; १२. ६०; १५. ४०; १६. ४, २४; १८. ५५; २३. १५, ३८, ४६; २४. १३४; २५. ४१, १११, १७६.

गणउँ—गया १६. १५.

गणउ—गया ८. ५८; ६. ५५; १५. ५६; २०. ८२; २१. ४६; २२. ४७; २३. १३१, १४६, १६६, १७६; २४. १६, ६२, ६३.

गणउ—गया १. १३३; ५. ५, ११, २१; ७. ४; १०. ८६; २३. ११८, १२३; २४. ६०.

गगन—गगण—आकाश १. १६, ७६, १०६; २. ६६, १६४, १७३, १८४; ३. ४; ४. ३०; ५. १२, १४; १०. १२, १६, ३२, ३५, ३८, ४५, ८८; ११. ३०; १४. १४; १६. ५, १६, १७, ३३; १८. ३१; २०. ६४, १०६; २१. ५६; २२. ५३; २३. ६४, १२६; २४. ५, ८, १४; २५. १३, ६२, १०४.

गगनेहा—गगन में २४. १२६.

गंगगति—गंगागति—गंगा में मोक्ष १२. १४.

गंगा—प्रसिद्ध पवित्र नदी ( $\sqrt{\text{गम्}}$ ) ३. ५३; १३. ३५; १८. २३.



गज-गय-हाथी २. १४; ३. ४७, १४.

१; १८. २६; २४. ११५.

गजगर्धन-गजगमन-हाथी जैसी चाल

१०. १५३; २०. १६.

गजगाविनी-गजगामिनी २४. ८५.

गजपति-हाथियों का स्वामी, समुद्र तट

का अधिपति कलिङ्ग देश का राजा

२. १५३; १३. १७, २४.

गजपती-हाथी पर चढ़ने वालों में छंद-

कलिङ्ग का राजा (यहां हाथी अधिक

थे, संप्रति भी इजा नगर के राजा

के साथ 'गजपति' उपाधि लगती है)

२. १४; १३. १०, १३, २७.

गजमोति-गजमुक्ता ७. ४३.

गजूर-गजल-गजूर २. १४३.

गज्जन-गज्जन-मानर्घ्यस-अपमान ६. ५१.

गडह-गडे (गडती है) १२. ६१.

गडी-गड गड २४. १५७.

गढ-डिक्का-(घट, अन्य) १. ११२, १८६,

१८८; २. ११, १२७, १२६, १२३,

१४२, १४३; ६. १; ७. १; १२.

४८; १६. १३, १७; २२. ६४, ६५,

६७, ७०; २३. २, ४, ६, ७, १०,

३८, ४७, ४८. १७६, १७७, १७८;

२४. ७२, १३३; २५. २७, ३८,

१३१, १४४, १४८.

गदपति-विनके अधिष्ठाता में गड हों या

हों २. १५३; ११. १४.

गढा-बनाया-[गडह, \*गडति-घटते

(घडह भी हे० ४. ११२) यथा घेष्यहं,

\*घृष्यति-गृह्यते इत्यादि P. २१३]

१. १२७; १०. २६; ११. ४३.

गढि-गड कर २. ५३, १३२, १३५.

गढी-बनाई ८. १९.

गढी-बनाई ३. २६.

गढे-गडे (संयोग गडा था) १. १७४;

२. १३३.

गति-दशा [Lat. (in) ventio; Goth.

(ga) gumaþa, अवे० गति, गइति]

१. ७७; गत-गमन १०. ११०,

१११; प्राप्ति १२. ३७.

गंध-गन्ध (√धा) २. ५८.

गंधायति-गन्धायती-एक राजा की कन्या

का नाम २३. १३४.

गंधिनि-गंधी की स्त्री २०. २८.

गंधो-गन्ध से भरा द्रव्य ६. ३६.

गन-(\*gan) गण-नौकर चाकर ४. ८.

गनह-गणयति-गिनता है, म० गण्ये/

गु० गण्युं; पं० गिषना; का० गाम्ना;

सि० गण् २. १३८; १४. ३; १६. ३०.

गणक-गणग-ज्योतिषी, जो किमी काम

के लिये द्युम दिन बताते हैं १२. ६.

गनि-गिन कर १२. ६; २४. ६५.

गने-गिने १०. ४५.

गनेस-गणेश-गणेश २३. १.

गंभीरा-गम्भीर-गभीर-गह्रा १०. ६५.

गया—गत—गच्छ—गया; तु० म० गेला;

गु० गश्चो; पं० गिश्चा; मै० गेल; वं०

गेलो; का० गउव, गयोन; सिं० गिय

२१. ४८.

गरइ—गलति—गलइ—गलता है २२. ५६.

गरजइ—गर्जनम्—गज्जण; तु० म० गाजणें;

गर्जणें; गु० गाजवुं; पं० गज्जणा,

गरजणा; का० गगराय; हिं० गाज

(—विद्युत्) १४. १४.

गरजहि—गर्जते हैं २. १६७.

गरन्थ—ग्रन्थ [√ग्रन्थ—एकत्र करना,

(साहित्यकी) रचना करना; अर्थ के

लिये तु० Lat. com-ponere—एकत्र

करना, रचना, serere—संबद्ध करना,

sermo—व्याख्यान] तु० हिं० गूँथना-

म० (गूँदना आटा); गुंथणें, गुतणें;

गु० गुंथवुं; सिं० गुन्धणु; सिं० गोत-

नवा तथा पं० गुत्थ; हिं० गूँथ—गूँद

(—चोटी बांधना) १. ६६; ७. ४०.

गरव—गर्व—गव्व—अभिमान १. २०, ७६;

३. ३२; ५. ४१, ४७, ५४; ८. ३,

१२, ५२, ५६, ६६; १२. २२; २०.

११६; २३. ३८; २४. ८४; २५.

३२, ६४, ६५, ७२, १२०, १२६.

गरवहि—गर्व से ६. ३१.

गरर—घोड़े की जाति—गर्रा, जिसके कुछ

रोम सफेद हों और कुछ लाल २.

१७१.

गरह—ग्रह—गह (√ग्रम्) २५. १२४.

गरहीं—गलते हैं (√गल् तु० Gorm.

quellen—खोत; quelle—झरना)

२२. ५५.

गरासउँ—ग्रसानि—ग्रसूँ १८. ५३.

गरासा—ग्रास—गास, गरासइ का भू० १.

१०७; १०. २०; १६. ६.

गरिआरू—गलिया, चलते समय कन्धा

ढालने वाला बैल १५. ६६.

गरुअ—गरुक—गरुअ (छि० गिराव-भारी)

१३. ३०; १५. ६७; १८. २१.

गरुर—गरुड—गरुल, विष्णु का वाहन

२३. १५२; २५. १०४.

गरू—गुरु—भारी (तु० Lat. gravis

\*garu-i-s; Goth. kaurus—भारी)

१. १०३.

गरेरी—गले के ऐसी—घुमौआ [गल; अवे०

गरह; पह० गरुक; आ० फा० गुरू;

अफ० घाढ़; कु० गुरु; Lat. gula;

Ohg. kēla] २. ५२.

गलगल—बड़ा नींव (\*guer तु० छि०

गर्ग—खाज) २. ७५.

गवँन—गमन—गमण—चाल २. ६०; ३.

४७; १२. ६.

गवँनइ—जाता है १२. ८०.

गवँनव—जायेंगी ४. १३; १२. ६६.

गवँनहु—गमन करो १६. ३२.

गवँनेहु—गये १६. ६.

गर्वना-गमन करता है ७. २६; जाना  
१४. ७.

गर्वान-गर्वी कर २. १०४; ४. २१, २२;  
७. १०.

गर्वीई-ध्वतीत की, खोई ५. ४०; २०. १.  
गर्वीना-गमन किया-सो गया ४. ४६.  
गर्वीनी-चली जाती हैं-सो जाती हैं  
१३. ४२.

गर्वीवा-नष्ट किया ४. ६०.  
गर्वीजा-बोल-बातचीत [व्युत्पत्ति अनि-  
श्रित; संभवतः गर्वा; गृ शब्दे से;  
गिर-वाणी; तु० Lat. garris,  
बात; E. call; अथवा गर्लैजा-गले  
में उत्पन्न होने वाली]-बातचीत,  
बनकही १४. ६.

गह-गहे-पकड़े; [वि० गीर-'पकड़'  
संज्ञावाचक] २०. ११३.  
" " " है १६. ६६; २३.  
१६; २४. ८०.

गहन-ग्रहण-का० मोहना; [ग्रह-ग्रम्,  
तु० हि० गहना; म० घेघें, घेघ्यें;  
(√ग्रम्); सि० गिन्हाण; उ० घेन,  
मि० गधवा; प० गहा; प्रा० गेण्डह,  
घेण्डह, गेण्डाति-गृह्याति JB 30,  
31, 80, 90, 165, 231]; ग्रम्, प्रा०  
घा० गवं; प० ग्रन्धन; घा०  
गिरिग्रार; वि० गुरी; पकड़ना; गुरीम-  
में पकड़ता है ८. ४६; २४. ८०,

८१, ६६, १०१, १३७; २५. २६.

गहनहि-ग्रहण ने ५. १२.

गहने-गहना; (वि० घन-रूपों का  
कण्ठा) १०. १६; ग्रहणे-ग्रहण में  
२४. १२४.

गहयरा-घमरा गया (गह्वर-गह्वर-म्या-  
कुल हो गया; तु० घा० गह्वर-  
गह्वर-गुहा) २२. ४६.

गहहु-पकड़ो-गृहाण १८. २६.

गहा-पकड़ा-गहड़ [गृह्याति, गृहाति  
"ghor- पकड़ना; तु० Lat. hortus,  
co-hors (गृह), Goth. gards  
(घर); Ohg. gart, E. yard; तथा  
garden; इसी धातु से व्युत्पन्न हैं  
गृह, पा० गह; गिहिन, गौह, घर,  
तथा हरति, और हल] १. १४१;  
७. ७१; १०. २७, ६४; १२. ४;  
२१. १२; २४. १२४; २५. २६, २७.

गहि-पकड़ कर १. १४२, १६८; ४.  
३०; १०. ३८, १००; १५. ६४;  
१८. २४; (पकड़) १८. २८; २६.  
६४; २३. १२३, १३६, १४७;  
२५. ६३.

गही-पकड़ी ५. १२; ८. ४६; २०. ४१,  
४७; २४. १३७.

गहीली-ग्रामह करने वाली-ग्रहिस-  
ग्रहिता २४. ८६.

गहे-पकड़े १०. ११६, १३६, १४३;

ग्रहण किये हुए १३. ७, ३२; १८.

१, ५;—या—लिये था २०. १०३.

ग्रहेउ—ग्रहण की १२. १.

गाँठि—[वै० ग्रन्थि; \*grom—एकत्र करना;

तु० Lat. *gremium* सं० गण तथा

ग्राम; R. P. Dict. के अनुसार

ग्रन्थ की व्युत्पत्ति इसी से है, किन्तु

इसके विरुद्ध देखो VWI.] गाँठ,

(हे० ४. १२०; P. 333) पा०

गण्डि, गण्डिका, गण्ड; पं गंड छि०

गरे ७. ८; २३. १२३.

गाँठी—गांठ में २५. १३५.

गाँथइ—ग्रन्थाति—गंडइ—गाँथती है १२.

७५.

गाँथे—गाँथइ का भू० १६. ५५; २०. ३०.

गाँधी—गन्धी, अत्रत वेचने वाला [गन्ध

√घ्रा; घ्राण, पा० घान; संभवतः

Lat. *fragro*; E. *fragrant* के साथ

संबद्ध] २. ११४.

गया—[सं० गच्छति; \*guom—का भविष्य

में अभ्यस्त प्रयोग \*guemskoti>

\*gascati> सं० गच्छति; \*guemis-

सं० गमति; Lat. *venio*; Goth.

*qiman*; Ohg. *koman*; E. *come*;

सं० गत; Lat. *ventus* इत्यादि]

अगाव—गया २. १४४, १८६, १६१;

५. १७; ७. २७; ६. २६; ११. १;

१२. १५. ४१, ५६,

७५; २०. १६, ८६, १०८, १२७;

२१. ५, ४२; २३. ७३, ७७, ८१,

१२४, १२६, १३२, १४८; २४.

१६, १३३, १५४; २५. २४, ४१,

१३१.

गाईँ—गायति—गावइ का भू० २०. ५७.

गाउँहि—ग्राम—गांव में; म० गाव; गु०

गाम; सि० गाँउ, गामु; पं० गिराम;

का० गाम; घ० ग्रोम; सिं० गम

(JB. 97, 137, ) [\*grom Slav.

*gromada*, *gramada*, *gramoda*,

(गृहसमूह) Lat, *grumalai* समूह;

Ags. *cremmiam* (E. *cram*) किन्तु

ग्रन्थ की व्युत्पत्ति इससे नहीं है]

१२. ७०.

गाओहिं—गायन्ति—गाती हैं १०. १४३.

गाँग—गङ्गा १. १२०; १०. १४, १६.

गाजहिं—गर्जन्ति; [Lit. *girgzdeli-to*

*squeak*; Arm. *karkac*—कोलाहल

इत्यादि] गर्जते हैं २. १३३.

गाजा—गाजे—गरजे २०. ११६; विद्युत्

२१. ४४; २५. १०२.

गाडा—गर्त—(\*ger) गड्ड; उ० गडिबा; घं०

गड; हि० गढ़, गाढ़; मं० गड्डना;

सि० गारगु; गु० गारगुं; म० गाढणं,

(संभवतः सं० गाढ से व्युत्पन्न)

५. ४४.

गाडि—गाड़ी गई ३. १३; गाढ़ कर १०. ८८

गाढ-गाध-गह्रा, कठिन ५. २३; १५.

६३; कष्ट २३. ८२, १५१; २४.

२०; २५. २५

गाढी-कठिन १५. २०; गहरी २४. १००

गाढे-सेकट १. १४३; कठिन १०. ४७.

गाथा-गाथा-कथा [\*gā (1) तु० गाति,  
गाथा; अवे० गाथा] १. १८६.

गारह-गारता है [√गल् तु० Ohg.  
quellen-स्रोत निकलना; प्यान दो  
गल, तथा जल की व्युत्पत्ति पर]  
म० गल्यो; तु० गल्यु, सि० गरल,  
पं० गलया; का० गलुन; सि० गल-  
नवा २३. ६६.

गारिहि-गालि (गर्हण) गहिका \*गहिह-  
भा; (H. 142) गरिहह (J.B. P.  
322) तु० म० गाव्यारा; पं० गार;  
गारह; मं० गारि; सि० गर्हण  
(=सूचक); गाली (से) २५. १०.

गारदी-सर्पविष उतारने वाले-गारदिक  
गारड-गारल [गारड-पा० गारल;  
Lat. evolucer-पचो; colu-उड़ना]  
११. १०.

गाल-गल-पं० गलह; सि० गल; १०. ८६.

गार्यो-गौष में १२. ७०.

गाया-गापा (हि० गाना, म० गायो; तु०  
गानुं, मि० गाहण; पं० गाडया;  
का० गेडुन; मं० गाउन) २४. ३७.

गाह-[\*gāha-, तु० गाह; गाहति; गाड]

गाध-गाह-गापा जाने योग्य १३. ३४.

गिर्धो-ग्रीवा-गल [\*gel \*guel (RPD.  
\*gel)-खाना, तु० Lat. gula; Ohg.  
kela-गला, Arm. klanem-पेटना;  
Russ. glutus- E. gorge.] २३. ७३.

गिअ-ग्रीवा-ग्रीवा [\*gaur-हृदयना]  
२२. ५०; २४. ३८.

गिअफौद्-ग्रीवा का पाश-कन्दा २४. ३६.

गिअहि-ग्रीवा में २३. १०६.

गिअन-ज्ञान ३. ६४; ८. २५.

गिअनू-ज्ञान-जाण-गिअन-ग्यान १.  
५७, १५४.

गिउ-ग्रीवा ५. ४८, ५१; ७. ३१, ५९;  
६. ४७, ४८; १०. ६८, ६९, १०१;  
१३. ३६.

गिउअभरन-ग्रीवा के गहने १२. ६०.

गिऐ-ग्रीवा में १०. ७, ८.

गिद्ध-गृध्र [गृध्र-पा० गिउड; Lat. gra-  
duo-चाहना Germ. Gier-लोल  
Gier-गृध्र देगो VWI. P. 601.]  
प्रा० गिद्ध अथवा गिउड; हि० ग्रीध;  
म० ग्रीध, ग्रीध, गिघाक; तु० ग्रीध;  
मि० गिउड; पं० गिद्ध, गिउड; पश्चि०  
पं० गिरिज; का० गेद; सि० गिदु;  
२४. ८; २५. १०४.

गिरिहि-गिरते हैं ४. ५३.

गिरास-ग्राम-गाम (ग्राम; पा० घसति;  
Lat. gramen, E. grass] २४. ८०.



गुना-विचारा १. ६०; २५. १३७.

गुनि-गुन कर-समस्त विचार कर ४. २१;

६. ३; ७. ३२, ६१.

गुनी-गुणी १. ८०, ६२; २. ६५; ३.

२७; ७. ६२; ११. १०.

गुपुत-गुप्त-गुप्त-विषा हुआ १. ३६,

५०; १६. ५४; २२. ५४, ६८, ७६;

२३. ५; २४. ४०, ६१; २५. ३१.

गुह-गुह १. १६१.

गुरीरा-गुरेरा-देखादेखी-संयोग ३. २१.

गुरु-आचार्य; का० गोर १. १५३, १५७,

१६०; ७. ७०; १४. ८; १५. ३,

३६, ५५; १६. १; ११. ५५, ६८;

२१. १६; २२. ४८, ७६; २३.

१५७; २४. ४१, ४५, ४६, १२३,

१४१, १४४, १४५.

गुरु-गुरु; पा० गुरु; [Lat. *gravis*, तथा

*brutus*, Goth. *kaurus*] १. १५५;

११. ५४; १२. ४०; १६. ११;

१६. १७, ७०; २०. ६२; २३.

३६, १५५, १७२, १७३; २४. २३,

५५, ४५, ४६, ४६, ४८, १४२,

१४४; २५. २.

गुलाल-गुलाबी रंग का, गुलाब २. ८३;

४. ४; २०. ५२.

गूँग-गूँगा-गूँ गूँ करने वाला; वि गुरू-

गूँगा ७. ५३; २५. ५१.

गूँगा ७. ६६; ११. ५०.

गूँजा-गूँज का मू० २४. ११०.

गूँजरे-गूँजरी-गूँजर की स्त्री २०. २६.

गूँद-गूँदा [√गूँद, गु० गूँदति, गूँदति,

गूँदा; अवे० गुम्, गुम्-रहस्य;

(गुम्-गुम्) का० गुजि-बीज; [गु०

\*Ghough \*Ghughb-Lit, gūsti-

रचा करता है] २५. २४.

गो-गये १४. १; २२. ५४.

गोरा-गिरा दिया (गू-गोर मया गूह-गोह;

अप्-एथ) २३. १०६.

गोरमा-गोद के रंग का-गौरिक-गौरिच

१२. ७२.

गोरू-गौरिक; गौरिच, गोरय; बं० गौरी;

का० गरुड २३. ६३.

गो<sup>०</sup>ह-एक जंगली जाति-कहारों का

अवाम्तर भेद-गोयह १२. १०१.

गोसा-गुसा-गुम्-गुंजिमा, एक प्रकार

की मिठाई; [गु० हि० म० गूज

(गुल); गु० गूज; सि० गुम्को; पं०

गुम्क; का० गूजि; हि० गोसमा-जेब]

२०. ८४.

गोटा-गोट-गोसा [°Gou-t-गु० गुल;

गुजी, गुजिका, गोजी, VVI. p.

555; °Goh-से नहीं] २३. २६.

गोटी-गोट, गुटिका (गोबक); खेलने के

बिचे काठ वा पत्थर के छोटे छोटे

मुन्दर डुकने; म० गोटा, गोटी; हि०

गटी ८. ३८.

गोपिचन्द-गोपोचन्द राजा १२. ३८;

१६. १०; २०. ६४.

गोपीता-गोपित-गोपित्त-सुरक्षित-(देवी)

१०. ३१; गोपपत्नी ११. २६.

गोरख-गोरखनाथ गुरु १२. ५; १६.

११; १६. ६६; २०. १०२; २२. ४८.

गोरस-गोदुग्ध-दूध २०. २६.

गोरिहि-गोरी के साथ [गडरिहि पाठ देखो] ४. ४४.

गोरी-गौरवर्ण की-सुन्दर युवती ४.

४४; २१. ४४.

गोरु-गोरूप; गाय बैल आदि पालित

जीव; तु० म० गुरुं; पं० गोरु

(J.B. 66, 97, 172) १. ११७.

गोसाई-गोस्वामिक-इन्द्रियों का स्वामी

म० गोसावी १. ५२, ७२, ८०,

१४६, १६०, १७४; ५. ६; १३.

१६; २२. ४४; २३. ६८; २५.

१२८, १४६.

गोहन-(व्युत्पत्ति अनिश्चित)सुधा० के मत

में गोहन-गोवन-गोपन-रक्षा, अर्थात्

‘साथ साथ’; संभवतः गोहन-गोधन-

(एक त्यौहार का नाम जिसमें “गो-

धन” पूजा जाता है) पूजन, अर्थात्

पूजा करने के लिये “साथ साथ

जाना” (ध्यान रहे गव्यूति, गोत्र,

गोप, गोति इत्यादि शब्दों में “गो”

शब्द विशेषतः पशुत्वबोधक नहीं

रहता); गोहन; गोस्थान अर्थात्

“गांव के पास की जगह” अथवा

गोहने-छिपे छिपे-“साथ साथ”

२०. १७; २१. ३६.

गोहने-(देखो गोहन) २०. ८, २४.

गोहराई-पुकारती है; [गोहरा-गोवृष-

साँढ; कामार्त गौ वृष को पुकारती

है इसलिये “गोहराने” का लाक्षणिक

अर्थ “पुकारना” है। गोहरा की व्यु-

त्पत्ति के लिये देखो गोवृष, अथवा

“गो+ह” जो गौओं को हरता अर्थात्

अपनी ओर खींचता हो “साँढ”।

हिन्दी में “गोहर” ग्राम के समीप-

वर्ती मार्ग को कहते हैं (गावो हि-

यन्ते यस्मिन् मार्गे इति); अतः

“गोहराई” का अर्थ “गोहर में

कूदती चलीं” भी संभव है। अथवा

गोहर, गोहिर-पुडी; गोहराई-चलीं

(दे० MW. p. 369) गोहर की तु०

गोप्पद के साथ] १२. ७४.

गोहारी-चल-पड़ीं (गोहर में हो लीं;

“गोहर-गोपन” सुधा०) २५. १००.

ग्याता-[√ज्ञा, ज्ञातृ; अवे० भनातर;

Lat. *gnōtor*] ज्ञाता-ज्ञाणि २. ६५.

ग्यान-ज्ञान; प्रा० जाण, णाण; पै० प्रा०

आण; पा० जान; उ०, बं० ज्ञान;

हि०, पं० ग्यान; सि० जाण; म०

जाण ११. १८; १८. २६; २५. ४२.



म्यानी—ज्ञाना—आयि १. १७०.

म्यालिनि—मोपाळिनी—मोवाळिणी—म्यालन  
१२. ७४.

घ.

घउरी—फलों का अण्ड-गुच्छा; गह्वर-  
गह्वर (P. 332) घम्बर (P. 209)  
घउरी—घउरी—फलों का घना गुच्छा  
(हु० घेवर—एक प्रकार की मिठाई)  
२. ७७; २०. ४७.

घट—घटता है (√ गन्ध; हु० गन्धति)  
१. ११, घट-शरीर (अभारतीय  
इस अर्थ में BPD.) १. ७१; ३.  
४; ८. ४७; ६. १४; २२. १४;  
२४. १२६, १२९, १३८; २५. ४७.  
घटइ २. १४२; घटे—कम हो २४. १३८.  
घटत—घटते हुए (घटति घटत) ३. ११;  
१८. ४०; २४. १३८.

घटनहि—घटने ही ३. ११; १८. ४०.  
घटन—घटना—कम होना ११. २३.  
घटहि—घटने है १. १११; २३. ६४.  
घटा—कम हुआ १. ४०, ७८; ८. १२.  
घटि—घट कर २४. ६९.  
घटिहि—घटेगा—धीरे होगा ११. २१.  
घटी—धीरे हुई ३. १२.

घटे—धीरे हुए १८. ४४.

घटी—घटी—समय १२. १०, १४; २०.  
११७; २१. २३.

घंट—घंटा; म० घांट; (घड़ी); गु० घंट;  
ति० घंट; का० गुंट १६. ४७; २२.  
४; २५. ६६, १२९.

घन—घन—ठेरा—सुख; वि घण्ड—बड़ा,  
बहुत; २. १८, घना (घन—हनु गु०  
गहन; पीटा हुआ, कठोर, दृढ़, बहुत)  
२. २४; बादल २. १९; १०. ११;  
कौंसी का बाजा [तत्तं वीणादिकं  
वाद्यमानदं सुरजादिकम् । वंशादिकं  
तु मुपिरं कांस्यताळादिकं धनम् ॥  
चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनाम-  
कम् ॥ घ० को० नाट्यवर्ग] १६. ४७.

घनइ—घन ही—कठिन ही २१. ६४.  
घनघेइली—घनबेलि—गुणविशेष २. ८२.  
यनि—यनी [हु० घन, √ हन्—घन;  
\*Guhon—भारता; Lat. of-fendo;  
Obg. gundea—खोहार का घन,  
बंसा] २. १३.

घनी—अधिक १. २३.  
घर—गृह—(\*Gharab, गृह—गृह WAI.  
250); घा-मि० घर; का० गृहर, गुर;  
ति० गुर; त्रि० गेर, लघे १. १४४,  
१४५, १४६; २. ६९, ६६, १४४;  
३. २८, ३०, ६६; ४. २२; ७. ८,  
१३, १४; ६. २३, २७; ११. १४,

४७; १२. १३, १५, १६, ४६, ५२,

७१; १३. २२, ५३; १७. ११; २०.

४०; २३. १८३.

घरवार—गृहद्वार—गिहवार (द्वार—दार,  
वार) १२. १५.

घरवारा—घरवार २. १००.

घरहि—घरही ११. ४५.

घरिआर—घरणा बजाने वाला २. १३६.

घरिआरा—राजा का घरणा; इसकी  
आकृति घरिआर (—जलयन्त्र) जैसी  
होती थी (घड़ियाल-ग्राह) १३. २०.

घरिआरी—घटिकार—घड़िआर—घरणा  
बजाने वाला २. १३८.

घरी—घटि; छि० गरी, समय; १. १६७;

घरी—घटी—घड़ी जैसा गोल यन्त्र  
(घड़ियां बुधा०) २. ८०, घटी-जल-

घटी, दस पल ताँबे की ६ अंगुल ऊँची  
और १२ अंगुल विस्तृत गोलार्ध के  
आकार की ऐसी बनती थी, जिसमें

६० पल पानी भरे। इसके नीचे तीन  
मासा और एक मासे के तिहाई सोने  
से बने चार अंगुल लंबे तार से छेद

किया जाता था। उसी छेद से जल-  
पूर्ण पात्र में घटी को छोड़ देने से

साठ पल-एक नाड़ी में वह भर जाता  
था। २. १३८, प्रति घड़ी १३६,  
घटीयंत्र १४२, १४४; समय ३. ६,  
१६; १२. ६३; २३. ७६; २४. ८१.

घाँटी—कठिन मार्ग (घट-घाट) २२. ६६.

घाइ—घाय—घाव—घात [ $\sqrt{\text{घन्-हन्}}$ ]  
२३. ८८.

घाउ—घात—घाव २४. ६६.

घाट—घट (किनारे पर) १. १४१; २.  
५१; १२. १०४.

घाटा—घट—घाट—सि० घाटु; का० गाठ  
१. ११७; १३. ६.

घाटि—घट गया १. १२८; ३. १०.

घाटी—घाँटी—कठिन मार्ग १२. ८४.

घासू—घर्म—घम्म—घाम; [ $\sqrt{\text{घृ घ्रणदी-}}$   
प्योः; Lat. *formus*; Oñg. *ra-*  
*rm*,—\**guher* “घृ” घर्म, घृणोति]  
यं० घामिते; श्वे० गरेम (घ्र); ट०,  
ओस्ते० कर्म; सरि० कुर्म, गुर्म,  
२. २२.

घाया—घात—घाय—घाव; म० घाओ; गु०  
घा, घाव; सि० (घन्-हन्) घाउ;  
बं० घा १. १८२.

घालइ—डाले; (घृ प्रस्तवणे; घलइ) म०  
घालणें; गु० घाल—; पं० घल—;  
१६. ३६.

घाला—नाश को प्राप्त हुआ ८. ५८;  
डाला २२. ५०; २३. १२५.

घालि—डाल कर—अवधार्य ( $\sqrt{\text{घृ घ्रणदी-}}$   
दीप्योः) ३. ७५; ७. २६; १४. ३;  
घाल कर—नाश कर—गला कर (डाल  
कर) २१. ४८; २५. १२७, १३६.

घिउ-घी-घृत-घिघ-घी २३. ७६.

घिरिनि-घिरनी-घर १८. ७.

घीऊ-[√घ, \*Gharlo; घृत-घिघ-घघ  
पा० घत-घी] पं० घिघो; सि० गिहु;  
का० घ्यउ; सि० गी, गिय ११. ४१;  
१५. १८; १८. ११, ४२.

घुँघुँची-चोँडली १०. ८४.

घुँघुरपार-घुँघुराले-घुँघुरू-घुँघुरू [घुरघुरू,  
शब्दावुकरण; Gr-Gr-\*Gol समवा  
\*Gar] १०. ७.

घुँटि-घुटकर १०. १२८.

घुन-घुघ पा० गुघ; [स्युत्पत्ति घनिष्ठित]  
१५. ८०; २३. २२.

घुँट-घोटती है-(√घुघट) पीती है; घु०  
म० घोटथें; गु० घोट-; पं० घुट-;  
हि० घोट-; अथवा घोट-; सि० घुट-  
कण; उ० घुटकना; अथ० घुंढह; प्रा०  
घाडह (JIL 76, 80, 102) १०. १०२.

घूमहिं-घूमते हैं १०. १४; २४. ६१.

घुयिं-घुर्य-घुम्म-घूम कर १०. ७६.

घुयिंअ-घुयंअ-घुमिये; म० घुमयें;  
गु० घुयं; सि० घुमय; पं० घुम्मया;  
उ० घुर-; प्रा० घुम्मह (JIL 99.  
138; घुयिंअ पाठ पर ध्यान दो)  
२. १६१.

घेरा-तेक सिपा ११. १२; २०. ७६,  
१८; २३. १०३.

घेरि-पेरा-घेर कर २३. १.

घेरी-घिरी-गृहीत हुई १८. ६.

घोँघी ४. २६.

घोर-घोटक-घोड़ा; गु०, सि० घोड़ो; पं०,  
बं० घोड़ा; का० गुर; सि० सुरो  
१. १८; २. १२, १५६.

घोरसारा-घोटकशाला-घुड़साल २. १२.

च.

चँदन-[स्युत्पत्ति घनिष्ठित, देखो चन्द्र-  
चन्द्रमा] चन्दन-चन्दण १५. ११;  
१६. २; २३. ७८.

चँदेरी-चन्देल राजपूतों की राजधानी,  
जहाँ का मिथुपाल राजा था १२. ६५.

चँमेली-चंवा-चंपक-चंपक-चमेली ४. ७.

चँपत-(√चंप; चुपचाप चलते हुए; चंपत  
हो जाओ-चले जाओ) २. १२१.

चँपेली-चमेली २. ८२.

चउक-चौकड़ी [चउक-चनुक-चनु-  
\*चनुक > \*चनुक्यम्] चनुक; चौक;  
(भाषासिक-पीठा) दे० "चउकये  
चवरम्" म०; चौक; गु० चौक; पं०,  
हि०, बं० चौक; का० चोम १०. ६५.

चउगुना-चनुगुंय-चउगुंय-चौगुना १०. ७८.

चउयार-[\*Quartaro, Lat. quartus;  
Olig. firds, E. fourth] चनुयं-

पा० चतुर्थ; प्रा० चउत्थ, चौत्थ (H. 79.) म०; चौथा; गु० चोथुं; सि० चोथो; पं०, हिं० चौथा (चौत्था, चौत्थे—चतुर्थ दिन); वं० चौठा; उ० चौथ (विस्तार से देखो VWI. p. 512) १. ६३.

चउदसकरा—चतुर्दश कला—चतुर्दशीका (चन्द्र) १८. ४५.

चउदसि—चतुर्दशी—चउदसीतिथि १. १२२.

चउविस—चतुर्विंशति; चउवीस, चउन्वीस, चउन्विह; हिं० चौवीस; म० चोवीस, चन्वीस; प्यौवीस; गु० चौवीस; सि० चोवीह; पं० चौबी; का० चोवुह; वं० चवीस २४. ११.

चउमुख—चतुर्मुख—चउम्मुह—चउमुह—चार मुख का १६. ४५.

चउदह—चौदह—चतुर्दश चउइस, चौइस, चौइह; (स—ह P. 262) अप० चौइह; हिं० चौदह (ग्रामीण चौधा); म० चौदा, चवदा, चौदस, चावदस; गु०, वं०, उ० चौद; सि० चौदहं; पं० चौदाम; का० चोदाह; सि० तुदुस इत्यादि ६. ४०.

चउदहउ—चौदहों १. ५.

चउपाई—चतुष्पदी—चउप्पइ—चौपाई छन्द (P. 329) १. १८६.

चउपारिन्ह—चौपार—चौपाल—चतुष्पाल २. ६३.

चउपारी—चौपाल—बैठक २. १५७.

चउरासी—चतुरशीति—चौरासी २५. १०४.

चउद्दान—चहुआन—चतुस्थान—अग्नि से उत्पन्न हुए चार क्षत्रिय वंशों में से एक वंश २५. १६३.

चउद्दानि—चौद्दान की स्त्री २०. २०.

चक—चक्र—चक्र—चाक—चक्राकार शस्त्र; सि० चकु, [तु० चक्र; अवे० चखर—, (अ); का० चोरा, चीर] १०. २४.

चकई—चकई—चक्रवाकी—चक्रवाक पक्षी की मादा २३. १४२.

चकई—चक्रवाकी २. ६६; ४. ४०.

चकर—चक्र (कृ—\*कृत्—गोल घूमना; अभ्यस्त प्रयोग; तु० AS. hweohl, hweol; Eng. wheel) १२. ४; १६. १८, १६; २४. २३.

चकवा—चक्रवाक—पा० चक्रवाक; [तु० कृकवाकु; √कृ—का अभ्यस्त रूप चक्राअ—चक्रआअ—चक्रवाक P. 82] २. ६६.

चक्रवइ—चक्रवर्ती—चक्रवर्ति २. १६.

चकोर—[\*Kor, \*Kor] पक्षिविशेष—चन्द्रमा को चाहने वाला ४. २६; १६. ३१; २३. ६६, १४३, १६४.

चकोरी—चकोर की स्त्री २३. १४२.

चखु—चख—[संभवतः √ईच् का अभ्यस्त रूप; अस्ति, आस्ति; क्षण, एक पल; अथवा √चित्, का अतिशय में प्रयोग]

तु० Lat. *inquam* तु० *quok*, अवे०  
आकसत्-देखा; आ० का० आगाह  
निगाह इत्यादि] \**Quok*-देखना;  
तु० चक्षु, चक्षुष, आ० का०  
चरमन्-घाँल; चक्षु-घाँल २. ६२;  
६. २१; २०. ११२; २४. ६३.

चंचल-चञ्चल; [✓चल्-चर का अभ्यस्त  
प्रयोग \*चंचर; 'र' के स्थान में न के  
साथ, यथा चंचूर्यते, चंचुरीति; तु०  
Lat. *quar-quar-us*-उत्तरकपन;  
चञ्चल-*Quor-q* (०) 1-0] १८. ३६.

चढ-(संभवतः छर्द-छुड़ P. 213); म०  
चढ्यै; सि० सड; आ० चढह (JB  
252) ११. ४४.

चढह-चढता है १. ६३, ११२; (चढे) २.  
१. २५, १३६; ११. ४३, ४४; १४.  
१५; १५. ५; १६. ३८; चढह देह-  
चढने देता है २१. २६; चढे (संभा-  
वना) २२. ६३, ६६; २३. १०२;  
चढने में २५. २७; चढे २५. ३८.

चढउँ-चढे १६. ३४; २१. ४६; २३.  
१३६.

चढत-चढते (चढने में) १६. ४०; (उच्च-  
लम्बु मु०) चढती है २३. १७६; २४.  
१२४, १३३.

चढहि-चढते हैं २. ३२, ६७, ८८; ४.  
१७; २३. १८४; २४. ३.

चढहु-चढो २४. १.

चढा-चढह का भूत प्र० पु० पृ० पुं०  
१. १२७; ७. (-जाता) २७; १०.  
६, २६, १३०, १३१, १३३; (चढे)  
११. ४३; १३. ६१; २२. ४५; २४.  
१६, ४६, ७२; २५. ७६.

चढाह-चढाकर १०. १००; १२. ३;  
१७. १६.

चढाह-चढावह २०. ७५.

चढाउ-चढाव (उच्चासन मु०) २२. ६४,  
६८; २३. १७६.

चढाप-चढाये २०. १२.

चढापहु-चढावे (उच्चासनपेक्ष मु०) २२. ४०.

चढावउँ-चढाऊँ १६. ३६; २०. ८०.

चढाया-चढावे १०. १५७; चढाया २३.  
१६४.

चढि-चढकर १३. २४; १४. २४; १६.  
४३; १८. ३६; २०. १०६; २१.  
२८; २३. १२६, १८१; २४. ११६.

चढिय-चढिये (उच्चासन मु०) २४. ६.

चढिआहि-चढिये २४. ६.

चढी-चढ गई २०. ६१.

चढी-चढह, भू० प्र० पु० पृ० स्त्री०  
१०. ११५; २०. ६७; २३. ३.

चढु-चढ-चढो २२. ७१.

चढे-चढा (चढना) चाहते हैं, चढह का  
भूत २. १३३, १४१; १०. ६; १३.  
१८; २३. १७६, १७७, १८१; २५.  
१००, १४४.

चढेजँ-चढी हूँ २३. १२७.

चढेउ-चढा २३. ११६.

चढेहु-चढे थे १२. २२.

चतुर-चउ-चार (अक्, यजुः, साम,  
अथर्व) १०. ७७; १८. १०; २५.

१४४.

चतुरदसा-चौदह-चतुर्विंश १. १७४.

चतुरवेद-चतुर्वेद-चारों वेद ७. ६४.

चतुरमुख-चतुर्मुख २५. ६०.

चंद-[चन्द्र (\*s) quend - प्रकाशन; तु०

चन्दन, -sandlewood, Lat. can-

deo, candidus, incend; Cymr.

cann-श्वेत; E. candid, candle,

incense, cinder] प्रा० चंद; पा०

चन्द; का० चदर; पं० चंद; सि०

चंद्र, चंड; सि० संद, हंद; हि०

चांद, चंद ४. २६, ६१; २५. ६२.

चंदन-चन्दन-चांदण १. १७५; २. ८१,

६२, ६३, १०२, १६०; ३. ८; १०.

१२१, १३२, १४७; १२. ३, २७,

३५; १८. ३, ८; २०. १५, ५५,

७६, १०६, १०७; २१. ८, १०;

२३. १२५; २४. ११२.

चंदनखोभ-चंदणखोभ १०. १२५.

चंद-चदन-चाँद जैसा मुख १२. ३.

चंद्र-चन्द्रमा २५. १२४.

चंदेलिनि-चंदेले की स्त्री (चंदेली में  
बसे हुए क्षत्रिय) २०. २०.

चवाहीं-चर्वयन्ति; म० चावयें; गु०

चाव-; सि०, पं० चव्व-; हि०, वं०

चाव-; का० चोप, (त्सि० चर्म-दांत

सं० जम्भ) [ \*Queru-चर्वति ]

२. १७४.

चमकइ-चमत्+कृ-चमक-चमकता है [H.

353] १०. ७२; १६. ५; २१. ३७.

चमकहिं-चमकते हैं २. ६३, ६७;

१०. ६०.

चमकाहिं-चमकते हैं १०. ६१.

चमकि-चमक १०. ६६, ७१; चमक

करके १५. ६५.

चमके-चमकइ का भूत २५. ६.

चंपा-म० चांपा; गु० चापुं; सि० चंयो;

पं० चंवा; का० चंव; त्सि० सपु

(JB. 66, 71, 125) २. ८२; ४. ३.

चंपावति-चम्पावती (रानी का नाम)

२. १६६; ३. १; २३. १३१.

चरचइ-चर्च-चघ-उपाय करती है-

१८. ४१.

चरचहिं-उपचार करते हैं (चेहरे की

रंगत से पता लगाते हैं) ११. ११.

चरत्-चरते हुए-चरने में (\*Quel-उ०

चरित्र, चूर्ति, तुविक्किर्म, IV. I. 24

चर-चरीदन) ५. ४८.

चरपट-चर्पट-चपाट (-पर्पट-१/४-देखना,

Gorm. ar-far-an-देखना; जो

दूसरों की जेब ताकता हो) अथवा

चरक्या-चलता चलता गाँठ बनाने  
वाला २. १२०.

चरन-(✓चर "Qas")-चरण-पैर १. ६७.

चरा-चुगा-खाया ५. ४८.

चरित-चरित्र-तमाशा २०. ८२.

चल-(✓चर के साथ संबद्ध; चलति;

मा० चलइ; पा० चलति; उ०, ब०

चल; हि० चल; मार० चर, प०

चल; सि० चल, म० चालयें ५. २६.

चलइ-चलति-चलता है १. १०६, ११८,

१५३; २. १०४, १२६; (चलें-चला)

८. १८; १०. १४१, १२. १४; १४.

१; १६. २६; २४. १४०.

चलई-चल ३. ७१; ५. २; २३. ११८;

२४. १३; २५. १६.

चलत-चलते-चलत १. ११२, ११३;

५. २८; ७. २, १२; १३. ६;

२४. १६.

चलन-चलनम्-चलना ७. १६.

चलना-चलनम् २३. १६.

चलय-चलंग १२. १०; २०. ४०.

चलहिं-चलते हैं २. १११; १२. ८८,

६०; २०. ६३; २३. १८१.

चलहु-चलें १२. ६, २२, १२, ४६;

२०. ८; २५. २६, ४८.

चला-चलइ का मू० १. १०६; ५. २०,

११; ७. १, २, १६; १२. ८, १६,

२१, २६, २७, ४८, ६१, ७०, ७२,

८१; १३. २६, ६०; १६. २८; २३.

७१; २५. १६.

चलाई-चलावइ का मू० २५. ११७.

चलाए-चलावइ का मू० व० पुं० १५. २.

चलिं-चलों २०. २०, २५, २६.

चलि-चलइ-चलिया २. १६१; ४.

२; ८. ४७; १०. १२६; १२. ७४;

१३. ३; (चल सकती) १५. २३;

२०. १२५; (चली) २४. १४६;

२५. ६६, १०४.

चलीं-चलइ का मू० व० स्त्री० २०.

२१, २२, २४, २६, २७, २८, २६,

३०, ३१, ३३.

चली-चलइ का मू० व० स्त्री० ४. १,

८, २१; ७. ४२; १०. १२३, १२६;

२०. १७, ११४; २२. २३; २३.

२८, ६०.

चलायर-चलाता है ७. २८.

चलायहिं-चलावें-चलायेन २४. २३.

चलाहीं-चलते हैं १. ६६.

चलु-चल २३. १२२.

चले-चलइ का मू०, पुं०, व० १५. १;

२०. ६०.

चलेई-चला (नी) ७. १०, १३.

चलेउ-चला १६. ४१, ४२.

चलेहु-चल पड़े हो (-चलना ही या तो),

१६. ६०; चले १६. ६१.

चलैर-चला-चला २२. ५.

चवैदलि-चमेली २०. ५१.

चह-चप्-चस्-चह-चाहता है-चहइ द.

२४; १०. १६; २१. ४६; २३. ३६.

चहइ-चाहता है १. ४२, ४८, ८०; ३.

६८; ८. २६; १२. ५४; १३. ४५;

१५. ३१; १८. ८, १३; २०. ३५;

२१. २८; २२. ३७; २३. १०३.

चहउँ-चाहता हूं ७. २७; ६. २१, २४;

२०. ८; २३. ११३; २५. ६३.

चहत-चाहता था २०. १०१.

चहसि-चाहता है (तू) १२. १००.

चहहिं-चहइ का वर्त० यहू० १०. ७,

३४; १२. ६२; १८. ५४.

चहहीँ-चहहिं-चाहते हैं १. १३.

चहुआन-चाहुआण-चौहान २५. ८४.

चहा-चाहा १. २१, ५६; ४. ५७, ६३;

८. १३; १२. ५५; १६. २१, २४;

२३. १००.

चहिअ-चहिय-चाहिये २३. १२२, १८४.

चहुँ-चारों २. ४३, ५२, ८१; १२३; ३.

१५, ४२; ५. १५; ६. ५; १०. ६;

१२. १७, ६३; १५. ४२; १६. ७,

१३, १५, १८; १७. २; १८. ४१;

२०. ६, १६, ५८.

चहुँ-चारों १. ८६; २. १६, ५६; ३.

२७; ५. १७; ६. ३१; १६. ४५;

२४. ८०.

चाँचर-चर्चरी-गाने वालों की डोली;

होली में जगह जगह पर ठहर ठहर

कर दो दो के गोल में गाये जाने वाले

गान को चाँचर कहते हैं २. ६३.

चाँटहि-चाँटे को-चाटक १. ४४. ११३.

चाँटा-चाँटा १. ३४, १६१; १५. ५३.

चाँटी-चाँटी १. ३०; १५. ६८; २२. ६६.

चाँटे-चाँटे १८. ५१.

चाँद-चंद-चन्द्रमा [\*Qand, \*Squand-

चमकना; चन्द्र; Lat. *candeo-ere*;

Arm. *sand, sant*-प्रकाश] १.

१२८, १४४, १६२; २. १५०,

१६१; ३. १६, ५८; ४. २८, ३८,

४०; ५. १२; ६. ५; ७. ७१; ८.

१२, ४६, ६४; ९. ३२, ३६; १०.

१६, ६१, ६६, १५८; १४. १५;

१६. ६, २०; १८. ३, ३६, ४०,

४५; १६. ३१, ५६; २०. ७२,

१२५, १३१, १३४; २१. ५, ३६;

२३. १६३, १६४; २४. ६०, १३७.

चाँदहि-चाँद को १०. २०.

चाँप-चंपक-("चम्पकी. हेमपुष्पकः")

अमरकोप चनौपधि० ४११) २०.

४१, ५०.

चाँप-[√चप; Qop-कांपना; तु० चपल;

चाप] चांपता हुआ; तु० व० चापिते,

छापिते; सि० चापण, छापण; म०

चापटणें; छापटणें; (मे के मत में उ०

टिपिवा हि० टोपना, तोपना आदि



मी छप् से हैं 175) ५. २६.

चौपा-चौपाया-दबाया १. १०६; २४. १३.

चौपा-चौपित-दबाये हुए २५. १६५.

चाउ-चाव-इच्छा १. १६८; ६. २४;

१६. ४०.

चाऊ-चाव-चाह-इच्छा २२. १७.

चाक-चक्र; प्रा०, पा० चक्र; था० चाक;

उ० चक्र (अ); बं० चाका; पू० हि०

चाक; पं० चल; सि० चक्र; गु०, म०

चाक, सि० सक, हक; अवे० चखर;

आ० फा० चखे; चहर, का० चोर;

चीर इत्यादि [\*Quel का अन्त्यस्त

रूप; Quel-गोल घूमना; Ags. hœ-

ohl, hœol-wohel; अन्त्यस्त रूप

चरति; Lat. colo, incolo, Obulg.

kolo-wohel, Osl. hœol गु० कण्ठ;

\*quest > \*quelt, मौलिक अर्थ

प्रीति; Lat. collus-घूमने वाला]

२. १४१; १०. १००; १८. ४१.

चाका-चाक १५. ४६.

चाख-चाखे (√चप्, चस्; म० चाखणें;

चाखणें; गु०, मि०, बं०, हि० चाख,

पं० चख; का० चह(-खाँह); गु०,

हि० चाट, सि० चट; पं० चट; रसि०

चा; (प्रा० चखइ, चहइ; JJB.

47, 109) २४. १२०.

चाखा-चाख का मू० २. ३१; ६. २१.

चाखि-चाखा १५. ४०.

चाखे-चाखइ का मूल० महु० १०. ६१.

चाट-चाटता है [√चप्-चट-चाटता;

गु० चाट; चारु \*Qa-Qa जैसे काम,

Lat. carus] २३. २७.

चाटू-चण्ड-भयंकर-वेग-बल [चट्ट-मृद,

विष; चाट-मायावी] १०. ११३.

चातक-[\*Qa-Qa यथा काम] चायग

चायय-स्वाती नक्षत्र का प्रेमी पक्षी

१०. ७४, ७५; १३. =; २३. १४१.

चारा-चरण-चलना (भर्रा के लिये)

भोजन; गु० री खेल-घास चरना

[गु० अवे० चारा (Quel-) आ०

फा० चार-साधन VWI, p. 508]

५. ७, ३६, ३६, ५४; १४. १३.

चारि-चत्वारः-चत्वारः-चार; अवे०

चत्वार; वह० चहार; पाहु० चिहार;

आ० फा० चहार; बाक्सरी चतुर;

शिप्पी चवोर; सरि० चतुर; सं०

सकोर; अफ० चलोर; कु० चवाइ;

कु० (सिहना) चवार; १. ५५, =६,

१६६; २. १२६; १६. ४६; २४. ५१.

चारिउ-चारों १. ६४, ६७, १७४, १७६.

चारिहुँ-चारों में १२. ७२.

चारिहु-चारों (दिशा) १८. २४.

चारी-चार चत्वार; पा० चतुर [\*Quet-

nor, \*quetur; Lat. quattuor;

Goth. fidre; Ohg. fior; Ags.

fioetter; E. four; चतुर क्रियाविशेष-

पण \*quetrus-Lat. *quater* तथा  
[*quadru*] ४. ११.

चाल-चलन-गति २. १७०.

चालइ-चलाता है ३. ५१; चलावे १६.  
३६; २१. ४०.

चालहु-चलाओ २३. ४८; चलाते हो  
२५. १६.

चालि-चाल २. १६८.

चालू-चाल-चालन-मुहूर्त १२. १२.

चाले-चले २४. १२.

चाल्ह-चालः-चेल्हवा-एक प्रकार का  
सफेद मत्स्य; (तु० गाली-गाल्ही;  
कोलू-कोल्हू; दीना-दीन्ह; चील-  
चील्ह H. 142, 144, 161) १४.  
४, ५, १०.

चाह-चाहे २. १७६; (चाह न पाउवि-  
इच्छा तक न मिलेगी-नाम तक  
न ले सकेंगी) ४. १६; चाहते हैं  
७. ३१; १०. ३७; १५. ११; चाहती  
हैं १८. ४६. इच्छा २२. ३१; चाहते  
हैं २३. ४.

चाहइ-चाहता है १. ५६; ३. १, २; ५.  
५४; १६. ११. २१; २२. ८०.

चाहउँ-चाहता हूं १५. ६१, ६२; २३.  
१५६.

चाहत-चाहहिं-चाहते हैं २५. ११३.

चाहसि-चाहता है २५. १७.

चाहहिं-चाहते हैं २. १३३; १०. ११५,

११६; १३. ११; १४. ७.

चाहहु-चाहते हो ११. ३६; २३. १३.

चाहा-चाहते हैं १. १२१; ७. ६२; १२.

१६; १३. ५१; इच्छा २३. ५०;

चाहइ का भू० २५. ३७.

चाहि-चाह कर १. ५६; चाहकर-इच्छा  
से ६. ४७; २३. ३५; २४. ५३;

२५. ६१. चाहि-चहि-से भी (que)

१. १२२, १२५; २. १०, १२७,

१६५; १३. ४६; १५. ५४.

चाहिअ-चाहिये ७. ४८; १६. ३६;

१६. ५, ५६; २०. १३६; २३. ४०;

२५. १२८.

चित-चित (चित-चिन्त, चि; तु० केतु

VVI. 508) ३. ५६; ७. ७१; ८.

६३; ६. ३४; २४. १४७; २५. ८०.

चितउर-चितौड़ १. १८६; ६. १. ७;

७. १, ४०, ४१; १२. ४८; १६.

१६; २५. ८३, १३१, १५८.

चितर-चित्र-[(\*) *quilt*-चमकना; सं०

चित्र; केतु, अवे० चित्रो; Lat. *ca-*

*lum*; Aps. *hador*; Ohg. *heitari*;

तु० चित्त, चेतस्, चिन्ता आदि]

चित्त (-चित्रण) २. ५५, ६६, १८६;

६. १; ६. ३४; २४. ६४, १४७;

विचित्र १६. १६.

चितरसेन-चित्रसेन राजा ६. १; ७. ४१;

१६. १६; २५. ८३.

वितवद्-चेतयति-देखती है १८. १०;

१६. ३१.

वितवउं-देखती है १८. २४.

वितहि°-वित्त में २४. ६४.

वित्त-विचार [मूलरूपेण चिन्तति का  
निष्ठान्त, तु० वुत्त-युक्त; मुत्त, मुक्त]

१. ४७.

चित्तु-चित्त [Quat-तु० चिकेत, चिकि-  
त्वान् चित्ति, चिन्ता इत्यादि VVI,  
p १०९] १. १७६.

चिनगि-चिनगारी-[चिक्कण मुधा०]

१८. ४२; २१. २३, २६

चित-चिन्ता [√चित (°S) quat. तु०  
चित्त, चष्ट, चिष्टेत, चिकित्सति  
आदि, चिन् धीर चिन्त दो रूप, यथा  
सिञ्च्, सेक; मुष्ट, मोक] ५. ४६.

चिंता-मोच १. २२; २. १२६, १२. २४

चिरउंजी-चिरौजी २. ७८; २०. ४२.

चिरिहार-चिरीमार-बहेलिया-[पा०  
चिरीड सं० चिरि, तु० कीर] ५. ३६.

चिरिहार-चिरीमार ७. ३३.

चिलसार्ह-चिल्लाता है ६. ४६.

चिसती-चिरती १. १४४.

चीता-चिना-चिन्ता [तु० गु० चित्तुं-  
(चिन्तन); चिन्तातुं; म० चिन्तायें,  
सि० चीतल; हि० चिन्तना] २३. ६७.

चीन्द्र-चीन्द्रते हैं-पहचानते हैं १. २०.

चीन्द्र-चीन्द्रता है २२. ४६.

चीन्द्रहु-चीन्द्रो-पहचानो १. ५७.

चीन्द्रा-पहचाना १. ८३; ७. ३१, ६४;

६. ४७; १०. ३०; २३. ३६; २४.

४१, ४२.

चीन्ही-चीन्ही का खो० २२. ४४.

चीन्हे-चीन्हे से-परिचय से २२. ६६.

चीर-कपड़ा [चीर-वृक्ष की छाल; तु०  
चीवर] २. १०६; १०. ६४, १३१;

२०. २८, ५६; २३. ८०.

चीरू-चीर १८. ३; २३. ७८.

चुअ-चूता है; व्यवते; प्रा० अवह; पा०  
चवति; उ० चुहवा; बं० चुआन; हि०  
चूना; पं० चोया; सि० चुहण्ड; म०  
चावयें [च्यु /QI-av-व्यवते; प्रा०  
फा० उशियवं-कूच करना; सं०  
च्यौय-प्रयत्न; प्रयास; अवे० स्वचोपन-  
कृति; सं० च्युति; Arm, du, तु०  
Lat, cio, cio, sallicetus, Goth,  
haitan Ohg, heizan] २. २६.

चुअर-चूता है ८. ३६.

चुआ-चुअ का मृत, पुं०, ए० १५.

३८; १६. ३; २३. ६५.

चुआवहि°-चुआती हैं २४. ७४.

चुई-चुआ का खी० ५. १५.

चुए-चुअ का मृत० पुं० बहु० ५. १४.

चुगहि°-चुगते हैं-चुग में लेते हैं, चीनने  
हैं ["चुको मुष्टिः" तु० चुकरी, चूक  
की व्युत्पत्ति √चुक् व्यथने से]

२. ५४.

चुनहिँ—चुनते हैं; चिनोति; म० चियणें;  
गु० चिणवुं (-तह लगाना); सि०  
चुणणु; पं० चिणना; हि० चुनना,  
चिनना (मकान बनाना) त्सि० चिनव  
(-हिलाना) १५. ७८.

चुनि-चुनकर-छाँटकर २. १६६.

चुप-मौन २५. ३६.

चुमइ-चुमता है (संभवतः  $\sqrt{\text{छुम्-छुम्}}$   
से P. 66) तु० चुइइ (-छुम्-छुम्-  
छुम्) चूदा-भल्ली (हिन्दी) १२. ६१.

चुहि-चुही-फूल के रस को चूसने वाली  
चिड़िया-फुलसुंघी २. ३४.

चूआ-चूआ ८. ४२; १६. २३; २३. ५२.

चूना-चूर्ण [ $\sqrt{\text{चर्व}}$  का निष्ठान्त; \*Sgor-  
कारना, तोड़ना; तु० Lat. *cars*,  
सं० कृणाति; तु० Lat. *kirwis*-  
तलवार, *scrupus*-तेज पत्थर, *sc-*  
*rupulus*, *scortum*; ध्यान दो सं०  
“छुरण”, पा० “कुङ्ग” आदि पर]  
चुरण-चून (कली चूना); म०  
चुना; गु० चुनो, चूनो; पं०, हि०  
चूना; का० चून; सि० हुण २३. ११०.

चूर-चूर्ण-चूरा १. ११२.

चूरइ-चूर्ण करता है-चूर्णयति ५. ३८.

चूरहिँ-चूर चूर करते हैं १२. ६०.

चूरा-चूर २. १२६; (चर्व चूर्ण-चुरण  
P. 987) चूर्ण किया ५. ३५; छदे,

पांव के गहने १०. १५८; चूर हुआ  
हुआ २१. १७.

चूरि-चूर्ण करके ५. ३३; २५. ६८.

चूरु-चूर्ण १०. १५; (मोती का चूर्ण)  
२. १४६.

चेटक-चेड-चटक मटक से टोना लगा  
देना-अथवा दूत २. ११२, ११८.

चेत-चेतन, पा० चेतनक; चेतो, चेतना  
( $\sqrt{\text{चित्}}$ ) ११. ६, १७; २४. १०४.

चेना-चीन देश का कर्पूर १. २५.

चेर-चेरा-चेला-चेट; चेटक-टहलुआ-  
दास १. १६०; २५. १२८.

चेरी-लौन्डी-(चेटिका) ८. ७१; ६. ३.

चेल्ई-चेलाने २४. १४७.

चेलहि-चेला को २४. १४४.

चेला-शिष्य-दास; चेट; म० चेला; गु०  
चेतो; सि० चेलु; पं० चेला; हि०  
चेला, चेरा; का० चेल (अ); दे०  
“चिह्नः तथा चेडो बालः” (J.B. 148  
सं चेलो-वस्त्रभिन्न है) १. १४०,  
१५६, १६०; ७. ७०; ६. ५३; ११.  
५४; १२. ६६; १३. ४, ११; १४.  
८; १७. १; १६. २६, ६८; २०.  
६१, १०२; २२. ७६; २३. १५५;  
१७२; २४. १६, २५, ४६, १४२,  
१४४, १४५, १४६.

चेसटा-चेष्टा-चिह्ना (चेहरा सुधा०)  
११. ११.

चोच-चञ्चु-चैचु-चूच, चोंच; म०  
 चोंच, चूच, टोंच; गु० चांच, टोच;  
 सि० चुंजि; पं० चुंज, का० चोंट;  
 बं०, सि० चोंट; सि० होट २३. ४४.  
 चोझा-च्युत-चुघ-चुघाने पर जिस से  
 सुगन्ध निकले २. १६०; २०. १४.  
 चोख-चोच-चोक्ख-(घरछा); गु० चो-  
 क्खुं; पं० चोक्खा; हि० चोखा,  
 चोक्खा २०. २६.  
 चोट-पाव १५. २०.  
 चीपु-[√चुप, √कुप के संबद्ध पाली-  
 चोपन-नामन] वेग-इच्छा २१. २४.  
 चोर-चौर; हि; म; गु, पं०, बं०, रि०  
 चोर; का० चूर; सि० होरा २. १२०,  
 ११. ४४, ४६, ४८; १५. १४, २२.  
 ६२, ७१, २३. ४, ५, १०६, १८०,  
 १८३; २४. १.  
 चोरहि-चोर का २३. १८२.  
 घोघ-चोर (बहुवचन) १३. ४३.  
 घोरी-चोरी से, चोरी के लिये २५. ४८.  
 चोरु-चोर २४. ११३.  
 चोला-[पु० सं० चोड] चोल-निचोल-  
 चोखिया २०. २३.  
 चोया-चोभा-च्युन १२. ३५.

छ.

छठपै-छठवें-छठे-छठे (छह-पद P.  
 २११.) छटि-पट्टी-छट्टी गु० छट्टी;  
 २१. ४८; ३. १७.  
 छतर-छत्र-छत (√च-√चि, गु०  
 चत्रप, Satrap) २. १८४.  
 छतरपति-छत्रपति-छत्तपद २. ११;  
 २४. ११.  
 छतरहि-छत्रों से-छाताओं से २४. १६.  
 छतरि-छत्री-छत्ती १. ४३.  
 छतिसउ ६. २७.  
 छत्तिस-छत्तीसों २०. १६.  
 छत्तीसउ-छत्तीसों २५. १६७.  
 छंद-छन्द [\*Skandh-छर] रचना-रङ्ग-  
 रङ्ग के रूप धरना ६. ४३.  
 छपर-छिपता है (चप-छव्) ६. ३९;  
 २४. १३६.  
 छपन-छप्पन २४. ११; २५. १०३.  
 छप्पन-छप्पन २. ११.  
 छपहि-छिपते ८. ३२.  
 छपा-छिपा १. १२४, १८३; २२. ३४;  
 २३. १२; २५. २७.  
 छपाइय-छिपाइये ७. ११.  
 छपाए-छिपाये से-(छिपाने से-पर भी)  
 ८. ३२; २५. १३६.  
 छपाना-छिपता हुआ ५. ४५.  
 छपावउँ-छिपाती हैं ८. २४.

छपावा-छिपाया ३. ६०.

छपि-छिप २. १६१; ४. २८; ६. ३२;

१०. १८, ३२, ७५; २१. १६.

छपी<sup>१</sup>-छिप गई<sup>१</sup> १०. ३१.

छपी-छिप गई २१. १५.

छर-चर-खर-नाश २४. ८.

छरइ-खरइ-नाश के लिये २५. ८०.

छरहट-चरहट-खरहट (तु० छेवट)

मरने की याजार २५. १०८.

छरहटा-नकल करने वाले; चार (भस्म)

लपेटने वाले २. ११७.

छरहिं-चरते हैं; √चर, चरन्ति (पृथक्

हो जाते हैं-भाग जाते हैं, सुधा०;

'जो दलको छोड़ जायंगे वह जीते

वच जायंगे' यह अर्थ उचित प्रतीत

होता है) २४. ७, ८; २५. १०८.

छवउ-पप् (Indo-iranian \*Ksaps);

प्रा०, पा० छ; हि० छ, छे, छह; का०

पह, पिह (प्-ह P. 263); उ० छअ,

छोह; वं० छय; वि० छ (अ); हि०

छह, छे; पं० छि, छे; सि० छह; गु०

छ (अ); म० सहा; सि० ह, हय

(अ), स, सय (अ); जि० पो(व);

पहपि-छहों २. २४.

छवो-छवों २. १६०.

छाँड-छर्द-छड़-छाँड-छोड़ता है [P.

291] ६. ७; १०. ५६.

छाँडइ-छोड़ता है-(छोड़ कर) ८. १८;

२३. १७३.

छाँडि-छोड़कर ५. १४, २६; ६. ४०;

२२. ४६; २३. १०.

छाँडिअ-छोड़िये १६. ४०.

छाँडहु-छोड़ो ८. ६८.

छाँनवइ-परणवति-छनवइ २५. १०२.

छाँह-छाया २. १६, २१, २३; १५.

१६; २१. ६; २३. ८१; २४. १०२,

१२०.

छाँहा-छाया-छाहा (छाई-जले फूस के

पतंगे-<sup>१</sup>चाति-चायति-भाइ, कि-

थाइ, भीण-बीण P. 326) १. ७;

२. २०; ४. २०, २७; (प्रतिबिम्ब)

६. १३; १२. २६; १५. ३५; २०.

२, ५४; २४. १५१.

छाँइ-छादित-छाँइअ-छा २४. १६.

छाँई-छादित हुई २. १६.

छाँए-छादित किये हैं २०. १०.

छाँज-सज्ज-छज्ज-सजता है १. ८, ६८;

१६. १०.

छाँजा-शोभित है १. ४१; अच्छा नहीं

होता ८. १२; सोहता है ६. ४१;

१०. १; ११. २५; २४. ६; २५.

५५, ६४.

छाँड-छर्दयति, तथा छृणति (-उद्धमन)

तु० अवस्कर-शौच तथा करीप (गोबर),

<sup>१</sup>Sqer-पृथक् करना; [तु० Lat.

ex(s)cernis; mus(s)cerda; Ang.

Sax, scarn—यूकना, फेंकना, छो-  
दना] मा० घड़ैह, घड़ैह; पा० घड़ैति;  
हि० छौंटना, छाटना, छोटना; पं०  
घड़ैया; गु० घंड्युं; सि० घंड्यु; म०  
सौंदर्य; थं० घादिते; का० छड़न  
(छर, चर); सि० हेसनवा; आ० चार  
१२, ४२.

छाडह—छोड़ता है २४. १०, ८०, ८२;  
२५. १६.

छाडहि—छोड़ते हैं ११. ४६.

छाडहु—छोड़ दो १२. ६४.

छाडि—छोड़ कर १०. ४८; १२. २६,  
२६, ६५, ७०; १३. ६०; १६. २६,  
१०; २०. १०२, ११३; २१. ४६, ५६.

छादेन्हि—बाहर का भूत १२. ६८.

छात-बन-बन २. १८०; १०. ११६;  
१२. २३, ४८.

छाता-बनरी [बद+न] १२. ७.

छाते-बन २. ५३.

छानह—छायाह—छानता है १. ११८.

छाया—[प्रकाश और छाँह; \*Skai से; गु०  
\*(S)galt, केनु में; सं० श्याव; Goth.  
skinan; Ohg. skinan, E. sky,  
shine; "प्रकाश और छाँह" इस  
अर्थमिश्र के लिये गु० काल-कृष्ण,  
काळा, "नीलाकाळा" तुयारीय, बा-  
ह्य। काळ की वास्तविक अर्थपरिधि  
प्रकाशविरोधी अन्धकार, तथा उसके

साथ संबन्ध रखने वाले, रात्रि,  
नवीन चन्द्र, मृत्यु आदि हैं। काळ  
की दो व्युत्पत्ति संभव हैं; (१. अ)  
काल-कृष्ण \*Qa (जिस के साथ  
संबद्ध है \*Qai, जिससे बनते हैं  
करक, कलुष, कलमा; Lat. cali-  
dus—दाग; caligo—तुषार); (आ)  
प्रामाणिक तुषार, प्रमाठ से पहला  
अन्धकार, प्रमाठ, प्रमाःकाल; (इ)  
सामान्य समय। इस प्रकार हम ने  
देखा कि एक काल में \*Qai तथा \*Qai  
दोनों का आदिकाल से संमिश्र  
सा है। जिस प्रकार काल में अन्धकार  
तथा कृष्ण वस्तु में प्रतीत होनेवाली  
कान्ति का समाहार है इसी प्रकार  
छाया के अर्थ में छाँह और प्रकाश  
दोनों का समाहार है। सं छाया=  
छाँह; दूसरी ओर Age, haeren; E.  
haeren; Ohg. skinan; E. to shine  
तथा sky. (गु० श्याम—काळा किन्तु  
श्याव—भूरा) २. काळ की दूसरी  
व्युत्पत्ति के लिये गु० सं० काळ-सं०  
शर (-चिरकषरा), Lat. coeruleus  
(—नीलकृष्ण), caelum (—नील)]  
मा० छाही, छाया (—मौन्दर्य) पा०  
छाया; ड० छाही; हि० छाँह, छाँ,  
छाँभो, छाँव; सि० छाँह; पं० छाँ;  
सि० छाँव; गु० छाँव १. १८२; ६.

३६; २२. ४३, ६५; २३. ५१, ६४;

२४. १२१.

छार—[तु० सायति—जलना; सार—जलन;

Lat. *cerenus*—शुष्क, प्रकट] सार—

सार—(भस्म)—मही (स-ख, छ P.

326) १. २४; १७. १०, १५; २०.

११८; २१. ४५, ५४; २३. १४५.

छारह—भस्म ही २१. ४५.

छारहि—मही ही १. २४.

छारा—छार—मही—भस्म १२. ३४; १३.

६२; २३. ३७, ६६; २४. १५५.

छारी—छार—राख २१. ४.

छाला—छलि "छल्ली त्वक्" (दे० १२०,

८) [तु० वैदिक छवि √ छो काटना;

छाल—खाल; संभवतः √ छल से,

अर्थात् जो काटकर धोई जाय; खाल—

खाल तथा छाल; देखो JB. 104,

149; √ तु० छाल—छागल, गलोप

P. 165, 231 के अनुसार] १६.

५३; २१. १२; २२. ३.

छावा—छाव्—छाव्—छाय—छादन (दलोप

P. 165 के अनुसार) छाता है १.

४३; १५. ७४; २४. ११६.

छिटकि—छिटककर १०. ७०.

छिडकहिँ—छिडकती है २४. ७३.

छिहुरि—छहर छहर कर-छटक कर ५. १५.

छीन—छीण—छीन—छीण १८. ४०.

छीपई—शिल्पते—छिप्पई—छीपती है

२०. २८.

छीपिनि—शिल्पिनी—सिप्पिनी—छीपन—

(म० शिपो, सि० सिपि) छिपी की

स्त्री २०. २८.

छुअइ—छुपति—छुपइ; पा० छुपति; उ०,

बं० छुं; प्रा० हि० छुह; ख० घो०

छुं; गु० छू, छो; पं० छुह; म० शिवणे

१. ११६; ४. ३२; १०. १२०; (छुप)

१६. ४६; १६. ४२; २०. ५६.

छुवत—छूते २३. १०५.

छुआवइ—छुआवे २४. ५२.

छुइ—छू १०. ११८.

छुदरघट—छुदरघटिका—छुदरघटिआ—छुघं-

रुदार करघनी—(सुद; प्रा० सुइ; पा०

सुइ; बं० सुडा; सि० कुड, कुडु) [प्रा०

सुद-छयत—सुब्ध नदी] १०. १४२.

छूछा—तुच्छ—चुच्छ—छुछ—छूछ—छूछा

(दन्त्य-तालव्य, तु० चच्छइ<sup>१</sup> त्यसति;

तच्छइ—तसति, चिहइ—तिष्ठति;

विज्जम्भर—विद्याधर; चिन्ना, चेन्ना—

त्यक्त्वा P. 216; H 175 [अथवा

शून्य—खाली; (दुच्छून); √ शू-

√ रिक्—फूलना, फूला—खाली; Lat.

*canus*—खाली; *caelum*, *cav-i-*

*lum*—आकाशमण्डल; तुच्छ, तु०

Lat. *tesqua*—त्यक्त स्थान] ५. १०;

७. २०; १६. ६; २३. २२.

छूछि—खाली २३. ७२.



छूँछे-खाली ७. १५.

छूआ-छुप्-छुव; छुया (छूता है) ११.

११; १६. २३; १८. ३६; २३. ७१.

छूट-छुट-छूट-छूटकारा ३. ७६; ७. २;

छूटा हुआ १०. १३३; १६. १४.

छूटह-छुटने - √ छुट छेदने; तु० हि०

छुटना; पं० छुटणा; सि० छुटण; गु०

छुटवुं; म० मुटणे ५. १६; ४. ११५.

छूटा-छूटा है ६. ४२, २५. १४.

छूटि-छूट २२. १०; छूटा २४. ८३, १२४.

छूटिहि-छूटेंगे २३. २८, २६.

छूटिहि-छूटेंगी २१. २३.

छूटी-छूट गई १५. ७५.

छूटे-छुटह का मू० ११. ३५; २३. ८६.

छेँका-घेर लिया चुपा० [तु० पा०

छेक-चगुर, चगुरता करना, दूसरे की

दवाग] १. १८८, २०. १२६, २३. २.

छेँकि-छेँक कर-शङ्कित करके-रोक कर

२३. ७; २४. १०, ३३.

छेकिहि-छेकेगा-रोकेगा ७. १४.

छोटी-(तु० छि कोट-छोटा; फा० कोतह)

८. ३८.

छोडि-छोड दी २३. १०५.

छोहायह-छुहावे २५. ४४.

छोडि-छोडकर ४. २५; १०. ४; २५. १६२.

छोहारा-चौदर-छुहारा २. ७८.

छोहारी-छोहारा २०. ४४.

, ज.

जँभीर-जँबीरिय, जम्बीर-एक प्रकार का

नींबू १०. ११८.

जँभीरा-जम्बीर ३. ४६.

जँभीरी-जम्बीर २. ७४, २०. ४३.

जह-जय-जीत २५. ३२.

जहफर-जातीफल-जायफल २०. ४४.

जहमाला-जयमाला २३. १२५; २५. १७१.

जहस-याहस-जैसे (तु० तहस-ताहस;

कहस-कीहस P. ८१; ह-ह P. २४७)

१. १२४; ३. २४; ५. ३८; ८. ४१,

४६; १०. १६०; ११. २६; १२.

७६; १३. ८; १५. ६६; २०. ८३;

२१. १४; १५. ४६; २२. ११, ६५;

२३. १८४.

जहसह-जैसे १४. १८; १५. ४६; २१.

३६; २३. ७४, १८०.

जहसे-जैसे २. १४५.

जउँ-यदि० जह, तु०, सि०, पं० जे; हि०

जो १. ७४, ८४, १२३, १३४; २.

२२; ३. २६, ७०, ७३; ४. ४३,

४८, ५५; ५. ३६, ४६; ७. १४,

३८, २६; ६६; ८. ८, १७, ४०,

६८; ९. ३७, ४२, ५६; १०. ११७;

११. २६; १५. ३८; १६. ४, ११;

२०. १०६; ११५; २१. २०, २२,

२६; २२. १६, २८, ४०, ४४, ५०,

६२, ६६, ७५, ७७; २३. १७, २२,  
२४, २८, ३३, ३६, ४५, ४७, ६१,  
७२, १२२, १२६, १३८, १६५,  
१६८; २४. ६, २३, २६, २८, ३१,  
४२, ५४, ५६, १०१, १०३, १०७,  
१३६, १४४, १६०; २५. ८५, ८८,  
११४, १२२, १५६.

जउँन-यसुना-जउण, जउणण, जमना,  
जमुना १. १२०.

जउँहि-यदि, सचमुच (जउँ यावत्; प्रा०  
जाम, जाउं, जामहिं; तावत्; ताम,  
ताउं, तामहि; पा० याव, ताव)  
२३. १२; जैसे ही, ज्यों ही २५.  
२५, ११६, ११७.

जउ-यव-जव-जौँ २३. २५.

जउ-यदा (यदि-जह) -जव २. १२२,  
१४७; ४. १२; ५. २, ४, १८; ७.  
६३; ६. १६; ११. ४०, ४२; १२.  
३६; १४. १४; १७. ६; १५. ५६;  
१६. २, ५; २०. ११६; २४. ५६;  
२५. १५३; यदि ११. ५३; १२.  
३८, ८३, १००; १३. १५, १६,  
३०, ३४, ३६, ६२; १५. १, २२,  
३०; १६. ३२, ३३, ४०; १७. १२,  
१३; १८. ४२; १६. ६०.

जउनाहि-जौन-जो; य+एव+नु+हि सु०  
१३. ४४.

जउहीँ-ज्यों ही, जैसे ही १५. ४७.

जग-जगत्; गम् का अभ्यास; जअं; अण०  
जगु; हि०, म०, गु० जग; सि० जगु; पं०  
जग्ग; सि० दिय १. ६७, ७०, ८३,  
८७, ८६, ६१, ६५, १०२, १०४,  
१०६, १२३, १२४, १२७, १२६,  
१३३, १३६, १४६, १६२, १६३,  
१७६; २. १५, १६; ३. १५, २०,  
४२, ४५, ४८; ४. २७; ७. ७०;  
८. ५; ६. ६, ५०; १०. १७, ३०,  
३७, ६४, ८६, १०७, १०६, १३८,  
१५२, १६०; ११. १८, ५३; १२.  
५७; १३. ५०, ५१, ५५; १५. २६;  
१६. ४, ८; १८. ४८; २१. ६;  
२२. ४४; २४. ८७, ८८, १५६;  
२५. २८, १३०.

जगत-जगत् (√गम् का अभ्यस्त प्रयोग)-  
संसार १. ३४, ४०, ७५, ८३, ८७,  
८८, १०४, १२१, १४४, १४७; २.  
१४०; ७. ३२; ८. ८, ११; ६. १६;  
१०. ५६, ६३, ६६; १३. ४६; १५.  
२७; १६. ४८; २०. ४, १११;  
२२. १६, ३१; २४. १३, ४६, ८४;  
२५. १५१.

जगमगाहिँ-जगमगाते हैं २. १५३.

जगमारन-जगत् को मारने वाला १०. २४.

जगसूर-जगच्छूर संसार में चीर १. १२१.

जग्ग-जग्य, यज्ञ, जग्ग, जौ० प्रा० जज;

पा० यज्ज; उ० वं० जाग (अ); प्रा०

छँछे—छाली ७. १५.

छुआ-छुप-छुव; छुघा (छूता है) ११.

३१; १६. २३; १८. ३६; २३. ७१.

छूट-छुट-छुट-छुटकारा ३. ७६; ७. २;

छूटा छुघा १०. १३३; १६. १५.

छूट-छुटने—√छुट छेदने; तु० हि०

छुटना; पं० छुटणा; सि० छुटण; गु०

छुटव; म० सुटणे ५. १६; ४. ११२.

छूटा-छूटा है ६. ४२; २५. १४.

छूटि-छूट २२. ९०; छूटा २४. ८३, १५४.

छूटिहि—छूटेंगे २३. २८, २६.

छूटिहि-छूटेंगी २१. ५३.

छूटी-छूट गई १५. ७५.

छूटे-छुट का मू० ११. ३५; २३. ८६.

छेँका-घेर लिया मुया० [तु० पा०

छेक-चुर, चुरता करना, दूसरे को

दवाना] १. १८८; २०. १२६; २३. २.

छेँकि-छेँक कर-शक्तिन करके-रोक कर

२३. ७; २४. १०, ३३.

छेकिहि-छेकेगा-रोकेगा ७. १४.

छोटी-(तु० छि कोट-छोटा; का० कोतह)

८. ३८.

छोडि-छोड दी २३. १०५.

छोडायह-छुकावे २५. ४४.

छोडि-छोडकर ४. २५; १०. ४; २५. १६२.

छोडारा-बीरहर-छुडारा २. ७८.

छोडारी-बोडारा २०. ४४.

ज.

जैमीर-जैवीरिय, जम्बीर-एक प्रकार का  
नींबू १०. ११८.

जैमीरा-जम्बीर ३. ४६.

जैमीरी-जम्बीर २. ७४, २०, ४३.

जइ-जय-जीत २५. ३२.

जइफर-जातीफल-जायफल २०. ४४.

जइमाला-जयमाला २३. १२५; २५. १७१.

जइस-याइस-जैसे (तु० ठइस-ताइस;

कइस-कीइस P. 81; ट-इ P. 245)

१. १२४; ३. २४; ५. ३८; ८. ४१,

४६; १०. १६०; ११. २६; १२.

७६; १३. ८; १५. ९६; २०. ८३;

२१. १४; १५. ४६; २२. ११, ६५;

२३. १८४.

जइसइ-जैसे १४. १८, १५. ४६; २१.

३९; २३. ७४, १८०.

जइसे-जैसे २. १४५.

जउँ-यदि० जह; गु०, सि०, पं० जे; हि०

जो १. ७४, ८४, १२३, १३४; २.

२२; ३. ५६, ७०, ७३; ४. ४३,

४८, ५२; ५. ३६, ४६; ७. १४,

३८, ५६, ६६; ८. ८, १७, ४०,

६८; ९. ३७, ४२, ५६; १०. ११७;

११. ५६; १५. ३८; १६. ४, ११;

२०. १०६; ११५; २१. २०, २२,

२६; २२. १६, २८, ४०, ४४, ५०,

६२, ६६, ७५, ७७; २३. १७, २२,  
२४, २८, ३३, ३६, ४५, ४७, ६१,  
७२, १२२, १२६, १३८, १६५,  
१६८; २४. ६, २३, २६, २८, ३१,  
४२, ५४, ५६, १०१, १०३, १०७,  
१३६, १४४, १६०; २५. ८५, ८८,  
११४, १२२, १५६.

जउँन-यमुना-जउण, जउणण, जमना,  
जमुना १. १२०.

जउँहि-यदि, सचमुच (जउँ यावत; प्रा०  
जाम, जाउं, जामहिं; तावत; ताम,  
ताउं, तामहि; पा० याव, ताव)  
२३. १२; जैसे ही, ज्यों ही २५.  
२५, ११६, ११७.

जउ-यव-जव-जौँ २३. २५.

जउ-यदा (यदि-जह)-जव २. १२२,  
१४७; ४. १२; ५. २, ४, १८; ७.  
६३; ६. १६; ११. ४०, ४२; १२.  
३६; १४. १४; १७. ६; १५. ५६;  
१६. २, ५; २०. ११६; २४. ५६;  
२५. १५३; यदि ११. ५३; १२.  
३८, ८३, १००; १३. १५, १६,  
३०, ३४, ३६, ६२; १५. १, २२,  
३०; १६. ३२, ३३, ४०; १७. १२,  
१३; १८. ४२; १६. ६०.

जउनहि-जौन-जो; य+एव+नु+हि सु०  
१३. ४४.

जउहीँ-ज्यों ही, जैसे ही १५. ४७.

जग-जगत्; गम् का अभ्यास; जयं; अप०  
जगु; हि०, म०, गु० जग; सि० जगु; पं०  
जगग; सि० दिग १. ६७, ७०, ८३,  
८७, ८६, ६१, ६५, १०२, १०४,  
१०६, १२३, १२४, १२७, १२६,  
१३३, १३६, १४६, १६२, १६३,  
१७६; २. १५, १६; ३. १५, २०,  
४२, ४५, ४८; ४. २७; ७. ७०;  
८. ५; ६. ६, ५०; १०. १७, ३०,  
३७, ६४, ८६, १०७, १०६, १३८,  
१५२, १६०; ११. १८, ५३; १२.  
५७; १३. ५०, ५१, ५५; १५. २६;  
१६. ४, ८; १८. ४८; २१. ६;  
२२. ४४; २४. ८७, ८८, १५६;  
२५. २८, १३०.

जगत-जगत् (√गम् का अभ्यस्त प्रयोग)-  
संसार १. ३४, ४०, ७५, ८३, ८७,  
८८, १०४, १२१, १४४, १४७; २.  
१४०; ७. ३२; ८. ८, ११; ६. १६;  
१०. ५६, ६३, ६६; १३. ४६; १५.  
२७; १६. ४८; २०. ४, १११;  
२२. १६, ३१; २४. १३, ४६, ८४;  
२५. १५१.

जगमगाहिँ-जगमगाते हैं २. १५३.

जगमारन-जगत् को मारने वाला १०. २४.

जगसूर-जगच्छूर संसार में वीर १. १२१.

जगग-जगय, यज्ञ, जगण, शौ० प्रा० जंज;  
पा० यंज; उ० बं० जाग (श्र); प्रा०

हि० जजन, जज; जगा, जज्य; हि०  
जाग, जग; पं० जगा; सि० जगु;  
म० जाग; अवे० यस्त; पद० यस्त;  
फा० इम्गन १. १३५.

जंगम-धूमने फिरते संन्यासी, ये प्रायः  
वीर भद्र (दृष्ट के यज्ञ का विध्वंसक)  
को उपासना करते हैं २. ४३.

जंघ-जङ्घा; हि० जॉघ; पं० जॉग, जॉघ;  
गु०, सि०, पं० जंघ; नै० जाङ्घ;  
सि० चंग (टाङ्ग); सि० टंग  
(पिङ्गो) १०. १४३.

जजमाना-यजमान (√यज्-यज्; पद०  
यस्त) ७. २६.

जगु-यगुर्वेद (अवे० यमुग्-महान्) १०. ७७.

जटा-(\*Ger-ta; जटानट; गूट-चूट  
VWI. p. 693) जट, जटा-ईंवे  
बाळ; म० जट; गु०, हि० जटा; पं०  
जट; गु०, पं०, हि०, ब०, जव; सि०  
जोइह-(मूळ) १२. २; २२. ४.

जत-यावद्-जति-जितनी २५. २५.

जती-यती-संयमी (√यम्; प्रायः जैनों  
में होते हैं) २. ४५; ३. ४८; ११.  
१७; १३. १०; १८. ४६; २१. ४७;  
२३. ६१.

जन-जण-मनुष्य (\*Geno; तु० Lat.  
genus, Eng. kin (-जाति); अवे०  
मन; जइनि (खी); इत्यादि; फा०  
मन, जन, जिन, यन; मरि० किन,

यिन; ७. ४६; २३. ६; २५. ११६.

जनै- (√जा) जानता हूँ ४. ६०; १०.  
१५१; १६. ६०; २०. ६०; २२.  
२८; २३. ७, १०; २४. १४; जानों-  
मानों २. ६४; ७. ६८; १०. १२५;  
११. ८, १७; १६. १.

जननी-जयणि (खी); जनित्री; पा० जने-  
सी; Lat. genitrix; माता ६. १.

जनम-जन्म-जम्म; (तु० वै० जनिमन्)  
१. ८६; २. १५६; ३. १६, १८,  
१६; ४. १६, २१; ७. १३; ६. २५;  
१४. १६; १८. ४८.

जनमपतरी-जन्मपत्री ३. २५.

जनमहु-जन्म भर १. ११४.

जनमा-उत्पन्न किया (तु० Lat. genus  
(उत्पन्न किया); As. cennan  
(उत्पन्न करना); As. cynn, Eng.  
kin (वंश) As. cyn-ying; Eng.  
king (राजा) ६. १.

जनहुँ-जानों-जाने २०. ११८; २४.  
६८, १०८.

जना-उत्पन्न किया [मं० जनति सकर्मक,  
जायते अकर्मक; \*Geno और \*Gon-  
उत्पन्न करना; तु० Lat. (g) natus;  
gigno, natura, natus; Goth. kno-  
the तथा knunthe; Cymr. geni;  
Ags. cennan; Ohg. kind] १. ५२.

जनि-न जातु-नहीं, मत; [जातु-जानातु

(जानो); Lat. *credo*; मन्वे; Faus-  
boll के मत में जातु-जायतु-होवे;  
प्रायः निषेध में 'न जातु'-जातु न=  
जा+न-जनि] ८. ४८; ६. ४६; १२.  
२६; २३. ४८, ८४; २४. २२, ११५,  
१४७, १६०; २५. ११; २२. ५५.

जनु-जानो २. १३, १७, ६२, ८८,  
६०, ६६, १२१, १२६, १३३, १६२,  
१६४, १७६, १७७, १६०; ३. ३६,  
४४, ४६; ४. २, २७; ५. ८, ११,  
१२, ३१; ६. ३५, ३८; १०. ११,  
१२, १३, २२, २५, ३६, ६५, ६६,  
८०, ८४, ६०, ६७, ६८, ६६, १००,  
१०८, ११४, १२१, १२६, १३०,  
१३१, १३४, १४२, १५४; १४. ३,  
४; १५. ३, ५, ४२, ४८; १६. २,  
६, ८; १८. १०, ५१; २०. ५५,  
७२, ८५, ८६, ६१, ६२, १२४; २१.  
११, १७; २२. ६; २३. ८१, १६४,  
१७४; २४. १५, ७५, १५४.

जनेऊ-यज्ञोपवीत-जयणोवर्द्धय, पं० जंजू;  
सि० जणयो; शु० जनोई; म० जानवें,  
जानू, जानहवी, जानहवें ७. ४७.

जप-जाप-जाव १३. ५०.

जपमाला-जप करने की माला १२. ६.

जपा-जप करने वाले (जप द्वारा देवता  
को मनाने या व्रत में करने की इच्छा  
वाले) २. ४३; जप २५. ४; जप

किया २५, ३३.

जय-यदा १. १२०, १५६; ३. ६०; ४.  
१८; ५. २०, ४८; ७. २५; ८. ५०;  
११. २८, ४८; १२. १०; १४. १०;  
१८. ३२, ४६; १६. ८, ७२; २२.  
४८; २३. २; २४. ४१, १२०;  
२५. १४६.

जयहिँ-जब ही २. १३६; ५. ४३; १०. ३८.

जयहि-जब ही १. ११३; २. १७.

जम-यम-यमराज १६. १८; २१. ३८.

जमकात-यमकास-जुड़वाँ (दोहरे) अस्त्र;  
अथवा यमकात-यमकर्तरी-यम की  
कैंची [तु० सं० कर्तरी अथवा कर्तरी-  
का; सरा० कातर अथवा कात्री; गु०  
कातर; सि० कतर; पं० कहर, कती,  
कैत; छि० क(ह)ती; फा० कइची  
(हि० कैंची) हि० कतरनी; उ० कतुरा;  
सि० कतुर; दे० कटारी (JB. 47,  
114); तु० री चार्तकई (चाकु); परतो  
चाइकइ; आ० फा० कार्ड (√कृत)  
तप्रा री० काली (चाकु); परतो चाइ  
√\*कर्त्या-फा० कार्ड] १६. १८;  
२१. ३७.

जमाइ-जमा कर १५. १८.

जमुआरा-यमाखय ३. २३.

जंबुदीप-जम्बुदीप-भारत (देखो जातक  
१. २६३) २५. ८३.

जंबुक-(√जम्भ) जम्बुक-सियार २४. ६

जंबूद्वीप—जंबूद्वीप २. ६; ३. २३; १६.

१५; २५. ६३, १५७.

जयमाला—√जि, सकर्मक जीतता है;

अकर्मक—जीता जाता है, बड़ा होता है; तु० जीरति, जरा \*Gerā—पीसना, जीतना; जब अकर्मक तब 'जीयाँ होना' तु० Lat. *granum*, Goth. *hauru*, E. *corn*—नाज] १६. ५७.

जर—जड़ २३. ६६; ज्वलति २५. १०४.

जरह—ज्वलति; अय० प्रा० जलह (P.

297) पा० जलति; [तु० हि० उ० कलकना; सि० कलकण; तु० कल-

कतु; म० कलकयें इत्यादि] १५. २२, २५, २७; १८. ४४, ५२; १६.

४६, ५०; २१. ४६, ५१, ६३; २२. १०, ५४, ५६; २३. ६६, १०६;

२४. १०५, ११८

जरह—जलता हूँ [√जल-√जर-गर्भ

होना; पा० जलति; Ohg. *col*-*coal*, Celt. *gual*] २१. ६, ४७; २२. १०.

जरत—ज्वलति—जलता है १३. ४१; २१. ७, ५२; २५. १४२.

जरतहि—जलते ही २१. ६३.

जरत—जलना २२. २३.

जरम—जन्म ८. ६४; २१. २६; २२. २३, १७, ५०; २४. १४०; २५. ८.

जरहि—जलते हैं २१. १२; २३. ७१, १०७.

जरहु—जलते हो २२. ७.

जरा—जला ६. ५; १०. ८३; ११. ५५;

१५. ३१; १६. १४; १८. ८, ४५;

२१. ५६; २३. ५५, ७६.

जराह—जला दिया १५. ३७.

जराउ—जटित—जहाज २. १०६.

जरि—जल कर १६. २२; (—जाह—जल जाय) १६. ४२; २३. ५५, ६६, १०६, १०६, ११०, १४५.

जरि—जड़ १. १२.

जरिआ—जटक—जबिया १६. १७.

जरिआ—जटक—जबिया १६. १७.

जरिहि—जलेगा २१. ५३

जरिहि—जलेंगे २१. ५२.

जरी—जल गई १५. २६.

जरी—जड़ी २४. १३०.

जरे—जले २१. ६२.

जरे—जटित—जके २. १२६, १६०.

जल—[संभवतः गल—बुन्द के साथ संबद्ध]

पानी १. ३, १२०; २. ४६, १४४;

४. ४०; ८. १०; ६. १६; १३. ८;

१५. ७०; १६. ४३, ६४; २१. ६;

२२. ३६; २३. ८४, १११, १४२;

२४. ४७; २५. १४२.

जल—उदधि—जल का समुद्र १३. २४.

जलहि—जल को १८. १६.

जलमेदी—जल के भेदी २. ७१.

जयुना—जमुना—यमुना १०. १२, १४.

जस—जैसा १. ५७, ६७, ११३, १६६,

१६३, १६८, १८६, १६९; २. २५,

२६, ३१, ७२, १४८, १६४, १६६,  
१८४, १६२; (जैसा जैसा=ज्यों ज्यों)  
३. ६, ७, ५३, ५६; ४. २४, ३६,  
६३; ६. ५, ६; ८. ३६; ९. १, २३,  
३२, ५६; १०. १६, १४५; ११.  
१८, ५०; १२. ५१, ८०, ६६; १३.  
४४, ६४; १४. १, २४; १५. ६,  
३७, ४५, ६५, ६६, ७२; १६. ६,  
२८, ४८; १७. १४, १७, २३, ४०,  
५०, ५२; १८. २७, ३२, ३४, ५०,  
६८; २०. ८१, १०५; (जैसे ही)  
२०. १२३, १३५; २१. ६, ४७; २२.  
२०, ४६, ५३, ७१, ७२, ७४; २३.  
४, २२, ११३, १४२, १४८, १४६,  
१५२, १५८, १७३, १७६, १८१;  
२४. ७, ४७, ५६, ६२, ६३; (जैसे  
ही=ज्यों ही) २५. ५, ६७, ११५, १६८.  
जस-यशस्-जस-चमकीले १०. ४५;  
जसि=जैसी ३. २; २४. १००.  
जहँ-जहाँ १. १३, ५२, (G.D.) ७६, १४३,  
१५८; २. ३, १५०, १७६; ३. ५८;  
५. ७; ६. ३८; १०. ७०, १५६;  
११. ६; १४. २३; १५. ४, ८; १६.  
१८, ६५; २०. ३१; २१. १७, ५६;  
२३. ३०, ३१, ६०, १७०; २४.  
४०; ११२; २५. १, ६, ३५.  
जहवों-जहाँ ११. १६; १२. ४४; २३.  
१०१; २५. १२७.

जहाँ-यत्र १. ३६, ५३; ३. १६; ४. १६,  
६२; ५. २४; ७. ५२, ५८; ८. १५,  
२३, ३६; ९. २, ४; ११. २१; १२.  
१६, ३५, ६४, १०१; १३. १६, ३३,  
३६, ५२, ५६, ६३; १४. ८; १६.  
२७, ४१; १८. ६, २८; २०. ५६;  
२१. ४०, ६०; २३. ७३, ७५, ७७,  
१२०, १६८; २४. २, ४, ६, २०;  
२५. ८, १६, ४१, ४८, ५२, १२०,  
१३४, १५६.

जहाँगीर-पदवी विशेष १. १४४.

जाँघ-जङ्घा [\*Ghough-चलना; तु०  
जंहस्, जङ्घा; अथे० मंग-ढखना;  
जघन (देखो Schmiedt, KZ. 25.  
112, 116); Lith. zengiti, zengti  
चलना; Goth. gaggan=to go;  
Ags. gang=घूमना इत्यादि; देखो  
VWI. p. 588] २. १२३.

जाँत-यन्त्रपद-चक्की के पाट १४. २०.

जा-यः-जिस १. ८, ७१, १४२; २.  
६२, ८६; ३. ३०; ५. २१; ८. २१;  
१०. २५, ४३; १२. ६१, ७१, ८०;  
१३. ३२, ४६; १५. ७२; २०.  
१०४, ११२; २६. ३१; २२. ७६;  
२३. ६२, ६८; २४. २६; २५.  
१२, ६४.

जाइ-जाकर-प्रयाय १. १०६; ३. २३,  
६१; ४. ६; ५. ३; ६. ७; १२. २३;



१३. ६; १६. ३०; १८. ३३; १६.  
 २८, ५०; २०. ६५, १२१; २१. ६०;  
 २२. २१, ६६; २३. ८, ४१, १७०;  
 २४. १५६; २५. ४८, ३२, ११८,  
 १५७; आता है अथवा जाती है १३.  
 १, २१, (सूझा जाता है) ४४, ३६;  
 १४. १६; १५. ४०; १६. २३, २५;  
 १८. २१, ३४; १९. २०, ४३; २२.  
 ३६; २३. ३०; २४. ३१, ७८, ६२;  
 २५. ८४; जायगी २३. १२; जाय  
 १. ६१, ७७, १२३; २. १२३, १२३,  
 १२७; ३. २, ७०, ७३; ८. २६;  
 १०. ३३; ११. ७, २६, ३०, ३७;  
 १३. २३, ३१; १८. २८; १९. ४२;  
 २०. १३५; २२. १०, ६३, ७४; २३.  
 ३५; २४. १८; २५. ४०; जाया=  
 जाना १२. १६.

जाई-जाकर २. १७; ८. ३१; १६. ३०;  
 २४. १५०; जाय २. १२४; ३. ७७;  
 जाना ३. ३४; ८. ६१; १०. १११;  
 ११. ५; १८. ४६; २४. १४३;  
 २५. ४६.

जाइफर-जाति; जाइ; हि=आयफर; पं=  
 आयफर; गु=आयफर; सि=आफुर;  
 सि=दाफर २. १२.

जाइहि-जायगा १३. ३६; २३. २५.

जाई-यानि-जाई ६. १६; १३. ३६; २३.  
 २०; २४. ४०.

जाईनि-जम्बु, जम्बुल=जामुन, जाम्मण;  
 पं=जंबु; म=जॉव, जॉम, जॉमूब;  
 गु=बं=जाम; सि=, चा=जामु;  
 सि=दंब २. २७.

जाउ-यात-आघो २४. २२.

जाऊँ-जाता ३. ६६; ८. ५५; २५. ३५.

जाऊ-जाय ६. ६; १३. १८.

जाए-जाय १०. १८; २०. १२७; २३.  
 १७५; २४. २३; २५. ३३, १४६, १५६.

जाएल-जायल मगर १. १७७.

जाग-जागृहि-आगो [-आजति \*Ger  
 तथा \*Gerei, गु=Lat. *exprognator*  
 (\**exprognator*) देखो आगति; पा=  
 जगति; प्रा=जगह; दं=जगना;  
 बं=आगति; सि=जागण; गु=  
 जागरं; म=जागणें] ११. ४८.

जागई-जागने से २३. १२६.

जागह-जागता है १३. ४; १८. ६.

जागसि-द जागता है २३. १२६.

जागा-जागह का मूल ११. १७, ४६;  
 २०. १०६; २१. २; २२. ३५; २३.  
 ३६, १२६, १६२.

जागि-(-ठटेई-आग ठटा) २०. १२८;  
 जागकर २३. १५४.

जागु-जागता २. १४३.

जाह-(जह) जहा जाया २. २०.

जात-जाते हैं २. १६२; जाता है २०.  
 ८०; २३. ७२.

जातरा-यात्रा-जत्ता १६. ४८; २४. ५०.

जाति-[√जन् \*Gonē; तु० श्रवे० भात;

Lat. *nātus* (oog-*nātus*); Lat.

*gens*; Goth. *kind-ins*] वर्ण का

उपभेद १. ६६; ७. २२; २५. ८, ९,

१०, ७८.

जातिहि-जाति ही ७. २२.

जाती-जाति-जाइ ६. २७; २०. १४.

जान-[वै० जानाति √ज्ञा-\*Gonē तथा

Gnē; तु० Lat. *nosco*, *notus*, (i)

*gnarus*; E. *ignorant*; Goth. *ka-*

*nnan*; Olg. *kennan*; Ags. *kna-*

*tan*; E. *know*-जानना] प्रा० जा-

णइ; अ० जण; जणि (इव); हि०

जानना; म० जाण्यो; गु०, सि०, पं०,

उ० जाण-; हि०, वं० जान-; का०

भान-; स्ति० जन-; सि० दन=

ध्यान; हि० जानो, जाने=इव; गु०,

पं० जाण; का० भन इत्यादि] जान-

ता है ११. २; १३. २८; २३. ६६,

८४; २४. १३५; जाने (संभावना)

८. ३७; ६. ५४; जान=जाने (न

दीजिये) १८. २८.

जानइ-जानता है १. ४७, ६५, ७१, ७२;

३. ६२; ७. ६३; ११. २, ४०; १२.

१२; १५. २३; १६. ८; २०. ८८;

२३. ११४; २४. ४५.

जानउँ-जानता हूँ १७. ८; २१. ३६;

२४. ४५, ५०; जानो २. २४, ५५,

६६, ११०, १२८, १७८; ३. १०; ४.

३४, ३७, ५३; १०. १०, २१, ३५,

५८, ६३, १०५, १०६, १०७, १११,

११७; ११. १, २४; १२. ७२; १५.

४४, ६८; १६. ५.

जानत-जानते हैं २४. १८.

जानति-जानती २३. ११५.

जानसि-तू जानती है १८. ३०.

जानहिं-जानते हैं ११. ३५; २४. ६६.

जानहि-जानता है ७. ३७.

जानहुँ-जाने-जानो १८. ६; १६. १; २०.

१०, ७०, ७१, ६४, ६६; २२. १६;

२३. ७६, ८३, १०५; २५. २६,

६८, १४२.

जानहु-जानो ८. ४८; १६. ३६; २४. १५७.

जाना-[√या; याति; प्रा० जाइ; म०

जाण्यो गु०, स्ति० ज-; पं०, हि०,

वं० जा-; उ० जि-; का० यि; देखो

Gn. Pais. Lang. p. 119] जा १२.

१८, ८२; १३. १६; जाना हुआ १.

१३६; जानता है ८. २८; जानइ का

भूत २. १५६; ४. ४६; ५. ४५; ८.

७; १२. ४७; १६. ३८; २१. २४.

जानि-ज्ञात्वा-जानकर १. ७६; ३. ६४;

७. १०, ३२, ६१; ६. ४४; ११. ५२;

१३. ३६; १८. ८७; २५. ७२.

जानी-जाने १३. ४८; जानइ का भूत

१. १७०; २०. ८१; २५. ६५.  
 जानु-जानता है १. ६६, ७०, ७१, ७२;  
 ३. ६२; २३. ६८; २४. १४६; जानों  
 २. २८, १६३; १०. ६, ४१, ६८,  
 १००; १४. ६; १५. ६७; १८. २;  
 २०. १२६; २३. ६६.  
 जाने-जानता है २. १७०; १२. ६०.  
 जानेउँ-जानता हूँ १०. १६०; जाना था  
 १८. २०; २३. ८२.  
 जाप-जप-जब १६. ४७.  
 जाब-जाऊँगा १२. ४०.  
 जाम-जमइ-जमता है १५. १६.  
 जामा-जम्मा १३. ५; २३. ७७.  
 जामि-जम कर ३. २१.  
 जार-जाब; [संभवतः जट (=कौसना)  
 से; तु० कुल=कुल; चारु=चाट्ट; खेल=  
 खेल] सि० जारु; का० माल; सि०  
 दल; तु० जालुं (तागा), म० जालें  
 (तागा) ५. ३६.  
 जार्य-जला रहा है २४. ७२.  
 जारहिँ-जलाते हैं-तपाते हैं-मुखाते हैं  
 [जम्-पा० जल; हि० जर, जल] २. ४८.  
 जाय-जाइ-जलाता है १५. २३.  
 जारि-जला कर २१. ४८.  
 जारी-जला दी १६. ४६; २१. ५७;  
 २३. १११.  
 जारे-जलायें हुए २४. ७२.  
 जार्यत-यावन्तः-जितने १. ३४, ७५,

७६, १२१; २. ४०, १८८, २००;  
 ५. ६; ११. १०; १२. १८; २०.  
 ३, ७१; २५. १२५.  
 जासू-जिम को (जिस से) २५. ६०.  
 जाहौँ-जहाँ १२. ६२.  
 जाहिँ-जाते हैं ६. ३२; १०. ४५; ११.  
 ४८; १२. ८८; २३. ८; २४. ४, ७.  
 जाहि-जाता है ७. ३६.  
 जाहीँ-जाते हैं १. ११०; २. ६१, ६५,  
 १०७; ३. ३१; १०. ७५, ६१; १४.  
 २; १५. ६५; २१. ५४.  
 जाही-जाति; जाइ; म०, तु० जाई; सि०  
 जा०, सि० दा २, ८६; ४. ५.  
 जाही-जिसे-२५. ८७.  
 जाइ-जाब-जाओ १२. १६; १८. ४८.  
 जिअ-जी-जीव-मन; हि०, पं०, तु०, म०  
 जी; सि० जीड, जी (तु० Lat. vivous  
 जीवित) ८. ५६; १५. ३५; २५. १५०.  
 जिअइ-जीवति; जिअइ, जीवत-; हि०  
 जी-; म० जियें; तु०; पं० जीव-;  
 सि० जि-; पं० जि-; का० कुव-;  
 लि० निव-; चवे० जवइति=जीता  
 है १. २७, ५८; २३. ११७.  
 जिअउँ-जिऊँ १३. १६; २५. ४६, १४६.  
 जिअत-जीवे-जीवत २१. ३१; २२. ८,  
 ६४; २५. १८.  
 जिअतहिँ- (Gd.) जीते ही २२. ७८.  
 जिअतहि-जीते ही १३. ६४.

जिअन-जीवन-जीवण १. २१, १०२; २.

७०; १५. ५६; २२. ८०; २४. ३४.

जिअना-जीना-जीवन १. ३८.

जिअहि-जीएँ २४. १६०.

जिआइ-जिला कर २४. ११०.

जिआवा-जिलावे २४. ४४.

जिउ-[जीव; \*guiuss-Lat. *vivus*; Goth.

*quius*; Ogh. *queck*; E. *quick*;

Lith. *gyvas*] जिअ=जीव, जीवन,

जान १. १, ५६; २. १०६; ३. ७३,

७७, ७६; ४. १५; ५. २, ३, ६,

११, ५७; ७. ३४; ८. ३; ९. ६,

३६, ४७; ११. ५, ७, ८, १४, २२,

२३, २७, ५६; १२. ४५, ७१; १३.

२३, ३१, ४७; १४. २०; १५. १,

२१, ५६; १८. ३४, ४३; १९. १,

२८, ६६; २०. ७४, ८४, ८८, १००,

१०२, ११२, ११५, ११६, १२०;

२१. १६, ३८; २२. १४, २७, २८,

३२, ४७, ५६, ६४, ७१; २३. ११,

४२, १०४, १२७, १४६, १५१,

१५३, १६८; २४. ४, २२, ३४, ३६,

४२, ५५, ६८, ७६, ८४, ८५, ८६,

८८, १४०, १५८, १६०; २५. १६,

२२, ४८, १५०.

जिउइ-जीव (जी) में ३. ८०.

जिउलेवा-जीव लेने वाला ५. ५२.

जिउँ-जीव; जीव के २०. ११६, ११७,

११८, ११९; २४. २७.

जित-जितने-यावन्तः २०. ६०.

जिता-जित; जिअ=जीता; म० जिकणें;

सि० जीत-; का० मेन-; अवे० मित

(बढ़ गया; तु० Lat. *vis* \**gvis* शक्ति;

तु० ज्या=धनुष की डोरी) २२. ३८.

जिति-जीत कर २३. १४४.

जिन्ह-जिन २. १७६; १२. ४७; १३.

५६; १५. २८; १६. ४६; २१. १३,

३२; २३. १७८; २५. ११, ६१, १२६.

जिमि-जेम-जैसे-यथा १५. ३२; १८.

२६; १९. ८; २३. १४०; २४. ६६.

जीअन-जीवन-जीवण-जीअण २. १४४;

/ ११. २३; १३. ४६, ६४; २४. ४७, ८२.

जीआ-जीअइ का भू० [जीवति; तु०

जिनोति-जिन्वति; \**Guoie*; Lat.

*vivo*; Goth. *ga-quianan*; Mbg.

*quicken*; E. *quicken*] २. १४७;

१६. ७१; २३. १६६; २४. ३, ३५, ५४.

जीउँ-जीवे जीव में २५. ६४.

जीउ-जीव १. ५८; ३. ६६; ७. ५०; ९.

४२; १०. १०४, १०६, १११; ११.

४, २०, ३५; १२. १२, ६१; १३.

२५, ५८; १५. १८; १६. ३६; १८.

३३, ४८; १९. ४६; २०. १२०; २२.

८, ३०; २३. ५, २१, ७२, ७६, १२८,

१३०, १६०, १८०; २४. ५१, ५३,

७७, ६१, १११, १२२, १३५, १३६,

१४८, १४९, १४४; २५. १२, १४४.

जीतइ-जी जाइये ८. ६२.

जीतइ-[√जि; जित की क्रिया] जीतता है १०. १४४.

जीतपतर-जयपत्र २५. ७२.

जीता-जीतइ का भूत ८. ७२; १०. ३१, ७६; ११. २६; १६. १०, १२; जीवित २५. १०८.

जीति-जीत कर २५. ११७.

जीम-[तुं Lat lingua (प्राचीन रूप lingua), Goth *luggo*, Obg *sw-ngo*; E. *tongue*] जिह्वा-जीहा, जिह्मा (P. 332); पा० जिह्वा; घा० जिवा; भं० जिमो; का० जेउ, हि० जीम; सि० जिम; सि० दिव; माल-दिवे दु; घवे० हिम्ब; (Jn Pais. Lang. p 78) १. ४६, १८०; ५. ५१; ८. ३८, ४४; १७. ६; २४. ७४, १०; २५. १४३.

जीया-जीवन ७. ३०; ८. ६८; २५. ७६.

जीहा-जीमा-जिह्वा २. १३४.

जुया-[घन √ दीव; घवे० दएव-dovil] प्रा० जूय; पा० जूत; हि०, वं० जूमा; म०, सि० जुवा; गु० जुहुं, सि० डुव, दू २२. ७१.

जुयारी-घनकारी [घन दो "जोयलिघा जोयारी घान्यम्" जुयार, जुवार, ज्वार-वरी के ऊपर का दुस्ता] २२. ७१.

जुयारी-जुहाहार (-"जैसे जुयारी में हारी घसु हेरफेर से फिर मिल जाती है उसी प्रकार" सु०) ८. ६४.

जुग-युग; घवे० युग्ल; घा० का० जुष, शि० युष; कु० जूक [तु० सं० युगल; प्रा० युवल; हि० जुला; जूआ (गाड़ी का); सि० युवल; म० जुवल, जूळ] १. ४०, १०४; २. ११०; ३. ६६; ६. २६; १८. ४, ४६; १६. १०; ३४. १२६.

जुगुति-मुक्ति-जुति-उपाय २३. १४.

जुमारु-बोझा (युद्ध-शुम्भ) १. १७२.

जुरर-(√जुद, जुप्) जड़ता है १६. ३८.

जुडान-जडाई-ठण्डी हुई १६. १.

जुटा-जुगई का भूत १०. २३.

जुरी-जुरी १०. ४२; २५. १, १२६.

जुरे-जुई १०. १४४.

जुलकरण-युगलकर्ण-दो सींग वाला १. १०१.

जुहारि-सलाम करके १. १२३.

जूड-जूडा-ठण्डा (जूडी-तप) १२. ४५.

जूम्-युद्ध-शुम्भ ११. २४, २६; २०. १३३; २५. ४४, २६.

जूम्ब-युप्यते = जूम्बा [युप्यते; हि० जूम्; पं० जुब-, जूम्-; म० जुबणें, जुबणें, मूबणें; गु० जुंज-, मुम्-; का० बौद-(JB. 60, 84, 107, 168, 230) २५. ११२.

जूझा—युद्ध किया १०. ८५; २४. १८, २८.

जूझि—युद्ध करके २२. ६६; युद्ध २४. २६.

जूझू—युद्ध २५. १०७.

जूझे—जूझने से २३. ४४.

जूरी—जूड़ी—जूड़ी २. ६४; (रस्सी के  
आकार के झंझुर, सु०) २०. ४५.

जूह—यूध, समूह २५. ११४, ११६.

जूही—यूथिका; म० जुह; गु० जुह, जुह;  
हि० जुही, जूही (पुष्प विशेष) २.  
८६; ४. ५.

जूवा—जीमा—भोजन किया ३. ७१.

जे—ये—जो; गु० जे; पं०, सि० जो; म०  
जे, जें (JB. 206) १२. ८८; १३.  
६४; २०. ७१.

जेहँ—जिन्हों ने २६. ३२; २४. २८, ३६;  
जिसने २५. ५६, १५०.

जेहँय—जेवँते हैं—खाते हैं ११. ३४.

जेह—जिसने १. १, ८५, ८६, ८७, १२६,  
१३५, १५६, १८४; २. २३, १०३,  
१५२; ६. १; ७. ५१; ८. ६, ५०,  
५४; १०. ८३; १२. ६७; १३. २६,  
३१; १४. १३; १५. ६२; २०. ७६.

जेठ—ज्येष्ठ [ज्या (√जि-शक्ति) का तम-  
बन्त] जेठ—जेठ; सि० जेठु; का०  
फेठ २. २०.

जेत—यावत्—जेतिथ, जेतिल—जितना  
१७. १५.

जेते—यावन्तः; प्रा० जेतिल (म० जेती;

जेतुलां; गु० जेतलो; सि० जेतिरो,  
जेतरो; पं० जित्ती, जितना, जितला,  
का० युत, वं० जत, उ० जेते) ११. १४.

जेहिं—जिनकी २४. ८.

जेहि—जिस (सं, का, को, के) १. २०,  
२७, ३३, ४१, ४२, ४८, ६८, ६६,  
१०५, १५२, १५३, १५४, १८२;  
२. २, ६४, ८८; ३. १६, ६३, ६८,  
६६; ४. ५४; ५. २१, २२, ३५,  
४१, ४७, ५६; ७. १४, १८, ५२;  
८. १०, १३, २४, २६, २७, ४०,  
५२, ५५, ६१, ६२; ९. २०, २८,  
४७; १०. ६, ६८, ७६; ११. २,  
१६, ४७, ५५; १२. ८, ११; १६,  
२७, ५२, ६६, ८०, ८८; १३. ५,  
८, १४, २५, २८, ३६, ४७; १४.  
११, १२, १७, २४; १५. २, ७,  
२१, ३५, ५१, ५८, ६०; १६. ३४,  
४०, ४८; १७. ८; १८. ४३, ५३;  
१९. ८, १६, ३२, ४८, ५१; २०.  
४०, ४६, ५६, ८०, ८७, ८८, १०४;  
२१. २०, २३; २२. ७, २४, २६; २३.  
३२, ३७, ४०, ६७, ११५, ११६,  
११७, ११८, ११९, १५३, १६५;  
२४. २७, ३६, ४६, ५०, १३०; २५.  
१७, १८, ३४, ३६, ६१, ६६, ६७,  
१२८, १४७, १५५, १७६.

जो—यः, यत् (सर्वनाम); प्रा० जो; गु०,

उ० जे; सि०, पं०, हि० जो; बं० जे,  
जिनि; का० विह; सि० यम—, १.  
२६, २७, ३८, ४०, ४३, ४५, ४६,  
४८, ६५, ६६, ७२, ८०, ८८, ८९,  
८२, ८५, ८६, १०१, १०५, १०६,  
१८०, १८४, १८९, १८२; २. २, १०,  
३१, ३५, ७२, ७३, ८१, १२०, १२५,  
१३६, १४०, १४२, १४४; ३. १, ३,  
८, १४, १५, ५७, ६३, ६७, ७१, ७२,  
७७, ७८, ८०; ४. १२, २३, ६२,  
६४; ५. ५, १०, २१, २६, ४७, ७.  
२१, २४, २६, ३५, ३६, ५३, ५४,  
५६, ६०, ६२, ६८, ७१, ७२; ८. १,  
२८, ३०, ३६, ४३, ४५, ४६, ५१,  
५८, ६३, ६४, ६७, ७२; ९. ७, १३,  
१७, १८, २३, २६, ३१, ४०, ४४,  
४८, ५१, ५२, ५४; १०. ४, १४,  
१८, ३२, ५१, ५८, ६७, ७२, ७३,  
७५, ७६, १०१, १०२, १३६; ११.  
१७, २३, २६, ३२, ३५, ३७, ४०,  
५१, ५४, ५६; १२. १४, २२, ३४,  
४६, ५०, ६०; १३. १४, १८, २६,  
४८, ५४, ५५; १४. ५, १५, २०;  
१५. १३, १५, १६, १८, २३, २६,  
२७, ३२, ३४, ४०, ५०, ७२, ७३,  
७६, ७८, ८०; १६. १३, १४, १६,  
४२; १७. १५, १६; १८. २, ४,  
१०, २७, ४१, ४४, ४५, ५४, ५५,

५६; १९. ६, १२, १७, २४, ३३,  
३८, ४२, ५२, ५७, ५८, ५९, ७२;  
२०. ८, ४८, ५६, ८५, ८२, ८५,  
८७, १०१, १०३, १२६; २१. २,  
८, १६, २१, २६, २८, ३०, ३४,  
४३, ५३; २२. ३, १५, २४, २६,  
३१, ४०, ४६, ४८, ५६, ५८, ६३,  
७३, ७८, ८०; २३. ५, १३, १७,  
३६, ४८, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२,  
६४, ६५, ८४, ८३, १००, १०४,  
१०६, ११४, १२०, १२३, १२७,  
१६५, १६६, १७५, १७८, १८२;  
२४. १, ५, १०, २१, २६, ३०, ४३,  
४६, ६४, ८८, ११३, १२५, १३७,  
१३८, १४१, १४६, १५५; २५. ६,  
१६, ४०, ५८, ७०, ७२, ७३, ७५,  
८१, ८३, ८६, ८९, ९३, ९६, १०७,  
११०, ११६, १३१, १३५, १३७,  
१५१, १५६, १७१, १७४, १७६.

जोअउँ—जोअ—जोहता है १७. ७.

जोआ—जोहकर—रुख देखकर ७. ६८.

जोख—जोखा—तोख १. ८८.

जोखीउँ—जोखिम—हानि १३. २२.

जोग—योग्य—जोग—हि० जोग, जोगा,

जोगा; गु० जोग; सि० जोगु; पं०

जोग; जोगा; म० जोगा ३. २२,

२६; १०. १६०, १७. ४; १८. २३,

३२, ४०; २३. २६, ३२; योग ११.

३८, ४१; १२. ८; १८. १; १६. ५३,  
७२; २०. ६१, १०७; २३. ३३, ३५.  
जोगर्तत-योगतन्त्र-योगशास्त्र २४. ४६.  
जोगसाधना-योगसाधना; जोगसाहण  
२३. ३४.  
जोगा-योग में १६. १०.  
जोगि-योगी-जोद्ध ३. ४८; १६. २६;  
२०. ६७; २३. १७७, १७६; २४.  
१३६, १५२; (रत्ना नहीं किया जाता)  
८. ६१.  
जोगिनी-योगिनी-जोगिणी, जोद्धणी  
१२. ४२.  
जोगिन्ह-योगियों का १२. ७२, ८१; (ने)  
२०. ६८; २३. २; (के) २५. १०६,  
११२, १३२; योगियों ने २५. १४४.  
जोगिहि<sup>०</sup> - योगिभिः (सह) २३. ४४;  
योगियों पर २५. २५; योगियों को  
(के मतलब को) २५. ११३.  
जोगिहि-योगी को १२. ५४, ५५; २०.  
१००; २३. ३२, ३३, ४०; २५. १०.  
जोगी-योगी २. ४७; ६. ६; ८. १८;  
११. ३७, ३६; १२. १, ५३, ६६;  
१३. १०, ११; १५. १२, १३; १७.  
१; १८. ४६; १६. ३५, ५१, ६५,  
७२; २०. ६०, ६४, ६६, ६६; २१.  
४७, ६१; २२. ४८; २३. ७, ६,  
१४, १६, १८, २४, २६, ४२, ४७,  
८६, ६२, ११२, १३०, १३३, १७८;

२४. १०, १६, ३३, १३०, १३१,  
१३५, १५३; २५. ३, ७, ८, ६, ५५,  
५८, ८०, ६२, १०५, ११२, १५६.  
जोगीनाथ-योगिनाथ-जोगिणाह १६. २४.  
जोगु-योग २२. ८.  
जोगू-योग्य (सु० जोगू=उच्च वाणी से  
स्तुति करने वाला  $\sqrt{\text{सु० से}}$ ) १. ४४,  
६६; २. ४; १०. ४६; १६. १६; योग  
११. ३८; १२. २१, २८, ३८; १५.  
११, ७६; २२. १२, २३; २३. १३४.  
जोगोटा-योगोटा—"योग को ओटने  
वाला, अथवा योग का ओटा अर्थात्  
आधार" (सु०; 'जोगवाट' रा०;  
"जोगवटी" देखो G.D.) १२. ४.  
जोजन-योजन-जोअण(न) १५. ४३, ४६.  
जोति-ज्योति-जोई १. २, ८२, १३८,  
१४६; ३. ४, ५, ४. ६४; ६. ४;  
१०. १७, ६७, ६८, ७०, ७१; ११.  
५१; २४. ८१, ८३.  
जोतिखी-ज्योतिषिक-जोहसिअ-ज्योतिष-  
वेत्ता (हि० जोषी; का० क्तिजि; सि०  
जोसी, पं० जोसी, जोषी) ३. २५.  
जोती-ज्योती २. १०१; ३. ३८; १०.  
१७, ६६; २४. ५७.  
जोवन-यौवन-जोअण, जोवन=ज्वानी  
[युवन्; अये० खन्; पह० युवान,  
जवान; फा० जवान] १. ७०; २.  
१५१; ३. ५३; १०. ११६; १८.





३८, ४१; १२. ८; १८. १; १६. ५३,  
७२; २०. ६१, १०७; २३. ३३, ३५.  
जोगतंत-योगतन्त्र-योगशास्त्र २४. ४६.  
जोगसाधना-योगसाधना; जोगसाध्य  
२३. ३४.  
जोगा-योग में १६. १०.  
जोगि-योगी-जोड़ ३. ४८; १६. २६;  
२०. ६७; २३. १७७, १७६; २४.  
१३६, १५२; (रखा नहीं किया जाता)  
८. ६१.  
जोगिनी-योगिनी-जोगिणी, जोड़णी  
१२. ४२.  
जोगिन्ह-योगियों का १२. ७२, ८१; (ने)  
२०. ६८; २३. २; (के) २५. १०६,  
११२, १३२; योगियों ने २५. १४४.  
जोगिहिँ - योगिभिः (सह) २३. ४४;  
योगियों पर २५. २५; योगियों को  
(के मतलब को) २५. ११३.  
जोगिहि-योगी को १२. ५४, ५५; २०.  
१००; २३. ३२, ३३, ४०; २५. १०.  
जोगी-योगी २. ४७; ६. ६; ८. १८;  
११. ३७, ३६; १२. १, ५३, ६६;  
१३. १०, ११; १५. १२, १३; १७.  
१; १८. ४६; १६. ३५, ५१, ६५,  
७२; २०. ६०, ६४, ६६, ६६; २१.  
४७, ६१; २२. ४८; २३. ७, ६,  
१४, १६, १८, २४, २६, ४२, ४७,  
८६, ६२, ११२, १३०, १३३, १७८;

२४. १०, १६, ३३, १३०, १३१,  
१३५, १५३; २५. ३, ७, ८, ६, ५५,  
५८, ८०, ६२, १०५, ११२, १५६.  
जोगीनाथ-योगिनाथ-जोगिणाह १६. २४.  
जोगु-योग २२. ८.  
जोगू-योग्य (सु० जोगू=उच्च वाणी से  
स्तुति करने वाला  $\sqrt{\text{गु० से}}$ ) १. ४४,  
६६; २. ४; १०. ४६; १६. १६; योग  
११. ३८; १२. २१, २८, ३८; १५.  
११, ७६; २२. १२, २३; २३. १३४.  
जोगोटा-योगोटा—"योग को ओटने  
वाला, अथवा योग का ओटा अर्थात्  
आधार" (सु०; 'जोगवाट' रा०;  
'जोगवटी' देखो Gm.) १२. ४.  
जोजन-योजन-जोअण(न) १५. ४३, ४६.  
जोति-ज्योति-जोई १. २, ८२, १३८,  
१४६; ३. ४, ५, ४. ६४; ६. ४;  
१०. १७, ६७, ६८, ७०, ७१; ११.  
५१; २४. ८१, ८३.  
जोतिस्त्री-ज्योतिषिक-जोइसिअ-ज्योतिष-  
वेत्ता (हि० जोपी; का० मिजि; सि०  
जोसी, पं० जोसी, जोपी) ३. २५.  
जोती-ज्योती २. १०१; ३. ३८; १०.  
१७, ६६; २४. ५७.  
जोवन-यौवन-जोअण, जोवन=ज्वानी  
[युवन्; अवे० खन्; पह० युवान,  
जवान; फा० जवान] १. ७०; २.  
१५१; ३. ५३; १०. ११६; १८.

१८, १९, २०, २१, २२, २३, २४,

२६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ४०,

४२, ४६; ४७, ४८.

जोषननुरी—जोषननुरा—जोषननुरा—

जगनी का घोड़ा १८, २८.

जोर—बड़ी [घरे० बररे-बस; घा० जोर-  
बस] १८, २६.

जोरल—जोषने है (√दृढवर्धने) ३. ४९.

जोरा—जोषा—गुप्त १०. १८; ११. २८,

२३, ११४, गुप्त-योग्य १८, २७.

जोरि—जोषर १. १२०, १२६, ११.

१८; २०, ४१.

जोरी—जोषी—गुप्त ४. ४४; ६. २, १०.

१०६; १४. २३; १६. २३, २४;

२३, १४२; २४. १०४.

जोरे—मिखावे ३. ६१; ४. २३.

जोषा—[√घृ, 'दिघृ'; गु० गिरा, त्रिप  
की लुप्तानि √घृ मे है न कि √घृ  
मे (P. 315); हि० जोषता, जोषदा;  
वे० जोषदा; गु० जोषु, घ० जोषावर्धे.  
("जोषवर्ध जोषवर्ध" ३- 130. 9);  
घा० जोषदि (JL के घन में हन  
नव की लुप्तानि √घृ मे है, देखो  
105); गु० √जोष मे] जोषता है  
२३. १२०.

जोषदि—जोषने है २४. ४६.

जोषा—जोषा है [√जोष वर्रे मे लुप्ता-  
मेवता √घृ-<sup>०</sup>Gloss (4). मे Lat

fand; Goth. giulan; Ohg. giulan

घमि में दाखता; जोषता है-ज्योतीषा-  
रूपी होम करता है] २०. ७१.

जोषहि—जोषते है १. १६८.

जोषार—मघाम २०. ७२.

जोषाव—मघाम करता है ७. २८.

जोषारे—मघाम किये २३. ६.

जोषारु—मघाम २. १६७; २०. १४.

जोषि—दंगर १०. ६४.

ज्याला—जाला (गु० भस्मा-<sup>०</sup>कृष्ण, √शब्द;  
भारमा √शब्द हिंसायाम् P. 311)

२१. १२.

म.

मजोरहि—मजोरते है १०. १६.

मजराव—(मजराव, मजरावुद्धव)  
१०. १२८; १७. १४; २०. २०.

मजह—जानि (घ-मज-<sup>०</sup>मा; गु० मजम-  
जमज, मजमह-जानि P. 316)  
१६. ८.

मजहि—मजह १०. ७१.

मजहा—जमघ-मजघ-मोता २. १०.

मजहि—मजने है १०. २८; २१. १४.

मजही—मजने है २१. २६.

मजो—गिरा गये २०. ७; २१. ४.

मजोघ—देव (मजघन; √घृ विज्यायाम्

से संवद्ध; तु० पा०—मस—मांकी—  
खिड़की; मांसा देकर भाग गया, मुख  
दिखाकर भाग गया) २. १२३.

माँखर—माँखड़; दे० “मंकः शुष्कतरुः”  
(134. 17) हि० माँखड़, माँकर  
(माढ़, माँकड़); म० माँकर; गु०  
माँखरु; पं० मंगड़ (JB. 107)  
१२. ६४.

माँम—मंम (✓मम परिभाषणहिंसा-  
तर्जनेपु; मर्म,—मज्जमा—माँम) म०  
माँज, माँजरी (मर्मरिका), सि०  
मंमु; पं० माँम २०. ५८.

माँपा—(✓छप्=मंप आच्छादन देशी)  
मांप दिया—तोप दिया—ढांक दिया—  
बंद कर दिया—ढांप दिया; (ढक  
“ढकणी पिधानिका” दे० 141, 12;  
JB. 94. 119); तु० आँख मपकना,  
मयकना—मीचना (दे० JB. 107;  
p. 337) २४. ६२.

माँपि—ढांपकर—बंद कर ४. २६.

माार—माट, माढ़—लतागहन; म०, गु०  
माढ़; सि० माड़ु (फलवृक्ष); पं०,  
हि०, वं० माड़ २०. ४२.

माारइ—(✓छर से; छ—म; JB. 107)  
माढ़ता है; (तु० माड़—बुहारी से  
सांभरना, सोहरना) २३. १५२.

माारखंड—“पर्वतविशेष, जो वैद्यनाथ  
महादेव के पास है;” सु०; छत्तीस-

गढ़ और गोंदवाने का उत्तर भाग  
१२. १०२.

माारा—ज्वाला (तु० तेल की “माल”  
उठती है) १५. २५, २६; २४. १०५,  
११८; २०. ४१. (‘सार=खार’ सु०)

मारि—माढ़कर २. १११; केवल २. १५३.

मारु—माढ़ती है १०. ४.

मिभिकार—मटकारे—मिड़के (शब्दानु-  
करण) २३. १६५.

मीनइ—चीखे—माने में, मांभर में ३. ७.

मीनी—चीख—मीण (पतला); म० मिणा;  
गु० मिणु; सि० मीखो; पं० मीखी  
१०. १३८.

मुंड—समूह २. ६०.

मुइ—(मृ=जू भूरे ही=व्यर्थ) ७. ६.

मुंड—मुंड २०. ५७.

भूठा—मुट [✓मप आदानसंचरणयोः;  
तु० छि जुट=छिपाया हुआ; पशतो  
जुटी=चोर; छि जुटी=चोरी; सुधा०  
“मुइट्—कांटे ऐसा; अथवा ✓मप  
उपवाते, उच्छिष्ट, अपवित्र” अथवा  
जुट—जूप हिंसायाम्] ८. ५१.

भूठी—असत्य ५. ३८; ११. ५२.

भूमक—भूम भूम कर गाया गया गीत  
२०. ३५.

भूर—(✓जू—भू—Ger, Gerü, जूर;  
अवे० ममरेसंत=वृद्ध न होता हुआ;  
आ० फा० ममानि=बुढ़ापा; अवे०



टेकड़-टेकती है २४. १२१.

टेका-टेके-रोके २३. २.

टेकि-टेक कर १. १०३; १५. ७.

टेकी-सहारी १. १५०.

टेकेउँ-टेकूँ २१. २७.

ठ,

ठा-स्थाग-ठा[तु० √स्था १स्थाघ, स्ताघ]

हि०, म० ठग, टक; गु० ठग; पं० ठग,

ठाग; का० ठग २. ११६; १५. १४.

ठागि-ठाग कर २५. ४२.

ठागी-ठाग का भूत ५. ३७; ठगी हुई

१०. ६८.

ठेरिनि-ठेरे की स्त्री २०. २५.

ठमकहिँ-ठमकती हैं २०. २०.

ठमकि-ठमक कर १०. १२४.

ठाउँ-[वै० स्वामन्; पा० थाम; √स्था;

तु० Lat. *stamen* (खड़ा हुआ भवन);

Goth. *stoma* (-नींव) तु० हि० ठेवा=

ठाउँ स्थान १. ८५; ७. ६४; १०.

१०२, ११२; १२. ८५; १३. ४; १५.

५०, ५५; १७. ७; २०. १८, ११०,

११२; २३. ४२, ८८, १६०; २४.

४०; २५. ८.

ठाउँहिँ-स्थान में २. ४२; १०. ११२;

१२. ७०, ८५; १६. ७; २३. ४२.

ठाउँ-स्थामन् (=स्थान; हे० च० ४, ३६७,

४; P. २५१) १. ६३, ८६, ८६; २.

४२; ३. ३, ३७; ८. ५५; ६. १६;

१६. ३५; १६. १७; २३. २१; २५.

२१, ३६.

ठापँ-ठावँ १२. ६५.

ठाओँ-ठावँ (Gn.) २५. ८.

ठाकुर-ठकुर-स्वामी १. १६; ३. ६८;

१५. ५८; २४. २०.

ठाटी-(√स्था का अभ्यास) ठठ-समूह

१४. १.

ठाट्ट-ठाठ-साज १६. १०.

ठाठर-ठाठ-सजधज २०. २५.

ठाढ-[√स्वाम्, स्वथ, दद, थद; हि०,

पं० ठाढा; म० ठाढा (ठीक); सि० तद

(दद); का० थोदु (ठाढा-ऊँचा); तु०

स्थावर, पा० थेर; हि० ठेरा (घुड़वा

ठेरा) √स्था-खड़ा होना, अवस्था में

बढ़ना; ध्यान दो स्थावर; पा० थावर=

घुदापा; उस से "बूढ़ा" (अर्थविकास

के लिये तु० Lat. *senior*, संख्यावाची

*sem* से (som-एक वर्ष का) अथवा

√स्था- \**Stithouā* जिससे स्थूर

(स्थूल) की व्युत्पत्ति हुई है; इस

प्रकार ठेरा हुआ दद-समान्य] लड़ा

२. १२८, १६२; ७. ६; १०. ४६;

१५. ५; २१. १७; २५. ५३.

टाढा-गवा १०. ६६; २५. ६६, १-१.

टाढि-गवा १. १२८; २०. ८१; २२. २७.

टाढी-गवा ४. ६; १०. ६८.

टाढे-गवे २. १३२; १०. ४७.

टाये-टाये (On. रयल के लिये गु० मा०

धाण, धान; अर० टायु; टाउ; पा०

टान, नै० टाडि०; उ० धाया; (गु०

हि० धाना-गोखोम की खोड़ी); बं०

धान, धना; पं० धौ; मि० धायु,

टायु इत्यादि] १३. ४; १५. २०, २६;

१६. ७.

टायैदि०-(On.) रयल पर १६. ७.

टायौ-टायै १२. ७०.

ठे० धा-महाता २. १६४.

ठेनु-बसो १. ६१.

ठोर-मवा, कम्पु ३. ६४, ७. ४६.

## ट.

टंगा-(√ टंग) गंगा २०. ८३.

टगा-टगाटगी बजने की ध्वनि १. १०६

टंग-टंग, टै० टंगल, टैडुल, हि० टंग,

म० टंग, टंगले; गु० टंग, मि०

टंगु टंगल, पं० टंग, टंग, टंगला,

उ० टंगल (J.R. 119) टंगल-टंगले

टंग, टंगले की मंज १०. १३६.

टंग-[द्विच दण्ड-० Dal dya मंज,

गु० गुल=गुल ० Dal से, पया दल,

दलति । गु० Lat. dolare (काटना,

काटना; सड़की पर काम निकालना),

dolore (मार कराना); Mgh, ridge

(शाखा), col (घड़ी); संभवतः ० Dan

(d) ra से (र=ख, द=ख पया गुला:

दण; वेनु-वेनु इत्यादि; रयल से

अपट तथा अपट पर) इस मंग में

दण्ड का संक्रमण संस्कृत दाह=दाल

के साथ दहरगा है] टंडा-दंड, म० दंड,

दौंड; गु० दंड, दौंडी; मि० दंड; पं०

दणा, दण (दण्ड देना); का० दण,

दोना (घड़); लि० दण; मि० दण०

१२. ६.

टंडाकरन-दण्डकारण १२. ६१.

टंग-दण-दण्डा २०. ४६.

टमगाहि-दण्डवाले हैं २२. १६.

डपन-डपनम्-दना-दंग १४. १४.

डर-डा-मय; मि० डह, (1. 222 दानि-

काह) २. १२४; ५. २६; ८. २१;

१३. ४३, ४६, ६६; १६. २०; १६.

११; २२. ६; २३. ११८; २४. ६१;

२५. १६०.

डर-[√ ड; गु० दयानि; दरी=पारी काहि;

० Dar. मंजवा; गु० Lib. dize.

Goth. gathairan = Agt. loan (L.

loan). Goth. loan-Goth. loan

(काटना); पं० दयानि, दण इत्यादि

\*Dol (र=ल) भी इसी के साथ

संबद्ध हैं । तु० दर, दह, पुरन्दर

आदि] डरता है २. ७२; १४. २२;

१६. ४०; २५. ५६, ६०, ६१, ६२.

डरउँ-डरता हूँ ७. ३०; ८. २५.

डरऊँ-डरती हूँ २४. ६५.

डरना-भय खाना २५. ८२.

डरपहिँ-डरते हैं [दरपहिँ=दर्प करते हैं  
के आधार पर] २. १३२; १०. ६५.

डरहिँ-डरते हैं २. १३४; २५. ६१.

डरा-डर गया २४. १३, १५.

डरि-दरकर १. १०६; १५. २१; १६. ४०;

२३. १२; २५. १५५.

डरु-डर ३. ६५; ७. ३२, ३४; १५. ४१.

डवँरु-डमरु-शिव की डुगडुगी २२. ५.

डसा-[√दश/दंश; तु० Ohg, zanga;

Ags. tonge; E. tong (दंशन,

फाटना)] १. २६; डसइ का भूत

१०. १३६; १८. ३६.

डहइ-दहति [निष्ठान्त दग्ध; तु० दाह,

निदाघ (-ग्रीष्म) Lat. favilla

-जलते कोयले; Goth. dags; Germ.

täg, E. day (तप्त समय)] १८. ३.

डहन-डयन-डैना पंख ५. ३५; ७. ४५.

डहना-डैना १६. ११; २५. १५६.

डहा-जलाया १५. १७.

डही-तपाई २१. ६४.

डौक-डक्का १. १३२.

डौड-दण्ड २. १४०.

डौडा-डौटा, धमकाया २. १४०.

डाढन-दाहन \*दाढन, \*दाघन (द-ड

P. 222;) तथा \*दाघन; तु०

दागना (जलते पैसे से चीन्हना); म०

दागणें (जलाना); गु० डाघ (श्मशान-

यात्रा); का० दाग; सि० दागण; पं०

दागणा; प्रा० दाघ (JB. 49) तथा

हि० दाक्कना (पैर दोज्मा गया=जल

गया); पं० दज्क, दाक्क; म० दाजणें;

गु० दाक्कुं; सि० डक्कु, डाक्को;

का० दक्कन; प्रा० दज्कह; सं० दक्कते

(JB. 49, 52, 54, 172) २१. ६४.

डाढा-जलाया (तु० प्रा० दाढी=दंष्ट्रा P.

304) १५. १८; २५. ११६.

डाढे-दाहे-जले (P. 222) २२. १४.

डाम-दर्भ-दुर्भ-दाम १. १६४.

डार-दल-डाल-शाखा; "डाली शाखा"

(दे० 139. 10), सि० डार २. २६;

४. ५०; २०. २४, ५७.

डारउँ-डाल दूँ २२. ३०.

डारा-डाल २०. ४१.

डासन-विद्यौना ७. ५२.

डाहि-जला कर २४. १०६.

डिढ-दड-दिड [पा० दल्ह; \*Dhorgh, तु०

Lat. fortis (दड); Lith. dirzas-

strap] ७. ५६; २३. २४.

डीठ-(दृष्ट) देखे १०. १३६; १८. १६.





ढारी-ढाल कर २. ६६; ढलका देती हैं

२. ११०.

ढाहि-ढहा देता है १. ४४.

ढीठ-धट, धट्ट, धिट्ट; हि० धीठ, ढीठ

(अ=इ P. 52; घ, छ=ट्ट 303; ध=ड

223) म० धट, धीट, धट्ट; पं० डट्ट,

डट्टा ( हि० डेटा ); गु० धीट; सि०

दिडही १८. ५६; २३. ८; २५. ८८.

ढीला-शिथिल; प्रा० सडिल, सिडिल; पा०

सिथिल, सथिल; आ० ढिल (सिलोप

P. 119, 150); नै० ढीलो; उ० ढोल;

धं० ढिल, ढल; धि०, हि० ढीला; पू०

हि० ढल; पं० ढीलो; सि० ढरो, ढिरो,

ढिलो; गु० ढीलुं; म० सडळ, ढिला;

सि० हडिल, लिहिल, लील; का०

ढिल, ढल (तु० “ढेली निर्धनः” दे०

142. 11) १५. ६३.

ढीली २५. ८५,

ढीले-बाहर निकले ५. २३.

डुकत-आता (√डौकृ गतौ) ५. ३६.

डुका-गया-छिपा ५. २५.

डूँढा-[√डुयिड अन्नेपणे, डुयडुल्ल; “डंड-

ल्लड् भ्रमति डंडोलड् गवेपयति”

दे० (142. 12) तु० नहर का डंडैल-

दौरा करने वाला पत्तरील; ध्यान दो

दि लूड=हि० लोडना-डूँढना; पं०

लोड=आवश्यकता] १. ७०.

डूँढि-डूँड २२. ७२.

ढेँक-ताल के पधिविशेष २. ७१.

ढोल-प्रसिद्ध वाद्य २०. ५८,

ढोलिनि-ढोलिये की स्त्री २०. ३२.

त.

तँघोल-ताम्बूल-पान २. १०६; १०. ६२.

त-तदा-तह, तो, उस समय २. १२६;

७. ६६; ६. १५; १३. १६; १७.

१०; २२. ६३; २३. १४४; २४.

६५; २५. २१.

तई-तेँ-से [तेँ, तेँ, उतोँ, उताँ; ताँ,

तोँ इत्यादि तरित, उत्तरित से व्यु-

त्पन्न (H. 375)]; १. २४; २. १७३,

१६४; ३. २२, ४६; ८. ११; १०.

८७, ६६, १३८; ११. ७, ३०, ३१;

१२. ४६; १३. १५, ५१; १४. ११;

१६. १७; २०. ६७, ६०; २४. १५५;

तेँ=त्वम् २२. ६८; २४. ८६.

तइस-तादश-पा० तादिस-तव+दश-तद्रूप

१६. २१; २३. १४५, १८४.

तइसइ-तैसे ही २. २; १६. ४८; २३. ५६.

तउ-तव १. १६४, १६५; ५. ८; ७.

६३; ११. ४२; १३. २७; १५. ४०,

५६; १६. २६, ३२; २४. ४२, ५६,

१०३; २५. १२६; तो ४. ४८; ५.

१०, १६; १४. १०, २२; १५. २२;

१८. ४४; २०. १११; २१. २६;

२३. ६८, १२०, १२६.

तडहि<sup>०</sup>—तडी २५. ११६.तडही<sup>०</sup>—तडी १५. ४०.

तडह—तडगा है २४. ०२.

तडह—घोष २३. २१.

तडहि<sup>०</sup>—घोषने है १०. १२२; १२. २६.

तडहि—तडगा है ७. १६.

तडहु—घोषो २४. १२६.

तडा—घोषा १२. १, १६; २२. १२.

तडि—घोष ८. ६२; ११. १८, १२. ६८;

२२. २४; २४. २०, २५. ११.

तडी—घोष ही ११. २६, १२. २६.

तनु—घोषो १२. १०१; २२. २१

तनपन—तडी वया ४. ६१, १२. ६०,

१४. ४, २०. ४१, २२. १, ४६; २३.

४१; २५. ४६. ६०

तन—तनु—तनु—तडी १. २६, २. १०६,

३. ४०; ४. २६, ५. २, २०, १२.

१०; ७. २६, १०. ६, १६. १०.

४४, ४८, ११४, ११५, १२, १४, २६.

४६; १२. १, ११, २०, १४, १०,

६०. १३. १. १५. १०. १८. १. ८.

१६. ४६. २०. २१, २६. ०२, ४२,

१०१, १०६, ११६. २१. ४०, २२.

१४. ००; २३. ६६, ११०, ११६,

२४. १६, ४६. ४१, २५. १०१

तनवीर—[<sup>०</sup>तनु. तन्वी, \*Ton; Lat

tenuis; Obg. dunni, E. thin]

तनुवीर—वतवा वया १०. १४४.

तनतपनि—तनुतपन—तनुतवय—घोषो

वयन १८. ११.

तनु—घोषो; घवे० तनु; पद०, घा० घा०

तन; रि० तन (घ); घा०घे० घवय

(दोषो तन) २१. ४४; २२. १; २३.

१२१; २४. १०६, ११६; २५. २२.

तन—तनु—तनु [√तनु; तु० Lat, tendre

(पडव); tendre (सीधना); Germ.

deinen; देनो तनु—तनु] तनु०

वादा २०. ३२; तनु, तनु वयन में

मारवा घादि की विधि हो २२. ४२;

तनु—तनु २०. ६१; तनु २४. १०.

तनु—[तनु (तनुवादा); तनु, तनु, तनु,

तनु, Lat. teneo, teneo = Lat.]

३. ४८; १२. ८, २८; १३. २०; १४.

४६; २०. १०६; २१. ४६; २२. ४,

१२, २३; २३. १४२.

तनु—[<sup>०</sup>Ton; तु० Lat, teneo (तनुवादा);

teneo, E. teneo = तनु] तनु०

तनु है १. ६०; १८. ११; २५. ६०

तनु—तनु २३. १११.

तनु—तनु—तनु—तनु ४. २६.

तनु—तनु—तनु—तनु ४. ४०.

तनु—तनु—तनु—तनु २०. १०४.

तनु—तनु का मू० १. १०४; २२. १४.

तपता है २३. १२; तपस्वी १. १८३;

२. ४३; ७. ५१; १०. १५; ११.

३७; २५. १, ४, ६, २७, २८, ३३.

तपु-तप (Gn.) १०४.

तपि-तप करके २. १५१; १०. १२०;

२४. २८.

तप्य-तप ११. ४०.

तव-तदा १. १२०; ३. ३, ५४, ६०;

५. ४५, ४८; ७. २५, ४१; ८. ५७;

६. ५५; १०. १३३; १२. १०, ८३;

१३. १६; १८. ५; १६. ३६, ३७,

५८, ७२; २०. १०७, १०८; २१.

१; २२. २२, ४८, ५७, ७२; २३.

४०, ७१, ७६, ७७, १२८, १५६;

२४. ५७, १२०, १२७; २५. २७,

४७, ४६, १०६, १३५.

तवल-तवला १. १७६.

तवहिँ-तव ही ३. ६४; ७. १७.

तवहुँ-तव भी ७. ३६; २३. १२६.

तमचूर-ताम्रचूड-मुर्गा १०. १०१.

तमचूरू-ताम्रचूड ८. १६.

तमोला-ताम्बूल-पान २०. २३.

तंबोलिनि-तंबोलन २०. २६.

तरँग-तरङ्ग (√वृ) २४. ६३.

तरँग-तरङ्ग १०. ४०.

तर-तल-नीचे [व्युत्पत्ति अनिश्चित; तु०

तट, \*Tl तथा तालु; तु० Lat. tellus

(भूतल); tabula-(table-मेज); Oir.

talam (पृथ्वी); Ags. thel (-deal);

Olg. dili-Germ. diele (तस्ता)]

१५. ६, ४५; २०. ५५; २२. ७०;

२३. १०, ४७, ४८.

तरइ-तरति [\*Ter (tr) पार जाना; तु०

Lat. termen, terminus; trans;

Goth. thairh; Ags. thurh; E.

thorough] तरता है १५. १.

तरई-तरति-(स्नान करता है) ४. ३६.

तरकि-तड़ककर (शब्दानुकरण) १०. ७२.

तरवा-तलवा-तलपाद-पादतल १२. ५३.

तरहिँ-तले-नीचे २. १२२.

तरहु-तरोगे १४. १८.

तरा-तरइ का भूत १. ८७; ६. ६, ५०;

१५. ५६.

तराई-तारे १. ७६; २. १५०; १०.

१५६; १६. २० (Gn. तराई); १७.

१६; २०. ६०.

तरापन-तारागण १. ६; ४२. (Gn.

तरायन)

तरासइ-[त्रासयति-डराता है अथवा कत-

रता है; तु० पा० तास=म० तरास

(थकावट); हि० तरस; सि० तर्सु; पं०

तराह, तरास; सि० ताती (-डर);

(पछिमी पं० तर्स, तरस-दया);

स्ति० त्रस-डरना; प्रा० तसइ=सं०

त्रस० Lat. terreo (भीत); terror

\*Terso. \*to से, जिस से व्युत्पन्न है



४. १६; ५. २५; ८. १, १३; ९.  
२४, २६, २६, ३६; १०. १३६; ११.  
१६, २१, २२; १२. ४४; १३. ५२;  
१४. १५; १६. २५, २७; १८. १६;  
१९. १४, १६; २१. ५८, ६०; २३.  
३०, ३१, ६०, ७५, ८७, ९६, १०७,  
११०; २४. २; २५. ६, ४१, ८३,  
१५५, १५६.

तहिअइ—उसी दिन (समय) ५. २०.

ता-तद्-वह १. ३५, ३८, ३६, ४७,  
५३, ६५, ८६, १४३; २. ६, १०,  
१०३, १२०, १२७, १४८; ५. २१,  
५२; ८. २१; ९. ३०; १०. ३०,  
१३६; ११. २६; १२. ७१; १३.  
४६; १५. २२, ४७; १६. ६३, ७०;  
२२. ७, ३१; २३. ८४; २५. २२,  
२४, ३४, ७५, ८४, १०७, १६०.

ताईँ—तावत्; पा० तावत्=तक; हि० तौँ,  
तोँ; म० तैव; सि० तोँ (से),  
तोँयाँ (तक); का० ताम, ताम (तक);  
गु० ताव; अ० तौँ, तौँ इत्यादि  
१. १४६; २. १३५, १५०; ४. १८;  
१०. १५६; १५. ४३; १६. ३१; २३.  
६५; २४. ६१; २५. १४६.

ताऊ—उसका ८. २६.

ताकइ—[√तर्क—तक—ताक, \*Troik=  
फिरना=सोचना (यथा *volvere*,  
*animis* अपने मन में फिराना; तु०

तर्कु—तकुआ; Lat. *torgus*=turn;

Ohg. *drähsil*. (घुमाने वाला);

Germ. *drechseln* (फिरना)]

ताकता है २५. १५६.

ताकहिँ—देखते हैं २४. २.

ताका—देखा ५. ३०; १२. ७३; १५. ४६;

२०. ११३; २१. ५८; २४. २१.

ताकि—देखकर ५. २; ८. ७०.

ताकु—देखो १५. ४.

ताके—(देखने में सु०) २. २६; दीख पड़े  
२५. १६४.

तागा—तन्तु १०. १४१.

तागे—तन्तु २३. १०६.

तात—[वै० तस; पा० तत्, √तप्, ताप-  
यति; अ० तापयेदति; प० तापू-  
तनो; आ० फा० तावद; का० तावून,  
(तु० ताऊन-प्रेग); यलू० तप; कु०  
ताव; हि०, गु० ताव; सि० ताउ;  
म० तावणें; हि० ताव, ताप-तप्प  
(ज्वर); गु०, पं०, यं० ताप; सि०  
तपु; का० तप; स्ति० थय (तद-  
गर्भ) इत्यादि] १०. १०७; १२. ५५.

ताता—तस २१. ५५.

ताती—तस-२३. १०५, १०७.

ताना—तनोसि—तनइ का भूत १०. २५.

तार—ताल, ताड; सि० तल १. १२; २.

३२; तार—तन्तु १०. ६७, १४०;

२३. ७३.

तार-तारे २. १६१; ४. ३८; २१. ३, ३६.

तारामंदर-तारामंडल २०. ११.

तारी-ताड़ी, बुंड़ी १६. ११; २३. १४७.

ताद-ताड १. १८०; २२. ७३.

तारे-नक्षत्र [√तृ-√स्तृ; अदे० स्तारे;

पद० स्तारक; धा० स्तृ० तितारह;

अध० स्तोरह; वन्० अस्तार,

इस्तार; कु० इस्तिक; अस्तये० स्तखि;

Lat. stellā 's'ter-la, Goth. stār

st, Obz. sterro; Germ. stern,

As. sterra, E. star] हि० तारे;

पु० तारो; वि० तार, पं०, बं० तारा;

का० तादक, वि० तद, तुड २. ६६.

ताव-तावा [सं० तव देसो J B p.

318] २. ६३.

तावहि०-तावाही २. ७२.

तावु-तव को १. १६, १८. ७२.

तावु-तव का २. १०; ३. ६, १६, ३४;

६. १३.

तादि-तव का ८. १०. ११. ८, २२.

१०; २३. ११२, ११६, २४. ६३.

तादी-तव २४. ८०

तादु-तवका (की) १०. ११०, तवो (की)

२१. ४१.

निघाई०-धियो के ८. १८.

निघाणी-नघाई-नई (P. ३५०) १. ११०.

निघि-नई दिव ४. १.

निज-नैज नैज (पु० नैजि)-बी० नैज,

सौलिक अर्थ प्रदग्नेन (=blade)

Goth. thaurmus; Ags. thorn; E.

thorn; Germ. Dorn, अथवा विष्ण-

सार्थक [√तृ-√स्तृ से] प्रा० तिष; म०

तष; हि० तिनका, तुनका; सि० तव,

१. ४३.

तिनहि-तृष को १. ४३.

तिनह-(तद) उत २. ४३, ४८, ७३,

१०८, १११, ११२, ११३, ११८,

१६६, १६६; ४. ४८; ७. १३; ८.

१३; १२. ४७; १३. ३६, ६३, ६४;

१६. ४६; २०. ६६; २३. ८, ६६;

२४. १३२; २५. ११.

तिनहि०-उत के २३. ४८.

तिनहु-उत के भी १. १४८.

तिमिर-[\*Tim; पा० तिम्र, तिमिर;

Obz. dimetar तथा finetar, Ags.

thimm; E. dim; तथा तमम् (तम-

निम्), तमिष; अथवा हो तिमि

पा० तेमेनि का \*tem इत मे निज

दे] अथवा १६. ४.

तिरारु-तिरारु [तिर-ति; पा० ति;

अदे० तिम; Lat. tir (स्पुनति

trax>\*trix; पु० trax>\*trix,

trax>\*trix) Lat. tris

trax, Obz. dris] तिगृह; म०

तिगृह १. ११६.

तिरि-ति [Lat. tris, tris; Obz. dris

E. three] १०. १०२.

तिरिआ—खिका—खी; प्रा० पा० इत्थी,  
थी; गाथा इत्थी; प्रा० हि० इत्थी,  
अखी; का० त्सिय (Gn. Pais.  
Lang. P. 79) १२. ४६.

तिल-तिल जैसा चिह्न १०. ५२, ८३,  
८४, ८५, ८६, ८८; १३. ६४; १८. ४.

तिलक-(तिल+क) तिलक, तिलक-टीका  
१०. २१; २५. १००.

तिलंगा-तैलङ्ग देशवासी, पञ्चद्विद में  
एक जाति १२. १०२.

तिसरइ-तृतीय-तीसरा (तिइज्=तिइय,  
तीअ) २०. ७५.

तिसिना-[वृष्णा, √वृप्; तु० Goth.  
thairaus; Ohg. durst; E. drou-  
ght, तथा thirst, \*Ters-शुष्क होना  
अथवा करना से; तु० Lat. torreo  
(भूतना); Goth. gathairsan; Ohg.  
derren इत्यादि] प्रा० तणहा; पा०  
तणहा, तिणहा, तसिणा; पं० तांघ;  
सि० तण; म० तहान, तान्ह; अवे०  
तश्न; प० तिश्न; शि० तिश्न(गी); ग०  
तश्न; यि० तुश्न; हि० तिस, तिरखा;  
पं० तिहा; का० त्रेस; स्वि० तुसा; सि०  
टिह; गु० तरस (तु० हि० तरस-  
दया); सि० तिरस; आ० फा० तिश;  
सरि० तुर (इ); अफ० तरुह; सं०  
वृप्; दोनों प्रकार के रूपों की व्यु-

त्पत्ति एक ही धातु √वृप् से है;  
Gray तिरखा को वृष्णा के साथ  
मिलाते हैं] ५. ३३; ११. ४६.

तीतर-तिस्तर; हि०, गु० तीतर; सि०  
तितिर; पं० तितर ५. ५०; ६. ४८.  
तीनउँ-तीनों [त्रीणि; प्रा० तिणिण; पा०  
तीणि; का० त्रिह; उ० तिनि; वं०  
तिन; वि० तीनि; हि० तीन; पं०  
तिन; सि० टी (ट्रे); गु० तण; म०  
तीन; जि० त्रिन; सि० तुन, तुण]  
२१. ५२.

तीनि-तीन ६. ४०.

तीर-तट १. १४१, १५२; ४. २५, ३३;  
१०. ४०, ५६; १८. २४.

तीरथ-तीर्थ [√वृ-<sup>\*</sup>Ter; तरना-मध्य  
में से जाना; मौलिक अर्थ "नदी में  
से मार्ग"] तिथ २. ४२.

तीरू-तीर-तट [वै० तिरस् <sup>\*</sup>Ter से;  
तु० तरति; मौलिक अर्थ दूसरा तट,  
पार; ध्यान दो तीर्थ पर] सि० तीरू;  
सि० तेर; पं० तिड १५. ५१.

तीचइ-तीव-तिव्व; [पा० तिप्प-तिव्व;  
संभवतः √तिज् <sup>\*</sup>Stig से, तु० Lat.  
instigare; किन्तु बुद्धदत्त के अनुसार  
√तप् के साथ संबद्ध] १०. १४६.

तीस-[त्रिंशत्; पा० तिसण; तु० Lat.  
triginta; Oir. tricha; अवे० त्रि-  
स्तेम]; प्रा० तीसं, तीसा; हि०, म०,



गु० लोम, मि० टीह, प० लीह, का०  
प्रह, मि० तिम, तिह १५. २३,  
१७. १

गु० लम्-ल, लू, धवे० गु-लू ३. ७४,  
२५, २४, १०

गुर्-लू ६. १४, १६; १६. १०, १७.  
६, १८ १०, २२, २३, २३. १२३,  
२५, १४, गुम ११. ४५, १७. २,  
१८ १४, १६, २०. १००

गुगार-[गुगम्-क्रिया, धवे० धग्य,  
गु० लीक्य, लेत्र, (का० लेग), 1st  
sing. कारि] घोषा २. १०२, १०६

गुगारा-गुगार २. १०

गुगाक-गुगार १५. ६६, २५. १६६

गुम-गमः (पा० गुम हगमे मित्र हे)

[गमक्य धम्मन्-पा० कागुम-  
अनाका निरिपी क्त्वर, देखो 01300-  
10/12 11 319] १. १०४  
२. १४१ १४१; ३. ६६ ७०, ४  
४३ ७ ११, ८ ३३ ३६, ६०,  
६६, ४० ०३, ६ ४ ११. १३ ३३  
३४, ३६; १२ १६ ३० १०, ४१,  
४४, ४० १३, १३ १३ १३ १३,  
१३. ४. ११, १० १३ ३३ ३८  
४०, १६. १० ३३, २० २६ ६३,  
६५, ६०, ७३ १३० १३१ १३१,  
१३३, १३६, २३, ६ १३. १६, २१,  
१६, ४६, ६०, ६१, ६४, ७०, ७२,

८७, ६६, ६८, १३८, १६०; २४  
१०२, ११४, १२१, १२३, १२६,  
१३४, १३६, १४५, १४६, १४८,  
१५०, १५१, १५७, १५८, १६१,  
१६०; २५. १६, १४४, १४६

गुम्दहिर्-गुमही २३. ६७

गुम्दर- (गुम्द ले) गुम्दारी २३. १६

गुम्दारी-गुम्दारी २४. ८१.

गुम्दरे-गुम्दारी ही २१. ६१

गुम्दरे-गुम्दारी २२. १७, २३. ८६

गुम्दहि-गुम्द २४. १५१.

गुम्दह-गुम भी २३. ६०

गुम्दार-गुम्दारा [-गुम्दारा, प० रि०  
लोहारा, मोहारा (-गुम्दारा) धारा-  
तहारा ह्यादि 31. 451] १. १०४,  
८. ६६; २३. ६६, २४, १३१, १३६,  
१४७, १५०, २५. १३१

गुम्दार-गुम्दारा ही २५. १६

गुम्दारा ८. ७२

गुम्दारी १२. ४६.

गुम्द-गुमी-गुमी (P 152). गुमा, गुम-  
घेवा ८. ३१, १२, २१, २५. १४

गुम्द-गुम-गुमी २. ४५; २०, ४१

गुम्द-गुम, गुमु (P 302) गुम्द  
की १. १०४

गुम्द-गुम (गु-√ग, ग्वा के ग्वा  
के ग्वा). गुमा-घेवा १०. ३३, १००

गुम्द-गुम की [गुमा-घेवा √गुम]

ऊपर उठना; Lat. *tumeo*, तथा  
*tumulus*; Mir. *tomm* (पर्वत)]

२४. ४६.

तुरंगा-घोड़े २. १६६.

तुलाना-तुल गया, नप गया, पहुँच गया  
[तुल्-उठाना (तोलने के लिये),  
मौलिक अर्थ सहना; वै० तुला; पा०  
तुला, तुलेति; तु० Lat. *tul-i* सहा,  
*tollo* (lift); Goth. *thulan* (शान्ति  
से ले जाना); Germ. *Godul-d* =  
(सहन) E. *thole*-सहना; तुल तथा  
तुला की तुलना के लिये देखो JB.  
P. 348] ५. ४२.

तुलानी-जा छटी २०. ६५.

तुलाने-जा धमके २१. ५०.

तुहीँ-त्वं हि २. ६६.

तूँ-[त्वम्; पा० तुवं, त्वं; Lat. *tu*; Goth.  
*thu*; E. *thou*] हि० तू, तूँ, तुम; पं० तूँ,  
तुसि; म० तुं, तुम्हा, तुहमीं; गु० तूँ,  
तमे; सि० तूँ, तौहिँहिँ; बं० तूँ, तुमि;  
त्सि० तु, तुमेन; सि० तो, तोपि;  
का० चह, तोहि; प्रा० तुमं; तुज्मं,  
तुहे; सं० त्वम्, तुभ्यम् (युष्मद् से;  
JB. p. 348) ३. ७६; ५. ६, ७,  
४०; ७. १६; ८. ५६; १६. ६, १६;  
१८. २५; १६. ४१; २०. १०८;  
२१. २७; २२. ६०, ७५, ७७; २३.  
११२, १२६, १३०; २४. १६, ८४,

८५, ८७, ८८; २५. ५५, ५६, ८०,  
१३०, १५१.

तूत-शहतूत २. ७८.

तूर-तूर्य-तुरही २०. ५८.

तूरू-तूर्य, व्युत्पत्ति अनिश्चित; तूर, तूरिय;  
पा० तुरिय; उ० तुरी; बं० तुरम;  
हि० तूरी, तुरही; पं० तुरम; सि०,  
गु० तुरी; जै० प्रा० तुदिय; पा०  
तुदिय; [तु० तुदति=बजाना \**Stoud*,  
\**Stou* का दीर्घ रूप; तु० Lat.  
*tundo*, *tudes* (घन); Goth. *stau-*  
*tan*; Ohg. *stozen* (धक्का देना); E.  
*stutter*; Nhg. *stutzen*; Ags. *styn-*  
*tan*=E. *stunt*] २५. ५.

तूही-त्वमेव २. ३४.

तेँ-से १६. १२; २५. १६०.

ते-(तव) वे १२. ८८; २१. १०, १२,  
१३, ३२; २३. ६४; २५. ११०,  
११६, १७६.

तेईं-तेन-उसने २२. १४, ६६.

तेईं तिस-त्रयस्त्रिंशत्-तेँ तीस २५. १०२.

तेइ-तेन-तिसने-उसने १. १७, १३७;  
१५७, १८४; ४. ४६; १३. २६;  
२१. ६१; २४. ३७; वे ७. ३५;  
उसकी १०. १२८; उस २३. ६५.

तेल-तैल (तिल) प्रा० तेल्ल, तेल; गु० हि०,  
पं०, बं०, त्सि० तेल; सि० तेल्ल; का०  
तील; सि० तेल ४. ४८; १५. ३२.

तेलहि-नेखके ४. ४८.

तेलनि-नेखन-नेखी की खी २०. ३०.

तेयदाक-पर्व-पौहार २०. ३४.

तेमरि-तूनीया-नीमरी २२. ४०.

तेहिं-तेराय-उनका २. ६२, ७२.

तेहि-विम-उम १. २, ७, ८, ११, १८,

१६, २७, ४२, ८०, ८२, ६६, १०२,

१४६, १४६, १६२, ११८, १७६,

१८२, १८४; २. २०, ८८, १२०,

१३६, १३७, १४१, १८८, १६८;

३. ३, ४, २२, ४२, ४८, ६३, ६८,

७६, ४. ४१; ५. २१, २४, ४६,

४७; ६. ३; ७. १०, २४, ४२,

६४; ८. १०, २२, ४६, ६६, ६०,

६१; ९. ११, १४, १८, ३२; १०.

१४, २१, २४, ४०, ६७, ६६, ८१,

८७, ६१, ६६, १०२, १०८, ११२,

११७, ११८, ११९, १४८, १६२;

११. ११, २४, ३२, ६२, ११, १४,

१६, ८०; १३. ४, ८, १, १४, २२,

३६, ४१, ४८, ६१; १४. ७, १२,

१०; १५. ३, ११, १६, २१, २६,

२४, ३१, ३४, ४२, ६३, ६, १४,

२०; १६. ४, ६, १, ४, ८, १८,

२४, ६६, १, ११, १६, ४६, ४८;

२०, २४, १०१, १०८, ११६, २६,

६, ११, १३, ३२, ३८, ४२, ४६,

६१; २३. ३३, ३७, ४६, ६०, ७०;

२३. ४, १८, ४०, ६७, ८८, ६४,

१०३, ११२, १२०, १२३, १४८,

१८२; २४. ११८, १२३, १३४,

१३६; २५. १६, ४६, ६६, ८८,

१२८, १३२, १६३, १६४, ११०.

तेही-उसी २३. ३२; २४. २७, १११.

तेहु-उसमे भी २. १०; ५. १६.

तेहु-उसमे भी १. १२२.

तो-मो १. ६३; ३. ६४; ७. २१; ८.

४१, ४४; ११. १६; १७. ११; १८.

२७; २२. २२; २३. १३, १४, ४१,

११३, १२२, १४४, १६७; २४. १४७,

१६०; २५. ४६, ६३; तब-मुके २५.

६४, ११४.

तोर-मेरा ८. ६, ३७; २५. १४६.

तोर-मेरी ही ११. ४४; २५. ६६, ६४.

तोरा-मेरा १८. १४, २७; २६. २७.

तोरा-मेरी १७. ७; २६. २४; २७. ६६.

तोरी-मेरी ८. ७.

तोहि-मुके ३. ४१; ५. ७; ७. १४, ८.

७; १७. ४; २२. ६, २४, ६४.

७०; २३. १३८, १४६; २४. १०.

तेरा २२. २४; २४. ८०; तेरी ७.

२१; १६. ११, २६; १८. २३; २३.

२४; २३. २०, १११; तेरी ३. ७६,

७४; २४. १२८; मुकमे २३, ११०.

तोही-मुके १८. १२.

त्रागहि-त्राग-त्राग-त्रा ३. ४१.

थ.

थाका—[सं० स्थगयति; पा० थकेति \*Stog  
=ढकना; तु० Lat. *togo*, *tegula* (E.  
*tile*), *toga*; Oir. *teoh* (घर); Ohg.  
*decchu* (ढकना); *dah* (छप्पर); लास-  
शिक अर्थे मार्ग तथा कार्य को ढकना  
(—पूरा करना, पूरा करके ढकना);  
तु० पा० थकेति; डक्कह (म०, जै० म०;  
शौ०, मा०); थक्किस्तति जै० म०;  
P. 309] थका २. १२७; ५. ३०;  
१२. ८६; १५. ६७.

थार—स्याली—थाल [स्याल; थल=स्थल—  
चौरस स्थान, √स्था से; तु० Ags.  
*steal* (स्थान); पा० थंडिल; थाल=  
चौरस पात्र P. 310; Gray. 362;  
J.B. 350] म० थाळा; तु० थाळो; सि०  
थालु, थालहु; सि० तलि १०. ११३.

थाह—[√स्तम्भ; पा० थंभ=आधरण,  
दृढीकरण; तु० अवे० स्तम्भ (ठहरा  
हुआ, दृढ); Goth. *stafs*; Ags. *staef*;  
E. *staff*; Ohg. *stab*; तु० थंभा, खंभा;  
ध्यान दो थाह=थह=थग्ध; अथाह=  
अत्यग्ध \*स्ताघ्य, \*अस्ताघ्य; तु०  
उत्थंघह, उत्थंघिय (√स्तम्भ),  
\*उत्स्तप्नोति (P. BB. 15. 122  
ff); स्तघ=थह=ठह; पा० ठहति  
(=तिष्ठति); ठह=स्तग्ध (\*स्तघ);

ठाढा=खड़ा है; ठाढा आदमी=विशाल  
पुरुष (P. 333, 88, 505:)] भूमितल,  
गहराई २४. ६५.

थाहा—थाह १३. ३३; २३. १७०.

थिर—[वै० स्थिर=कठोर, दृढ, √स्था=  
\*Stor (stā)=खड़ा होना, दृढ  
बनना; तु० Lat. *sterilis* (E.=sto-  
rilo=सं० स्तरी=हि० तह) Ohg.  
*storrēn*; Ngh. *starr* तथा *starren*;  
E. *stare*; तथा Lat. *strenuus*; E.  
*strenuous*; ध्यान दो हि० धुण,  
धुणा, धूणा (थम्भ, √स्था से;  
तु० थावर=धूरा-धूला) "ण" के  
लिये देखो सं० तुला, तुणी \*Tūm]  
स्थिर; म० थीर; सि० थिर; सि०  
तर, तिर; हि० थिर (तु० ठिर=  
ठपटक) १. १५०; २. १४१, १७५;  
१०. २३, ६०; १२. ८६; १६. ४५;  
२५. १५६.

थिरु—स्थिर १६. ११; २३. ११५.

थीरा—स्थिर १५. १०.

थोर—[सं० स्तोक (=थोड़ा P. 90) तु०  
स्थान, स्थायते (कठोर होना) का  
निष्ठान्त प्रयोग—\*Stoia (तु० थिर);  
Lat. *stitho* (दाबना); सं० स्तिमित  
(निश्चेष्ट)—पा० तिमि; Mgh. *stīm*;  
Goth. *stains*=E. *stone*; Lat.  
*stithes*. (पीला) Ohg. *stif*=E.

संज्ञा-संज्ञा] ७. २; १२. २२.

घोर-घोर से २४. २.

घोर-घोर; स० घोर, गु० घोर; ति०

घोरो; (गु० वि० टिक=घोरा) ७. २.

द.

दंडन-दंडन १७. १.

दंड-दंड-दंड २. १; दी २३. १०२.

दंड-दंड ७. १०; १३. ४०; १६. १६;

२०. १, १११; २५. १९, ७२.

दंड-दंड (दंड से दंड) २५. १०२.

दंड-दंड २२. १०.

दंड-दंड को ६. ६.

दंड-दंड (गुणन) १. ०२; दंड १. ००,

१११, ११६, ११६; २. ४०; ३. १०,

१६, १०; ८. ११.

दंड-दंड [√दंड, दंड; स० दंड, दंड,

दीर्घ/वि० दंड, दंड] ७. ४६.

दंड-दंड का २३. ११.

दंड-दंड १. ११.

दंड-दंड [दंड दंड, दंड-

दंड, दंड-दंड दंड दंड-दंड

मे, दंड-दंड-दंड, गु० दंड

"दंड" मे, दंड-दंड "दंड" मे, Lat.

दंड (d'and), दंड मे, दंड-दंड

से दंड-दंड है Lat. d'and (d'and

'दंड' जेमे दंड-दंड-दंड-दंड) G. d'and

दंड-दंड (सीधा दंड); Obg. d'and

दंड-दंड; दंड-दंड दंड, दंड-दंड

दंड-दंड है, दंड-दंड दंड है, गु०

दंड-दंड-दंड-दंड-दंड दंड-दंड-दंड;

दंड-दंड Lat. d'and (दंड, दंड-दंड)

० D'and, दंड-दंड: √दंड-दंड D'and का

दंड-दंड √दंड के दंड-दंड से दंड

है, दंड का दंड "दंड-दंड" है; दंड

दंड मे "दंड" का दंड-दंड दंड

"दंड-दंड दंड" "सीधा दंड"

दंड-दंड दंड से दंड-दंड दंड

दंड-दंड] १२. १०२.

दंड-दंड (I. 222) १६. १०; १८. ३;

दंड १६. ४६; २४. १०२, १११.

दंड-दंड का १६. १०; १८. २१.

दंड-दंड दंड १३. २४.

दंड-दंड [√दंड-दंड का दंड-दंड

दंड-दंड गु० दंड-दंड; दंड-दंड]

१६. ४१; २३. १४; १६. १६, १०,

१०, १६, २४.

दंड-दंड (दंड-दंड I. 221) १. १२;

दंड-दंड-दंड [दंड; Ag. d'and

दंड-दंड; Obg. d'and (दंड-दंड-दंड

मे दंड है, दंड-दंड दंड है); गु०

d'and, Obg. d'and (दंड); G. d'and

d'and-Obg. d'and-Obg.

tamian; E. tame, \*Domā = सं०

दम=घर; तु० दम्पति=गृहपति  
२१. १५.

दयाल-[वै० √दय; दयते-विभाजित  
करता है \*दा] १७. ५. ६.

दर-दल [\*Dol=फाड़ना, देलो डर] सेना  
२. ११, १७६; १२. ३२; २४. १०,  
११; २५. १०८; दरी (√द, तु०  
छि दलेव=फाड़ना)=वाँटी २४. १८.

दरकि-फटकर १०. ७२.

दरपन-दर्पण-दम्पण १. १६८; ४. ६३;  
८. ३; २२. ६०.

दरव-द्रव्य, दविश, दव्य=धन [√हु-  
द्रविण; तु० द्रा, दारु, हु, हुम, दरपत  
आदि] १. २०; १३. ४८; १५. १०,  
११, १२, १३, १४, १५.

दरवार-(द्वार) दरवार १. १२८, १३२.

दरस-दर्शन-दरिस (√दृश्) १. १२८;  
१२. ७८; १६. २६, ३३; १७. ७;  
१८. १३; १६. ३१; २१. २०.

दरसइ-दर्शन करे १. १५१.

दरसे-दर्शन करने से ४. ५८.

दरसन-दर्शन, दरसन, दंसन; सि० दरसण  
१. १२३; २. ६६; ८. ३; १५. ६२;

१६. ३४; १७. ३; २३. ८६; २४.  
५६, १४६; २५. ३४.

दवइ-[√दु=हुं; तु० दव=द्रव \*Dron  
तथा \*Drā (दरिद्र. में) √Drām]

दवामि-जंगल की आग २४. ६२.

दवाँ-दव २१. ७.

दस-दश [Lat. decem; Goth. taihun;  
Ags. tien; Ohg. Zehan; \*dokm=  
dv+km "दो हाथ" का समस्त  
प्रयोग] प्रा० दह, दस; पा० दस; का०  
दह; उ०, वं० दश, दस; पं० दह, दस;  
सि० दह; गु०, हिं० दस; म० दहा;  
सि० दहय, दस; जि० देश आदि १.  
१२५, १३५; ३. ६; ५. २२, २५;  
८. १, २२; १०. ८५; ११. १६,  
४५; १२. ६४, ८८; १३. ३; १४. १६;  
१६. २४; २०. १२; २५. ६६, ७१.

दसउँ-दशम २. १३७; ११. ७; २२.  
६८, ७३.

दसउँधी-दशधी-भाटों की एक जाति राय  
है और दूसरी दसौंधी २५. ४८, ४६.

दसएँ-दसों २०. ६३.

दसगुन-दशगुण १३. ५१.

दसन-दशन-(√दंश्) दाँत १. ६६; २.  
६३; ३. ४६; ४. ३०, ६४; १०. ५४,  
६५, ७२; १५. ७७; २१. १७; २५.  
६, १६४.

दसनजोति-दशनज्योतिः १०. ६८.

दस्तगीर-हाथ पकड़ने वाला (दस्त-  
हस्त; गीर-ग्रह-प्रभ) १. १४३.

दसा-दशा २. ८६; ४. ६०; ११. ५३;  
तेज ४. २८; गति २५. ३२.

दहर-दरि-जखाता है १८. १३; २३. ४८.

दहत-दहन १६. १.

दहदि-जखाने हैं २३. १९.

ददा-जखाया २२. ११.

दहिउ-दधि, दहि; पं०, गु०, म० दही;

मं० दही; मि० ही १२. ७३, ७४.

दहितर-दधिये-राहिने दाध १२. ७९.

७१, ६३, २०२.

दहिनावरन-दधियावरन (मुष्पा० ग्रन्थ-विद्या) १२. १०४.

दहीदही-दधि दधि २. ३८.

दहै-दुहुं=दधोहि-दो मे से एक=वया जने

३. १६; ४. १६; ४. १६; ७. २०,

१४. ११; ८. ७; ९. ८, १२; १०.

१३, २२, १०३, ११२, ११२, १४०,

१२०, १२०; १२. २६, ६३, ६६;

१६. १६, १०; २०. ६३; २१. ३८,

४०; २२. १४; २३. ३०, १०४; २४.

११, १२.

दहु-दह-दम-दमा-दगा-माग १६. १.

दाँन-[रान, दिनीका दहु० दन, पटी

दण=Lat. *dant*/D=Lat. *dentem*,

Old. *dt*, Goth. *tanthas*, Obz.

*Zood*, Germ. *Zahn*, Ag. *tan*,

E. *teeth* तथा Ag. *tan* E. *teeth*,

दं=दह करने में  $\sqrt{\text{दह}}=^{\circ}\text{Ed}$  (जखाया

कारण) में गुणवत्, गु०=कति, दण]

दि०, गु० दंन, मि० दह, पं० दंन.

दंद; का०, मि० दंद; मि० दंत; मं०

दंतन; पद०, का० दंदान; का० दुंदुह;

शि०, सदि० दंदान; बलू० दंदान,

कु० दिदान; ट०, मोस्मे० दंदग; मि

दुनान इत्यादि २३. ४८.

दाघ-दाघा २. ७६; ३. १४; १०. ११३;

१४. १६; २०. ४३; २४. १३०.

दाघा-दाघा ४. ३६.

दाग-[ $\sqrt{\text{दाघ}}=\sqrt{\text{दह}}$ ] निगान २१. १०.

दागि-दाघा-जखा कर २१. ११.

दागे-जकाये २१. ११.

दाता-दात ( $\sqrt{\text{दा}}$ ) १७. ९; २०. ७६.

दानार-दान १. १२६.

दादुर-दुंदुर-दददुर-मे दह १. १६३.

दाया-दाय-दद=दाय-दाह-जखन

(मं०=दमदह-जखाता है) १८. १४;

जखाया २२. १४.

दाये-नपाने में २३. १४.

दान-[ $\sqrt{\text{दे}}=\text{दान}$   $\sqrt{\text{दा}}$ ; जेने ददगि, ददि,

दादि-विसर्जन में; जसने मिमजन,

निराण; गु० Lat. *dannum* (E. *dannum*)

Lat. *dannum*; Ag. *dal*

(=E. *dale*=समय का भाग) तथा

*time* (E. *time*); प्यान हो ददगी

तथा ददो वर] दान देना १. ११६,

११२, ११२, ११६, १७१; २. १४८,

१३. ४८; २४. ७६.

दानउ-दानव (दान का गुण) २४. ११६.

दानि-दानी (Lat. *donum*-दात) १. १३६.

दानिआल-एक मुसलिम तख्तेचा

१. १५७.

दानी-दान देने वाला १. १३०.

दामवती-दमयन्ती २४. १२७.

दारिउँ-दाडिम-अनार; प्रा० डालिम;

पा० दालिम; सि० डारहूँ २. ७६; ३.

६४; ४. ३६; १०. ५४, ७२, ११६;

२०. ४३.

दारिद-दारिद्र्य (√द्रा-भागना का  
अभ्यास) ६. १३३.

दारिदसोआ-दारिद्र्यचोदक २२. ५८.

दारुन-[दारुण-दारुन=वृक्ष की तरह  
कठोर; तु० Lat. *dūrus*; Oir. *dron*  
(स्थिर); Mir. *dur* (कठोर); Ags.

*trum*; ध्यान दो हु, हुम, दारु, द्रोण

\**Dareuos*=द्वैत] ४. १५; २४. ६२.

दाविँनि-दामिनी, विद्युत् १०. ११, ६६, ७१.

दाविँनी-दामिनी ४. ३०.

दासु-[√दस्-क्रेण सहना; मौलिक अर्थ  
अनार्य; अवे० दाह-एक सीथियन  
जाति; तु० दस्यु] सि० दासु; सि०  
दस १. १६.

दाहव-जलावंगी २०. ३६.

दाहि-जलाकर २३. ११२.

दाहिन-दक्षिण; प्रा० दक्खिण (P. 323)

दाहिण; पा० दक्खिण; का० दक्षन,

दक्षुयु; उ० दाहण; यं० डाईन; पू०

हि० दक्षिन; हि० दखिन, दक्खन,  
(दाहिना); पं० दक्खन; सि० दाखियो  
दकुणं; म० डाखीण १२. ७७; २५. ८८.

दिआ-दीपक-दीवद्य-दीआ ३. ३, ८;

१०. १०; १५. ३८; २०. ७०, १११;

२४. ५६; दत्त ३. २०; १३. ५०,

५४, ५५. ५६; दीपक और दत्त १३.

५१, ५२, ५३.

दिआरहिँ-दिवाकर से-सूर्य की चमक  
से-मृगतृण्या से २०. ७१.

दिआरा-दीपाकार-दीपक जैसा उज्ज्वल  
(P. 150) १६. १८.

दिपउँ-वर्णन किया (दिया) १०. १६.

दिपउ-देने पर भी ११. ३५.

दिन-दिवस १. ६, ३४, ५५, १२७; २.

१६०, १६७, १६०; ३. ६, ११,

१३, ५०; ४. ११, ४०; ५. ११,

२५. ५२; ८. १, २४, ३६; १०.

६८; १२. ६, १०, १२, १४, २८;

१३. १; १५. ७२; १६. ३६, ४०;

१८. ४६; १९. ४८; २०. ८०, १२६;

२३. ४६, ८०; २४. ३६, ५०, ६२,

१०१, ११७; २५. १४०.

दिनहिँ-दिन ही में २. ६६, ७२; ४.

२८; २४. १६.

दिनहिँ-(दिनहिँ) दिनको ८. १४.

दिनिआर-दिनकर १. ६.

दिपइ-दीप्यते (दीप्-दीव्-दिप्) चमकता





तु० दीवट-दीपकाधान) पं० दीआ;  
सि० दिवु १. १३८; २. १६०; ३. ७;  
१४. २२; २३. १३६, १७४; दीपक  
और दत्त १३. ४६.

दीखइ-दृश्यते (√दृश्) २. ६१.

दीजिअ-दीजिये ५. ५६; ११. २७; १३.  
१२; १६. ३६; १८. २८; २४. २६,  
१११; २५. १२८.

दीजिअइ-दीजिये २५. १३६.

दीठि-दृष्टि-दिष्टि २३. ६६; २५. ४६.

दीन-अवे० दणना; पह० दीन; आ० फा०  
दीन=सत्यधर्म १. ६०, ६१, १५५.

दीन्ह-दिया १. १, १७, ३२, ४०, ५६,  
१०२, १०४, १३७, १४६, १५४,  
१६२; ३. २६, ३४, ३८, ७३; ६.  
८; ७. ५७; ८. ४, २४, ३५, ५७,  
६५; ९. ४२; १०. ६६, १०३; ११.  
३५; १२. ४०, ४१, ४७; १३. ४८,  
५८, ६०; १५. ३७, ५७; १६. ११;  
१६. १६; २०. ८; २२. २१, ५१;  
२३. २, ५६, ५८, १०१, १५४; २४.  
३२, ३६, ७५; २५. ३६, ५३, ५७,  
१११. १५०.

दीन्हा-[ददाति का भूत √दा का  
अभ्यास, यथा Lat. *do*; *dū*-*dī* भूत-  
काल] दिया १. ८३, १२६, १३५;  
७. ६५; ८. ३४; ९. ४७; १८. ३८;  
२०. १००; २३. ६०, १५६; २४. ४१.

दीन्ही-दी ३. ३५; २३. ४, ५४.

दीन्हे-दिये २०. २५; २३. ११.

दीन्हेसि-दिया १. ६५, ६६; २३. १४६, १६३.

दीप-द्वीप [द्वि+अप-दो पानियों के  
मध्य] १. ५, १००; २. ३, ४, ८, १७,  
१६६; ३. ३१; ७. ४; ९. २४; १२.  
६६; १३. ८, ११; २५. १५७; दीपक  
२. ७२; १०. ८६, ६२; ११. ५१;  
१५. ४०; १६. ७; १८. ८; २१. ३८;  
२३. १०५; द्वीप और दीप ६. १८,  
२०, ३०.

दीपक-[वि० दीप्, दीप्यते; Idg. \**Doiā*-  
चमकना; तु० देव, दिव्य, पुति आदि]  
१. ८३, १४६; २. ३, १६६; ३.  
२४; २०. ७२; २३. ११६, १४०.

दीपकुँभसथल-सुन्दरी का पयोधररूपी  
द्वीप २. ७.

दीपमहुसथल-सुन्दरी का गुलामरूपी  
द्वीप २. ७.

दीसा-दिस्ता-देखा १. १२३; २. १२६;  
८. ५४; २५. ७५.

दीसी-अदाशें, (दृश्यते-दीसइ; दृश्-  
दिस्) तु० म० दिसयें; हि; सि०,  
गु०, उ० दिस; सि० डिस; पं०  
डिस्स-दिस्स; का० डेश-; १०. ६६.

दीही-देहरी-देंगी ४. १५.

दीही-देहरी-देगा ४. १८.

दुअउ-द्वौ; दि; दो १. १४८; ३. ४०;

४. २२; १०. ८१; १३. ४२; २२.

११, १६; २४. १२६.

दुमादम—दादय ६. १२; १०. १६.

दुमार—[वि० दार तथा दार, √ण्ट=

•Dhār; गु० घरे० दारेण्; Lat.

ores (दार), furum, Gath. dār,

Ohz. tūri, Germ. tur, Ags. dōr

= 1. dōr]; घ० मा०, यौ० दुवार

(गृण्य० ३७ ३), दुवारय (गृण्य०

८ ६, P. 132); मि० दह, म० दार;

का० दार, दार; मि० दोर; मा० पा०

दुवारा; पद०, मा० पा० दार, ग०,

का० दार; का० दार; मि० दिवार;

मति० दिवा; घट० दार, कु० दार;

सोमे० दार २२. १८, ७)

दुमाग—दार २. ११०, १६. ४२, २३. १०६.

दुमारी—दार २२. ७

दुर—[वि० दि, दी, दे; गु० म० द्विगु में

दि = Lat. dupes (duplicare); Ags.

twiſe, म० द्विगु = bulans, (गु०

Gath. twis = द्विगु, Ohz. twak

= मग्न) घन्य से "दि" के बहुवचन

वा, Lat. duplex, dūbus पर्युक्त

म० दार, दार = Lat. dūr (dūr

di-ā, di, Gath. dūr, Ags. dūr,

1. dūr, Ohz. dūr, mō, म०

दूरण = Lat. dūrionem; मि० दिने =

दि, दि = दि] से १. २६, १०६;

२. १४६; ३. ११; ४. २१; ७. २८,

१०, ४६, ४६; ८. २२; ९. १, २०;

१०. ४०, ४२, ८६, ८२, १०६,

११४, ११७, १४०; १६. १६; १८

१४; २२. ४०; २३. ८, ६, १२२;

२४. ७०.

दुरज—द्वितीया(दोपत्रका चौद); दि० दंड, द

दोपत्र, दंड; द्वितीय=वि० दूमा; म०

दुमा; गु० बीजो (यथा दार-दार);

मि० बीजो, विद्यो; का० विद्य; मा०

दुरध, दुध; विरध, विरज, घरे०

विद्य; मा० पद० दुविनिय, पद०

दिनीगर; का० दीगर १०. १७, २१.

दुरजदि—दंड के चौद में १०. १७.

दुपल—दुल २. २; १६. ८.

दुपल—दुपल २१. १४.

दुपल—दुल [दुल में; गुल के घाघार वा,

दुल = घाघार] १. २२, ७१; २.

२२, १२६; ४. १६, २१; ७. ४; ९.

४१, २१, २२; ११. २, २२; १२.

१४, १८, २१; १३. २७; १४. १२;

१६. ३, १, ४, २१, ४७, ४८; २०.

४, ८०, १११; २२. १०, १२, २१;

२३. ११, ७१, ७२, १०४; २४. ११.

१४, २२, ११६, १२०.

दुपलदिन—नरिजतदुल ८. ४१.

दुपलदंड—उपल १३. ४१.

दुपलपद—दुःखपद = दुःखल १. १११.

दुःखी-दुःखी १. ७१; २३. ६२, ६६; २४. १३८.

दुनिआई<sup>०</sup>-संसार में १. ७६, ११५.

दुनिआई-संसार २३. ६५.

दुनी-दुनिया १. १००.

दुंदु-दुन्दुभि [शब्दानुकरण, यथा ददभि,  
दुदुभि, ददुर] २०. ५८.

दुपहरी-दोपहर का पुष्प १०. ५८.

दुरजन-दुर्जन-दुजण ३. ५६.

दुरुपदी-द्रौपदी (P. 132) २. १४५;  
२३. १४४.

दुलारी-दुलरुई-मां चाप की लाइली ५. १.

दुहँ- (देखो दहँ) १. ८७, ८६, १४६, १५०;  
१०. ४१, ५५, ६०, ६१, १४०; १२.

६५; १३. ५७; १६. २४; २०. १२५.

दुहँ-दुहँ १. ६५, १५०; ६. १६; १०.

६२, ६४, १२४; १३. ५५; २३. ४६.

दुहेला-दुर्भंग; “दुहेलो दुर्भंगः” (दे०

172. 16) हि० दुहेला, दुहेला, दहेला

(कठिन, म० दुही, दुई = अग्रसादक);

सि० दुहिल; तु० “दुहमसुखम्”

(दे० 172. 9) ६. ५०; १८. ३०;

२१. ६; २४. ७१.

दुहेली-कठिन २४. ११४.

दुअउ-दोनों ही १२. ६६.

दुइज-द्वितीया-दुइज-दोयज (का चौद)

३. १४, ४३.

दूखन-दूषण = दोष २१. ४३.

दूखा-दुखा २५. १७२.

दूजा-दुइअ, दुइय; विइअ, विइय (P.

82, 165) १०. ७१; २०. ३७, ७५;

२१. ३०; २२. १८; २३. २०; २४.

५०; २५. १३०.

दूजे-द्वितीय २३. ५८.

दूत-[√दू=दूर जाना; Lat. *dudum*]

२४. ५८.

दूध-दुग्ध अवे० दुघध, बि० दूध; पं०

दुद्ध, दूध; सि० डोधि; घं० दुध; का०

दोद; सि० दुदु [√दुह; छि दूच;

दूची=दुहना] १. ११८.

दून-द्विगुण; दिउण; दुउण; दुगना, दूना;

म० दुणा; सि० द्रुण; पं० दूणा; घं०

दुणा; सि० दियुण (P. 298, 300)

७. २४.

दूनउ-दोनों १. ११७.

दूना-द्विगुण १६. ५.

दूवर-दुर्वल-दुब्बल (P. 287); घं० दुवला;

बि० दुवरा, दूवर; सि० डुबिरो,

रचलो; गु० दुबल १. ११६.

दूर-[वै० दुच (चोदक, प्रेरक), दवीयान्;

अवे० दूरो (दूर), \*Dāu; तु० Ohg.

zarcen; Goth. *taujan*=E. *do*;

दूसरा रूप है \*Dauā (दूर, समय

की दृष्टि से) यथा Lat. *dū-dum*

(तु० *dūraro*=*en-dūro*) ध्यान दो

दूत तथा पा० दुतिय पर] का० दूर;

ग० दीर; वा० थीर; अफ० लीरि,



gatarhjan—स्पष्ट करना; पा० के दक्खिति, दक्खति, तथा उद्दक्खि, सं० अद्राचीत् के आधार पर बने हैं। इसके विपरीत दस्सति, सं० दर्शयति \*Dors के आधार पर बना है। तु० हि० दीसद् तथा देखद्। “दक्खद् तथा देखद् \*दृच्छति, धातु से जो ईदृच्, कौदृच्, तथा तादृच् में पाया जाता है” P. 66, 554; देखो Pali Diet. दस्सति पर] २. १७७; ५. १; ६. ५४; १०. ८३; १२. ३६; २०. ६६; २१. ८; देखता हूँ ७. १२; देखता है ७. १६; देखती है ७. ५३.

देखद्—(तु० देहद्—देक्खद्—\*दक्खद्—\*दृच्छति P. 66, 554) देखता है १२. १०; १३. ४२; १६. ४३; २५. १२१; देखने १. ६७, १६०; १०. १३५; २०. ६६; २५. २८; देखता है १६. ३४. देखऊँ—देखूँ ३. ५५; ७. २८; ८. ७; ६. ४०; १६. ५०, ५६; २०. ६७; २२. १७; देखता हूँ २४. ४०.

देखत—देखते १०. ८७; १५. १७, ४१; २०. १२८; २५. ११२.

देखन—देखने २५. ३१.

देखराई—दिखलाई १०. १११; १२. ७८.

देखरावा—देखने में आया १४. ४; १५. ३३.

देखसि—देखता है २२. २६.

देखहिँ—देखते हैं ६. ३; २३. ३; २५. २६.

देखा १. ६१, १२६, १८४; २. २, ३०, १६१; ३. ७०; ४. ६२; ५. २८; ७. ३२; ८. ४६; ९. २४, ५४; १०. १०२, १३४; १२. १०, ६७; १३. २६, ४५, ५७; १६. ४; २२. ७३; २३. १५०; २४. ४६.

देखहु ५. २७; २०. ८६; २३. ८; २५. १०६.

देखाइ—दिखा कर २३. ६१.

देखाउ—देखाता है=दीख पढ़ता है १६. ८.

देखावद्—दीखता है २. २१; ३. ७.

देखावसि—दिखलाते हो १६. २७.

देखावहु—दिखाओ २४. १२८.

देखावा—दीख पढ़ा ४. २६; २४. ६३;

दिखाया २५. १५०.

देखि—देखकर २. ३३, ५६, ७६, १२४,

१३२, १८१, १६१; ३. ४५, ४७,

६४; ४. १०, ६२; ५. २६, ३१; ६.

३; ७. ५; ८. ३; १०. १८, ५०,

५४, ५६, ६३, ८८, १२४, १५३;

१२. २७, ४०; १३. ४३, ५१; १५.

१०, ४८, ७४; १६. १७; १६. २२;

२०. ६६, ८५; २१. ३६; २३. ३१,

७१, १२४; २४. ३, १७, २६, ६६,

१५४; २५. २, ५, १२, ३२, ४२,

४३, ५३, १६६.

देखिअइ—देखी जाती है २५. ३२.

देखिहइ—देखोगे १४. १०.

देखी—देखइ का भू० २. ६७; ४. ६४;

१. १२, २६; १०. १२, १२२; २५.

११, १११.

देगु-देग-देगो २. ८६; ४. ११; ७.

२; ८. २१; १२. ८६; १६. १७,

२२; १८. ११; २२. ६२; २३. १०६.

२५. ६६; देगना है १. ४४; ४.

१७; २३. ११४.

देगो-देग-देग का मूल २. १०६; १०. १२८;

१५. ११.

देगोई-देगा २०. १२१; २५. १२७, १२८.

देगोमि-देगे देगा ८. २६; २०. १०२,

२३. १२४.

देगोन्दि-देगा-देग-का ("दीदी की

मंगल में प्रवृत्ति-गरवति") भू० में

बहुवचन १२. ६०.

देग-देगे १. ४०; २. १०१; १०. १११,

१४१, २५. ८६; देगा है ११. २६.

देग-देगा-देगा-का ५. १०.

देग-देगे २५. १६४, २५. ४१.

देग-देगे ७. १४.

देग-देगे ७. १२.

देगी-देगी २. ४६.

देग-[दे० देग=Dag=बनचना, मूल-

का में मिलोप=De-ga=दिग=

काका-काका; दु० देगे=देगो

(देग, देग-; Lat. daga, Lith

dagar, Ojz. dā, Ags. dag, यह

There (=Tuesday) O. S. dā

(देग); भारतीय पैपाकास देग की

धुपति दिग्=दीर्घपंक्त से मानते

हैं] दि०, गु०, म० देग; मि०, पं०

देग; पू० दि० देगो; बं०, उ० दे;

का० दिग् १. ११; १७. १.

देगा-देग ७. २२; १७. ४, ११; २०.

७६, ८१, ८६; २१. २३.

देस-देस (गु० दिग्=दिगाना) ३. ११;

१६. १०; २०. ६०; २३. ७.

देसा-देस २. १०२; ३. २१.

देसु-देस २. ६; २५. ८१, १११, १२०.

देद-[दे० देद √दिद्=Dhelg=

बनाना, संवदन; (गु० दा० दिद्,

देसो काय=संवदन, पुन) गु० Lat.

dingo तथा figura, Goth. driga

(knead)=Ojz. drig=Id. dōyā)

शरि ३. २१.

देद-देदी १६. २१.

देदा-देद १२. १, २७.

देदि-देदे है २. ८०, ११०; १२. ४४.

देदि-दे ७. १६; २५. २६; देगा है १.

१४१; ५. ७; शरि १०. ६०.

देदिली-देदली मात १. ६०, १००.

देदी-देदे है २. १०६; १०. १२६; १५. ११.

देदी-दागा-देद-शरि १५. ४४.

देदु-दे ११. १६; १२. १०४; २२. १०;

२३. ४०, ४४; २५. २६; २५. ६६

दोड-देगो, दि; दा० दुदे; दा० दि; का०

झड़, उ०, बं० दुह; हि०, पं० दो;

सि० वा; गु० वे; म० दोन १०.

६६; १६. ६३; २३. १८०; २४. १६०.

दोऊ—दोनों १. १३१; ७. २२; १०. ३३;

१२. ६८; १४. २०; १८. ५०; २२. ५१.

दोख-दोष-दोस (दुप्; तु० प्रदोष, दोषा=

निशा) ६. ४८; २५. १३८.

दोखू-दोष ४. २१; १२. ३७; २३. ४६, १८२.

दोस-दोष ६. ७२; ५. ५५; ८. २७,

५१; २१. ४१; २५. १५५.

दोसर-द्वितीय-दुइय; उ० दुसर; प्रा०

हि० दूज; आ० हि० दूसरा; पं० दूजा;

सि० चीजो, चीओ; गु० चीजो; म०

दुसरा; १. ८, ४३; २. १५; ४. ४०;

१०. ३२; १२. ६६; १६. ४६; २२.

८०; २४. ४०, ११६.

दोसरइ-दूसरे से २२. २५.

दोसरि-दूसरी २३. ३३, ८८; २४.

१२२; २५. ६६.

दोसरे-दूसरे १. ८५.

दोसहि-दोष को २५. १५५.

दोसू-दोष २५. १५४.

दोहाग-दौर्भाग्य-दोहग-पा० दोब्भग

(=दुः+भाग) दुःख (दुर्भाग-दूहव;

ग=व, यथा तडाग-तलाव; भागिनी-

भाविनी-भामिनी P. 231) ८. ५०.

ध.

धँधारी-चक्र-गोरखधंधा ["गोरखपंथी

साधु लोहे या लकड़ी की सीकों का

चक्र बना, उसके बीच में छेद करके,

कौड़ियां डाल देते हैं, और उन्हें मन्त्र

पढ़ कर निकाला करते हैं। इस धंधे

को न जानने वाला व्यक्ति चक्र में

से कौड़ी नहीं निकाल सकता। इसी

लिये कठिन काम को गोरखधंधा

कहते हैं" सुधा०] १२. ४.

धँसइ-[धै० ध्वंसति-गिरता है; नीचे

जाता है, नष्ट होता है; \*Dhous=

धूल की तरह उड़ना; तु० सं० धूसर

Ags, dus; Germ. dust तथा dunst;

E. dusk तथा dust; संभवतः Lat.

furo भी इसी के साथ संबद्ध है]

हि० धँसना; पं० धस्सणा; म० धास-

ळणें; धँसता है २३. १७१.

धँसा-पैठा-नीचे गया २३. १३१.

धँसि-धँस कर २२. ७४; २३. १०३,

१२०, १३६, १६६, १७२, १७४.

धउरहर-धवलगृह (सु० 'धुवहर' अस्-

गत है; म० धवलार; पं० धौलर=

श्वेत भवन) धवल; अप० प्रा०

धवलु; उ०, बं० धला; हि० धौला,

धौळा; सि० धौरो; गु० धौलुं; म०

धवल; २. १५४, १६१.



घडाहाह-घडाहा २. १८६; ३. ३४.

घटक-घटकन (सहस्रनुवाच) २४. ३४.

घन-[√पा न्=(मौखिक अर्थ 'घने')

विहित ऐश्वर्य; गु० प्रधान=पा०

प्रधान तथा पदधानि) संभवतः घन

का मौखिक अर्थ "घघ" "घघ का

हस्त" "घमघ" हो। हमके द्विये

गु० Lith. dāda=रोटी=बै० घाना;

पा० घन्ना=घनोत्तम] ऐश्वर्य ५.

४६; १०. ११६; घन्ना=पदुमावती

१०. ११.

घनि-घन्व=घनिघ २. १, ४६, १०२,

१०४; ३. १६; ४. १२, ४७; ६. २;

७. १७, ८. ४१; १०. १०३; १३.

१६, ११; १५. १४; १८. २६; १९.

१४, १९, ४६; २१. २१; २२. २;

घन्ना=पदुमावती ६. २२; १०. ६,

४; १६. १४, १६; २३. ७१, १२१;

२४. १४, ४२, ६६.

घनानि-घन का स्त्री १. ११.

घनदेव-घनी २. १२२.

घनी-घनि=घनाका १. २१; ७. ६.

घनुस-घनुव-घनु. घडा [गु० Obh.

ghana=घडा घुप; घन हो 'घघ'

हस्त का] २. १०४; ३. ४४; ४.

१०; १०. २४, १६, २६, २७, २८,

११, १०, १२.

घीघ-घन्ना=घान २०. १०६.

घीघा-घान १. २२; २०. १०४.

घमारी-[√घ्मा; घ्यान, पा० घमक,

गु० Obh. dāmath=दाप्य=घ्यान

को उत्पन्न करने वाला] घमात=

होली के दिनों के खेल की मारपीट

२०. ६२.

घर-घघ=गङ्ग से नाले का शरीर ५.

१२; १३. ४०; २०. ४४; २३. ११.

घरह-घरति-घरता है (घरना; म० घाघै

गु०, सि०, पं०, बं० घा-; घ०,

मि० दा-), ६. ४१; १०. ११६;

१८. २६; घीघ-घी-घघै ५. २०.

घर्य-घरति ७. ११; १३. २६; २५. ४०.

घरउं-घरुं २४. २१.

घरत-घरते २. १६८; ७. १४; २४. १६.

घरति-घरित्री-घरती-गृष्ठी १. १०४;

२४. ४०, ११६; २५. ६२.

घरदरि-"घाघर-छेकर रसा करना"

२१. १४.

घरती-घरित्री-गृष्ठी; वि० घाम-मं०

घर्मन्-घामण करने वाला; घरती

घामत्रि-भूक्य (M. 219) १. ४,

४४, १०४; ५. १६, २१; १०. ४६;

१३. १०, ४०; १४. २०; १५. २६;

१६. १४; २०. ६४; २१. २१; २२.

२१; २३. १७; २५. १०४.

घानी-घरित्री-गृष्ठी २. १६८.

घाम-घर्म [बं० घर्म तथा घर्मन्; (घा

कर्मन्, धामन्; नामन्=Lat. no-  
men) √घृज् धरणे, तु० Lat. fir-  
mus तथा *fretus*; Lith. *derme*  
(संधि); ध्यान दो सं० धरिमन्;  
Lat. *forma*, E. *form*] धर्म; तु०  
छि धरम=पृथ्वी; पशतो धौजली=  
भूकम्प < \*धर्मजली (हि० धौधली  
अस्तव्यस्त); किन्तु छि धमान=वायु;  
पशतो दामान=तूफान, तथा फा०  
दमीदन=हवा चलना सं० √ध्मा  
के साथ संबद्ध हैं; धम्मा १. ११६,  
१४०; २. ११५; ३. ७६; ६. २, ७;  
१४. १६; २३. २२; २५. ६५, १३४.

धरमअस्थानू-धर्मस्थान १. १७७.

धरमिन्ह-धर्मियों में १३. ५४.

धरमी-धम्मी=धार्मिक १. ५०, ८५.

धरहिं-धरते हैं (√घृज् धरणे) २४. ८.

धरहु-धरो ३. ५६; १२. ८६; २४. १०.

धरा-रक्खा=धरह का भूत १. ६८; ५.

४३; १०. १३; १६. २४; २१. ३८;

(पकड़ा) २२. १६; २४. १२६, १३३.

धरि-धरकर-(पकड़ कर) ५. ३३; ६.

४६; १३. ३८; १६. १५; २०. ८८;

२५. ६८, १०५, ११०.

धरीं-रक्खीं ४. ३३.

धरी-रक्खी १०. १४.

धरु-धरो-रक्खो २३. ३१.

धरे-रक्खे २. ११३; ४. ३५; ५. ४;

२२. ६; २४. ३३.

धवर-धवल २. १००.

धवरी-धवल=उज्ज्वल ३. ४१.

धवलागिरि-धवलगिरि १४. ८.

धसइ-ध्वंसति=धँसता है [\**Dhones*  
का निरनुनासिक प्रयोग] २२. ७२.

धसमसइ-धँस जाता है १. ११०.

धसावा-धस+आव=धँसता है १३. ४३.

धसि-धँसकर १५. ६४.

धाइ-[सं० धात्री √धे, \**Dhōi*; तु०

Lat. *felaro*, *femina* (दुग्धदान)

*filius* (सुधी देना); Oir *dīnu*=

मेमना; Goth. *daddjan*; Ohg. *tila*.

चूची; तु० दधि, धीता, तथा धेनु]

पा०धाती; धाउ, धाय (P. 87, 292)

८. २०, २५, ३३, ५३, ५७; १८.

१४, १७, २४, ३३, ४१; २४. ६७;

धावित्वा=दौड़कर १६. १६; १७. १२.

धाईं-दौड़ीं २४. ६७.

धाई-दौड़ कर १२. ७६; धावा मारना  
२५. ११३.

धाउ-धावति; धावइ, धाइ; हि०धावना,

धाना (दौड़ती है); पं० धाउया; म०

धावणें; गु० धाउं; छि धाव-; (तु०

का० दयुन; पशतो दव-; फा० दवी-

दन; छि० धाव; ध्यान दो सं० √दू,

दूत पर) ३. ५६.

धाप-दौड़े ३. ५६; २५. ११०, १३६.

धातुक-धातुज-धातुस १०. १०, १२.

धामिनी-पायिनी-( पायिर ), सेज  
दोहने पायी द. २०.

घार-घात(√घात् मे; देसो घादन; पु०  
 वि घार=घर=पर्यंत √घ मे; पु०  
 पा० दक्ष, घन, घग्ग, पुष्ट) १०.  
 ११; १५, २२.

घाघ-घार (नदी) १०. ३६; १४. २६;  
२१. २४; २३. ६०; २४. १०.

घारे-घारे-टुके-रागें ३. ४७.

आय-आय-होना है १५. १५.

पायउत-शीर्ष १४, १५; १२, ११.

पायन-पायन-द्वय [१०. पायन-  
 वदना, दौड़ना; मु० Agn. del. =  
 F. del.; Obz. del. = Germ. del.,  
 पदना हो पदना तथा मुदना = पानी  
 पका कर माद करना = पोना = पा-  
 धं-वर्तन] ११. ११.

प्राचिन-दीर्घ-१४, २, २५, १४;  
२५, ११५.

धारा - चर्च - धारा - दीर्घा २३  
४१: २५, ४२, ४३.

विद्या - विद्वान्; विद्वान्; [वि० विद्व०  
वा० वि०, पी०] विद्वान् द्रव्यं = द्रव्यं,  
द्रिष्ट, (द्रव्यं-पी०) = द्रव्यं ११, ११

धीर-धैर (१० धीर = धैर्यवान्; सामान्यः  
 दाधी धीर के सामान्य हिन्दी "धीर"  
 के भी दो अर्थ मिलेजाने हैं (१) नी-

धीर=स्थिर, धारयति से (धु० धारति,  
धिति) (२) वैदिक धीर=धीमान्=  
मनहसी/धी से (धु० दीधेमि; धी=  
चमकना; *Goth, deisai*=चाहना)  
धीरिष=धैर्य; हि०, पं०, पु०, मि०  
म० धीर; का० धीरी, धीरी; सि० दि  
१२, ४६; २३. ४९.

घीरज-धैर्य-घेज १५, ४१, २५, १०१.  
घीर-घीर-धैर्य १५, ३७.

पुष्पां-पुन, पुन [Lat. *laurus*; *Olea*  
*laurum* + *Dhio*] पुमकः, पुमको, पुमो  
 (अर.) पुष्पां (II, 92); पा० पुष्पां;  
 मै० पुष्पां; का० पुन; उ० पुष्पां; वं०  
 पुष्पां; वृ० हि०, वं० पुष्पां; मि०  
 पुमकः; पु०, म० पुम; मि० पुम;  
 हि० पुन; तथा पुन० वृत्त; का० का०  
 पुन; का० पुन; ति० पुन; ली०  
 पुन; अक० पुन; अक० वृत्त, वं०  
 पुन० (पुन पु० पुनानि) १६, ११.

धुन- [यु० धुनः १२०५ = धनदा ०१०५]  
 ने) धन; पा० धन; दा० धन, धन,  
 दि०, धं० धन, धन; गु० धनो,  
 धि० धन; बा० धन ३, ४१.

पुनर- [पुनःति = पुनः; पुनः ६; ति०,  
पे०, पु० सो-; ति० पुन-; ६०  
सो-; पु-; म० पुपे, पुपे; ति०  
पुप-; का० पुप- (पुपः); पु०  
पुप-; ति० पुप-; पुनःति, पुनःति

धुनाति, धुवति (शिजन्त धूनयति)

√धू = \*Dhū = संतत आन्दोलन में होना; तु० Lat. *fumus* (धूम—*fume*); Lith. *dūja* (धूल); Goth. *dauns* (धूम तथा गन्ध); Ohg. *toum*; इसी से संबद्ध है; तु० धावते, धूप, धूम, धूसर, तथा धोन; तु० \*Dho-  
nos = ध्वंसति = धुनता है] ७. ७२.

धुना—धुनह का भूत १०. ७८.

धुनि—ध्वनि—शुणि—धुनि (P. 299)

धुनी; म० धून; पं० धुण, धुन; सि० दनि; १३. ७; २०. १०३; २५. २३;  
धुनकर २१. ८.

धुंघ—धुन्घ—अन्धकार ७. ३२.

धुव—धुवतारा [अवे० द्रव] १. १४८;  
१०. २१, ८८, ६२; ११. ३१.

धूप—[\*Dhūp > \*Dhū, धुनाति में]

धूय, धूव = आतप १. ७; छ. २०;  
(घाम—तेज) ६. ३२; १२. २६; १५.  
१६; २०. २; २४. १४६.

धूपा—धूप; का० दूप; २. २३; २१. ६.

धूम—[दिखो धुनह, धूप] धूम २. १६३.

धूरि—धूलि १. १८३.

धूरी—धूलि १. १०६.

धूवँ—धूम—धूम—धूय १०. १२८.

धोआ—धो डाले [√धाव्, पा० धोव्,

देखो धुनह] २०. ८७.

धोह—आधूय—धोकर १६. ४३.

धोई—(√धाव्) धोयह—धोता है २५. ६७.

धोख—धोखा ३. ७४; ८. २८; २४. ४३.

धोखा ८. ४३.

धोती—धौतवस्त्र [√धाव् = पा० धोव्;

तु० पा० धोन = धोत = सं० धौत,  
अथवा = धूत (देखो धुनन); Korn  
के मत में धोन की निष्पत्ति पोण के  
आधार पर है] २५. ६७.

धोवइवि—धाविनी, धोवन १२. ७८.

न.

न १. ८, १६, २०, २१, ३३, ३६, ३७,  
३६, ४७, ५१, ५२, ५३, ५६, ६३,  
६४, ६५, ७०, ७१, ७३, ७७, ७६,  
८४, १०५, ११२, ११३, ११४,  
११६, १२६, १२६, १३१, १३४,  
१३५, १३६, १६४, १६७, १८४,  
१६२; २. ४, ५, ६, ८, १६, २३,  
२४, ३०, ६५, १०३, १०७, ११२,  
१२७, १२८, १४१, १४३, १५२,  
१५६, १५८, १६८, १७३, १७४,  
१६८; ३. २, १६, ३१, ३६, ४८,  
५१, ५२, ६०, ६२, ६३, ६४, ७०,  
७२, ७४, ७८, ८०; छ. १५, १६,  
४५, ४६, ५४, ६०; झ. ४, ७, ८,  
१०, १६, २४, २८, ३६, ३८, ४५,  
४७, ५२; ७. ५, ७, ६, १२, २१,



२३. १६१; २४. ५२.

नहन-नयन=खयण=आँख २२. २६;

२३. ६३, ६४, ६६, ६६, १४०, १५०,

१७४; २४. ६०, ६६; २५. १५२.

नहनन्-नयनों से २३. ६०.

नहनहि-नयनों में २३. ५२; नयनों

से २३. ६४; नयनों ने २३ १६०;

नयनों के २४. १५७.

नहना-नयन १०. ४२; २१. १८; २२.

३६; २३. ५६, १२४.

नहहर-मायका ४. ११, १८, १६, २४.

नई-नता=खय=मुक गई (तु०नमति)

१. १००; ३. १४.

नउँजी-लौंजी=लोचो २. ७८; २०. ४२.

नउ-नव=खउ=खव=नौ १. १८५;

२. १२५, १३६; १२. २६, ६४; २२.

६७; २४. ५२; २५. ११८; नव=

नया २. ७६, १५१, १६८; १६. ७०.

नउ-उ=नवो २. ६७, १२५, १३०, १३६.

नउगढे-नवघटित=नये घड़े हुए १३. १८.

नउरँग-नवरङ्ग २. ७४.

नउल-नवल=खवल-नव(Osk. nuv-la

√न-स्तुतौ) [नव, noun, Lat.

novu-s, noviu-s; Goth. niu-yi-s

(नया); Ags. nīta, neora, nīta;

Lith. nau-ye-s (नया); nauyd-

ka-s (नौसिखिया); Slav. nov-u

(नया), Hib. nua] नवा; म०

नवा; गु० नवुं; सि० नहुं; पं० नवां;

बं० नहुं; सि० नव; का० नोवु; त्सि०

नेवो; अवे० नव; पह० नवक, नोक;

आ० फा० नो, नव; शि० नउ; सरि०

नुज; यलू० नोक; कु० नु; री नाक

(पत्नी)-\*नाव्यका; परतो नावे

(दुलहन; सं० नव्य, नव्या-नववधू)

२०. २, ४, ५, ६२; २१. २४.

नउलि-नवल=नई ३. ३६.

नउसेरवाँ-नौशेरवाँ=प्रसिद्ध न्यायी

मुसलिम बादशाह १. ११४.

नए-नवीन २३. ३८.

नएउ-नता=मुके १. ११२.

नखत-[वैदिक नखत्र, नखि: अथवा नखा

से; तु० Lat. nox, Goth. nahts; E.

night=रात्रीयाकाश, रात्रि के तारा-

गण; (P. 270) के मत में \*नक्चत्र;

(नखत्र Aufrecht. KZ. 8. 71; तु०

Weber, naxatra; Grassmann के

मत में \*नख से)] १. ६; ४. २८;

५. १४; १०. १६, ४५, ६६, ६६,

१५६; १६. ७, १५, २०; २०. ११,

६८; २४. ६५, ८०; २५. १२४.

नखतन्-नखत्रो १. १६३; २. १२६;

५. १२; १०. ६१.

नखसिख-नखशिख [वैदिक नख; तु०

सं० यङ्घ्रि=चरण; Lat. unguis=

Oir. inga; Ohg. nagal=E. nail;

मा० बाह, दि० मह, मुह, मोह; पं०  
महु; घा० फा० माहल; घक० मूक;  
घा० माहुन, माहन; कु० महलुक]  
६. १९; १०. १६०.

मग-मग १. ११, १८०; २. ७२, १२६,  
१८७, १८८; ३. ११; ४. ६४; ६.  
४; १०. १; १६. १४; १६. १८,  
१२, १७, १८, ४१; २३. १२२.

मगजरी-मगजरी १०. १०.

मगर-[मगर, मगर = Ger. से संवद्ध;  
n(a)ne + from] महर १. १७७;  
२. ८६, १२०; १२. ६२, ७०.

मगरी-२५. २८.

मगयासी-"मगयासी" ६. ४४.

मगोसति-मगोसति २०. २१.

मयाया-मयाया (मृ०=यय) २. ११७.

मदिनि-मादन=मद की धी २०. १२.

मदी-(√मर) माह; व० मर; म० मर,  
मही; मि० मौर; मि० मी० १. १०;  
२. १४३; १२. ८३; १८. २६.

मनर-मनर=मनर=पति की इति  
४. १३, २२.

ममो-[ममि = Nam; Goth. mima =  
Goth. mima] ममग, ममगर  
(F. २०६); ममे० मेमर, मर०,  
ममे०, घा० फा०, ममाय, मम०  
ममु०, व० ममर, ममर; कु० मिमि  
(म); मगुय; ममेय, १३. ४.

मयन-(√मी) माँल १. ९१, १११,  
१६८; २. ६२, १०८, १७६; ३. १४,  
४४, ४८; ४. ११, २३, ६४; ७. ४६;  
१०. ३३, ४०, ८७; १३. ८, ४०;  
१६. ३८, ४८, ७६; १६. १७; १८  
४१; १६. ७, २२, ६२; २०. १६, १००.

मयनचकर-मयनचक = ययचक =  
माँलों का चक २१. ३७.

मयनन्द-मयनों १२. ११.

मरक-[√मृ, मृपति अनिधित; उ०  
E. north = उत्तर, पाताळप्रदेशीय  
दिशा] १. ८९; १६. ६१.

मयनहि-मयनों ११. २४, २०; १४.  
२१; १६. ३; २०. १००.

मयनों-मयन का व० = माँलें २१. १३.

मयनोंहो-मयनेन = माँल से १. १११;  
माँल के १०. २७.

मयनर-मयन १. ६७; ३. १३; ७. २३;  
२०. २७.

मर-[मृ० मृग; \*Nor = हर होना; उ०  
Lat. nervosus (हर = muscular)  
Nerv (habilitas, उ० Ocean nerv  
Lat. vir); Old Nor.] मरे०, मर०,  
घा० फा० मर, मोरले० मर; उ०  
मर; वी मेरिना, (मरगोर = मर),  
मया मरे० मरवे (मर); मर० मेरि,  
घा० फा० मोरले; मि० मीर ३. ४८;  
१०. १४२; मर; वी० मर; म० मर =

\*narda) नरसल की नली = लगी  
जिल से यहलिये खोंचा मारते हैं  
१६. १४.  
नरपती - नरपति = शरवद् = राजा २. १५.  
नराजी - नाराज हुई १४. ५.  
नरिश्रर - नारिकेल; नै० नरिवल; सि०  
नरलु; वं० नारेल; बि० नारियर; हि०  
नारियल; पं० नरेलु, नलेरु; सि०  
नारेलु, नाइरु; म० नारळ २. २८;  
२०. ४५.  
नरेस - नरेश = राजा २५. ६४.  
नरेसा - नरेश ३. ५५; १०. २; २५. ६३.  
नरेसू - नरेश २. ६; २४. १५६; २५.  
८३, १५०, १५६.  
नरिंदू - नरेन्द्र = शरेंद्र = शरिंद २५. १२४.  
नरिंदू - नरेन्द्र = राजा २. १५.  
नल - प्रसिद्ध राजा का नाम २१. १५;  
२४. १२७.  
नलिनि - नलिनी = खलिणि, खलिणा -  
कमलिनी = कमल का तार १०. १४०.  
नवई - नमति = झुक जाता है १८. २२.  
नवह - नवापि = नवों [वै० नवन् \*Noun;  
हु० Lat. novem (\*noven); Goth.  
niun; Oir. nōin; E. nine; संम-  
वतः नव = new के साथ संबद्ध; नौ  
के साथ गणना का क्रम नवीन ही  
जाता है] नव; प्रा० शव; पा० नव;  
का० नाउं; उ० नय; बं० नय; बि०,

हि० नौ; पं० नौ; सि० नवं; सि०  
नम, नव; अये० नवनि; प्रा० फा०  
नवम; था० फा० निहम; वा०, शि०  
नयो; सरि० नव; कु० नेह २५. १०४.  
नवउं - नवम = नवों २. १३७; नमेयम् =  
कुँ २४. ५४.  
नवल - नव = नई ४. ३७; १८. १८.  
नवाई - झुकाव १. १००; २१. ३७.  
नवेला - नवल = नया २४. ७१, १४५.  
नवो - नवापि = नवों १. १००.  
नस - शिरा = नाडी २५. २३.  
नसट - नष्ट = अधम = नीच ७. २.  
नसत - नष्ट [वै० नश्यति, नशति; Lat.  
neco; necco, noxius] २३. ३७.  
नसाऊ - नाशय = नाश करो १३. १४.  
नसापहु - नाश किया २२. ८.  
नहाइ - [वै० स्नाति, स्नायति √ स्ना; हु०  
Lat. nare (तरना); हु० सं० स्नाति;  
Goth. sniwan, हु० पा० नहापक,  
नहापित; नहापेति] स्नाति ४. ३८.  
नहिँ - नहीं १. ५०, ५४, ७८, ८४, ८६,  
१११, १६७; २. ५, ६, १२३, १२८,  
१४७, १६१; ३. ५१, ५४, ६६, ७५;  
४. १८, ३८; ५. ३६; ७. २३, ५०,  
६३; ८. १६, २३, २६, ४०, ४३, ६८;  
९. ५२, ५५; १०. ३५, ७६, ८६,  
८८, ९१, ११६; १२. ३८; १३. २१,  
३१; १४. ७; १५. ६३; १६. ४४;





नामन; पह०, फा० नाम; वा० जुंग;  
 माफ० नूम; गिला मोम; अफ० नूम;  
 ओस्से० नोन; ट० नोम १. ८, ८१,  
 ८७; २. ४०; ३. २०, ६६; ५. ५२;  
 ७. ६४, ६७; ६. १६, ३३; १०. २४;  
 ११. २७; २२. १२; २३. ८८, १६०;  
 २४. ८६, १२७; २५. ८, ७६.  
 नाउ—[वै० नौ; Lat. *navis*; O. Germ.  
*nacho*; As. *naca*; Bavarian  
*nau*=जहाज] नौका, नावा; वं०  
 ना; सि० नव (√ण्णु से) १. १५२;  
 ३. ८०; २१. २६.  
 नाउत—नापित; महा० प्रा० ण्हाविश्र—  
 \*स्नापित; मा०, शौ० ण्हाविद  
 (P. 210, 213, 247; हे० 1. 237)  
 नाई, नाऊ; पं०, गु०, सि०, वं०  
 नाई; म० नाऊ, नाहु, न्हावी,  
 नाहावी; का० नायिद २०. ८४.  
 नाउनि—नाइन २०. २६.  
 नाऊ—नाम १. ६३, ८६, ८६; २. ३०,  
 ४२; ३. ३, ३७; ६. १६; १६. ३५;  
 १६. १७; २३. २१; २५. २१, ३५, ३६.  
 नाऊ—नापित ३. ५६.  
 नाए—भुकाए (√णम् शिजन्त) ७. ५१.  
 नाओ\*—नाम २५. ८.  
 नाक—नस्; \*नस्क (तु० सि० नहय);  
 हि०, गु०, न०, वं० नाक; सि० नकु;  
 पं० नक्क; स्ति० नख ("नक्को ग्रायं

मुखं च" दे० 155, 5) १०. ५२.  
 नाग—नाग [संभवतः \**Snagh* से; तु०  
*Agg. snaca* (snake) तथा *snægl*  
 (snail)] १. २६; ३. ४३; १०. ८,  
 १३०; १२. ७५; १८. ३६; २५. १०१.  
 नागफाँस—नागपाश २४. ३५.  
 नागमती—रानी का नाम ८. २, २६;  
 १२. ४१.  
 नागरि—नागरी—चतुर धाय ८. ५६.  
 नागन्ह—साँपों को ६. ४६.  
 नागिनि—साँपन ४. २६.  
 नागिनी—सर्पिणी ८. ३५.  
 नागिनिबुद्धि—सर्पबुद्धि ८. २६.  
 नागू—नाग १०. १३५.  
 नागोसर—नागेश्वर २. ८४; ४. ६.  
 नाटक—णाडग—णाडय २. ११८.  
 नाठा—नष्ट—ण्ठ [पं० नाटा (भाग, छोटा)  
 हि० नठ (नष्ट); म० नाँठा (बुरा);  
 सि० नट (नष्ट)] भाग गया २३. ५५.  
 नाता—संबन्ध (पैतृक) [तु० शाति—णाइ;  
 √ज्ञा; मुज्ञात; Goth. *knōdi* पैतृक  
 संबन्ध, उससे संबन्ध मात्र] १. ५१.  
 नाती—नसर, नष्ट—कन्या या पुत्र का पुत्र  
 [√णम्—णह = संबन्धार्थक से; तु०  
 Lat. *nepot(s)*; O. Germ. *nefo*=  
 पोता; Slav. *netii*=भतीजा; E.  
*nepotism*=संबन्धियों का पक्षपात;  
 हि० नवा = पोता \*नवाद्य = —



शाहल, लाहल २. १३३.

नाहा—नाथ ८. ५.

नाहिँ—नहीं १. ४३, ५८, ५९, ६०, ६१;

२. १२६; ७. ६६; ९. १५; ११. ११,

३६; १३. ५३, ५८; १५. ५०; १६.

१७; १७. १०; २२. ६६, ७७.

नाहीँ—नहीं १. ३५, ५८, ५९, ६०,

६६, १४८; २. ६, ६५; ५. २६, ५६;

७. ५२; ९. ३१; १०. ६, ५५, ७५;

११. ५३; १४. ११; १७. ५; १८.

३१; २०. ७८, ११५; २१. ५४; २४.

५, १३०; २५. ४०.

निँउकउरी—निम्बकपर्दी=निम्बकवड्डिया

=निमकौठी=निँधौली २०. ४७.

निअर—निकट=शिअर=नेदें १. १६०;

२. १७; ११. ११; १५. ४८.

निअरई—पास में २०. ४८.

निअरहि—निकट ही १. १६१; १६. ८;

२४. १२५.

निअराना—निकट आता हुआ १५. ४७.

निअरावा—निकट किया २. १७.

निआउ—न्याय=णाय; (अ० मा० न्याय—

\*न्याय—न्याय; य=ग; और य=

व P. 254) सि० निआउ; गु०, वं०,

का० न्याय; म० न्याय, न्यायो; सि०

न्याय, न्याय १. ११६.

निआन—निदान=शिआण=अन्त में

१२. ३४, ६७.

निआना—निदान १६. २२.

निकट—समीप २४. १२६.

निकलंकू—निष्कलङ्क १०. १६.

निकसत—निःकसन्=शिफास्, शिफाल्=

निकलती १६. ४.

निकसहिँ—निकलते हैं २३. ६४.

निकसा—निकस का भूत १२. ६५.

निकसि—निकलकर १०. १२३; २१. ६२;

२२. १४; (निष्कर्ष्य सु०) २५. १४०.

निकसु—निःकसति=निकलता है ११. ४१.

निकाजइ—निः+कार्य=शिफाज=वेकाम

(निकाम=निष्कर्ष्य) १८. ५६.

निखेधा—निखेधइ का भूत (शिसेह=

निषेध) २०. १२७.

निचिंत—निश्चिन्त=शिचिंत १. ७२,

१५२; २. १४०, १४२; ५. ३१, ४५,

४६, ५५; १२. २४; २१. ८.

निचोआ—[दो प्राकृत धातुओं की पर-

स्पर आन्ति; छुट्ट तथा छोद; पहला

पा० छुट्टेति; दूसरा=सं० छोदयति,

अप० छोहह; गु० पा० छुद, दे०

P. 326] निचोआ २४. ७५.

निछतरहि—बिना छत्र वाले को १. ४३.

निछोही—निःक्षोभी=शिच्छोही=नि-

मोही २३. ११२.

निजु—स्वयम् [संभवतः नित्य=शिच

के साथ संबद्ध] १३. १६.

निरठु—[निष्ठुर तथा निष्ठूर=नि+थूर;

गु० वा० मूल=स्पृष्ट ] निद्रर=  
 सिद्रर=सिद्ररुद्र; मि० निद्रर; म०  
 निद्रर उ. १३; २३. ६७, ११२.  
 निद्रर-निद्रर=निमेष २४.३; २५. १४७.  
 निनैय-[स्युपति घञात्; मंथयतः नि+  
 रतम्भ] नितम्भ=विमंभ १०. १३३.  
 निन-नित्य (ध्यातृ दो घातुनासिष्य  
 पर) १. ७१.  
 नित्त-नित्य=नित्त=विष्ट १०. ११२.  
 निनि-नित्य=नित्त=नित १. १३, १११,  
 १६०, १७१; २. १२३, १४३, १६८;  
 ४. १८; ७. १६, ३३; ८. २४; १२.  
 २३, २७, ४८; १६. ३३; १६. ३३;  
 २१. २३; २४. ३८; २५. ३३, ६७,  
 ६८, १२३.  
 निनिहि-नित्य ही ६. ४८.  
 निशाना-[मिनि+शान √श वञ्चने,  
 गु० शान=राज] घञ् म १६. ६१.  
 निद्रि-निषि=विहि २. ६७.  
 निधनी-निधेन=विहस्य उ. ६.  
 निनार-"निराक्षय"=निराक्ष=निघारे=  
 न्घारे=घञात् १२. ६८; (निघप=  
 निघप=मिघ मिघ गु०) २२. ३१.  
 निनारा-दृषद् १३. १३; २३. ८३.  
 निनारी-दृषद् २५. १०६.  
 निनाने-निरय=दिष्यत=वे वत्ते वे  
 २०. ४.  
 निपहर-निर्हन्ति=निघार=निघार=

निमाह होता है १२. २०; १३. ११.  
 निघहा-निम गमा १. १७६.  
 निघेय-निघटना २५. ११.  
 निघेरि-(निर्वर्तयति, विघतः; हि० नि.  
 घटना; पं० निघिरा; म० निघट्यै; पं०  
 निघटिते) निघटाने वाळा २५. ४०.  
 निघारि-निर्वर्तन कर के=पुष्ट कर के;  
 (निः+घारयू=विघार) ३. ३६.  
 निघाह-निघाह ४. १६.  
 निघाह-निघाह २३. ११८.  
 निघाह-निघाह २४. १२.  
 निघाह-निघाह २१. २८.  
 निघाह-निघाह २०.  
 निघाह-निघाह १२. १६; निघाह  
 २३. १४४.  
 निघाह-निघाह १३. ४१; १४. २०.  
 निघाह=निघाहयति २४. १०१.  
 निघुधी-निघुधि ८. ४४.  
 निघरोसी-निघरोसी का=दुर्बल १. १४.  
 निघते-नि+मत=घञादि मत् २. ११९.  
 निमिन्-निमिन्=विमिन्=[नि+मिन्  
 J.D. 50] घञ १. १६.  
 निरगि-निराग, निरिच=(निर्+रिच  
 देलना) २. १२७; १०. ३१.  
 निरगुन-निर्गुण=विगुण उ. १०.  
 १६. ६; २०. ७६.  
 निरगुना-निर्गुण=विगुण का उ. १४.  
 निरगुन-निरगुन=विगुण का २०. १३.

निरदोखा - निर्दोष = शिहोस ८. ४३.

निरदोखी - निर्दोष २१. ४३.

निरभउ - निर्भाव = भावशून्य १३. १४.

निरमई - निर्मिता = बनाई ३. ४; घनाया

३. १४; १०. ६८.

निरमरे - [निर् + मल] निर्मल; शिम्मल =

स्वच्छ १. ११.

निरमर - निर्मल = शिम्मल १. ६३, ८३,

८६, १३८, १४१, १६८; २. ५०; ४.

५८, ६४; ८. ६४; १३. ५६; १६. ४.

निरमरा - निर्मल १. ८१, १२५, १४५,

१४७; ३. २२, ६७; १६. २०, ४१.

निरमरी - निर्मल ६. २२.

निरमल - निर्मल २३. १२२.

निरापुन - जो अपना न हो २०. ११६.

निरारा - न्यारा (निर् + आरा / घट गतौ)

पृथक् १. ११८; (निरालय = पृथक्

सु०) ७. ५०; १५. ५२; २५. १५.

निरारे - न्यारे = अलग ८. ६६.

निरास - निराश २. ४७; ७. ५६; १०.

१२८; १५. ५६; २२. ३२; २३. २४.

निरासा - निराश २. १११; ७. १६; ६.

४६; २१. ३१; २२. १३; २३. १०३;

२४. ३६; आशाहीनता १. ३६.

निलज - निर्लज्ज = शिखज २५. ११.

निवास - निवास ३. ३४.

निसँसइ - (निर् + अस = शिस्सस) निः

शसिति = हांपता है ११. ५.

निसँसि - निःशस्य = उसाँस लेकर २४. ८२.

निसचइ - निश्चय = शिच्चय = शिच्छय

(सु० सखिचर = शनैश्चर P. 301)

२५. १६२.

निसत - निःसत्, जिस में सत न हो

१५. २३. १७. १२;

निसतरउँ - निस्तार पाऊँ १६. ३६.

निसरइ - √ स गतौ, निसरण = निसरने =

निकलने ४. १५; २३. १०४.

निसरउँ - निकलती हूँ २०. ११२.

निसरा - निकला ६. १०; १६. २७.

निसरी - निकली २३. १०७.

निसरे - निकले २०. ६१.

निसाँस - निःश्वास = शिस्सास ११. ५.

निसान - ढंका २. १७६.

निसासि - निःश्वासी = वेदमका २१. ४०.

निसि - निशा = रात २. ६६, १६०, १६७;

३. ११; ४. २८, ४०; ५. ११; ८.

१४, ३१, ३३, ३६; १०. ६६; ११.

४७, ४८; १३. ५३; २०. १२२,

१२३; २४. ८८.

निसितर - निस्तार = निस्तारण २२. १०.

निसेनी - निःश्रेणी = शिस्सेणि = सीढ़ी

२५. ७६.

निसोग - निःशोक = निश्चय करके जिसे

शोक हो = अभागा २. १४३; ३. ७२.

निसंक - निःशंक = बेफिक्र २४. २.

निहकलंक - निष्कलङ्क = शिक्लंक १.

१४४; ३. १४.

निहचह—निरचय १३. ११, १०; २२.

११, १४, ११.

निहोरा—“निराचयति”—निहोह—निहो-  
रह का मूल २३. २१.नी<sup>०</sup>द—[बि० निद्रा=नि+द्रा (मं० द्राति,  
द्रायते) =Dore, Lat. dormio] पा०  
निद्रा; मा० निद्रा, नीद; गु० निद्रा;  
म० नीद; का० नेन्द्रा; मि० निदि,  
निदु; १. १४, १०२; १२. २६; १३.  
१; १८. २, १०.नीडि—निम्ब=नीम [बिम्ब (हि० १. २३०)  
मराठी बिम्ब, गु० बिम्ब P. २६७]  
२४. १११.नीदरे—निदरे=नेडे=समीप (म० नेरी  
JD. 63, 109) १. १४; ११. २४.नीडि—निम्ब=नी<sup>०</sup>द; (गु० मि० निदु;  
प० हि०, बीम्ब II. १६०) २. ४४.

नीक—कण्ठा=नेक ११. २१.

नीला—नीलि=नील २३. १०.

नीर—कमी १. ११०; २. १४१; ४. १४,  
११, १४; ११. ४, ११, १०, ४१;  
१८. ११; ११. ४; २३. ११, ४१,  
१११; २४. ४१, १११.

नीरा—नीर=निर ४. ४१.

नीरु—नीर=निर १४. १, ११.

नेहदुगरी—नेहदुगर काटे ११. १६;  
२२. १०; २४. ११.

नेउरी—निपटी—घूरी २४. १११.

नेगी—स्नेही (सिंह=सिन्धु=सिन्धु=  
सिन्धु=नेग) साधी, “नेग सेने बाहे=

प्राय” ११. १.

नेम—निपम=निपम; हि० नेम (JB.  
नील अष्टाद) पं० नेम; का० नेम,  
सि० नेमि; गु० नीम, नेम; म०  
नीम; सि० नेमु १४. ११.

नेपतदु—निमम्बपथ=म्यातो १३. १४.

नेपारी—पुष्पविशेष २. ४४; २०. १०.

नेह—स्नेह—देह १४. ११; ११. ४; २४.  
१०; २४. ११, ११.

नेहहि—स्नेह को ११. २०.

नेहा—स्नेह २४. १११.

नेहु—[√सिंह; घवे० सन्धुवति (सं  
पकता है)=Lat. ninguat; Oir.  
snyud (बरगता है); Lat. sin  
(=snow)=Goth. snais, Oir.  
snoo=Fr. snow; Oir. snig=  
घरां ह्वादि] स्नेह, पा० सिनेह, हि०  
नेह (P. 313) ११. १०.

प.

पैनि—परी=परिण=पंजी १. ४१.

पैनिरात्र—परिरात्र=परिभार=हीरा-  
मणि शुद्ध १. ११.

पँखी-पखी २४. ७६.

पँखुरिन्ह-पंखुरियों २. ५३.

पँडित-परिडत=पंडित १. ६२; ८.

४५; २३. १७७.

पँडितन्ह-परिडतों १. १७८.

पँवारी-लोहे को छेदने वाला औज़ार  
१०. ५२.

पँथ-पन्थ १. १५२; २. ४६, ४७; ८.

४५; ६. ५२; ११. ३५, ३७; १२.

६०, ६६; १५. ३४, ५६; २३.

१०१, १३६.

पँडत-परितः=सर्वतः २२. ७१.

पइ-प्रायेण, (किन्तु), अप० प्राइव; म०

पइभ (JB. 57, 125), पर=किन्तु

१. ५८, ५६, ६०, ६१; ५. ३६; ७.

५१, ५४; ६. ६; ११. २३; १२.

६२; १३. १६, २५, ५६; १४. २१;

१५. ३१; १६. ३५, ६४; २१. ३२;

२३. २१, ६५, ६८, ११४; २४. ७;

२५. ६१, १४७;=प्रायेण=निश्चयेन

अपि-एव १. ६६, ७०, ७२; २.

१२०; ७. ६, ६२; ८. २७, ५४,

६०; ६. १६; ११. २, ४०, ४३,

५३, ५४; १३. २८, ३१; १६. ३७;

१६. १३, २३, ६६; २०. ११५;

२१. ५३; २२. ७५; २३. ६३, ७७;

२४. १, २, ३, ४, २८, १०१, १३५,

१४६; २५. ७, ३८, ८१, १४८,

१५०, १५३, १६०, १७५; उपरि-

पर १०. १, ५४; १३. ५८; २५. ६६.

पइग-पदिक (पदाति); प्रा० पाइक

(=पादातिक P. 194); हि० पइक;

म० पाईक; बं० पाईक; पइ० पइक;

आ० फा० पइग; (JB. 46, 57,

225) पैरों, पैर; २. ४१, १०७; ५.

२६; १०. १४१.

पइगहि-ठोकर से २. १६६.

पइगु-पइग १५. ३४.

पइठत-प्रविशन्=घुसते (प्रविष्ट-पइठ

“पइठो ज्ञातरसो विरलं मार्गश्चेति

व्यर्थः” (दे० 216. 3); हि० पइठना,

पइसना; सि० पेहणु; गु० पेठुं; बइठना

तथा बइस के लिये देखो (JB. 56,

125) ४. ५२.

पइठव-घुसंगा ७. १५.

पइठि-घुसकर ४. ३८; १२. १३; १४.

२२; २२. ७१.

पइठी-घुसीं ४. ३३.

पइठी-पैठ गई ३. ४३.

पइनहँ-[√पैण गतिप्रेषणश्लेषणेषु]

पैनी=तीखी २२. २७.

पइनहँ-पैनाहँ=पैनापन=तीक्ष्णता

(प्रेणी=पैणी=हरिणी “तीघ्रता”)

१५. ५४.

पइनि-पानी, पान (पाण) जिस में हो,

(“अनेक वस्तुओं को पानी में मिला



कर उस मिश्रित पानी में पका करने के लिये शब्द को चुन्यते हैं। इस मिश्रित पानी को संहिताकार “पान” कहते हैं; ध्यान हो म० पान्न=पान्न, प्रतिज्ञा) १५. २४.

पररदि°—पैरते हैं=तैरते हैं २. २२, ६८.

परसाक—पैरसाक ४. २२; (प्रवेष्ट सु०) २०. ७१.

परिटा—पैरा=पुगा २४. ७७, ११२, १४७.

परिडि—पैटी=प्रविष्ट हुं २३. ६६.

परिडी—परिडि—(°प्रविष्टि II. ७७) २०. १२१; २१. १२.

पडेरी—पायुका १२. ६१.

पडनारि—पडनाखी=कमख की नाखी=मुलाखी १०. ११२.

पडनि—पाने बाखी २०. २४.

पडन—मा० पडन; पा० पडन; का० पावन, ड०, सं० पडन; हि० पडन, पडन, पान; पं० पौय; गु० पौय १. १; ४. २४, ६०; ५. १६, २४; १०. ३६, २६; १५. २, ६२, ६३; १६. ७, १६, २१; १८. १६; २२. २२; २३. २१, १४, ११२, २४. ७६, ७६; २५. ६८.

पडरि—पौरी २. १०१, ११२, ११७, ११३; २४. ११२.

पडरिहि—पौरी पा २. ११२.

पडरी—पौरी २. १०५, ११०, १११, ११६; २२. ६८.

पस—[Lat. *pectus*] पस; पा० पसल=पस, प्रसय, पस; का० पस; पू० सं० पाही; सं० पासी; वि० पंल, पाही° (पास), पंघी=पसी; हि० पल, पंल (P. ७४); पससी, पंघी; पं० पसल, सि० पंगु; म० पाल; सि० पस, पस; जि० पस १६. २६.

पसंडी—पासपरी, पासंडी, पांडी (P. २६५) कटपुलखी बाछा (गु० पा० पसंडक=पै० प्रसन्दिन्; पसन्डति=प्रसन्दिति) २. ११७.

पसरिडि—प्रसाखपेयम्=घोड़ें (गु० पा० पसखति=प्रसाखपति, प्रसखति; किम्बु पसर=प्रसर) १२. ४२.

पसेक—परी १२. १६; २३. ६१.

पगु—पग=पा=पैर १०. १२६; १३. २६; २०. २०; २१. २७; २३. ६१.

पंडज—[पंड  $\sqrt{0.1000}=0.10$ , गु० Lat. *palms*; देखो Goth. *fami* (१४. ६४); Ohg. *fenna* “fen” (१४. ६४) तथा Ital. *fango* (बीज); Ohg. *fukl*=घाड़ें] कमख १०. ११६.

पंख—पख (घानुनामिष्य के लिये देखो II. १०५) २. २२; ५. ४८; १०. ४६; १५. २; १६. ११; २४. ४.

पंलि—पली १. १३, २६, १०७; २. ३३, ४०, ६८; ३. ६२; ७६; ४. २४; ५. १, २०, २४; ८. २१, २८; ९. १३.

१८; १४. १४; २१. ४६; २५. १५१.

पंखिखायुक - पंखिखायक = पंखिरूप  
भोजन ७. ३५.

पंखिन्ह - पंखियों ५. २६; ४४, ५०; ७.  
३३, ३८, ३९.

पंखिहि १०. ४८.

पंखिहि - पंखी के ३. ३८; १६. १०.

पंखी - पंखी १. ३६; [सूची में छरहटा  
(Gn.) के स्थान में "चिरहँटा" = बहे-  
लिया; पेखन के स्थान में पंखी रा०]

२. ११७; ३. ६६; ५. १७; १२.

१६; १६. २५; १८. ३७; १९. ६६;

२५. १५३, १५६.

पंग - अपाङ्ग = कपोल भाग १०. ८२.

पङ्गराति - [वै० पश्चा, पश्चात्; भायू०

\*Pos, तु० Lith. *pās* = (समीप),

*pastaras* (अन्तिम); अवे० पस्चा

(पश्चात् = पीछे); Lat. *post* = पीछे]

पश्चाद्वायि = पच्छुराई = पिछली रात

१५. ७२.

पछलग - पश्चात्तम [तु० पा० पच्छगु =

पच्छग = पट्टग = प्रतिग = प्रतिगमक

RPD.] १. १७६.

पछलागू - पश्चात्तम १२. ८७.

पछिउँ - पश्चिम [पक्ष का तमयन्त] सब से

पिछला २०. १२४, १३३; २५. १७४.

पछिताउ - पश्चात्ताप = पच्छाताव = पछ-

तावा [गु० पस्तातुं; सि० पछताओ;

वं० पसतान; सि० पसुताव; शौ०

प्रा० पश्चादाव; किन्तु तु० पा० पच्छ =

पटि = प्रति, यथा पच्छक्ख = पटि +

अक्ख = प्रत्यक्ष; पच्छक्खाति = पटि +

अक्खाति = प्रत्याख्याति; P. 280]

३. ७१; १२. २४.

पछिताना - पश्चात्तपन ८. २८; पछिताया

८. ४१; पछिताने लगे २५. २.

पछितावा - पश्चात्ताप ७. ६.

पछिलहि - पिछलों को १. १११.

पंचम - पाँचवाँ [पंच \*Qenguo; Lat.

*quinque*; (वै० पञ्चार = Lat.

*quinque-ennis*) Goth. *fimf*; Lith.

*penkt*; Oir. *coic*; म प्रत्यय के लिये

तु० Lat. *supremus*; ध्यान दो Lat.

*quinctus* = सं० पञ्चमः] २०. ५७.

पंचमि - पञ्चमी तिथि २०. ४.

पट - (संभवतः  $\sqrt{पृ}$  पूरण से) पट =

वस्त्र अथवा पददा २४. ४१.

पटइनि - पट्टवाहक (व्युत्पत्ति अज्ञात);

रेशम वाले की क्री २०. २३.

पटोरा - पटोरे = रेशमी और ऊनी कपड़े

२०. १८.

पठवा - प्रस्थापित [प्र + स्थाप् = पट्टाव;

प्रस्थापयति; पट्टावइ (P. 308, 309);

हि० पठाना; गु० पाठावतुं; सि०

पठणु; म० पाठयिणें; वं० पाठइते;

उ० वठाइवा] १. ६६; २३. १५६.

पटार्ह—भेजो २२, २२; २३. १०४.

पटायह—भेजो ११. १९.

पडा—पडह=पतति का भूत [पतति;

पा=पतति; उ० पडिया; बं० पडया;

हि० पडना, परना; मि० पडणु; गु०

पडुं; म० पड्यें; पं० पड्या, पडया;

P, 218, 219] २३. ३४.

पट—पडने हैं १३. १०६.

पटह—पटति; पं० पडया; गु० पडुं; मि०

पडहण; म० पड्यें, बं० पडिने; छा०

पडें; उ० पडिया; का० पटन ३. १९,

११; उ. २४.

पटल—पडने हैं १. ६९.

पटहिं—पडने हैं २. ११४; ३. ४०.

पडा—पडह का भूत ४. ४६; उ. २७.

पडाए—पडाने से ३. ६३.

पटि—पड कर उ. १२, ६१.

पटी—पडह का भूत ३. २६, ३०.

पटे—पडे १. १०९; उ. २४; २३. १०७;

२४. १४४.

पटिन—पडिन [पडना=पुडि; गु०

पडिनि] १. १००; २. ६४, ११४; ३.

१०, २७, १६; ४. ३०, ४०; ६. ३;

उ. २१, २४, २७, ४०, ६४; ८. ३७,

१४, ४३, ४६, ४८, ४९, ४९; ६.

४, ११; १०. ७१; १२. १०; २३.

१०१; २४. ११४, १४४.

पतंग—[प० P, गु० पडे=पडहण=

उडना; Lat. praepes = खनि,

pelo = जाना; impetus; E. imp-

tuons] पतङ्ग=फतिङ्गे १. १९; उ.

१६; १८. ८; २०. ७२; २१. १८.

पतंग—फतिङ्गा ३. १४, २४; ४. ७; १४,

४०; १६. २८; २३. १४, ११६; २४.

४६; २४. ६३.

पतंगू—पतंग ६. २०; २०. १११; २३. ११६.

पतर—पत्र, कागज वा पतला [गु० पा०

पत=पात्र Pottiom; Lat. poenian,

Oir. ७, क्याम दो पत, रिदति]

१०. १२१.

पतरार्ह—पतलार्ह—[पत्र "पतलं हयन्"

(दे० १८०. ३) हि०, पं० पतल;

सि० पतिह; गु० पातलुं; बं० पातल,

पातला; म० पातल; गु० हि० पतल=

पत्रों की धाखी] १४. २४.

पतरि—पत्री=पत्नी=पत्नी २३. ११४.

पतार—पाताख—वापाख ( $\sqrt{प०}$ ) २.

१४६; १०. ४; १४. २४; १६. ४०;

२४. ११८; २४. १०१, १२१.

पतारहि—पाताख को १. १०६; २. १२४;

१४. ४९.

पतारा—पाताख १४. २; १६. ४२; २३.

१०२, १२१.

पतारू—पाताख १. ४, ६३.

पति—[दे० पति; छा० पतिग=पति;

Lat. patre, pater, pater, kin-

pes; Lith. pāts = पति] २५. १५४;  
प्रत्यय; पा० पत्तिय, (Trencknor,  
Notes 7. 3. 9), पच्चय; प्रा० पच्चय;  
(P. 280) हि० पत=लाज=मर्यादा=  
विश्वास २३. ४४.

पदारथ—पदार्थ १. १८१; २. १०१; ३.  
२२; ६. ५; १०. ६६; १४. २३; १६.  
२२, ३३; २२. ५२.

पदिक—पद [= भाग चाला; तु० पा०  
पदिक, पदक तथा अष्टपदक] = अनेक  
(सुधा० के मत में पदिक=पद के  
योग्य=रत्न) ६. ५; २२. ५२.

पदुम—पद्म; म०, अ० मा; शौ० पडम;  
पा० पदुम (हि० च० 2. 112. P. 139)  
२. ५८; सौ करोड़ २४. १४.

पदुमगन्ध—पद्मगन्ध ३. १५; ६. ११.

पदुमनी—पद्मिनी ८. ७.

पदुमावति—पोसावट ३. १, ६, २७,  
३७, ४१; ४६; ४. २, १०, ४२; ५.  
१, ६; ७. ६४; ८. ६; ६. ११, ३०,  
३२; १२. ८; १३. ८, ३५; १४. २४;  
१६. २५, ३१, ३२, ४१; १७. २;  
१८. १, २५; १९. १, ६, ३५; २०.  
३, १०, १७, ३४, ३८, ७३, ८५,  
१०५, १२१; २१. १, १५, ३५; २३.  
१८, ८८, १६१; २४. ४६, ५७, ६५,  
१२१; २५. १६, २०, ३३, ६२.

पदुमावती ३. २०; २२. २१; २३. १३६.

पदुमिनि—पद्मावती, पद्मिनी जाति की  
स्त्री २. ३; ३. २६, ३४, ४५; ६.  
१३, २३, २७; १६. ४; २१. २३;  
२२. २२; २४. ८८.

पदुमिनी—पद्मावती, पद्मिनी स्त्री १. १८६;  
२. ५७, ६६, १६४; ४. २५; ८. ३५;  
१२. ४६; २०. १४, ६८; २३. ३.

पनिहारी—पानी डोने वाली २. ५७, ६४.

पनग—पत्तग [पद्भ्यां नगच्छति, अथवा  
पत्त = पनत = पणत = प्रणत यथा  
पा० उन्न=उन्नत, पा० निन्न=निन्नत;  
नकारद्वित्व उन्न तथा निन्न के आधार  
पर; इस प्रकार पत्तग=शुक कर  
चलने वाला, तु० पत्तधज तथा  
पत्तक्खंध] सौंप २३. १६६.

पनिग—पत्तग (पत्तङ्ग) ६. १८; ११. ५५;  
१६. ६८.

पंथ—मार्ग १. ८४, ६४, ६६, १३७,  
१४६, १५४, १५७; २. ६६, ११५;  
३. ७८; ७. ४०; १०. १०; ११.  
३२, ४४; १२. ६६, ८८, ६७, ६६;  
१३. ३८, ५६; १४. ७, २४; १५.  
११, १४, ३०; २२. ४८, ६१, ६४,  
७०; २३. १०२, १६०, १८१; २४.  
१३२, १४२; २५. ३६.

पंथा—पंथ=मार्ग ११. ४५; १२. ३०,  
८८, ६४; १३. ३६, ५८.

पंथिन—पथिक=पहिअ=बटारु २. २२.

पयिद्धि—पान्य=तालागीर को १५. १४.

पेयी—पान्य=पात्री १२. ८८; १५. १५.

पेनग—पन्नग=सर्प १०. ११६.

पपिहा—पपीह=पपीहा=चातक २३. ८०.

पपीहा—चातक २. १६.

पपारह—प्रवारयति [ तु० पा० प्रवारया,

प्रवारित, प्रवारति=सामन्त्रिण करता

हे प्र+वृ=मनुष्य करना; तु० प्रव्याह=

प्रव्याह=प्रवाह; प्रवार=प्राम्भार

P. ३७०] प्रवारता हे=केंकना हे=

हेता हे १५. १२.

पपाय—केंका २०. ८१.

पपाग—प्रपाग २०. ११६.

पपान—प्रपाय=प्रपाय=प्रस्थान १२.

८१, ८८; १३. १, २०; २०. ११३.

पपानी—प्रपाय ७. १६; १२. ८२.

पर—[ उपरि दे० उप से, उपर (1);

Lat. super; Outh. nfar; Obg

alir = Germ. über = E. over;

O. r. /-] अपर; मि० परि; तु० पर;

म० पर, परी; बं०, उ० परे २. १११,

१४२, १४३, १०८; ४. ४, ४०; १०.

११, १४, २१, ८८, ६२, १४२;

१३. १०; १४. १०, २०; १६. २,

१४, १८, ४०; ६२. १४; २३.

११०, ११६, १४०, १०२; २४. ८,

४६; पाण्डु २४. ६०, ६८, ६९,

४०, ४१. ६४; ३४. १२, ४८.

परह—पतन्=पतंत=पहा २३. २०.

परह—पतति=पतह=पहती हे २. १४,

१२४; ८. २८, ४३; ६. ४०, ४१;

१०. ६५; १५. २, २४; (पहे) १६.

४०; १८. २, ३३, ४३; २०. ४१;

(पहे) २२. ६२; २३. १०९, ११०;

(पहे) २५. ८१.

परह—पहती हे २१. १४; पहे २४. ११.

परह—पह २२. १०.

परह—पतेह=पहे २५. ११.

परह—पहता हूँ १३. १६.

परकाया—परकाय २४. १४१, १४२.

परकाह(हँ)—परीक्षस्ते=परस्ते हे; दि०

परलना; पं० परलना; तु० परलनु;

ति० परलनु; म० परलनो; बं० परल,

तया परीक्षा; बं० परलन, परलनाह;

ति० परलन; परलनु; म० पर-

लनो, परलनी २. ४२.

परकाहि—परलते हे ११. ११.

परल—परल कर ६. ८; २२. ६२; २४.

११२.

परलट—(प्र+हृन्) प्रलट=पराट=प्रलट,

मि० परलट; मि० परलट १. १६,

४०; ४. १०; ७. ६३; १६. ४०;

२०. १११; २२. १६, ४४, ४१;

२३. ४; २४. ४०, ६१.

परलट—प्रलट १. ७८.

परलटी—प्रलट हूँ ३. १२.

परगटे—प्रकट हुए १८. ५४.

परगसा—प्रकाश किया (पगास्=प्रकाश)

४. २८.

परगसी—प्रकाशित हुई ६. ३५; १०.

११, ७०.

परगाढी—प्रगाढा=बहुत कठिन १८. ४.

परगास—प्रकाश १६. ३२.

परगासा—प्रकाशते=प्रकाशित होता है

१०. २०; १६. ६; २३. १६३.

परगासी—प्रकाशित की २४. ८१.

परगास्—प्रकाश (विस्तार के लिये देखो

H. 185) १. २; ३. ६, ११.

परछाही—प्रतिच्छाया = पडिच्छाया =

परछाई; [तु० महा० छाहा, शौ०

सच्छाह (हि० 1. 249); महा० छाही=

\*छायाखा = \*छायाका, और \*छाखा

\*छाखी P. 255, 165, 206] २४. ४३.

परजरे—प्रज्वलति = पजलइ = पजरइ का

शू० (तु० ज्वल, ज्वर) २१. १०.

परत—पतति = पडइ = पडता है १. ८४;

पडत ही = पततेव २५. १२०.

परतापु—प्रताप = पयाव २. १८४; ७. ५७.

परथम—[वै० प्रथम, पा० पठम; अवे०

फ्रतेम; वै० प्रतरम्, \*Pro का

अतिशय में तमवन्त] प्रथम=पठम,

(कडइ = कथति, P. 221) २. १६८.

परदेसी—परदेशीय २२. ६१; २५. ३८, ४०.

परधानी—प्रधान = पधाण = पहाण [तु०

पा० पधान, प्रयल, योग, ध्यान दो

पा० पदहति, पधानिक, पधानिय]

२. १६६; ८. २.

परवत—पर्वत = पव्वय (पर्वन् + त) १.

४४, १०६; १२. ८४; १४. ४; १५.

४३; १६. २८, ३३, ३४, ४२, ४३;

२०. ११३; २१. ५७; २३. ३७;

२५. १०३.

परवता—पर्वतीय = पर्वत का = हीरामणि

शुक १६. ४२.

परवते—पर्वतीय = पहाड़ी ७. २१.

परवन्ता—पर्वतीय = पहाड़ी १२. ५८.

परवि—(परव) पड़ंगी ४. २४.

परविला—[वै० पूर्व \*Por देखो परि;

तु० Goth. *fram* = E. *from*;

Goth. *fruma* = As. *formo* अवे०

पोडर्वो; सं० पूर्व्य = Goth. *franja* =

Ohg. *frō* (परेश), *fromwa* =

Germ. *frau*] पूर्विल = पुर्विल =

पुरविला = पहले जन्म का (इल्ल प्रत्यय

P. 595; तु० पा० पुव्व = पूर्व्य तथा वै०

पूय > पूव > पूव्य > पुव्व) २०. १३५.

परवेस—प्रवेश २४. १४१.

परवेसु—प्रवेश २४. १५२.

परभात—प्रभात = प्रभाय १०. १०७.

परभाता—प्रभात २३. ६१.

परमँस—परमांस ७. ३५, ३८.

परम—अत्यन्त [पर का तमवन्त; Lat.

*primus* ] =. १०.

परमल - परिमल = पराग = पुष्पगन्ध,

श्रुति १०. १२२.

परमेसरी - परमेश्वरी २०. १७.

परसत - प्रखय = पञ्चय १५. ४७.

परयौन - प्रमाय = प्रमाय = परमाय १. ६२.

परयौन - प्रमाय २५. ११३.

परसदरग्यान - परसंपापाय = कामपादय

(वाहाय), पारम पन्था २. १२२.

परम - पारमपापाय ३. २०; राय २१. २०.

परम - राय से १. १२१.

परम - प्रमल = प्रमल [पु. पा. प्रमल =

प्रमली, तथा प्रमल] १. १२५;

१७. ११, २०. ११०; २४. १४६.

परमहि - दूरी है २४. ७१.

परसाद - प्रसाद = म. प्रा. प्रसाद; पा.

प्रसाद; मि. काय २५. १२२.

परमि - प्रमि = प्रमि १. १११; २०. ७०.

परमे - राय करे से ४. १६.

परमेन - प्रमेन = प्रमेन = प्रमेन = प्रमीना

२४. १२६.

परमि - परमि = परमे है १२. ६०; १५.

१६, १६, ७०; २३. २३; २५. २१.

पारी - पारी है २१. २०; पारी (कोई)

पारी, २२. ४२.

पारी - पारी = पारी १. ६०.

पारी - प्रमेन = प्रमेन = प्रमेन = प्रमेन

११ (प्रमेन = प्रमेन) = २६.

परा - परा १. ११७; २. ७, १२१, १४०;

५. ३, ६, ४२, ४६; ८. २४; १.

४२, ४७; १०. ६, २४, ६१; ११.

३, १२, २६; १५. ११, २६; १६.

३, १२; २०. ७२, १०१, १०२.

२१. १६, २६; २२. ४६; २३. ७१,

१७०; २४. १२, २४, १२६; २५.

२२, १२७, १४२.

परा - [पै. पर; भाषा. \*Per, Per]

पै. पर, परा, परा; Lal. per =

पै. में से; ध्यान दो परा; \*Per,

\*Per (= प्रमोक्ष मुक्त क्रिया की दृष्टि)

से निष्पन्न; यथा पै. दृ, दिग्, दि,

पै. दृष्ट, दृष्टि, (RPD, दृष्ट,

दृष्टि विमल)] पराग, परा;

म. पराया, पराया; पु. पराया, मि.

पराया, पराया (JN. 51) १६. २६.

पराय ४. ४२; ७. १७; २३. २७, ११६.

परायपरेया - प्राय पराया = प्रमोक्ष

३. ७४; (मायाय परा) २५. १६.

पराय - प्राय = प्राय, (स्वामि १. ११)

८. ४७; ११. २२; २३. १४, २४, ४६.

पराय - प्राय १२. २६.

पराय - प्राय = प्राय = प्राय, (3.

Lal. opinion (पराय); \*Per

(पराय) पा. परा = प्राय, (परा)

परी] २०. १०६; २३. २०.

पराय - पराया ७. १४; १२. १६.

परासहि—पलाश=ढाक(के), म० पळस;

सि० पलासु; पं० पलाह; सिं० पलस

२०. ५.

परासउँ—परसउँ=फासउँ=छूँ १८. ५३.

पराहीं—परायँ (परा+अय्-पल, देखो “रे

पलह रमह वाहयह” इत्यादि, वज्रा०

134) पलायन करें=भागें ५. २६.

परि—पड़ २. १७७; पड़कर ७. ५२.

परिउँ—पड़ गई १८. २४.

परिगह—परिग्रह = परिगाह = आश्रित

जन (परि+गृह, ग्रम्) १२. ३२.

परिछाहीं—परछाहीं १०. ६७, ८७;

१४. १२.

परिमल—पुष्प पराग २२. ३४.

परिमलामोद—आमोद = आनन्द देने

वाला पुष्परस ४. ८.

परिलेखा—परिलिखइ का भूत (लिखा =

समझ) १३. २६.

परिहँसि—परिहास से १०. १३६.

परिहि—पढ़ेगी=आयेगी १२. २६.

परी—परइ=पतति का भूत १. ११६;

४. २७; ५. ६, ११; १०. ७, ८७,

१०२; १२. २; १८. १, ६; १६. २५;

२०. ४७, ७७, १२०; २१. ४, १६;

२३. २; २४. ६४; २५. २६.

परोआ—परोया (पोआ=प्र+वै) ७. ६८.

परीख—परखे [वै० परि; अवे० पड़रि;

Lat. *per* (तु० *per*-magnus=

अत्याधिक विशाल) *Obulg. pariy*

(परित:); Lith. *per* (चीचोंचीच);

Goth. *fair*; Ohg. *fir* = *far* =

Germ. *ver-*; देखो “पर”; म०

परीस = परीक्षा (JB. 42, 49)

परिक्ख=परि+ईछ; (तु० फलिहा=

परिखा; फलिह = परिघ P. 208,

257)] २५. १३६.

परे—पड़े ६. ४४; १३. ३४; २१. १०;

२५. ११८, १२०.

परेउँ—पड़ा हूँ १३. ३७; २१. ३६.

परेउ—पड़े हो १२. ६२; पड़ गया १८. १८.

परेता—प्रेत=पेश=एक देव जाति १. ३१.

परेम—प्रेम=पेम्म=पेम ४. ४८; १५.

४०; २१. ५६.

परेवई—परेवा=परावत=पत्नी ने १६. ६६.

परेवा—पारावत; पा० पारेवत; मा०

पारेवय; हि० परेवा, परेवो; गु०

परेवो; सि० परेलो; म० पारवा; सिं०

पारविय २. ३५; ३. ७४; ५. १८,

५२; ७. २५; ६. १४; १०. ६६;

१२. ३६; १५. ७१; १८. ७; १६.

१२, ६३; २०. ८३; २३. ५६, ५७,

१५६; २४. १४०; २५. १३१.

परोस—प्रतिवास = प्रतिवासिन्; गु०,

सि०, पं०, हि० पड़ौस; वं० पड़सी

(पड़ौसी) उ० पड़िसा; म० पड़ोस;

(JB. 49, 50, 78) ३. ७२.



पल १. १६; १०. १७; १४. २.

पलक—पलक (भूषकने का काल) २.

१७६; ११. ४६; २२. ४२.

पलंका—पर्यङ्क; प्रा० पलंक (P 285)

शौ० प्रा० पलिकं; पा० पलङ्क,

परियङ्क; धा० पाळेङ्क; वै० पलंग;

ड० पलंक; घं० पालांग; पालंक;

वि०; हि० पर्यङ्ग; ति० पलङ्ग २१. २६.

पलटि—पर्यस्त, (पलट कर, उलट कर);

“पल्लवः पल्लवः पर्यस्त इति पर्यस्त—

शब्दभवम्” (दे० 186, 8), तथा

“पल्लवः पल्लवः पर्यस्तति” (193,

11); तु० म० पालटयें; हि०, घं०

पलटा; तु० पलटयें; पाळटयें; ति०

पलटयु; घं० पालटिते आदि (तु० वि

पलेय = हल्ला केला JB. p. 279;

JB. 48, 83, 110, 122, 141, 148

तथा II. 143, P. 295; तु० पा०

पल्लव = पर्यङ्ग; पल्लविका; हि०

पल्लवी; पल्लविन आदि) ११. २३;

२४. १४२.

पलामहि—पलाम की १२. ६८.

पलुहर—[“पल्लवि” तु०; पर्यङ्ग=पर-

रा = पल्लव वृक्षा, तु० पा० पल्लवि =

पल्लववृक्ष, पल्लवपत्र, पल्लवविध =

पर्यङ्ग; पल्लव, “पल्लव = पर्यङ्ग;

(P. 295, 312) हि० पल्लव, पल

वृक्षा, —पर्यङ्ग “पल्लवपत्र पल्ल-

परिवर्तनम्” (23, 6) म० पल्लव,

पल्लव = पात्रा (JB. 48, 51, 77,

109, 141) तु० पा० पल्लविका; हि०

पल्लवी = पल्लव से (पैलों को पक

करके बैठना)] २१. २६.

पलुहत—पल्लवित २४. ११६.

पल्लउ—(तु० सं० पल्लक) पल्लव = पल

२०. ७.

पयैरि—पौड़ी २४. ११२.

पयनवेध—पवन को बांधने वाला=प्रबो

की रोकने वाला, [तु० पा० पवन =

वे० प्रवण; Müller P. Gr. 31,

पवन = उपवन असंगत; तु० Lal

pronus = L. prone] १८. ४६.

पसारसि—प्रसारपति = फैलाता है (परा-

रण = प्रसारण JB p. 363) २३. १०.

पसारदि—प्रसारयन्ति २. ११४.

पसारा—फैलाया, फैलाव २. १००; ४. ४१.

पसारी—फैलाई २३. १०; २४. ११६.

पसीना—प्रसवेदित हुआ (प्रसवे, प्रसव,

पसीना) २१. २६; २३. ६६.

पसेऊ—प्रसवेद २३. ६६.

पहै—परे, पारी, वै (पर II. 373)

३. ६; ८. ४; १०. २७, १०. ११०;

१७. १; २३. ८७.

पहन—पहा २१. २१.

पहर—पहर; प० पहा; हि० पहा (पहा,

पहिता = हाथ में बाँधी करवा) तु०

पोर; म० पहार, पार; वं० पहर

२. १३८, १४३.

पहरहि—पहर पर २. १४३.

पहाड़—पर्वत (प्र+धारय् अथवा प्र+  
धाढ) २१. ५३.

पहार—पहाड़ २. १६६; ३. ७६; ७. १६;

११. ४३; १२. ८४; १८. ४३; २१.

६४; २३. ६५; २४. १२.

पहारा—पहाड़ १. ६; २. १६२; १२.

१०३; १५. ५; २३. ८३; २४. १०८.

पहारू—पहाड़ [पहार; मा० अप० पढि-  
अअढे—प्रथितक; तु० पहाड़ा, पहारा;

मा० अप० पढिअअण्=प्रथितक:

II. 118] १३. ३०; १८. २१, ४३;

२५. ८५.

पहिँ—पर २०. १२५.

पहिचानि—पहचान (P. 276) प्रत्य-  
भिज्ञा २. ११२.

पहिरइ—परिधत्ते=पहरता है [हि०पहि-  
रना, पहरना, पहनना; पं० पहनना;

गु० पहेरवुं; सि० पहण; का० पहर]

२०. ११.

पहिरसि—परिदधासि ११. ४५.

पहिरहिँ—पहरते हैं २०. १३.

पहिरि—पहर कर १२. ५; पहर लो १२.

६१; २०. ११; १८. २३.

पहिरे—पहरइ का भूत १०. ६३, १०६.

पहिलई—प्रथमे=पढम; अप० पहिल;

हि० पहला, पहिला; पं०, उ०, वं०

पहिला; म० ग्रहिला; गु०पेहलुं; सि०

पहयो; आ० पोत; सि० पलमु (देखो

Gray पहलइ \*प्रथर) २१. ३४; २५.

२, १२६, १६१.

पहिलइ—पहले ही १. ८, ५४, ६०,

१७८; ८. ७२; ११. २८; १३. २६;

१६. २६; २३. ५७.

पहिले—प्रथमे २५. १३५.

पहुँ—पहँ (पछे से) २५. ४४.

पहुँचइ—पहुचइ \*प्रभुत्वति \*प्रभुत्वति

(म० पहुप्पइ; देखो Wobor, Hall

7; P. 286, 299) हि० पहुँचना; पं०

पहुँचना; सि० पहुचण; गु० पोचवुं;

म० पोहचणें; वं० पहुँचन; उ० पहुँ-

चाही (संभवतः प्राचूर्य=पाहुना के

साथ संबद्ध JB. 252) २. १७६;

११. ३२; पहुँचना है १२. ७६; पहुँचे

१२. ८३; १३. ६२.

पहुँचउँ—पहुँचूँ ११. ५६.

पहुँचत—पहुँचने में ११. २४.

पहुँचा—पहुँचइ का भूत २. १७६; १६. २१.

पहुँचाउ—पहुँचाओ २३. ३५.

पहुँचाप १. १६६.

पहुँचावई—पहुँचाता है १०. ५६.

पहुँचावहीँ—पहुँचाते हैं २. १७६.

पहुँचि—पहुँच कर १०. १४६, १५६;

११. २६.

पट्टेची-बछाई का गहना २२. ४.

पट्टेचे २२. १.

पट्टनारि-प्रायण्य [प्राण्य, प्रायण्य;

दि० पाट्टया; (किन्तु मा० पाट्ट-  
यापो=उपनिही P. 141, 304)

गु० पोयो] १३. १२.

पट्टेचा-पट्टेचा ११. १०; पट्टेचनी १६.

१७; २५. १३४.

पौ-पाइ=पाव=पै २५. १२७.

पौडरी-छोटी २. ४१.

पौएल-पावो २५. १६.

पौमो-पाइ २५. १०६.

पौय-पय, पंय, पौय, पाय, पाक (आय

का निमुक्ता पाक); गु०, पं० पाय;

म० पाय, पौय; मि० पयु. पंगो,

पंगु; का० पयय; मि० पय ५. २०,

१२. ११. १४, १२; १६. ११; २३.

२१, १३१, १६१.

पौयण्ड-पौं मी १. ४३.

पौयण्ड-पंय १. ७३; ५. २; ६. १३;

१६. ३६.

पौयी-पयी १. १६.

पौयू-पंय १२. ६४.

पौय-पय; दि०, म०, गु०, पं०, उ०

पौय, पं०, मि० पंय, मि० पय; पय०

पयय (य); पय० पंय, का० पंय, का०

पंय, का० पौय, दि०, म०, मि० पय;

पंग० पंय, पय० पंय; पय० पंय०

पौय; कु० पंय २. १११; ३. २१;

५. १२; ८. १; १३. ७; २२. १४;

२५. ११०.

पौयउ-पौयों ११. ४६.

पौयक-[वि० पायड, पयित, पायड

(पीतरक); Lat. *palles* (पीत

होमा), *pullus* (भूत); Lith.

*patras* (पीत), *pilkas* (भूत);

Obg. *fula* = E. *pale*; गु० पा०

पयडर=वि० पायडर] ६. ४०.

पौतिन्द-पंति-पंति; सि० पंगति; दि०

पंगत, पौत २. १४६.

पौतिहि-पंति मी २. १०.

पौति-पंति, पंतिप, पंति-पौत (गु०

मन्त्री=मंति P. 269) १. ६; २. १०,

१७१, १८६; ५. २१; १०. ११३.

पौय-पाइ; पय० पाय; पय० पाई; का०

पाइ; वा० पुय; मि० पाय; संय०

पुय; मी पौ; बल० पाइ; उय०

बल० पाय १२. ७.

पौउ-पौय १. १६०; २. १११, १६०,

१७४; ४. ११; ६. ३१; १६. ११;

१२. १०, १६; १४. ७; १६. १४; २०.

१६; २२. ४६; २३. ११, १०, १६०.

पौदा-पय०-पययहि; मय० पौ

(IL 77) ५. ४६; ७. २१; १०. ४०,

२०. ३४; २२. ७०; २३. १६१.

पाइ-मायय=पायड ४. १४; १८. ४४;

पाद [ वै० पद्, पाद्, पाद; पद =  
पग; Lat. *pēs*; Goth. *fōtus* = Ohg.  
*fuoz* = E. *foot*; Lith. *pėdà* = मार्ग;  
Ags. *felvan* = E. *felch*; Arm.  
*het* = मार्ग ] २१. ६४.

पाइअ—पाइये २. १६१; ५. १७; ७.  
२३; ८. ६३; ११. ३६, ४०; २२.  
४८, ६६.

पाइत—प्राप्यते ११. ३८.

पाइल—पादल=पायल=पाजेव १०. १५८.

पाई—पाद ( सिर से पैर तक = सर ता  
पा फारसी ) २. ६३.

पाई—प्राप्त की १. १७, २७, १५६; २.  
२३; ३. ५; ४. ५७; ५. ५; १२.  
५०; २०. ४८; २२. २२, ६०; २३.  
८१, १००; २५. ११३.

पाउ—पाता है १. १५२; २. १४६; ३.  
३०; ७. ६; १०. ५५, १४७; ११.  
४२; १२. ६६; १६. १४, २५; २०.  
५६; २२. ६४.

पाउब—पावेंगे १२. १६; २१. ५४.

पाउबि—पावेंगी ( तु० रामा० 1. 123.  
छ 5 ) ४. १६, २१, ५२.

पाऊ—पाँव १२. ८६; १६. ३६.

पाए—प्राप्त किये १. १५७, १६६; ५.  
२०; १०. १५४; १५. ७३; २४.  
३२; २५. ११२.

पाएँ—( मैंने ) पाया १. १५१, १६०;

६. १५; १०. १६०; २१. ४७.

पाएउ—पाया १०. १२०; १६. ५७.

पाएन्ह—पाओं को ४. ५८; पाओं में २०. ७७.

पाओ—पाता है २३. १७०.

पाकि—पक—पक, पिका; पा० पक; आ०

पका; नै० पाक; का० पपि; उ० पका;

यं० पाका; पू० हि० पाकल; सि०

पको; म० पीक; पिका; जि० पको;

अवे० पक; फा० पुस्तह; सरि० पस्त;

बलू० पक; उक्त० बलू० पहत; ट०

क्रि०; √ पच्; [Obulg. *peka*

(भूगना); Lith. *kepu*—सेकना] २. २७.

पाके—पके २. २६; २५. १६४.

पाछे—पश्चात्, पच्छा, पच्छ; पाछे; पीछे  
( तु० पश्चिम ) १२. २४.

पाछेँ—पाछें, पाछैँ, पाछेँ, पाछे; गु०  
पाछी; प्रा० पच्छह (पच्छहिँ—पक्षे  
H. 77) २५. १०५.

पाछि—पीछे १२. ६३; १५. ६४.

पाछिल—पिछला (पश्चा—पच्छ; इत्त  
प्रत्यय P. 595) १६. २६.

पाछू—पश्चात् पक्षे; अप० प्रा० पच्छह;  
उ० पछे, पाछ; यं० पिच्छे, पच्छे;  
पं० पिच्छे, पिच्छोँ; सि० पोए, पुआँ;  
गु० पछे, पछीँ, पछो; (अवे० पस्च,  
पस्चइत=पीछे) १५. ४; २३. १७३.

पाछे ८. २८; १०. १२६, १३४.

पाजी—पाघ “पजा अधिरोहिणी, मार्ग-

वाचकम्पु पचाशद्भवः" (दे० 181, 5, 6) म० पात्र; गु० पत्र; पदाति २. ११६.

पाट-पट्ट=सिंहासन (गु० पटरानी=पट्ट-राशी) २. १६९, १६५; म. २; १०. ११, २२, १२२; १२. २५, १२; २३. १२; पट्ट=रेखम १०. १२०.

पाट्ट-पट्ट=पाट=सिंहासन २. १००; २३. १५; =रकाट=पाट=विस्तार १६. ६१; पटी दुहे=द्वय २. ६७.

पाटी-पटी=परंपरा १२. ८४; पट गये १४. १; २२. २४; पटिका २५. ६६.

पाट्ट-पट्ट=सिंहासन १. ६८; १६. १०; २४. २१, १२६.

पाड-पाठप्रग १०. ८०.

पाट्ट-पट्टा (ट्ट) देने के लोह ७. ४२.

पाटन-पाटन १. ८२.

पान-[पत्र \*Pat (पत्रि); गु० Lat. *prana*=प्रा=Germs. *flitig*, *accipiter*; Obg. *feather*=E. *feather*] वन; हि० पना, पान; पं० पन; गु० पनु; सं० पान; मि० पन २. १२०; १६. ६६; २०. ७; २१. २४.

पानरि-पनका [गु० वा० पनर=दे० मर, देसो *Treasurer*, *Notes* ६३. 16, *Collector*, *TCr.* 12, 6. गु० पानर=पानर] १६. २९.

पाना-[पयं *Ag. form*=E. *from*]

पत्र २. ७६.

पातार-(√पट) पायास २५. १०.

पाति-पत्री (√पत) २०. ९४; २३. १२४.

पातिसाहि-बादशाह १. १०४.

पाती-पाती, पिटी २३. २४, ७०, ७१,

७३, १०४, १०६, १०७, ११५;

पत्री=पत्नी २०. २६.

पान-(प्रसिद्ध पान का पत्ता) पयं; हि०

गु०, म० पान; सि० पनु; का०,

सि० पन; सं०, उ० पाण; बि० पोन=

पा १. १६; २. १११, १०२, १६६;

१०. १२२; १६. २५; २०. १४,

१२६; २५. १६४.

पानन्द-पानों के १०. ६०.

पानि-[पानीय, पान से; √पा=Po(i);

गु० विवति; Lat. *biis*, पीन;

Obulg. *pili*=पीना; *piro*=पान.

Lith. *penas*=पयस=दुग्ध; Lat.

*potus*=पेय, *poculum*=पान]

पानिय; अज; हि०, पं०, गु०, मि०,

म० पाणी; सं० पानी; का० पीनु.

सि० पन १. १११, ११७, ११८,

१६६; २. २०, २७, ८०, १४६,

१४७; ३. ६७; ४. २४; ६. २४;

१३. ४१; १६. २१; २२. २४, २६;

२३. ४०, ८९, १२०, १२१, १४१.

१४६, १६६; २४. २७, ३०, ३१;

२४. २६, २६

पानिहि—पानी को २४. ३०.

पानी—पानीय=जल २. ६७, १४६; १३.

३७, ४२; १५. २४; २५. २६, ३१.

पाप—[तु० Lat. *patior*; E. *passion*

आदि] पाव=कुकृत्य १. १२३, १४०,

१५१; ४. ६०; १६. ४६; २०. ६६.

पापी—कुकर्मी १. ५०.

पापु—पाप ८. ३२.

पायन्ह—पाँओँ में १२. ६१.

पाया—पाद=पाश्र्व; पाओ, पाँव; गु०,

म० पाव; वं० पोश्वा; सि० पा (J.B.

55, 125, 225) १. १५१; ८. १५;

१२. २५, ४५; २३. ५१; २४. ५२,

७३, १२१.

पार—[पर से  $\sqrt{पृ}$ , अवे० पेरेस=पुल;

*Bactrian peretha*] २. १३६, १७४;

१०. ४३; १२. ८६; १३. १६, ३३,

४८; १४. १६; १५. २४, ५५; २१.

२६, ३२; २४. १२३.

पारइँ—पार करने में (पछे) २५. ७२.

पारइ—पार हो सकता है १. ७३.

पारउँ—पार हो सकता हूँ २. २४; १८. ४०.

पारख—परीक्षक=परिक्ख २५. १३६.

पारखी—परीक्षक ६. ८.

पारबती—पार्वती (पर्वतस्य पुत्री) २१.

६०; २२. ५, १७; २५. २६, २६, ३७.

पारभा—प्रभा=पहा=प्यारे की कान्ति.

[पा० पारिभट्ट=परिमृति] १३. ४५.

पारसरूप—स्पर्श पापाणरूप ४. ५७.

पारहु—सकते हो १४. १८; २२. ८.

पारा—पारयति=पारइ=सकता है;

(वंगाल में अब भी प्रयुक्त है; कवीर

और तुलसी ने प्रयोग किया है)

१. ११६; २. ५; २०. ११७; २२.

७८; २४. १५५; पार १. १३२,

१४२; १३. ६२; १५. २३; २१. २८.

पारी—सकी ८. ५०; २३. १११.

पारू—पार १५. ३.

पाल—पालि=पाली=रेखा, प्रान्तभाग=

तट=किनारा २. ५६.

पालइँ—पाले पछे=पालि (“पालि: स्य-

अयङ्गपङ्क्तिषु” अमरः) पछे पड़ गया

२०. १०१.

पाला—निनारा ५. १५; पालित=पोषित

( $\sqrt{पाल्}$   $\sqrt{पा}$  से) ८. २१; पालइ

२२. ५०.

पालि—तट=किनारा ४. ६; ५. १३.

पाली—प्रान्त=तट=किनारा ४. १३.

पावँरि—पादाकार; पावड़ी; (पादुका);

म० पायरी, गु० पायरि; सि० पइरो;

सि० पियवर (J.B. 52, 62) सुधा०

पादपतक, पायवडण, पावड़ी १२. ७.

पावइ—पावे (पावइ; पाना, पाओना,

पावना; पं० पावणा; गु० पांहुं; सि०

पाइणु; म० पावणें; वं० पाइतै; उ०

पाइबा; का० प्राउन २. ७२; १५.

१०, ११; १८, ११; २३, १०१ १२६;

२४, १५१; प्राप्नोति = पाता है १.

१४१; २, १५१; ५, १६; ८, ६१;

१०, ११५; १८, १६; १६, १७; २४.

११६; प्राप्नयति = पावेता ६७.

पायई-पाता है १, १६२; २४, १४४.

पायई-पाई १३, १५; १६, ११; १६.

२४; २१, १६.

पायई-पाई ४, ११.

पायहि-पावे है २, १५६, १७४; ३,

११; १२, ६२; २३, १७८; २४, २१.

पाया-पावा = पावह = प्राप्नुपात् = पावे

का भू० १, ४१; २, १५२; ३, ६०,

६५; ४, २०, ६१, ६२; ५, १६, ११,

४७; ६, ४; १०, १२७; ११, १६;

१२, १६; १३, २५, ६१, १६, १; २१,

२४; २२, १५, २७, ६६; २३, १,

१५१, १६४; २४, ६४, ६८, ११६;

२५, ००, १२०.

पाय-पाई = हि० पाय; पं० पाय, पाह;

पु० पायुं; मि० पायु; म० पाय, पायी;

मि० पाय, पाय (य); का० पाय (य)

१, १६१; २, ४१; ३, १६; ५, १७;

७, २१; ८, २५; १५, १६; १६, १६,

११, १७; १६, ६४; २०, ४६; २३,

१४, १००.

पाया-पाई = पाय १, १६५; २, १७,

००, ०१, १११, १२१, १४७, (२४

के पाते) १५८; ३, १५, ४२; १०,

६; १६, ११, १५; १७, २; २०, ६;

२३, १२७.

पाहन-पापाय = पापर (प=त=इ पाप)

पह=पय=पय P. 263) ५, ७; १०,

७२; २१, २८, २६, ३०; २२, २४;

२३, ४८.

पिंशल-पिहल=चन्द्रशाल १०, ७६.

पिंशला-पिहला नाडी=नागिका के

दक्षिण भगने का स्वर जिते शूर्यका

स्वर कहते हैं २०, ६३.

पिंजर-पिजर=पिजरा ५, १०.

पिन्न-पने० पय; पा० का=परी ३,

१६; १२, ४८; १८, ४४; २४, १६०.

पिन्नर-[पे० पाति, पिचति; √पा=

•Pol तथा •P] का सम्प्रसारण रूप,

पु० Lat. *inbo* (=•pibo) पु० पात,

पात्र] पीता है १०, १४४; १५, १४.

पिन्नन-पीने में १५, ६.

पिन्नता-पात = पीता १, ३८.

पिन्नर-पीत = पीन (पीर घायका पीवर

पु० हि०) पीना (II, 97) ७, २६;

१०, २१, ११६; १८, ११; २०,

६७; २२, १६.

पिन्नरई-पीकाय ८, ६१.

पिन्नरि-पीली २४, १००.

पिन्नहि-पीने है १, ११७.

पिन्नार-पिचकार (P. 167) पं० पिपासा;

प्यार; गु० प्यारुं; सि० प्यारो ६. ६.

पिआरा - प्रियतर = पिआरा = प्यारा १.

१३७; ३. ७६; २०. ११७; २१. ४२;

२५. १५.

पिआरी - प्रिया = प्यारी ८. ५२; २२.

२६; २४. ५३.

पिआरे - प्रिय = प्यारे ८. ६६; २३. ७२.

पिआलहँ - प्याले में २०. १०१.

पिआस - पिपासा = प्यास २. ५६; ७.

५६; २३. ८१.

पिआसा - पिपासित = पिवासिय = प्यासा

२३. ७४, ८४, १४१, १६५.

पिड - प्रिय = पति २. ३६; ४. १६; ८.

४६, ५१, ५६, ६४; २३. ८०.

पिंगल - प्रसिद्ध छन्दःशास्त्र १०. ८०.

पिंगला - एक रानी का नाम; अथवा

दक्षिण स्वर नाड़ी (नासिका का

दाहिना स्वर) २२. ११; २३. १४७.

पिंजर - पिंजरा; सि० पिजिरो; घं० पिंजर;

उ० पिंजिरा; (तु० पंजर; म० प्रा०

पंजलअ; पा० पञ्जर; उ० पिंजिर;

सि० पिणिर) ५. १८, २१, २२;

७. २५.

पिटारी - पिटक, पा० पिटक; हि० पिटारी,

[तु० पा० पेळा, पेळिका] २५. २०.

पिंड - पिण्ड = शरीर २३. २२; २४. १३६.

पिंडु - [संभवतः √पिप् से; Grass-

manu के मत में √पीड से; अन्य

व्युत्पत्तियों के लिये देखो Walde,

Lat. Wth. s. v. puls; तु० पा०

पेळ; पेडलाल] शरीर १७. १५.

पितह - पिता ने २२. ५०; २४. ५८.

पिता - [पितृ, पितर Lat. pater; Jup-

pter, Dies-piter; Goth. fadar =

Germ. vater = E. father; Oir.

athir, शब्दानुकरण पापा से, यथा

तात, माता] पिथ, पिड १. ५१;

३. ४, ५१, ५२, ६१; ४. १२; १६.

१७, १६, ३६; २२. ३८; २४. १३१.

पियार - प्रेम = प्यार ४. १६.

पिरितम - पियतम - पिथयम - पति

६. ५५.

पिरिति - प्रीति - पीइ ३. ७८, ७६; ७.

७२; ८. ५४, ५६.

पिरिथुमि - पृथिवी [च = च P. 192 =

म P. 241] ६. ५२.

पिरिथुमी - पृथिवी [√प्रथ्; पुढवी,

पुहई, पुहवी, पुहवि, पडुवी, पिरथी,

पिरथमी (P. 51, 115, 139; H.

132, 144)]; पा० पडवी, पथवी; प्रा०

हि० पडुमी; सि० पोलव २. ८;

१६. ४०.

पिरितम - प्रियतम - पिथयम १६. ३५;

२०. १२०; २१. ४८; २३. १३७,

१५१, १६८; २४. १२०.

पिरीता - प्रीत = प्रीय = प्रसन्न (प्री; ध्रवे०





तु० पा० पिंसति = वै० पिंशति, जिस  
में दो धातु संभिलित हैं (य) \*Poig  
जैसे पिञ्जर, पिङ्गल तथा Lat. *pango*  
में; (आ) \*Poik जैसे सं० पिंशति  
और पेशस् में; अवे० *paes* सजाना ]  
पीसते (हुए) २३. २५.

पीसा—पिनष्टि—पीसइ, हि० पीस—;  
पं० पीह—, पीस—; गु० पिस—;  
पीस—; लि० पीह—; म० पिसणें; वं०  
पिप्; का० पिह—; (JB. 41) २३. २५.

पुकार—पूकृत-पुकरिय-बुलाना २३. १७६.

पुकारइ—पुकारता है ६. ४८.

पुकारई—पुकारती है ४. ४०.

पुकारउँ—पुकारूं ४. ५०.

पुकारहिं—पुकारते हैं १०. १०१.

पुकारा—बुलाया २. ३८, १३६; २३. ६.

पुकारि—पुकार कर २३. १८३.

पुकारु—पुकार २३. १४१.

पुछारि—पिच्छालि [पिच्छ तथा पुच्छ =

पूँछ; तु० Lat. *pinna*; E. *fin*;  
Gorm. *finne*; मयूर की पूँछ के पर  
(P. 74); तु० सं०, पा० पिच्छिल;  
हि० पिछलना] ६. ४४; मोर का  
मादा १०. ६८.

पुतर—[वै० पुत्र; भायू० \*Putlo = Lat.  
*pullus* (\*Putslos) जानवर का बच्चा  
(Pōu से, तु० Lat. *puer*, *pubes*);  
Lith. *putylis* = पशुपोत; Cymr.

*wyrr* = पोता] पूत; अवे० पुश्र;  
आ० फा० पूर, पुसर, पिसर; गभी  
पूर; का० पुर, पूर; वा० पोत्र; सरि०  
पोच १६. १६.

पुनि—[वै० पुनर, पुनः \*Pū (\*Apo =  
अप के साथ संबद्ध) जैसे पुच्छ में;  
तु० Lat. *muppis*, *poop* (आन्तिम),  
प्राथमिक अर्थ पीछे] फिर १. २४,  
३२, ५४, ६१, ६२, १२१, १२६,  
१७१; २. २६, ७३, ८१, ८६, ६७,  
१०५, १२१, १६१, १६६, १७७;  
३. ४, ५, १४, ६७; ४. १३, १४,  
१६, १६, २४; ५. ८, १६; ७. २;  
८. १८; ३२; १०. २०, ७१, ८१,  
१०२; ११. २८, ४८; १२. १५,  
३६, ६३, ८१, ८६; १५. १, २४,  
४१, ५८; १६. ३१, ३६; १८.  
६, ४५, ४८, ५४; १९. ६, २६,  
५६; २०. ३६, ३७, ३६, ४०, ४६,  
७७, ८१, १०६, १२५, १३३; २१.  
३, २४, ५६; २२. १२, ७८, ८०;  
२३. ४६, ५८, ८७, १२१, १३७,  
१८४; २४. २४, ४६, ८१, १०४,  
२३७; २५. ६५, १५७, १६१.

पुञ्ज—पुण्य = पुण्य = (P. 242, 243)  
पा० पुञ्ज √पु से १. १३५.

पुरइनि—पणिनी = पणिनी = कमलिनी  
१५. ७४; २४. ६७, १०२.

पुराण-प्रापेण=प्रापेण करे २०. ८७.

पुराण-प्रापेण कर १७. ४; २२. १६.

पुराण-[वि० प्राप + Per से; तु० सं०  
पर (प्राचीन काळ में) तथा Lith.

pernai, Goth. *fairness*, Obz.

*ferm*=Germ. *fern* (गान वर्य का

दिम); *fern* (पहले); *ferro* (दूर)

तु० प्रा०=E. *fore*] प्राप प्रापक

१. २४; ३. १८; २१; १०. ८०.

पुराण-प्राप, बीरा १. ६२, ६६;  
२. ११६.

पुरी-मगरी २५. ११६.

पुराण-पुराण=पुराण, पुमि; मि० पुमि.

वि० पोम १. ८१, ८४, ११२, १२६;

८. १४; ६. ४; १२. ८१; १३. ६१;

२०. १११; २२. ४१; २४. १०३.

पुराण-पुराण १२. ४४; १३. १४.

पुराण-पुराण की १६. १६.

पुराण-[वि० प्रा, धरे=प्रापेण=प्रापे;

\*Per; तु० Goth *from*=*from*;

Goth. *framos*=Ae. *framo*=*first*

सं० प्रापे; धरे=प्रापे; Goth.

*frans*=Obz. *frs* (मनु); *fram*

=Germ. *fram*. Lat. *procedi*

am } ए० प्राप, वि० प्राप, प्राप

१७. १, १४; २०. ११४; २५. १०६.

पुराण-[वि० प्राप, प्राप + Per; मि०

प्राप, प्रा० प्राप की अनुप्रास प्राप

तथा प्राप से है; (पोम \*प्रापेण>प्राप

>\*पोम>पोम); प्रा० प्राप से

प्राप की सिद्धि होती है] स्पष्टि १६.

११; २५. २०.

पुराण-प्राप २४. १०६.

पुराण-[वि० प्राप; Grassmann के

अनुसार \*पाका √प्राप से; प्राप

प्राप=पुराण P. १३१; प्राप P. ३०१]

२. २६, ८६; ८. १२; १०. २२,

२३, ८२; २०. २१.

पुराण-प्राप-प्रापेण=प्रापेण ४. २.

पुराण-प्राप १. १०३, १०६; २. १८,

१८२; १०. ११४, १२२; १३. १;

१६. १२; २३. ६१; २४. १२; २५.

११, ११२.

पुराण-प्राप-प्रापेण=प्रापेण १. १०३, १०६.

पुराण-प्राप १. ११२, १२०; २२. २१.

पुराण-प्राप-प्रापेण=प्रापेण १. ११२.

पुराण-[मि० प्रापेण √प्रापेण=प्रापेण,

Lat. *proce*, 'prayers', *proce*

'sister'; Obz. *frak*=*frak*; Germ.

*fragen*, प्रापेण, \**frak-akoli*]

Lat. *proce*, \**proce*=*proce*, Obz. *frak*

*akli*, \**frak-akli*, Germ. *frucht*,

प्रापेण Lat. *proce*, *proce*, प्रापेण

*proce*=Goth. *frak*=*frak*; Obz.

*frak*=*frak*; प्रापेण प्रापेण=प्रापेण;

सं० प्रापेण=प्रापेण=Obz. *frak*]

पुच्छइ; पा० पुच्छति; उ० पुच्छना;  
 वं० पुच्छिते; हि० पूछना, पूछना;  
 पं० पुच्छ; सि० पुच्छण; गु० पुच्छुं;  
 म० पुसणें; G. 177, 30. पचार की  
 व्युत्पत्ति पुच्छ से मानते हैं, यह असं-  
 गत; है; पचार=प्रचार=प्र+चर;  
 (पुच्छ=पृच्छ P. 74; तु० “पुच्छि-  
 आइ मुदढाण्”=पृष्टाया मुग्धायाः;  
 हाल 15); १२. १२.

पूँछइ—पृच्छति=पूँछता है ७. १६; १२.  
 १३; १८. १४.

पूँछउँ—पृच्छानि—पूँछूँ ११. ५६.

पूँछव—पूँछेगा १. ८८; ४. ५२.

पूँछसि—पूँछता है २२. २६; २५. ८१.

पूँछहिँ—पूँछते हैं १६. ४; २५. ८.

पूँछिहि—प्रक्षयति=पूँछेगा ४. २१.

पूँछहु—पूँछते हो ३. ७०; ८. १४; १२.

१०१; २३. ८५; २५. ६, १३२.

पूँछा—पूँछइ का भूत पु० ए० ५. १०;

७. २०, २२; १६. १; १६. ६; २३.

२२; २५. १६३.

पूँछि—पुच्छ=पूँछ २. १३४, १७४; २१. ३२.

पूँछी—पूँछइ का भूत स्त्री ८. ३५; २३.

११२, १७७; २५. १४३.

पूँछे—पूँछने ७. १५, २३, ६०, ६१.

पूँछेहु—तुम पूँछी हो-तुमने पूँछा है २४. १४५.

पूँजी—पुजित—पूँजिअ = मूलधन १.

१८०; ७. १३.

पूज—पूजता, पाता (बराबरी नहीं पाता);

पूज=पूजा=पूजइ (पूर्यते) का भूत

१. १३१; २. ६, १५८; ३. १६;

१०. ३३; १६. १०; २२. २४.

पूजइ—तुलना करती है २. ६, १३६;

बराबरी करती है ८. १४; पूरा या

पूरी होती है १५. ७६; (बराबरी में)

पूरा नहीं पड़ता १८. २५; पूरी होवे

(संभावना) १६. ३२; १७. ८;

२०. ८०; पूजता है २४. १३१; पूजने

के लिये १६. ३०, ३१.

पूजा—पूजा के योग्य २. ८३; २०. ५२;

२५. १३०; पूजा का सामान २०.

७५; पूजता है २१. ३०; पूजन १६.

५४; २०. २४, ३७; पूजा=पूजइ का

भूत २२. १८; २३. २०; पूरा पड़ा

१०. ७१; पूरी हुई २०. ८; २४. ५०.

पूजि—पूजकर १८. ४८; २०. ४०, १२३,

१३०; २२. १३; पूरी हुई २२. १३;

२३. ८७.

पूजिअ—पूजिये २१. ३१.

पूजिहि—पूरी होवेगी १६. ३२.

पूजी—पूरी हुई २०. १, ८; २४. २१; २५. १६.

पूजे—पूजइ का भूत २३. ५८.

पूत—[वै० पुत्र; \*Putlo=Lat. *pullus*

(\*Putslos=पशुशायक) \*Por से,

तु० Lat. *puer, pubes*; Lith.

*putylis* (पशु अथवा पक्षी का

कायक); पु० सं० वेत्त तथा पुंस]  
 पुत्र=पुन; दि० पुन ("पुन" JD  
 अष्टक); गु० पुन; पं० पुन, मि० पुन;  
 म० पुन; उ० पुन; मि० पित, पुन;  
 का० पुन (गुणी का वधा); अवे० पुन;  
 पद० पुनर, पुन; का० पुनर, पुन,  
 १. ११; २०. ११; २५. ७१.

पुन-पुनर=पुनर ४. १०.

पुनिते-पुनित [पु० दि० पुनो, पुनो,  
 म० पुनर=पुनित का अष्टक; गु०  
 पा० पुनित अष्टक=अष्टक मे] १.  
 ७१, १४७, ३. १२, ४. १.

पुन-पुन=पुनित ३. ६; १५. २.

पुन-पुन [वे० पुनति, पुनते √पु  
 +Pola=भरना; गु० सं० प्राय तथा  
 पुन, अवे० पुन, Lith पुन, Lat.  
 पुन; Goth. पुन=Fr. पुन=

Germ. पुन] अष्टक १. १६;

१५.१; परिपठ २०.११८, २५.१२२.

पुन-पुन=पुन १. ६४; ३. २; ६. १२;  
 १०. १४; २२. १३; २३. १३२; २५.  
 ४०; पुन=पुनित=पुनित २०.७४.

पुन=पुनित=पुन १. १-६, पुन  
 अष्टक १६०; पुन=पुनित=पुन-  
 अष्टक २. १४, पुन १-२; अष्टक  
 अष्टक=पुन मे अष्टक १२. ६४;  
 २५. ११४, पुन=पुनित=पुनित  
 अष्टक २५. १.

पुन-[वे० पुनति, पुनते; म० पुनति;  
 पा० पुनति √पु; गु० Lat. पुन;  
 Goth. पुन=Germ. पुन; Obg.  
 पुन=पुन] अष्टक २५. ४२.

पुन-पुन=पुन (पुनिते पुनित) २२. १२.

पुन-पुनित=पुनित=पुनित; पुनित;  
 पुनित; पं० पुनित; गु० पुनित; म०  
 पुनित; मि० पुनित [पु० पा०  
 पुनित=पुनित, वे० पुनित √पु+ईष्ट;  
 \*पुनित>पुनित>पुनित; P. ८०;  
 Childers पुनित=पुनित अष्टक  
 १६] २५. ४६.

पुन-पुन=पुन=पुन "पुनित अष्टक"  
 (३०. ४) म० पुन; मि०, पं०,  
 पं० पुन (JD ८०) ५. ७, २३; ७.  
 २१, २४; ८. २२; १०. १२१; २३.  
 १२१; २५. १२; २५. २२.

पुन-पुन (√पु मे) १. १३८, १७१,  
 १७४; ४. १६; ७. ७१, ६. १४, ४०,  
 ४१, ४२, २०, २१, २२, २३; १०. ७;  
 ११. १०, ६१; १२. २, ११; १३. २२,  
 २८, २९, १०; १४. १०, १८, २१,  
 २२, २३; १५. १०; १७. १०; १८.  
 १, १२, १०, १२, ४१, ४४; १६.  
 २६, २७; २०. १०४; २२. १४, १५,  
 १६, २०, २१, ४२, ४३, ४४, १०२,  
 ११८, ११९, १०१; २५. २२, २३,  
 २४, २१, १०१, ११४, ११२; २५. १६.

प्रेमघाओ—प्रेमघातः = प्रेमघाय = प्रेम  
की चोट (तु० घत्त = घात्य; अघत्त =  
आघात्य तथा घत्त = घात P. 90,  
281, 357) ११. २.

प्रेमधुव—प्रेमधुव = अचल प्रेम ११. ३१.

प्रेमपँथ—प्रेमपन्थ = १३. ६१; १५. ६२.

प्रेमपंथ—प्रेममार्ग १२. १०; १३. ६२;

१४. २१; २३. ४०; २४. ३६.

प्रेमदार—प्रेमद्वार (व = द्व P. 300) ६.

५४; २४. ५५.

प्रेममद—प्रेममद = प्रेममय २०. ६६.

प्रेमवैचस्था—प्रेमव्यवस्था = प्रेमव्यवस्था

प्रेम की स्थिति ११. ७.

प्रेममधु—प्रेममधु १०. ७६; २०. २१.

प्रेमरँग—प्रेमरङ्ग १३. ५.

प्रेमा—प्रेम १४. १७.

प्रेमावती—प्रेमावती = मोहनी = समुद्र-

मथन के समय निकली हुई स्त्री

२३. १३५.

प्रेमसमुद्र—प्रेमसमुद्र—प्रेमसमुद्र १५. ६०.

प्रेमसमुद्र—प्रेमसमुद्र १३. ३३.

प्रेमसमुद्र—प्रेमसमुद्र ११. ३; १३. ४०.

प्रेमसुरा—प्रेमसुरा १५. ३५.

प्रेमहि—प्रेम का १५. २४. प्रेम ही १७.

११; प्रेम को २२. १८.

पेलहिँ—प्रेर = प्रेक्ष (√प्र+ईर) ढकेलती

हैं २. १६६.

पेलहु—पेलो २५. ११४.

पेलि—पेल कर २५. ११५.

पेले—ढकेले १३. ६१.

पोँछे—पूँछे = प्रोच्छति, “पुँछइ पुँसाई

पुसइ माष्टि” (दे० 201. 11); हि०,

गु० पूँछ; पोंछ—; पुँछ; पं० पूँछ—;

म० पुसयें—; वं० पुँछ, पोंछ—; सिं०

पिस—; पिह—; ५. ४६.

पोई—पकी पकाई ११. ३४,

पोखहि—पुष्ट करता है (पुप् = पोख,

पोस) ७. ३७.

पोखि—पुष्ट कर के १३. ३४.

पोखी—पुष्ट की २१. ४३.

पोचू—पोच = पोच; गु० पोचु = दुर्बल

(तु० पोचढ = दुर्बल) ३. ७८.

पोढि—प्रउह्य = ऊपर को खींचकर १. १४१.

पोतहिँ—पोतते हैं (राम०) २. १००.

पोती—पूत = पवित्र = “पोत्ती काचः” (दे०

204. 4); म० पोत (रत्नहार); हि०,

पं० पोत; सि० पूती; वं० पोत (काच

शुभ्र होता है अतः लाक्षणिक अर्थ

“पवित्र” है); [“पकती डेग में से

नली द्वारा महुआ गुड़ का वाष्प दूसरे

यरतन में जाता है। इस नली के

चारों ओर पानी रहता है, जिस से

ठण्डा होकर वाष्प पानी के रूप में

परिवर्तित हो जाता है। नली के चहुं

ओर के पानी को पाचारे = पोती का

पानी कहते हैं” सु०] १५. ३८.

पोते—पोत=पोम=प्रवपन्ति=पूते हैं

२. १२.

प्यारे—प्रिय ८. ५.

प्रनीहार—पहिहार=द्वारपाख १२. ७६.

प्रथम—पडम, पदम (P. 104) १. २,  
८२; ३. ४; २३. ११६.

प्रथमहि—पहिसे ही १०. २.

प्रान—प्राण २३. २२; २४. १२८, २५. ४७.

प्रीतम—प्रियतम २३. ६७, ८२; २४. १२१.

प्रीति—प्रेम १. ८२; २३. ११२, ११८,  
१४४; २४. ११२, ११४, ११६.

प्रीतिपेलि—प्रेमरङ्गी=प्रेम की रेश २४.  
११३, ११६, ११७, ११८, १२०.

फ.

फेदपारि—फद् मे मो=फदे बाछे १०. ८.

फज—फज २. ११८; २५. १०१.

फजगलि—छेफगम २५. १०१.

फर—फर [हुं=हिं=फारी, फाटी; फरे=  
फर=फर (की फाटी)] २. १२, १६,  
१२१; २०. ११, १३, २७, ७६.

फरु—फरु=फरु है २. १७.

फरुहा—फरुह रहे २५. १०१.

फरुई—फरुई है १८. १६.

फरुहरी—फरुही "निनिह फरु" ५. ४१.

फरा—फरा ५. ४४.

फरी—फरी २. ७१.

फरी—फर देने बाछी १. २८; २. २८.

फरुहरी—फरुही २. २८.

फरे—फरे २. २३, २८, १२, ७३, ७६,  
७८; १०. २७, ११६.

फल—[विं=फल/फल Sphal=मिळना;  
पूटने बाछे] मेवा १६. ४४, ४८;  
१७. ११; १८. २४.

फौद—फणन, फंदा [संभवतः/स्पर्श  
से; हुं= Lat. *pendes* "pond"  
(=जलकाना); हुं= *pendulum*; Agt.  
*finis* = पुण्य] ५. ४, ८, २१; ६.  
४१, ४४, ४८, २३; ७. १०, ११;  
२२. २०, २३.

फौद—फणन ६. ४३.

फौसी—फास; [√फस्; प्रा० फा०, फास;  
हि० फास, फौस; फौसना, फौसा;  
पं० फाह; मि० फाही, (फासी,  
फासिणी) फासी; हुं=फास; (फौसी);  
आनुनासिक के द्विवे हुं=हुम=भूँव  
(J.B. p. 93); फास के प्रथमाचर  
के श्वाभ में द्विर्वाचराविधान के  
द्विवे देखो फास=फास; द्विर्वाचरा  
के श्वाभ में प्रथमाचर के द्विवे  
देखो W. I, 239; P. 205, 206;  
M. Jacobi, *Asiatick Erz* 24,  
J.B. p. 93] २४. १८.

फागु—फाग (तु० पा० फागु=अनशन-  
घत का विशेष समय, तथा फागुन=  
वै० फाल्गुन) २. ८८; २०. ३६;  
२१. ४४, ४५.

फाटई—[ फट = स्फट्; फल = √स्फल  
P. 386; Lüders, KZ. XLII,  
198, फाटेति=स्फाटयति तथा फल ]  
२. १६८.

फाटैउ—फट गया १०. ७२.

फाटी—फट गई २२. ५४.

फारहु—फाड़ो १२. ६४.

फारि—फाड़कर २. १६६.

फिरइ—[वै० स्फुरति, स्फरति; पा० फरति;

तु० Lat. *sperno* "spurn"; Ags.

*speornan* (डुकराना); *spurnan*=

*spur*; अ=इ, P. 101-103 ] फिरता

है २. १४१; ७. ५५; ११. ५२; १३.

३०, ३३; १५. २१, ३४, ४३, ४६;

१६. ४४; २२. ६४; २४. ७६.

फिरउँ—फिरता हूँ ७. १६; फिरूँ १३. १६.

फिरत—फिरती है १५. ४६, ७०.

फिरहिँ—फिरते हैं २. १३१; १६. १८,

२०; १८. ४१; २२. ६७; २५. १२३.

फिरा—फिरहिँ=फिरा करते हैं २५. ११६.

फिराए—धुमाये २५. ११०.

फिरावहीँ—फिरते हैं १०. ४०.

फिराहिँ—फिरते हैं १०. ३८.

फिराहीँ—फिराते हैं २. ५८.

फिरि—फिरकर १. १०७; ३. ३१, ५५,

५६; ५. १६; ६. ४५; १०. १२६;

११. ५६; १२. ५६; १५. २८; २१.

४८; २३. ५०, ६६; २४. ८६, १४३,

१५२; २५. ३७; (उलट कर) २५.

१२६, १५७; पुनः २५. १२१, १७६.

फिरी—फिरइ का भूत २०. ६.

फिरे—फिरइ का भूत ३. ६५.

कुलाएल—कुलैल ४. ४८; २०. ३०.

कुलवारि—कुलवाटिका २. ८१; ४. २;

२५. १४२.

कुलवारी—कूल वाली स्त्रियाँ २. ११३;

कुलवाटिका, कुलवादी २. ७८,

११३, १६०, १७८; ६. २८; १८.

४७; २०. १६, ३३, ५०, ६६; २१. ४.

फूँक—फूँकार=फुफ—फूक २५. ५१.

फूट—स्फुटयति [ फूटना, फोड़ना; सि०

फुटणु, फोड़णु; म० फुटणै; फोड़णै;

ब० फुटिते ] फूटा (जवान हुआ) ६.

१४; १२. ६४; फूटती है १५. २०.

फूटिहि—स्फुटिष्यति=फूटेगा २१. ५३.

फूटी—फूटइ का भूत स्त्री० ए० १५. ७५.

फूटे—फूटइ का भूत पु० ब० २३. ८६.

फूल—कुल १. १५, १६१; २. ८२, ८७,

८८, ११३, १५०, १६५; ६. २८;

१०. ५८, १२२; ११. ५६; १३.

१८; १८. ४७; १६. ५५; २०. ६,

१४, १६, २४, ३०, ३५, ४६, ५६,



१६, ११६; २१. ४; २४. ३४.

फूलन्द—फूलों २०. ११, २४, ४६; २१. १६.

फूलहिं—फूलने हैं=फूल खगते हैं १८.

११; फूलों में २०. ३३.

फूला—फूलर का मूल पुं० व० ४. १८;

६. १८; १२. ४२, ६१; २२. २१.

फूति—फूल रही है २. १०८; २३. १६७.

फूली—फूलर का मूल स्त्री० २०. ३३.

फूली—फूलर का मूल स्त्री० व० २. ८२,

८३; ४. ८; १८. १०.

फूले—फूलर का मूल पुं० व० २. ३३,

११, ८४, १८१; २०. ६.

फेंती—फेंट, फंट—रमा में खपेरी हुई

शौखी २. ११३.

फेरर—फेरना है १. १८३; २४. १६१.

फेरल—फेरने में १३. ३२.

फेरा—फेरा भी=फेरने पर भी १३. ३१;

बहरा=फेरा मारना ७. ३३; १६.

११; २०. १८, ६८; २३. ८२; बर

(हा बर) २४. १८; गुमावा २४. १६७.

फेरि—फेरिहर=फिर १. ४८; ६. ११;

फिरावर (मारा पर चारा गेह बरके)

१०. १८, (फेरी है) १०३, गुमा बर

१३८; पुनः २४. ११६.

फेरी—फोर=मर २. ३२, फेर १००;

गुमाई (नीं गुमाई) ३. ४४; १२.

१८; फोर २०. १८.

फेर—फेरि=फेरा २. १३८; फेर=

चाल=गति १६. २४.

फेरु—फेर=चाल=पसर ११. २६; १६.

२८; २४. १२६.

फेरे—फोर १६. १६.

फोरहिं—फोरटयनि (फुट का पिमन्त)

फुटर, फुटद; पा० फुटति; हि० फूट;

पं० फुट; सि० फोलनया १२. ३६.

घ.

घोंद—घंद=दह=फंद ४. १६; ७. २६.

घेंघ—बगधन २४. १४.

घाकुंट—घाकुट—घाकुट—घेडेंड २. १६२.

घाकुंटी—घाकुटी=घेवता १७. १०.

घाड—घैड—घैटा (दपरिह, दपरिह=

घाड (उमोप II. 173) २. ४४,

४८, ६८, १८०, १८१; ४. ३१;

(घैटा, घैटे) ११. ३४; १६. १७,

१३; २१. १२, २८; २४. १०६.

घाट्ट—घैटे १४. ३३; घैटनी है २२. ४२.

घाट्ट—पंघों के घैटने की जगह २. ४१.

घाट्ट—घैटे १७. १४.

घाट्टि—घैटी, घैटर २. १११, ११८,

१२०; १२. १२; १७. १२; २०.

११६; २२. ३०.

घाटी—घैटी (मूल व०) २. १०६.

वइठी—वैठी (भूत एक०) ३. ४३.

वइठु—वैठा २. ११४; ४. ४१; १२. ७५.

वइठे—वैठे २. ४०, ६३, १३०, १७६;

१०. ६५; १६. ४५.

वइठेउ—वैठा है १०. २२.

वइद्—वैद्य=वेज ११. १०; २४. ६८.

वइद्हि—वैद्य को २१. ४०.

वइन्—वचन=वयण, वयन, वैन १६.

५५; २४. ६६; २५. १५२.

वइना—वचन २१. १८; २२. ३६; २३. १२४.

वइनु—वैन्य=वेन का पुत्र, राजा पृथु

वर्हिष्मती नगरी का राजा १६. ६.

वइपार—व्यापार, वावार; हि० वेपार,

व्योपार, (वेपारी); का० वेवहार;

सि० वपारु; म० वावर २३. १३.

वइपारा—व्यापार ७. १.

वइपारी—व्यापारी—वावारि ७. २; १३. २१.

वइरागा—वैराग्य, वइराग, वइराय १४.

३; ११. १७.

वइरागी—वैराग्यी=विरक्त १३. ७; २०.

१०३; २३. १६, १३२; २५. ३४.

वइरिनी—वैरिणी १०. १२६.

वइरिन्ह—वैरियों का ५. ४२.

वइरी—वैरी—वइरि ७. ५६; १२. ३५;

१५. ३६; २५. १२६.

वइल—वइल्ल=वैल (वलीवई=वलिह,

वलह, वलद) १५. ६६; २२. १, ४५.

वइसंदर—वैशानर=वइसाणर (वइस्ता-

णर) वासन्दर, शमि २३. ७६.

वइसारई—उपवेशयेत=वैठावे (JB.

65, 125) हि० वइसना; पं० वेसना;

सि० विहणु; गु० वेसतुं; का० वेहुन;

(किन्तु ध्यान दो शमा० वइस्त=

मा० वेस=द्वेष, द्वेष्य P. 300)

२०. १२०.

वइसारिश्च—वैठाइये २. ४०.

वइसारी—वैठाई—विठाई ३. २६.

वइसारे—वैठाये १०. ६२.

वइसि—वैठी २५. ४६.

वइसनि—वेश्या (वेसा, वेस्ता) या वैस

ठाकुर की स्त्री २०. १६.

वइसुंदर—वैश्वानर २५. ६७, १०३.

वईठे—वैठा १०. १३६; वैठता है १८. १६.

वईठा—वैठा १०. २१; २४. ७७, १३२.

वईठी—वैठी २. १७७; २०. १२१.

वउराई—वाचला होना २. ११६; ११. ५.

वउरावा—वौरहा किया २०. ६२.

वउरी—वातुल=वाठरी=वौरही १२. १३.

वउरे—वातुल—वाउल्ल, वाऊल २१. ३३.

वकउरि—वकावली (वकुल=वउल) ४.

४; २०. ५३.

वकत—वक्ति—वक्रता है (वच=वय) २०.

८८; वक्रते २४. १०४.

वकर—मुदम्मद स्थानीय चार मित्रों में

से एक [तु० चकरा=वकर; म०

चकड; गु० चोकदो; पं० चोक; हि०

बोहरा; मि० बोर; "बोहरः पुग." "

(दे० ३१६, १३) १. ६०.

बकुचन-बहुन=देर ४. ४.

बकुचन्द-देर को २. ८९.

बकुली-बगुली=बक की मादा ८. १०.

बखान-बखानवान-बखाना ६. २४.

बखानऊँ-बखानूँ १. १२१.

बखानहिँ-बखानने हिँ २. २००.

बखाना-बखानने हिँ, बखान दिया १.

१०१; ६. १०; १६. १६, १८.

बखानी-बखान योग्य २. १२४.

बखानू-बखान=बखान १. २०, १००,

१८०; १६. २१, २२; २०. १०२.

बखाने-बखान दिवे २. १००.

बग-(√बघ, देगो बौह, बंङ, बज

P. ७४) बङ=बङ=बगडा, बगुडा,

बुगडा; मि० बगु, बगुडो; गु० बङ,

बग, बगडो; म० बङ, बगडा २. ७१.

बगमेन-बगमेड=बाग में बाग को

मिहान=मुहमेड=हटना २४. ११२.

बगपाना-बगपान [बगप=बगप;

पा० बगप; मि० बाप, बाप; गु०

बप; म० बाप] १. २. १.

बग-बग=बगन २३. २०.

बगन-बगन १. ६०; २३. १२४.

बगा-बगन १६. ४१; १६. १२, २४, २४.

बगु-[दे० बग=बङ की का; गु०

बगमा, Lat. *scabellus* इति. *scabellus*

(बगुडा); Goth. *scithrus* (पृष्ठ परे का मेमना) = Ohg. *scidar* = E.

*weather* (बगु)] वास (P. ३२७

गु० बगड, बगडि, \*मासति, मासमे;

बगड \*मासति, बगपा से P. २०२)

बगदेव; गु० पा० बगड; चासा०

बागु, का० बौह; उ० बागुरी; बं०

बगडा, बगा; पू० दि० बाप; स०

बो० बगुडा, बगुडू; पं० बगड; सि०

बधि; म० बघर, वासरह; मि० बगु,

बगमा २३. ११२.

बजर-[दे० बज; भागू०० Ueg=बज;

गु० Lat. *ergo* (तय्य होना),

*ergo* > *rigor*, पावे० बज; Oicel,

*rair* = Ags. *tracor* = Germ. *trac-*

*cher*; तथा H. *traker*; गु० दे० बाज,

बाडी; देगो पा० बज=बै० बज तथा

गुजन=बाजे० बेरोमेन (धेर); गु०

Lat. *ergo* = पुमाना; Ags. *erri-*

*gin* = E. *erring* = Germ. *ringen*;

E. *erralle* = Germ. *reaken*

बादि] मा० बज, बेर, बहर (P.

१८६) १. ४२; २. ११०, ११९;

२३. २१, १०२; २४. ७१; २४.

४०, १०४, १२२.

बजरदंग-बजरा-बजदेर २१. ९१.

बजरहि-बज को १. ४२.

बजराणि-बजमि २१. २१, ९१.

वजाइ—संवाद्य=वजाकर २४. ६.  
 वजागि—वज्राग्नि १६. ४२.  
 वजागी—वज्राग्नि २१. ५२; २४. ६६, १०७.  
 वजावा—वजाया २४. ३७; २५. ६६.  
 वटपार—वर्त्मपाल=वटवाल=मार्ग की  
 रक्षा करने वाले कोल, भिक्ष आदि;  
 डाकू १५. १४.  
 वटपारा—वटपार; “वर्त्मपातक=वटवा-  
 ढण=वटवार”=राह के मालिक=  
 डाकू १२. ८५.  
 वटाउ—यात्री २. ११२.  
 वटाऊ—यात्री [वर्त्मन्=वट √वृत्=  
 घूमना] २. १४२; १२. ८६.  
 वट—सं० वट; “वट्टो महान्” (दे०  
 २४६. १३); हि०, वं० वट्टा; पं० वट्टा;  
 सि० वटो; गु० वटुं; म० वाड; का०  
 वोड्ड; त्सि० वरो (JB. २४६, १३);  
 किन्तु तु० बुद्धि, वट्टि=वृद्धि (P.  
 ५२, ५३) तथा वट्ट (विशाल), यथा  
 परिवट्टि=परिविद्धि=परिवृद्धि; वट्ट,  
 विट्ट, बुट्ट; पा० बुट्ट, बुट्ट; आ०  
 बर; नै० वरो; उ० वड; पू० हि० वट्टा,  
 वरा; ख० यो० वट्टा; जि० वरो; किन्तु  
 सं० वृद्ध (जरोपेत); उ० वृद्धा, वृद्धी;  
 वं० बुट्टा; हि० बुट्टा, वृट्टा; पं०  
 बुट्टा; सि० बुट्टो, बुट्टो; गु० बुट्टो  
 १. ४१, ८०, ६२, १२६, १३०,  
 १७३; २. १०, १८४; ७. ५७, ५८;

६. २६; २३. २७; २५. ८३, ६५,  
 १०७, १३४.  
 वटहर—वटल २. २६; २०. ४२.  
 वट्टाई—वटप्पन १. १७, ४५; २२. ३१.  
 वट्टि—वट्टी ८. ३८; ११. १३.  
 वट्टे—महान् १. १७३.  
 वट्टइ—वर्धते=वट्टइ; वट्टना; पं० वधणा;  
 गु० वट्टुं; म० वाटणें; वं० वाडिते;  
 सि० वट्टिनवा; का० वट्टन (JB. ४८,  
 ११५) २४. ११७.  
 वतकही—वार्ताकथा=वतकहा=वात-  
 चीत २५. ४८.  
 वतीसउ—द्वात्रिंशत्=वत्तीसों २. २००;  
 १६. २०; २०. ६३; २५. १६८.  
 वतीसी—द्वात्रिंशिका=वत्तीसिया; वत्तीस  
 दांतों का समूह १०. ६६.  
 वदन—वदन=वयण ८. ४६; १०. ४६;  
 २२. ३६; २४. ६३.  
 वादाम—वादाम २. ७४.  
 वद—वन्ध=कैद ५. १६.  
 वधसि—मारता है (√हन् √वध्) ७. ३४.  
 वधि—वधकर २४. ४.  
 वन—[√वन्, वनति, वनोति; तु० अवे०  
 वनइति; Lat. *venus*; Ohg. *vini*  
 (=winsome=आकर्षक) *wunse*=  
 E. *wish*, *giron*=E. *wont*]  
 वन; तु० अवे० वना (वृत्त); प० वन्;  
 आ० फा० वुन्; का० वन; अफ०

घन, घ० घन; घि घान्; घोरमे०  
 घुन; ट० घिन; (तु० घा० घण०=घण  
 Serbian rana, Obulz, rare=  
 घाव) ड. २४, २८, २९, ३०, ४१,  
 ४१; १०. १९, २७, १४४; १२.  
 ११; १३. ६, ८; १८. १०, ११,  
 १८; २०. १४; २१. ११; २३. ६१.  
 घनचंद्र-घनछवड १. ११०; ड. १.  
 १२. ६२; २१. १२.  
 घनचंद्र-घनचवड १. १२, १६२.  
 घनचौला-घन को चौलने वाले=घनचूष  
 (चूष-चूष-चूष-चौल) १. ७२; ड. २.  
 घनचौर-घन के चढ़ने वाले चूष १०, ४८.  
 घनचौली-घनचवति=वधचंद्र (तु० विह-  
 चूचदि, वधचदि) घ० मा० वधचंद्र,  
 विहचंद्र (P. 53, 311) २३. ६२.  
 घनवासी-घनवासी १. ४४.  
 घनवाहू-घनवाह १२. ४१.  
 घनाई-घनाकर २. २१.  
 घनाडरि-घावावलि १०. ४१.  
 घनाहर-घनचवति २०. २.  
 घनि-घन चने ११. १६.  
 घनिज-घाणिज्य=घनिज; गु० वघज;  
 वि० वघिज, वं० वंज ७. ६. ६;  
 वघिज, वघिघ; वघिया; म० वघी;  
 गु० वघिवा; वघिज; वं० वघिवा;  
 मि० वघिज (गु० वघिज, वघिज्य=  
 वघिज G. 111, P. 111. 1) ७.

४२; २३. ११.  
 घनिजार-घाणिज्यकार=घनजारा २३. १.  
 घनिजारा-घनजारा=घणिज्यकार ७. १.  
 घनिजारे-घनिजे २३. ६.  
 घनी-रपी १०. ४१, ६६; १३. २.  
 घनीवास-घनवास ३. ६६; १६. ११.  
 घंदरछाया-घानतराव=घंदर का वधा  
 (शाव=वाव) २२. ६.  
 घंदी-घद=घंद २२. ७४.  
 घघ-वघघन १०. १६२; २०. १०४.  
 घघु-(√वघघु) माई वघु २०. ११४.  
 घस-घरा १६. १६; २५. १००.  
 घसकार-घंगी २०. २६.  
 घसि-घंसी १०. ७२.  
 घसु-घोत २५. २१.  
 घसुर-घावज, घंवर [तु० घंवर-घंवर]  
 वधुज; वि० वधुज; गु० वधज; म०  
 वधुज १५. ११.  
 घपन-वघन १. १८५; १०. ७१, ७४, ७६.  
 घपना-वघन १. ६७; ३. ६१; ७. २१;  
 २०. २७.  
 घपस-[वै० वघस=वघि, वघस्या; गु०  
 वं० वंर; Lat. vā, (मर), vā (वघि)  
 के शाव वंवर; गु० वं० वीवरि=  
 वमर्य वरता है; तथा वरुनि; वघन  
 को वघन=वघनया तथा वघन=वघी  
 के भेद वा, वै० वघन=वी० वघन=  
 वघी] २. १६४.

वरमा—ब्रह्मा—बम्हा २५. ६०.

वर-(√वृ) दूल्हा ३. ५२, ५५; ६.

३१; १६. ४०; २०. ७८, ८०, १३१,

१३२; २३. १३५; २५. १६६; श्रेष्ठ

१. ६८; (वर Gn; कर रा०) १५.

६५; २५. १६४; वर=वट=वड़

१५. ६६; २३. ६६; वड़ा १८. ४६.

वरइ—वर लोक ३. ३१; वलता है=

ज्वलति; पा० जलति; उ० ज्वलिवा;

हि० जलना, चलना, चरना; पं०

जलया, चलया; सि० जलणु, चरणु;

गु० जळवुं; म० जलयौ २३. १७४.

वरइनि—[पार्श्व=पयण, वयण, चरण,

चरणी] पान वाले की स्त्री २०. २३.

वरजनहार—[√वर्ज, वज्र, वरज; ध्यान

दो फा० वर्ज=अवे० वरेचस्=सं०

वर्चस्] रोकने वाला १. ५६.

वरजा—रोका २४. ५८.

वरजि—रोक २३. ८.

वरतइ—[वै० वर्तते √वृत्; इसी का

रूपान्तर पाली में वट्ठति, तु० अवे०

वरेत्=घूमना; सं० वर्तन=घूमना;

वर्तुला=Lat. vertellum=E. whorl;

Germ. weirtel तथा vertil; Goth.

weirthan=Gorm. weerden (होना)

तथा Lat. vertex, vortex आदि;

Goth. - weirths = E. - wards;

Obulg. vreleno; वर्तते का मौलिक

अर्थ घूमना पा० वट्ठण में स्पष्ट है;

वै० घत=पा० घत √वृत् से, अर्वा-

चीन अर्थ=दुग्ध (दे० M. K. Ved.

Ind. II. 341)] घरतता है, घत

करता है, घ. ६४.

वरता—वरतता है १. ४६.

वरन—[√वृ=ढकना से; तु० E. con-

ting अथवा cont (of paint); Lat.

color = ढकना, oc-cul-cre=ढकना

आदि] वयण, रंग २. १६४; ३. ३६;

७. ४४; ६. २८; २०. १२१; १८.

१५; २०. १३; २४. १००; प्रकार

१. ४, ३२; वर्णन कर ६. ५६.

वरनइ—वर्णन करते हैं २. ४; १०. १३८.

वरनउँ—वर्णन करता हूँ १. ४१, १०५;

२. ४६, १२१, १२८, १६५, १६६,

१६३; ७. ६७; घ. १५; ६. २५;

१०. १, ६, ४१, ५१, ८१, ६७,

१५३; १५. ६; १६. १८.

वरनहिँ—रंग के २. १६४.

वरना—वर्ण, रंग, प्रकार १. १०, ७३; २.

८७, १७३; वर्णन किया १६. ५६;

पुष्प विशेष ("वहूणो चरणः सेतुस्ति-

प्रशाकः कुमारकः" अमरः) २१. ५१.

वरनि—वर्णन करना १. ७३; २. ६५;

१०. १६०; १६. २०; वर्णन करके

२. २४, १५६.

वरनी—वर्णन की १. १५६.

वरमाऊ - चाखीवाँद २५. ११, १७.

वरमायउ - चाखीवाँद कहे २५. ८७.

वरमायसि - चाखीवाँद करता है २५. ७८.

वरमट्ट - [ मट्टा; (संभवतः आरमरुति का मट्टार इतना अभिप्रेत नहीं जितना कि प्रार्थना की शक्ति का) √ वृट्; वै = वृत्त; पा० महंत; √ वृट् = बड़ना, बड़ होना; तु० परिकृत्य = कटिन, घबरे। बेरेमट्ट = डब; Arm large = डब; Oir, bri, Cymr. bre = पर्यंत; Gult, laurge (borough), Ohg. lurg (lurg = दुर्ग); Germ. lerg = पर्यंत, (E. iceberg); पा० बुल्ले = मीनार; संभवतः √ वृट्; तथा √ वृट् परापर संबद्ध है ] २५. ११.

वरमटा - मट्टा ३. ४०; १०. ७८.

वरमनि - विश्व के नदियों में से एक ८. ७१.

वरमहि - [ √ वृट्, वर्ति, वृत्ते; मापू० \*Uers = गिरा होता; तु० वै० वृत्, वर्त (वर्त), वृत्त (पा० उत्तम); घरे० वर्त्त (वर्धकान्); Lat. verrere (वृत्त) इती के साथ संबद्ध है; स्पान रो० \*Eros = बड़ना, गी० वर्ति, बचन; Lat. ero (होगा), एग जादि; तु० दि वर; हि वार्येक, वरान = वर्त ] वागने है २२. ११.

वरगा - वागह का मूल २३. १४१.

वरहि - बलते है २. ७२.

वरदुड - वारहों ८. १७.

वरा - वारह (जलति का मूल) ३. १; ६. ४; १५. ३८; २५. १०१.

वरायर - सम १३. १०; २४. ११.

वरायहन-माहण=वराय=वर्मण ७. २२.

वरिआई - बल से २४. ११.

वरिआर - बली (बलकार) १. २४.

वरिआर - बली १. ११.

वरिर्यडा - बलवन्त (तु० बलिमट्टा = बलान्तर अथवा बलिबल = बली-वर्द्ध = बल) २५. ११.

वरिस - वर्ष ३. २१, ११.

वरी - बली १. १११; वरी गाई २५. १७२.

वद - वर = वदे १३. ११; १८. १७; २४. २२, १११.

वदनि - वाणी = वलक (संभवतः वाणी नलीवी भाँल, जदरीका वाप) १०. ४८; २३. २१.

वदनी - वाणी = वलक १०. ४१.

वदे - जले २. ११०.

वरीक - वर को वचन में बाँटना ३. ११; २५. १४, १००; रोना = बलीक [ √ वृट् = बड़ना; अथवा घोड = घोडाम = धरकार के साथ संबद्ध; अथवा \*वृट्, \*वृट् \*वृट् \*घोड; घोड = घोडण ] २१. ११.

वरीक - वर + घोडा = "उम का वर"

देखो वरोक २५. १३४.

बलई—[सं० वलय; भायू \*Uel=धूमना;

तु० √वृ=ढकना तथा √वल=धूमना, जिसके साथ संबद्ध हैं वरत्र=उपरिवस्त्र, ऊर्मि; वलित (नत); बालयति (लुढकाना), बल्ली (लता), बट (रस्सी, बाँट) तथा बाण (बैल); ध्यान दो Lat. *volvo*; Goth. *walujan* (लुढकना); Ags. *wylm* (ऊर्मि)]  
चूड़ियां १२. ५६.

बलि—राजा का नाम १. १३०; २०.

१२०; २५. ६०, १२४; बलि होना (√वृ Grassmann) १०. २; २०. ११४; २३. ५८, ५९, ६०, १६८.

बलिहारी—बलिदान २४. ५३.

बली-बलवान् [E. *debility*] २. १३, १६५.

बवंडर—बाया (तु० बव—बुव—बू, बवं-धर) १०. १४६.

बसइ—[√वस्, भायू \*Uos=ठहरना; तु० अवे० वरेइइति Lat. *vesta* (चूल्हे की देवता); Goth. *wisan*=ठहरना=Ohg. *wasan*=E. *was*, *were*, Oicel. *vist*=ठहरना; Oir. *foss*=आराम इत्यादि] बसती है; पं० वस्त्रणां; म० वसणें; सि० वस-नवा १६. ६४; २३. १६०; २५. १५०.

बसत—बसता २१. ५.

बसतु—बस्तु=वस्तु ७. ७, ४३.

बसंत—[वै० वसन्त; भायू \*Uar; अवे०

वेरेहर=वसन्त; Lat. *vēr*; Oicel.

*vār*=वसन्त; Lith. *vasarā*=

ग्रीष्म] २. २४, ८८, १६०; ४. ३७;

८. ३६; ९. २७; १६. ८, ३२; १८.

४७, ४८; १९. ५४, ७२; २०. ४,

१६, ३४, ३७, ६१, ६२; २१. १,

२, ५, १८, २०, २२, २३, २४,

४४, ४८; २३. ८७, ९२, ९७, १६१.

बसंता—वसन्त २१. १६.

बसंतू—वसन्त १८. १८.

बसहिं—बसते हैं २. ३३, १५३; २३. १६८.

बसा—बसइ का भूत १. २६; २. ८६;

५. १६, २४; १०. ६२; १७. ११;

१८. ३६; २५. ४७, १५३; वर=वई

१०. १३८, १३९; वास ११. ५३;

बस गया=ठान लिया २५. १२.

बसाइ—बसती है १. १६४; बस चलता

है २४. ८.

बसाही—बसते हैं २. ५८.

बसिठ—बशिष्ठ=दूत २३. ९, ४९.

बसिठहि—दूत ने २३. ४१.

बसी—बस गई ९. ३५; १०. १२७.

बसीठ—बशिष्ठ=दूत १. ८७; २३. ८,

२३, २५; २५. ८८.

बसीठी—दूत का काम २५. १२६.

बसेरा—वास, ठिकाना ५. ४२; १३. १,

२५. १३.



बसेरे-बोरा २. १२६.

बहा-बह का मूल १३. ३८; १६. २१.

बहि-बहने ५. ११.

बहिर-[बधिर; व्युत्पत्ति देखो Waldo,

Lat. Wib, baluus पर; बहिरा;

गुं बहेर; सिं बहिर; बं बहेरा;

सिं बोरा; गुं बेहेतो; धि बह;

परतो बोरा; गुं दि-बोरा] ७. ३४.

बहु-बहुत (बह) १. १०, १२, २३, २८,

१७; २. ३१, ३७, ४३, ४४, ८०, ८७,

१११, १४१; ३. ३; ५. ३; ६. ४;

७. ४३; ८. ४३; १२. ३३; १६.

४७; १६. ६७; २०. ६, २२, २६,

२१; २१. २४; २५. १६, १४०, १४१.

बहुन-बहुन, पां बहुन=बहुत १. १६,

१०; २. ३२; ३. ४०; ५. ३४; ७.

४, ३, ३२; ८. ३२; १०. १२०,

१२४; १३. १३; १७. ६; २०. १३०;

२२. १३, ३८; २३. ४६, ३७; २५.

१८, २१; २५. ४६, १०७.

बहुनई-बहुन ही २३. १३०.

बहुनई-बहुन ही १. १, ११, १०. ६७, १६६.

बहुनक-बहुन २५. १११, ११६.

बहुनोनी-बहुन शेष बाका ७. ३४.

बहुनई-बहुनक २५. ६६.

बहुन-बहुनकति = बहुकति=बहुता

है=बहुता है १२. ३०.

बहुत-बहुत १. २६; १६. २१.

बहुति-छोट कर २. २३; ४. ४६; ५.

२३; १३. ६२; १४. ७; २०. १८;

२१. ३६; २३. ४६; २५. ११२.

बहुरी-छोटी २३. १२१.

बहुरे-छोटे ३. २३; २५. १११.

बहुल-बहुत २. ११४.

बहोर-बेरा ७. ८.

बहोर- (छाह=छा बाहुनता है=फिर  
भाता है) १०. ३६.

बौक-बक [बै=बहु तथा बक=मुकता

हुमा; बक=देहा चकता हुमा;

बकति=देहा चकना (पीछे से चोला

येना); गुं Lat. con-cetus = E.

concer; Agr. wrōh (wrong), Goth.

collis; Obg. coangas = कपोल, पां

बंक तथा बक (P. 74)] २. १२, ६९;

१०. ३३; कटिन २२. ६३; २३. १७६.

बौकर-बक ही १८. ४३.

बौका-बक=कटिन; बं बंगा; सिं

बिगो; दि-बिगा; बौगा, बौक (गाड़ी

के पहिये को रोकने वाली); गुं

बौक; बं बौका; सिं बक; मां

बंक; पां बक २. १२३.

बौकी-बुगम २. १२३; २२. ६८.

बौक-√बक=देहा चकना; (देहा चक

कर चकना) २. १२०; बकप ५.

२१; बके ५. १२; बकना है १४. २०.

बौका-बका ३. ६२; २३. ३; २५. ६४;

घाँची गई, पढ़ी गई ( √ वच्; हि०  
घाँचना; पं० वाचणा; सि० वाचणु;  
गु० वाँचुं; म० वाचणें; वं० वाचा-  
इते; सं० वाचयति ) १. ६५.

घाँचि—वचकर २. १२६.

घाँचे—२. १४१.

घाँकेहु—घँके हो ५. ४०.

घाँटा—[ वण्टन = घाँटना; ( तु० वट =  
रस्ती); पं० घंढण; सि० घाटणु; गु०  
घाँटुं; म० घाटणें; सं० वण्टति ]  
विभाजित किया १. ३४, १११.

घाँद—वंदा = दहलुआ १. १४४; बद्ध ५.  
१८; कैद १८. ८.

घाँदर—घानर; पं० घाँदर; गु० घाँदर;  
सि० घानरु; म० घाँदर, घानर; सि०  
घंदुर; का० घादुर २३. ३२, ३३.

घाँदू—कैद ६. ४५.

घाँध—[ √ वन्ध = घाँधना; पं० वन्धणा;  
सि० वंधणु; गु० वंधायुं; म० घाँधणें;  
वं०, उ० घाँध—; सि० वंदिनवा;  
अवे० बद्ध; प्रा० फा०, पह० बद्ध;  
पह० वस्तन; फा० वस्तन; छि० बेम्  
> यथ, वस्त; दस्तवस्ता ] २४. ७८.

घाँधई—घाँधने से २५. १६३.

घाँधहु—घाँधो १८. ४२.

घाँधा—[ वै० बध्नाति; अर्वाचीन रूप  
बन्धति; भायू० \*Bhondh; तु० Lat.  
offendimentum i.e. band; Goth.

bindan = Ohg. bintan = E. bind ]

घाँध का भूत २. ५१; ३. ७६; ५.  
१५; ८. ६३; १३. ३१; १५. ७,  
५६, ६०; १६. १४, ६२; २३. ५५,  
१३५; २५. १६२.

घाँधि—बाँध कर २. १७६; ७. ६६; १४.  
२१; २०. ५७; २३. ७३; २५. १.

घाँधी—बाँध कर २. ११४. बाँधी है ६.  
३; २५. ६६, १३५.

घाँधे—घाँध का भूत २. १६२, १६७,  
१६६; ५. ४६; १०. ८२, ११७;  
२२. २; २३. १६.

घाँभनि—माहणी [माहण = माहण; वंभ =  
मल; व = म P. 250] २०. १८.

घाँह—वाहा; पा० वाहा १०. ११०, १११.

घाँहाँ—वाहा = घाँह १. १७१.

घाँहा—वाहा १. ६८; ८. ३०; १५. ७०.

घाँहू—वाहु; अवे० बामु; पह० बाम्नीह,  
बामुक; फा० बामु; ग० बाई; का०  
बोइ, बोही, बोहू १०. ११०.

घाँइस—द्वाविंशति; यावीस; अप० घाँइस;  
पं० बाई; हि० बाईस; गु० यावीस;  
सि० यावीह; म० यावीस, बेवीस;  
वं०, उ० बाईश २४. १२.

घाँई—वामे १२. ७६, ७७.

घाँई—वामे १२. १०३, १०४.

घाँउर—घाँउल = बौरहा १. ५५, ७६; ७.  
७२; ११. १७; १२. ३; १३. ४४;

१५. १६; १७. १; १६. २७; २१.

१०; २३. १७१.

याउरला-वागुल्लर=बावले जैसा रत्न  
१२. २८.

याउरी-वापी, वापिका; हि= वावही,  
बावही; बाई; बावरी; बाई; गु=  
बायो, बाई; सि= बाई; म= बावही  
२. ४१.

बाई-बामे; हि= बायीं, बायीं; पं= बाईयों;  
म= बाम; मि= बम १०. ८१; १२.  
४८, ४९, ६६, १०१, १०४; २५.  
६१, ६४, ४८.

बाग-बागम की ओर १०. १००.

बागा-बाग २. १७३; १०. १६, ११६.

बागह-बाघने; हि= बजना, बाजना; पं=  
बजना; गु= बाजुं, म= बाजुं; वं=  
बाजने; [गु= सं= बाघ; अवे= बाघ;  
पर= बाह; का= बाह, बाघ; बाघाघ;  
Oray के मत में अवे= बाघ  
(बाघना)=बाह= बाघा, बाघा;  
बाघ= बाघा; का= बाघ, का= बाघ;  
देगो p. 10] १. १११; २५. २१.

बाजल-बाजने २०. ६०; २५. १७६.

बाजल-बाघ २०. ६६, ६०; २५. ११;  
२५. १०६.

बाजहि-बाजने है १६. ४०. २०. ३८.

बाजा-बाजना है २. १०३; १०. १०२;  
१२. ४१; २५. ५, १२१; बाजाई की

१. ७१; बाजा=पूरा हुआ २५. १७५.

बाजि-[थे= बाग=बाग; भायू = Ueg;  
गु=बाज; Lat. rego= चौकस रहना,  
rego= रट होना (E. vigour);  
अवे= बाघ; Oicel. scakr = Ag.  
scacor = Germ. scacher; E. scake  
इत्यादि] घोंका २. १२६.

बाजी-बाजी=पटुची १४. ५.

बाजु-संवायें=बिना १. १६; ११. ४१;  
२०. १२०; बाजता है २१. १७.

बाजे-बाजे २०. ६, ६६; २५. ११; बाघ  
घोंर बाजे २५. १७६.

बाट-बाजन्=बाट=मार्ग १२. ६६.  
६६, १०४; २२. ६४; २३. १६८.

बाटई-मार्ग; "बहा पम्पा" (दे० २४७, ६);  
पं=, मि=, गु=, म= बाट; वं= बाट;  
मि= बाट; का= बाट; मा= बाट ५. २२.

बाटहि-बाट में २३. ८१.

बाटा-मार्ग १. ११७; ७. १०, १८;  
१३. ६; २३. ११.

बाटह-(√बाघ-बाहु) १६. ४१.

बाटल-बाजता है २५. ११६.

बाटा-बाग १०. ६६; १५. २७, ४४;  
२५. ११६; २५. २२.

बाटि-बाजता है १. १२८; बाजती १५. ४८.

बाटी-बाटी ३. १०; १८. ४; २५. १००;  
बुद्धि ७. १.

बाट-बाग=बाग; का= बाघ १. १००;

७. ४२, ६१; ८. ४४; १०. ८०;

११. ४६; १६. ३६; २०. ६७,

११०; २२. ६१; २३. २६, २८,

४६, ४८, ५०, ११२; २४. ६३,

१३७; २५. १६, ८८, ६१, ६५,

११३, १४७, १६०.

घातहिँ-घातों में २२. ६.

घाता-घात १. ६४; २. ६५; ३. ५१;

७. २६, ४६; ८. ३६; ९. २, ३३;

१०. ५८; १८. १४; १६. ३३, ५२,

५७; २०. ६३; २२. २०, २५, ७६;

२३. ४१, ८५, १०८, ११३; २५. १४३.

घाती-घटिका (√घृत् = घुमाना से;

तु० घाँट, घाँटना = रस्सी भानना);

घत्तिष्ठा; पा० घटिका; उ० घती; घं०

घाती; हि० घत्ती, घात; पं० घत्ति

२३. १४०.

घान-वाण २. १०८; ५. ३२; १०. २४,

४१, ४५, ४६, ४८, ८०, ११६;

२३. ६४, ८८, ८६; २४. ७०.

घानपर-घानप्रस्थ २. ४८.

घानविख-विपवाण २३. ६१.

घानहिँ-घाणों ने १०. ४४.

घानन्ह-घाणों से २४. ७६.

घाना-वाण=प्रकार=वर्ण १. ६४; १०. २५.

घानारासी-वाराणसीय = वाणासरी

(अक्षरव्यत्यय के लिये तु० णिडाल=

लजाट; दीहर=दीरह P. 132, 354)

घनारस का १०. १२७.

घानासुर-बलि का पुत्र, वाणासुर

२५. १७१.

घानि-वर्ण, घान, म० वाण; गु० वान;

सि० वनकु (तु० हि० वाना, वनावट)

सि० वण ८. ६; १०. १६.

घानिनि-घनियाइन २०. २२.

घानी-वर्ण=वर्ण २. ६७; धारह वर्ण=

द्वादशादित्य, वर्ण अर्थात् द्वादशा-

दित्य की कला २. १६६; ६. १२.

घानु-वाण २४. १२८; वर्ण १६. ५०;

२५. १६८.

घापुरा-घप्पुडा, घापडा, घापरा; गु०

घापडुं; म० घापुडा (घराकः) ११. ४०.

घाम्हण-[घल्ल की व्युत्पत्ति के लिये

देखो Osthoff "Bezzonberger's

Beiträge" XXIV, 142 sq;

(= Mir. bricht = जादू; Oicol,

bragr = कविता); तु० घै० घल्ला]

घाहण=घम्हण; घंभण, घंहण; हि०,

गु०, घं० घामण, घाम्हण; सि०

घाँभण; पं० घाम्हण; म० घामण

७. २, ८, २०, २४, ३३, ४०, ४४,

४६, ६५; १६. १५.

घार-द्वार १३. १६; २०. १०८; २२.

३०, ६३; २३. १६, २०, २४; २४.

२५, ५०, १३३; २५. ३५, ५६,

६८; धार=मर्तवा ३. १३; १६.

१६; २०. १०१; २३. ८८, ६६;  
 बाळ (मौलिक ग्रंथे गुरु=जी बेल  
 न से; तु= Lat. infans, घनः  
 बाळ=बच्चे जैसा) बाळक १२. २८;  
 २५. १७४; बाळ=बेटा (दे=बाळ;  
 Lat. calcei=घोड़े के बाळ) १५. २४.  
 बारडे=बलि दूँ २२. १०.  
 बारनि=मनो=बली २०. ११०.  
 बारह=द्वार; बारम, बारह (P. ३६५  
 ३००), दुबारम; हि० बारह, बारा,  
 बारो; पं० बारा; मि० बारह; म०  
 बारा; मि० बर, बोलम, बोलह; का०  
 बह [Lat. duodecim E. twelve]  
 २. १६६; ३. ११; २५. १६८.  
 बारहिं=(बार) बार्बर (तु० का० बार;  
 हिं घारी=समय) २३. ६६.  
 बारहिपार=बारम्बार ७. १६.  
 बाय=हार; मा० दैर, दुवार; दार, बार;  
 का० दार, व० दर; मि० दाद, दारी;  
 गु० बार; म० बार; मि० दैर, दोर;  
 मि० दोर २. १६१; १७. १४; २३.  
 १०१, १११; बाय=बेटा १०. ४;  
 बाळक ३. १; १२. ६८; बार=मर्मका  
 २२. १०, ७८; २३. ६६; बार=  
 रिक्का=छेद, बेर २३. १०.  
 बारि=[दे० बरि; छेदे० बार=बर्ष;  
 बारी=समुद्र. Lat. baris=E.  
 baris, A; वार=समुद्र; Ocel.

Bar=छूटि] जल ४. ४८; २१. १२;  
 बाळा, बाळिका १८. १४, १०; २५.  
 १२८, ११४; बाटिका=बाही २०.  
 १२८, ११४.  
 बारिन्द=बासिकायें २०. ६.  
 बारी=बाटिका=बाटी=बाही=बारी  
 २. ७१, ११८; ८. १६; ११. ११,  
 १६; १८. १६; २०. १६, १२६;  
 २५. ११३; बाली=बाळिका ३. २६,  
 २८, ४१; ४. १७, १३; ६. ११; १०.  
 ११८; १८. १७, ४२, ४७; २०. १,  
 ११, ६२, ६६; २१. २१, १५; २३.  
 १८; २५. १७४; मराल बाळने  
 बाळा, मारु ३. १६; जबाई १६. ७;  
 २०. ७०; बाटिका और बाळा १६.  
 ११; २१. २.  
 बाद=हार २५. ६६.  
 बारु=बार=हार २. १६१; ७. १४;  
 १६. १०, १७; बाळ=बेटा १८. ४१.  
 बारे=मर्यादे १०. ६१.  
 बारक=बच्चे (जैसा); हिं बारु=बाळक,  
 पं० बाहू ११. १८.  
 बारु=बाळिका (बाळिका) कम्पा ८. १८.  
 बारु=बारु=मुगम्ब १. १६१; २. १६०,  
 १७२; ४. ८, २६; १०. २६, १२२,  
 ११२; १६. २, १६; २०. ७२; बरोरा  
 १०. १४४; २३. ११६.  
 बासना=बागना=मुगम्ब १०. १११.

वासहिं—वासती हैं=वसाती हैं=सुगन्ध  
देती हैं २. ३४.

वासा—वास=सुगन्ध १. १७५; २. ८१;  
३. १५, ४२; १०. ६, ५३; २०. ६;  
२४. ८६; वसेरा १. १०७; २. ६०;  
२३. ११६.

वासु—वासस्थान [Lat. ver-na (गृह  
में निवास करने वाला); As. ves-  
en (होना); Eng. was, were]  
५. १६; सुगन्ध १६. ७२.

वासुकि—एक सर्प १. १०६; २. १२२;  
१०. २; १६. ४०; २४. १३; २५. १२४.

वासू—वास=सुगन्ध २. २६; वासुकि  
नाम २५. ६०; वासस्थान १३. ६३;  
२३. ७५.

वाहन—[√वह; भायू०\*Uogh=खेदना,  
ले चलना; सं० वहित्र=Lat. vehi-  
culum=E. vehicle; अवे० वक्क-  
इति=ले जाना Lat. vcho=खेदना;  
Goth. ga-wigan=Ohg. wegan=  
Germ. bewegen; Goth. wegs=  
Germ. weg; E. way; Ohg. wegan=  
E. waggon इत्यादि] वाहन, सवारी  
२२. १.

बाहर—वहिः से; पा० बाहिय, बाहिर;  
प्रा० बाहिर; हि० बाहर, बाहिर; पं०  
बाहर; सि० बाहिर, बाहर; गु०  
बाहर, बाहेर; सि० बपर २४. ४८.

वाही—वाँहु=वाहु [वाहति से; Ohg.  
huoc; बाहा प्राचीन समय का प्रयोग;

तु० vaihstā=कोना] २०. ११५.

विश्राध—व्याध=वाह=बहेलिया, अहे-  
रिया ५. २५, ४३; ७. १७, ३६;  
१६. १४.

वियाधहि—व्याध का ५. ५८.

विश्राधि—व्याधि=बीमारी [वि+श्रा+  
√धा] पा० व्याधि २. १५२; ५. ५३.

विश्राधू—व्याध ५. ५३; ७. ३८; १८. ३७.

विश्रापी—व्यापिन्=वावि, व्याप्त=वाविश्र  
(व्यापक) १. ५७.

विश्रास—व्यास ऋषि, विश्रास=वास=  
वास (तु० आस=भाष्य P. 268)  
१. १६०; ७. ४७; १२. ८०.

विश्राह—विवाह=विश्राह=व्याह; विश्राह  
वियाह (H. 86), व्याह, विवाह; पं०  
वियाह; सि० विहोइव; गु० विवाह;  
म० विवाह २५. ६५, १३४.

विश्राही—व्याही गई २०. ७८.

विश्राहू—विवाह=व्याह २०. १३४;  
२३. १४४.

विश्रोग—वियोग=विश्रोग, विश्रोग=  
विरह ८. ४१; १२. ८; १३. ४१;  
१६. १, ६५.

विश्रोगा—वियोग १६. १०; १८. १.

विश्रोगी—वियोगी २. ४७; ६. ६; ८.  
१८; १२. १, ६६; १७. १; १६.

११, १२; २०. ६४; २१. ६१; २३.

८६; २४. ११; २५. १, ६२.

विमोक्ष—विमोक्ष २२. ८.

विमोक्ष—विमोक्ष १८. २०; २३. ११४.

विमोक्ष—[वि+कृत् √ कृ] विमोक्ष=विमोक्ष= विमोक्ष=कृतेन २४. ११६.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्षदृष्ट (त); तु=

[स=स; ध्य=स्य; घ=अ; व्य=

अ; तु=स्य=स्यति (पंजाबी में

स्य=स्य); शोच=शोच; शोचस्य=

शोचस्य; शोच=शोच; शोच=शोच;

शोच=शोच; शोच=शोच; शोच=शोच;

शोच=शोच; शोच=शोच; शोच=शोच;

शोच=शोच; शोच=शोच; शोच=शोच;

शोच=शोच; शोच=शोच; शोच=शोच;

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष=विमोक्ष

४. २०; मयङ्ग २४. ७६.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष=विमोक्ष

८८; २५. ४६.

विमोक्ष—विमोक्ष; विमोक्ष, विमोक्ष, विमोक्ष

२०. ११.

विमोक्ष—विमोक्ष है (विमोक्ष=वि+मो,

Qarol-) विमोक्ष, विमोक्ष; विमोक्ष

विमोक्ष, विमोक्ष; विमोक्ष, विमोक्ष; विमोक्ष

विमोक्ष, विमोक्ष; विमोक्ष, विमोक्ष; विमोक्ष

२. १०४; ७. ६२.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष ७. २०.

विमोक्ष—विमोक्ष है ८. २१.

विमोक्ष—विमोक्ष है १. ७७.

विमोक्ष—विमोक्ष १. २७.

विमोक्ष—[विमोक्ष; पा० विमोक्ष; अवे० विमोक्ष;

Lat. cirrus; Oir. si=विमोक्ष] १.

२६; ५. ४१; ८. १६; १०. २५;

२०. ४८, ८४; २४. ७६, ६६.

विमोक्ष—विमोक्ष मे ५. १७.

विमोक्ष—विमोक्ष ५. ४०.

विमोक्ष—विमोक्ष ५. १५.

विमोक्ष—विमोक्ष १०. ७.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष १२. ८४; २३. १७०.

विमोक्ष—विमोक्ष से अंधी=विमोक्ष १०. ४१.

विमोक्ष—विमोक्ष २३. ६६.

विमोक्ष—विमोक्ष [वि+कृत्=प्रति

करना, शोचना, शोचाना तु=विमोक्ष

अवे० शोचता है; पद० शोचता; पा०

पा० शोचता] २. १८४.

विमोक्ष—विमोक्ष होते २४. ६२.

विमोक्ष—विमोक्ष १५. १५४.

विमोक्ष—विमोक्ष २४. ७७; २०. ६.

विमोक्ष—विमोक्ष २५. ७७; २०. ६.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष १०. ६४;

२४. ८६.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष १८. ११.

विमोक्ष—विमोक्ष=विमोक्ष ७. १६; १०. ६६,

१२४, १२६, १४०; १२. ८६; १४.

२०; २४. ४१.

विचला-विचल गया=टल गया (विचल= वि+चल) ७. १६.

विचारि-विचार (विशार) करके ३. ५६;  
२०. १२८.

विचारी-विचार कर ४. ११; २०. १२६.

विछाई-(वि+स्तृ) विछा कर २३. १५७.

विछिन्ना-विछुण=विच्छू के आकार वाला पैर की अंगुलियों का जेवर [√मश्; वृश्चिक; प्रा० विंछिश्च, विंछुश्च, विंछुश्च; पा० विच्छिक; उ० विच्छू; (आ); धं० विच्छा; हि० विच्छू, विछुआ; पं० विच्छू; सि० विच्छू; विच्छू; गु० विच्छू, विछू; म० विच्छू] १०. १५६.

विछुर-विछुरना=(वि+छुट=छुट्) १६. ५२.

विछुरद-विछुरता है १२. ४४.

विछुरन-जुदाई ("विछुरण" सु०) ३.  
७५; १६. ६.

विछुरता-विछुरता=विछुड़ा हुआ १६. ८.

विछुरहिं-विछुरते हैं १. १७६.

विछुरि-विछुड़ कर ४. ४०; २३. १४२.

विछूना-विछुड़ा हुआ १६. ५.

विछोआ-विछोम=विछोह=विरह=  
दुःख २१. १३.

विछोई-विछोही=विछुड़े १६. २; २१. ४२.

विछोड-विछोह ("विच्छोड=विच्छोल=  
विकंपित=वियोग") २१. ८, ६, २१.

विछोऊ=विछोह=वियोग २२. ५१.

विछोह-वियोग ५. ८.

विछोहा-वियोग २. ६६; २४. ८७.

विजइगिरि-विजयगिरि=विजयनगर  
का पहाड़ १२. १००.

विजउर-बीजालय=विजौड़िया नींव=  
गूढ़बिया नींव २०. ४५.

विजुरी-विद्युत=विज्जुला=पा० विद्युता  
(हे०च० ३. १७३), विज्जुली \*विद्युती;  
विज्जुलिआ, \*विद्युतिका; विज्जु=  
विज्जुआ=विज्जुला (त=ल P. २४३);  
हि०, पं०, म० विजली; उ० विजुली;  
सि० विदुलिया १६. १३, १८; २५. ६१.

विटंड-वितरणावाद=बखेड़ा २५. ७७.

विथरि-विस्तरत=वित्यड, वित्यय,  
वित्युय, फट कर ८. ५४.

विथा-ज्यथा १३. २८; १८. ६; २४.  
६६, १००, १३४, १५०.

विदर-विदर्भ देश १२. ६५.

विदिआ-[वि० विद्या √विद्=जानना,  
पाना; Goth. witan = जानना;  
Germ. wissen; Goth. wais = E.  
wise, देखो Waldo, Lat. Wlb.  
video] विद्या; पा० विज्ञा २. ११६.

विधंसव-विधंस करना (विधंस=  
विधंस) २०. १३४.

विधौंसह-विधंसयति=नाश करता है  
१८. १६.



विधौसी-विधौमिता=मही में मिछाई

२०. १२८.

विधाना-विधाता=विहाड ५. ६; २१. २५.

विधान-विधान=विहाण=विधि २. ११३.

विधि-विधाता, अग्ने-दातार; अग्ने-दादार

१. ८२, ८८, ८९, १२७, १९२; ३.

१४, २४; ७. १९, २८; ६. ११, २६;

१०. १०३; ११. २१, ४३; १५. ७६;

१७. ८; २२. २१; २४. ८१; २५.

१४६; विधि=प्रचार १. ४७; ६. १४;

२०. ६२; २१. १९; २३. ४, २१;

२४. १२१, १४२.

विधिना-विधि=प्रसा २५. ४४.

विनह-विनीय=विनय करके २५. ७३.

विनड-विनय=विनय ११. १४.

विनडय-विनय करने १. ८८.

विनति-विनय [पु० विनति; विनती; अं०

विनति; नि० विनति; पु० विनति

विनति; म० विनती, विनती; Gray

के मत में विशिष्ट; अं० विनति;

पु० हि० विनती, काही बंछी मिहन,

(विनती); अं० मिहन; ति० विनती

रूपार्थ] ७. २०; २५. ४५.

विनती-विनति=विनय १. १०४.

विनय-विनय १७. ८.

विनयह-विनीय करती है ३. ६१; १२. १२.

विनयहिं-विनय करती है २५. ८३.

विनयह-विनय करती है १. १२८; २. १८.

विनयउं-विनय करता हूं १. १९०.

विनयौ-विनय किया ३. ६५.

विनया-विनय किया ७. १३; २०. ८१;

२५. ८६.

विनासी-विनति १३. १६; २०. ११०.

विनासह-नाश करता है १५. ११, १८.

विनास-विनाश-विनास ८. ३२.

विनासा-मष्ट किया गया १. १९९;

६. ७; विनाश ८. ६४.

विनु-विना १. १९, ६३; ३. ७१; ४.

२०; ६. ३२; ७. २१, ६०; ८. ३६,

६१, ६४; ६. १, २६; १०. १०,

२०, १०६; ११. १५; १२. २०, २६;

१५. २०; २०. ८४, ११६, ११७,

११८, ११९; २१. ६, २३; २२.

४८, ५६; २३. २१, ४७, १४६;

२४. ८.

विनोद-विनोद १. २१.

विपति-विपति=विपत्ति २०. १२.

विपर-[Uolp, वेपते, Lat. volvere]

विप-विप ७. २०, ६६; २४. १११.

विमास-विमास-कामि २४. १०२.

विमूनि-विमूनि=विमूह=मग्न २२. १.

विमोहा-विमूह हो गया ४. १२.

विमोही-मूर्छित २३. १४६.

विमोहि-विमूह=करके ८. २१.

विमोहा-विमोहा (पु० विमूह=विमूह

होना, अचरना) मुखाया २२. ६.

विरस-विरस=फीका ८. ६०.

विरह-विरह [ वि+रह=रिह, वियोग ]

१. १८२; ८. १६; १०. १२६; ११.

४; १३. ६; १५. २७, २८; २६,

३६; १७. १, ११; १८. ३, ८, १६,

३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४५; १६.

३४, ४२, ४४; २०. ४१; २१. ७,

५१; २२. १६; २३. ५५, ६८, ६९,

८०, १०६, १४५; २४. ६०, ६७,

६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७७, ८०,

८१, ८२, ८६, १००, ११८; २५. २४.

विरहइ-विरह ने १५. ३७.

विरहचिनगि-विरह की चिनगारी(चणग

चणक=चना=चने जैसी) १६. २५.

विरहचिनगी-विरहकी चिनगारी ११. ५४.

विरहवन-विरहवन १८. ६.

विरहवान-विरहवाण १०. ८४.

विरहविथा-विरहव्यथा २४. १५३.

विरहा-विरह १८. ३५; १६. २६; २४. ६७.

विरहानल-विरहानल=विरह की अग्नि

२२. ३३.

विरहिनि-विरहिणी २१. ५६.

विरहिनि-विरहिणी १८. ४६; २४. ६६.

विरास-विलास [ √लस्=चमकना;

लप्=चाहना; तु० Lat. lascivus;

Goth. lustus = E. Germ. lust]

मा० प्रा० विलाशे; पा० विलास;

“विलहला कोमलो विलासी” (दे०

271. 7) २. १५६.

विरासू-विलास १. १६.

विरिख-वृष=वृच्छ विरिद्ध (अवे० उस-

चाहस; रुक्ख=रुक् का वृक्ष के साथ

कोई संबन्ध नहीं P. 320) १. १७५;

२. ८१, १४८, १६६; वृष=बैल

१२. ७७; २०. ६४.

विरिध-वृद्ध=वद्धि; अवे० वरेध=

बुढापा ( P. 333 ) बेरेमंत=बृहत्;

पह० बूलंद, फा० बुलंद; २. १४७, १५१.

विरोध-विरोध=विरोह ८. ६०.

विरोधा-विरोध किया २५. ६५.

विलंब-विलंब=देर २२. १५.

विलार्ई-विलय होय [ तु० फा० धेरान;

पह० अपेरान; छि घीरान्=नष्ट; सं०

चार्य, अचार्य ( तु० पा० विलाक=

विलग Goiger, PGr. 612 )

पतला; संभवतः वि+ली के साथ

संबद्ध ] ३. ७७.

विलाना-विलीन हो गया १६. २२.

विलोन-विलावण्य=विलावस (यण),

विना नमक, विना सौन्दर्य ८. १३.

विसँभर-विसम्भर=बेसम्हार=जो संभल

न सके (संभार्य=सम्हार) १२. २.

विसँभारा-बेसम्भाल ११. ३.

विसँभारि-विसम्भार = बेसम्भाल

२३. १२४.

यिस-धिप, पं० वेह; पच्छिमी पं० विस्स;

वि० विष्णु, विदुः गु०, वं० विल;  
 म० विल, वीर; हि०, वं० विल;  
 का० वेह, सि० विम, वह ४. १५.  
 विसमउ - विमय = विहय २४. १२,  
 वे मय = विना समय २४. ६०.  
 विसरह - विमरपति = विसारता १. १२,  
 १९; २०. २२; विसरेण = विसरे =  
 भूल जाय (विमरति; वीमरह; हि०  
 विमरना; विमरना, वं० विमरणा;  
 वि० विमरगु, गु० विमरउं; म०  
 विमरयें) २३. १५; २४. १९.  
 विसरा - घोष दिया ५. ७, ४७; २३. ७५.  
 विमयमा - विधाम १. १४; १३. ५;  
 २३. ७७.  
 विमरामी - विधामी = विमाम = वीसाम  
 विधाम देने वाळा ८. २९.  
 विमगमू - विधाम २. २२.  
 विमरि - घट ४. १.  
 विमहर - विमर = विमरे ४. १२; १०.  
 १; २०. ५२.  
 विमारा - घोष दिया ५. ७; २४. ७०.  
 विमारे - बहारे = बटारे हैं १०. १.  
 विमरना - विमरन = विमर विमर सामग्री  
 ७. ५.  
 विमरामी - विमरपत्नी; [पुनरुद,  
 देवा तथा दूद के हरी चर्य में  
 हि०-ने; शब्द का प्रयोग दिया है;  
 मेमरन; कादुरर प्रयोग हो; कबला

विमु = मिस्म, गु० पा० वीमंसति = वै०  
 वीमंसते; म० य के लिये दे० Gal-  
 gor, PGr. 46. 4 ] ७. ५१; २१. १५.  
 विमुन - विष्णु = विष्णु २५. १००, १२२.  
 विसेछहि - विशेषयन्ति = विशेषता को  
 बनाते हैं ६. १.  
 विसेछा - विशिष्ट्येत = वर्णन किया जाय  
 १. ६१; २. २; विशेष(ता) ६. ५४;  
 शोभित है १०. ११४.  
 विसेछी - शोभायमान है १०. १२, १२५.  
 विसेसर - विधर २०. ४०.  
 विहंसत - हंसता है १५. ५६; २०. ११;  
 २५. १९४.  
 विहंसते - विहसन = गिले हुए ४. ४.  
 विहंसाना - हंसा ४. ९१.  
 विहंसानी - हंसती है १०. ६१.  
 विहंसानी - हंसी २०. ५६.  
 विहंसि - हंस कर १०. ७०; २२. १६.  
 विहंसी - विहंस का भूत १५. ७७.  
 विहपना - विहस का भूत = दुकड़े दुकड़े  
 हो गया २३. १९७.  
 विहारे - विहीना = बीती १८. १.  
 विहान - विहाय = प्रातःकाल (विमान,  
 गु० विहायम्, विहीन) ३. १५; २०.  
 १२१; २४. ५८.  
 विहानी - वंभी ३. १७.  
 विहारी - विहारी = विहार की (विह = उद-  
 रना, उदर उदर कर घूमना) २०. १११.

विह्वन-विध्वन, [√धु=√धू से; हेम०  
के मत में √ही=√हा से व्युत्पत्ति  
है, जो असंगत है; देखो P. 120]  
१५. २१.

विह्वना-विध्वन=विह्वण=विह्वण=विना=  
रहित ११. २२; २३. ११०.

वीञ्चोग-वियोग ११. ३२.

वीच-वृत्त्य=विच्छु=मध्य [तु० सि०  
विचि; प० विचि; प्रा० विचि, पा० हि०  
वीच; अप० प्रा० विचे अथवा विचि=  
वृत्त्ये; ध्यान दो वीचि=ऊर्मि, वै०  
अर्थ प्रतारण, तु० Lat. vicis; Ags.  
vice=E. week. शब्दार्थ परिवर्तन]  
१०. ४२, १५८; १६. २२; १६. ४२;  
२२. १८; २३. १५६.

वीजानगर-“विजयनगर” १२. १००.

वीजु-विद्युत्=विजली १. ७; ३. ६३,  
६७, १२६; १०. ६४, ६५; १५. ६५;  
१६. ५; २१. ३७; २५. ६, १६४.

वीजवन-“विन्ध्यवन”; (वीधने वाला  
जंगल, तु० पा० विज्मति=विध्यति,  
विज्मन=व्यधन) १२. ६२.

वीता-व्यतीत; हि० बीतना; उ० वितिबा;  
गु० वटुं, १२. ६३; २५. १०८.

वीति-व्यतीत=बीत (तु० पा० वीति=  
वि+अति) २. १४४; ६. २६.

वीती-व्यतीत हो गई १३. २८.

वीन-वीणा २. १०७; १०. ७४, १४३; १८. ५.

वीनहिँ-चुनती थीं=(वीनह=वेणुति;  
√वेणु गतिज्ञानचिन्तानिशासनवा-  
दिग्रहणेषु) २०. ४६.

वीर-[वै० वीर; अवे० वीर; Lat. vir,  
virtus (E. virtue); Goth. wair;  
Ohg. Ags. wer; तु० वयस्=शक्ति]  
१. १७२; २१. ५७; २२. ६; २५. ३०, ६७.

वीरउ-वीरुध=विरवा=वृत्त २०. ५५.

वीरवहूटी-वीरवधूटी=इन्द्रवधू २३. ५३.

वीरा-वीटक=बीडग=बीड़ा, चलने के  
समय संकेत १५. ५७.

वीस-विंशति=वीसह; पा० वीसं,  
वीसति; का० वुह; वं० वीस; पं० वीह;  
सिं० वीह; गु०, म० वीस; अवे०  
वीसइति; पह० वीस्त; आ० फा०  
वीस्त; का० बीस्ता; वा० वीस्त; बलू०  
गीस्त; तु० हि० विस्सा, विसवांसी  
१२. ७२; २५. ६६.

वीसुनाथ-विश्वनाथ=विस्सनाह २०. २४.

वीहर-भिन्न (वि+ह=फटना) २. १६२.

बुझइ-(बुध्=बुझ्, यथा “दीपो  
नन्दितः”) बुझती है २४. १०७, ११२.

बुझहिँ-बुझते हैं २१. १०.

बुझा-बुझइ का भूत १६. ३.

बुझाइ-बुझता है १५. २७; बुझाकर  
१६. ४३; २३. १०१; बुझ २४. ३१.

बुझाई-समझा कर ३. ५०, ५४; बुझ  
४. ५६; २५. ५६.

सुमय-समयाने पर १३. ४४; २१. २१.

सुमयन-सुम गया २५. ११७.

सुमयय-सुमये १८. ११.

सुमययत-सुमये २२. १६.

सुमययहि-सुमये है १२. ६२; २४. ११२.

सुमी-सुम गई १६. २२; २४. १०७.

सुदि-(उप+ति) समक ५. ४०.

सुधि-सुदि=धने=बघोद ३. २७, ६३;

५. १७, ४६, २०; ७. १२; ८.

२७; १६. २७.

सुधिपेन-सुदिम=सुदिमान् १. ६६.

सुधी-सुदि २५. १२२.

सुंद-विन्दु १३. ४०.

सुहा-विन्दु=सुंद १५. २६.

सुहानू-सोम सुहान १. १२४.

सुहाह-बह धांहा, त्रिपदी गारदन और

सुंद के बाह धांहे हैं ("सोहाहस्य-  
मेव स्यात् पावकुपेयस्य बाधः" हेम-  
चन्द्रः) सोहाह २. १०१.

सुंद-विन्दु; सं० सुंद, विंद; ति० विन्दु;

सुंदो, बीही; व०, सं० विंदी; मि०

विंद; का० विंद १. ७६, ७८; १३.

१६; १५. १६, ६०; २५. २०, २१.

सुंदरि-सुंद ने २३. १४८.

सुहा-सुहा हुआ=(सुहा=सुदि=सुदी

सोमहा हाहाहा, सुहाहा) २०. ६२.

सुम-सुमय=(सुमये=सुमय; पा०

सुमयि; का० सुमय; व०, सं०

सुमन; हि० सुमना; पं० सुमना;

सि० सुमन; गु० सुमनुं; म० सुम

समम २५. २६.

सुम-समम १. १३६; २१. २१; १३.

४४; १४. १२; १६. १८; २१. २१;

२४. २८.

सुम्नि-सुम कर ४. ४६; ६. ४०; १२.

६७; २५. ६६.

सुम्ने-सुम्ने पर=सोच होने पर २३. ४४.

सुह-सुह ( $\sqrt{\text{सुह}}$  मजने; सुह=सुह;

व्यञ्जनव्यापय के लिये देनो II.

133) २. १७३; ५. १३; १५. ६३.

सुहर-सुहा है (सुहति, सुहृह, सुहना;

गु०, मि०, सं० सुह; का० सोह;

म० सुह्ये) १०. ८८; २१. २८;

२४. ६६.

सुहत-सुहन्=सुहा २५. ६४.

सुहि-सुहन् ४. २६; ११. ५; २२.

२७; २३. ६१.

सुही-सुह गई १०. १०७.

सुहे-सुहे २१. १२.

सुहा-सुह=सुहृह=सुह (बहिष्य); गु०

सुहिं सुहादेता=सुहा; देता=देर=

व्यापि. II. 166, 308) १. ७०.

सुह-सुति=(गु० विमृति=ममृति=

ममृति II. 177) १३. २४.

सुँहा-सुँहने(वि+हो=विह) ७. १८, २६.

सुँहात-सुँहने ७. १६.

वेँचा-वेचा १६. १५.

वेइलि-वेलि=वेहरी (वहरी से नहीं;  
\*विलि से); तु० वीली, वेहरी, वेहिर,  
उन्वेहइ; वेहमाण, उन्वेलिद इत्यादि  
P. 107) २. ८७.

वेग-वेग (√विज्) १. ८०.

वेगि-वेग से=शीघ्र १. १४२, १५२;  
४. ६१; ७. ४६; ८. २०; १२. २१;  
१३. ३६, ६१; १८. ५२; २०. ८०;  
२३. ४३, १५५, १५६; २४. ६७,  
१२८; २५. १६, १३६.

वेगी-शीघ्र ११. ६.

वेटा-विट्ट=पुत्र २५. ८४, ६३.

वेडिन-पहाड़ में रहने वाली वेड़े जाति  
की स्त्री (तु० वेष्टयति, वेडिअ; हि०  
वेठना; सि० वेडणु; बं० वेडिते; सिं०  
वेलणवा; म० वेडणों) १०. १११.

वेद-वेद=वेष्ट (√विद्) ३. ४०; ७.  
४०, ६१; १०. ७७, ८०; १४. २४;  
२३. १७६, १८१; २५. १४४.

वेदी-वेदों के जानने वाले २३. १७६.

वेद-वेद ७. २३.

वेध-(√व्यध्; नासिक्य के लिये तु०  
JB. J. As. 1912, I, p. 333 et  
seq; Grierson, Phonol. pp. 34,  
38; JB. 82). (विध्यति; विंघइ,  
वेहइ; बंधना) बंधना, वेधना; पं०  
विन्हणा; सि० विंघणु; गु० विधतुं;

म० विंघणें १०. ११२, ११५.

वेधय-वेधता=बंधता २०. १३४.

वेधहिँ-बंधते हैं १०. ११७; १८. ५१.

वेधा-बंध दिया ३. १५, ४२; १०.  
२६; १५. ३२; विंघ २०. १२७.

वेधि-विंधकर १. १७५; २. ८१; ४.  
८; १०. ४४, ४६, १५३; २३. ६४,  
१४४, १८३, १८४; २५. २२.

वेधी-बंध दिया १०. ४८; २१. १८.

वेधे-बंधे १०. ६, ११५.

वेना-वेण=खस १. २५, १०२.

वेनी-वेणी ३. ४३; १०. ४, १३,  
१३०, १३२.

वेरा-वेड़ा=(वेडिया, वेडी) नाव "वेडो  
नौ:" (दे० 216, 6); पं० हि० वेड़ा;  
गु० वेडो; सि० वेडी; म० वेड़ा १३.  
३१; १५. ६०; वेला समय २४.  
१५८; "वेडा=वक्र=कठिनता"  
२५. १२०.

वेरि-वेला=घार; १. १३४; घदरी, वधर;  
पा० वदर; उ० घर; बं० बहर; पं०  
वेर; सि० वेरु, वेरि; गु० म० वोर  
२. ७८; ३. ७२; १०. ४०.

वेल-विल्व=बेल (तु० पा० वेलुव, वेलुव  
विल्ल का गुणित रूप; सं० \*वैल्व=  
\*वैल्व=पा० वेल्ल) १०. ११४;  
वेल्ल=लता ११. १६.

वेलसहु-विलसहु=विलास करो १२. २६.

बेलि—बेल्ल=बेल (पु० बेली; “बेल्ला बेल्ली”  
(दे० ३७०, ३०); प्रा० बेल्लि; हि०  
बेल्ल; सि० बलि; मि० बल्ल; पं०, गु०,  
म० बेल्ल) १. २८; २. ८०, १४६;  
२४. ११२, ११६, १२०.

बेल्ली—बेल्ल ४. १४; २०. ४६; २४. ११४.  
बेयहरिआ—ब्यवहारी=व्यवहारि ७. १४.  
बेयहारू—ब्यवहार=व्यवहार (पु० पं०  
बेयहारा; हि० ब्यहारा; का० बेयहार;  
सि० बयहार; म० बेयहार; सि०  
बहर J.B. 159) ७. १४; १६. १७.  
बेरर—रिमर=विशिष्ट सर=मोतिपों  
की सर=मोतिपों का बना नाक का  
आभूषण १०. ६०.

बेरपा—बेरपा=वेरपा=वेतिपा, गयिका;  
हि०, पं०, म० बेरपा; २०. ११.

बेता—बेरपा २. १०६.

बेमादनी—बेरपन=बारी २. १०४.

बेमादनु—बेरपन करो=बारीदो २३. ११.

बगादा—“विभाजनम्”=बारीदने की  
गामगी २. १०१; १२. १६; बारीदा  
७. ४०.

बेहर—बिह १५. ८.

बेहरी—बिह (वि+ह=चरता) १. ६४.

बेरागी—बैरागी २४. १२.

बोभा—बंफा (√बृ) ७. ११.

बोर्—बंफा का भूत २१. ६१; २४. ११७.

बोभ—बभ [√बृ, बभ=बोभ] २४. ११७.

बोभ=बोभा=भार (का० बोभा=  
माछा, घ=व) १०. १०.

बोडर—हुपाता है (√भृ) १२. १६.

बोरर—बोडमति=हुपाता है ३. ८०.

बोरा—बोते हैं=हुवाते हैं १०. १८.

बोल—बोलता है (√भृ; प्रतीति, भूते;

पा० भूति; विमन्त भूमेनि Gölger.

POr. 141. 2) २. १७; १०. ७७;

११. ८; २४. ६१, १०४; २५. ७६.

बोलर—बोलता है ४. १०; ७. ६८,

६६; ८. ४३; ६. ११; १०. ७६;

२४. १; २५. १११.

बोलर—बोल २५. ११.

बोलर—बोलता है ७. ४८.

बोलर—बोले २३. १२४; २५. १६२.

बोलर—बोलते हैं २. ११, १४, १६;

१२. १७; १४. १४; २४. १०३.

बोला—बोले का भूत १. ६६, १०१;

७. ६०; १०. ७६; १२. ७६, ७७,

६७; १५. ४६; २३. ८८; २४. २३,

७८; २५. ६४, १४२, १६१, १६६.

बोला—बुलाकर २५. ११२.

बोला—बुलाई ४. २.

बोलाउ—बुलाता है २३. १६६.

बोलाप—बुलावे ११. १०.

बोलापर—बुलावे २३. १६८.

बोलापद—बुलाघो २५. ११८.

बोलापद—बुलाघो २४. ६६.

बोली—बोली (वाणी) १. ६८, १८२;

बोल ३. ५१; ७. ४८, ६०; ८.

३८; ६. ४६; १३. १७; २२. १६;

२३. १६२; २४. ६१.

बोलिन—बोलियों (से) ४. १५.

बोली—वाणी १. १८१; बोलइ का भूत

स्त्री० २०. १२६; २५. ६६.

बोलु—बोलो ६. ४६.

बोले—बोलइ का भूत १५. ७६; १४. १७

बोहारा—व्याहार=बोहार=बुहार २५. ६८.

बोहित—बहित्र = बोहित = बोहित्य =

जहाज १. १४०; १३. १५, ६०, ६१;

१४. १, २, १६; १५. २, ६, ६५.

व्याध—व्याध=वाह ५. ५२.

व्याधा—व्याध २४. ८७.

ब्रह्मचरज—ब्रह्मचर्य=ब्रह्मचरिश्च (०चेर,

०चेर) २. ४६.

ब्रह्मंडा—ब्रह्माण्ड १. ५, १०८; २. १२५;

२५. ११८, १२३.

भ.

भगराज—भृङ्गराज—भंगरय २. ३७.

भँडार—भाण्डागार = भंडाधार कोठा;

हि० पं० गुं० भँडार; सि० भांडार;

बं० भांडार १. १८०.

भँडारहि—भण्डार को २३. १८४.

भँडारी—भण्डार के स्वामी ५. ६.

भँडारु—भण्डार १. ३३.

भई—हुई; (भवति; प्रा० हुवइ, भवइ;

पै० प्रा० भोति; शौ० होदि, हुवदि,

हवदि, भोदि, भुवदि, भवदि; पा०

होति, भवति; उ० होइवा, हेवा; बं०

होइते; हि० होना; पं० होणा; सि०

हुअणु; गुं० होवुं; म० होयें; अवे०

वू; पह० वूतन; फा० वूदन २०. १७.

भइ—[√भू (भूमि=पृथ्वी); Lat. *fui*=

मैं हूँ; *futurus*=E. *future*; Oir.

*buith*=होना; Ags. *būan*=Goth.

*bauan*=जीना; Germ. *banen*;

तथा *byldan*=to *build*=रचन;

Lith. *būti*=होना; *būtas*=घर;

(भू अवे० वू; पह० वूतन; पं० वूदन)]

हुई १. ११५, १५१; २. १६, ८१,

८८; ३. २, ६, १६, १७, २७, ३३,

४१, ५७; ४. ४६, ५०, ६०, ६२,

६४; ५. ८, ५३; ७. १२; ८. १६;

६. ३६, ४५; १०. ६०, ११२; १२.

१७; १३. २; १८. ८, ४०; २०.

१७, १८, ७७, ८१, ८४, ६६; २२.

१६; २३. १, ५४, ८०, १७६; २४.

८२, १३८; २५. ५७, १३६, १४१.

भई—हुई ४. ६; २४. ५२, १४६.

भई—हुई १. १८८; ३. ४, १३, २६;





भटंत—भट का काम [ √भट=किराये पर लेना; मौलिक रूप में √भृ, तु० भृत्य, भृति ] २५. ७७.

भय—डर [सं० भयते; पा० भायति √भी का श्रम्यस्त प्रयोग विभेति; भायू० \*Bhei; तु० अवे० वयन्ते=डराते हैं; Lith. bijotis=डरना; Ohg. bibēn =Germ. beben; तु० वस] २. १६.

भया—हुआ २२. ६०.

भा—मात्र ६. १५; भरी=पूरी १८. २३.

भरइ—भरति [ √भृ; Lat. fero; Oir. berim; Goth. bairan=E. bear; Germ. gebären ] अवे० वरइति; प्रा० फा० वरति; पद० वरत्; आ० फा० वरद्; ग० वर्तमून; साम्प्र० चवर्दन; गि० वर्दन् २. ५७, १४२; २३. ६६; २४. २४.

भरई—भरेत्=भरे १. ७४.

भरत—भरते हो १२. २७.

भरथरि—भर्तृहरि [भर्तृ=भत्तु=भट्टि; अवे० बेरेथ्रि=गर्भिणी] १२. ५२.

भरथरी १६. १०; २०. ६४; २२. ११.

भरन—भरना २. १४४.

भरना—सहना ४. २३.

भरम—भ्रम=भ्रम=आन्ति १३. ५६.

भरहिँ—भरते हैं २. १४५; १२. ३६.

भरा—पूर्ण (भरइ का भूत) १. १४५; २. ४६, १६३; ५. १२; १०. १३; १६.

१४; १६. ७; २५. १४२.

भरावा—भरवा दिया २०. ७६.

भरि—भर १. ६४, ८६; २. ४०, १०२; ३. ६४; ५. १४; १०. ६१; १६. ६; २०. ७७; २२. २३, ५६; २३. १३, ५२, ६६, १५०; २४. ६४, ८२, १४०.

भरीँ—भरइ का भूत बहु० द. १६.

भरी—पूर्ण=भरइ का भूत १. २८, १८१; २. १२६, १४४; ४. ३७; ७. ४३; द. ५६; १०. ६३, १०८.

भरे—पूर्ण (भरइ का भूत घ०) १. ११; २. ७०; ४. ३५, ५३; ५. ३२; १०. ५, ४०, ५७, ६३, ७६, ६१, ११४; १२. ७४; २०. ६६.

भरोस—भरोसा द. ३०.

भरोसई—भरोसे पर २३. १२८.

भरोसइ—भरोसे (भरोसे पर) द. ५६.

भल—अच्छा [भद्र; प्रा० भद्र; पा० भद्र, भद्र; आ० भाल; उ० भल; घं० भाल; हि०, पं० भला; सि०, गु० भलो; म० भला; JB. 48, 141; Geiger, PGr. 53. 2] १. १५५; २. १००, ११६; ३. ७८; ५. २६; ७. ७२; द. ७१; १२. ३८, ८३; १५. ६६; २०. ११, २२, ५२, ८६; २३. ४६, ८२.

भलहिँ—भली प्रकार १२. ४७.

भलहि—भला ही द. ५; भली भांति १. १६२.

मला-अप्या २. ११८; २४. ६७.

मलि-अप्या २. ११८; २४. ६१, १४७.

मली-अप्या २. ११६; ४. २६; २०.

१७; २२. २१.

मले-अप्ये २०. ६०.

मलेहि-मले ही १३. १२; २४. ३८.

मलेहि-मले ही = "अप्या तह ते"

सु० ६. २०; १२. ४६; २२. २४;

२३. ६०.

मयेह-अमति = मयह = पूमता है १०.

१४३; १२. ४७.

मयैति-अमति = पूमती २४. ६१.

मयैर-अमर [ √ अम् (स्वरित गति = अयेवद् वति) अथवा अमर = अमर;

सु० Ohg. *breuo* = Germ *breuen*

(Caddy), *breuen* = *brunnen*

(दुग्धस्रोत); सु० Lat. *fermo* =

गर्जना; देगो Walje, Lat. *With*

*fermo* पर] सु० प्रा० अमर (अमर,

अमर, अमर; अर० प्रा० अमर;

अ० प्रा० अमर) पा० अमर; अ०

अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

अ० अमर; अ० अमर; अ० अमर;

१४. ७७, ८०; १६. १६, २४; १८.

७, ११, १३, १६, २७, ३६; १६.

२७, ३३, ७१; २०. ६, ७२; २१.

१६; २३. ७२, ११६, १३८, १७६;

२४. ६३, ८६; २४. १७३; मुरही-

रंग का घोड़ा २. १७०; भैरव =

घावत १०. १८, ४०, १४४, १४६;

११. ४; १४. ७०; १८. ३४; २४. १४.

मयैरन्द-अमरी की १०. १२४.

मयैर-अमर २४. १७.

मयैरी-अमरी = केरा २. १११.

मयैही-अमर करते हैं २४. २.

मयनदुम-अमर = मारे मारे धिरे  
का दुःख ("घर का दुःख" सु०) १. ४६.

मयैहि-अमरवति = करते हैं २१. १७.

मयी-अमरी = भीरी १०. ३४.

मसम- [ अमर; पा० अमर (अ);

√ अम् = अमाना; अविन वस्तु; अर्थी-

मूल, अर्थ, बाहु आदि; √ अम्

√ अम् (अम् = भोजनप्राप्त, अम् =

भूषण, पा० अम्) का ही रूपान्तर है।

भाषू० \*Bhāṭa तथा \*Bhām; Lat.

*calidum*; अम् अमरीकरणे अम्

पाट] अम्; अम् अम् \*अम् =

\*अम् ( = अम्; अम्, अम्)

२. ३; २१. २४; २३. २१, ११२.

अमरी-अमर २१. ४८; २४. ७२.

अमरी-अमर = तोपना है १. ४८.

भाँजहिँ—भाजते हैं २. १७५.

भाँट—भट्ट=भाट [ भट्ट किराये पर लेना;  
तु० भृत्य, भृति ] २. १५६.

भाँटिनि—भट्टिणी=भाट की स्त्री २०. २७.

भाँडा—भाण्ड=बरतन [तु० हि०, वं०

भाँड; हि०, पं० भाण्डा; तु० भाँडुं;

सि० भाँडो; म० भाँड; सि० षड;

का० बार; ( ध्यान दो हि०, पं०

हांडी, हंडिया; उ०, वं० हांडी; वि०

हांड, भाँड; सि० हंडी ) ] १. १४०.

भाँडे—भाण्ड=बरतन १२. १३.

भाँति—भांति=प्रकार १. ३७, ६१; २.

१८८; १३. ४४; १५. ७२; २०. ६०.

भाँतिहि—भांती २. ६०.

भाँती—भांति=प्रकार २. ६०, १७१,

१८६; १३. १६; २५. १४१.

भा—भया=हुआ १. ८३, ६१, ६५,

१२५, १३८, १३६, १६०, १६६,

१८३; २. १७, १५२, १८६; ३.

६, ११, १८, १६, २०, ७२; ४.

५८, ५६; ५. ८, २०, ३३, ३५,

३७, ४३, ५२; ७. २६, ४०, ४१;

८. ४८, ४६, ५०; ९. ३३, ३७,

४४; ११. १७, ४१; १२. १, ५३,

५७; १३. १०; १५. ४२, ४४, ४७,

६४, ७१, ७५; १८. १२, १५, ३६;

१६. ५, ११, २६, ३४, ३५, ५८;

२०. ३८, ७२, ७४, ८३, ८४, ११६,

१२२, १३६; २१. ६, २७, २८,

४६; २२. ४७, ५८; २३. १६, ४१,

७८, ६५, १०८, १४५, १४६, १५०,

१५६, १६१, १६६; २४. २७, ४३,

८०, १०१, १२६, १४८, १५२; २५.

५२, ६१, १०१, १६२, १६६, १७०.

भाइ—आतृ; अवे०, प्रा० फा० आतर; पह०

आतर; आ० फा० विरादर; वा०

मुतृ; शि० मोद; विराद; सरि० मोद;

अफ० मोर; बलू० आत; कु० घरा;

ग्रोस्ले० अवांद; ट० अवांद, [ Lat.

frater; Germ. brüder; Eng. bro-

ther ] २०. ११७.

भाई—आतृ १०. १०५.

भाँरि—अमरी=सुमरी ११. ४.

भाउ—भाव १. १६८; २. १६२; १०.

५१, ६६, ११०; १३. १३; १६.

३५; २३. ६०; २५. ८.

भाज—भाव २. ३७; १०. १०३; १३. १४.

भाओ—भाति=प्रच्छा लगता है २२. २५.

भासई—कहा है ८. ६.

भासहु—कहे हो ८. ८.

भासा—भाव २. ३८; २. ३३, ३७,

४०; ७. ६८; ८. १५; २२. ४३; २३.

६८; कहा २५. ६७.

भासी—भाव=बोली ४. ३०.

भाग—भाव ७. ५८; ८. ६८.

१२७; भाग २३. ६७.

भागडै-भागै २०. ७४.  
 भागयंत-भागयान्=भागवान् ७. ३८.  
 भागहिं-भागते हिं १३. २१.  
 भागा-भाग गया २१. ६१; २५. १५५.  
 भागि-भागकर १. ११३.  
 भागी-भागकर १५. २१.  
 भागु-भाग्य २. ८८.  
 भागू-भाग्य १०. ११५; १६. २१.  
 भागे-[भाग/भन=दृष्टकरण; भागना  
 =दृष्ट होना] दीर्घे ५. ११; १६.  
 ४९; २०. ९९.  
 भाट-भट्ट=भाट २५. १०, ४८, ४९,  
 १३, १७, १४, ७१, ७४, ७५, ७६,  
 ४०, ८६, १७, १९१.  
 भाटहिं-भट्टय=भाट को २५. ८२.  
 भाटिन-भाट की छी २५. १०.  
 भाटी-भट्टा; भट्टी, भट्टा, भट्टी; पं०  
 भट्ट; पु० भट्टी; म० भट्टा, भट्टी; वं०  
 भट्टी १५. १०.  
 भात-भट्ट=भन=भात=बावट्ट १२. १५.  
 भातड-भातड, हिं=भातै; भातया; पं०  
 भातै; पु० भातडको; म० भातया; का०  
 बरायेव १०. ९९, १३. ९; १८. १३.  
 भात-भातु=गुर्वं (√भा) २५. ४८, ८६.  
 भातु-गुर्वं १. ११५; ४. १८; २५. १९८.  
 भातू-भातु १. १७, १६. २१. १०;  
 २०. १०५.  
 भार-बोह (√भ, बो हे बारा भाव

ति० बर; का० बाह) १. १०५, १५०; २.  
 १६८, ३. ७८, ७६; १५. ९७; २१. १०.  
 भारथ-भारत=महाभारत (मा०, घ०  
 मा०, जैम० भारह; त=थ=ह P.  
 २०१) १०. ७६; २४. २४.  
 भारी-भारवाला (दि भार=वार=वजन)  
 १. १०३; १३. ९; १८. ४३; १६. २९.  
 भारू-भार १८. २१.  
 भारैरि-भामरी=धुमरी १५. १४.  
 भावइ-भावे ४. ४८; १५. २४.  
 भावसती-भासती, शतानन्द रचित  
 ज्योतिष का करण ग्रन्थ १०. ८०.  
 भाया-भाता=सौहृता ८. ४५.  
 भिषमंग-भिषा भांगने वाला १३. १५.  
 भिषारि-भिषाकारी १. ११; २३. ९१।  
 २५. २९; २५. ११.  
 भिषारी-भिषाकारी २. १५९; ७. १;  
 १२. २९; १६. २९; २३. ८, १५,  
 १८, १०, ४५; २५. ६, ८८.  
 भिषिद्या-भिषा २३. १४; २५. २९.  
 भिंग-भृङ्ग=भिंगि=बीट विरोध २३. १११.  
 भिंगी-भृङ्ग १६. ९६.  
 भिचदा-भिषा २३. १९.  
 भिनुभार-धर्मात्माभार-भातःकाह १५. ७५.  
 भिरिंग-भृङ्ग १८. ८; ११. १५.  
 भीज-भीगा २३. ९५, ९१.  
 भीजा-भाष्यजित ८ भीगा २१. ११;  
 २३. १५.

भीजि—भीग कर २३. ६०.

भीजी—भीगी २३. १२१.

भीउं—भीम २०. १२०.

भीख—भिखा, भिक्खा; हि०, भीख; वं०

भीक; पं० भिक्ख; सि० बीख; गु०

भीख; म० भीक; का० बीख, बेछ;

सि० बिक; (JB. 88, 169) १. ४६;

२०. १०७; २५. ६६, १३६.

भीखा—भिचा २३. ६३.

भीखि—भिचा २३. १७, २३.

भीजइ—अभ्यजन; भीजइ (P. 172)

भीजना; पं० भिजणा; सि० भिजणु;

गु० भिजणुं, भिजणुं; म० भिजणें;

(JB. 71, 75, 106, 128) १३. ३.

भीतर—अभ्यन्तर; प्रा० अभितर (अलोप

H. 172, 188; न्त—त्त JB. 121)

(अवान्तर के लिये तु०, छि घनीर=

चेत्र; \*वन्तइर, देखो अवे० अवेअंतर)

हि०, वं० भीतर; गु० भितर (JB.

44, 71, 75, 121, 128, 174) ६.

५१; १६. ४६; १६. ४७; २०. ७३;

२३. १६०; २४. ४८.

भीमसेनि—भीमसेनी करूर १. २५.

भीर—भीरू (अवे० वप्रो; हि० भीर=

कठिन) १२. ५६.

भुअंग—भुजङ्ग १०. ५.

भुअंगइ—भुजङ्ग ने १०. १३२.

भुआ—भूआ=सेमर की रुई ८. ५३.

भुई—भूमि; पा० भूमि, भुमि; हि० भूई—

भूँ, भू; पं० भुं; सि० भुई, भूँ; गु०

भौं, भौय; म० भुई, भुईँ; वं० भू;

भूईँ; सि० विम; का० चुम; त्सि०

फुव (JB. 64, 71, 153) अवे० घूमि;

आ० फा० वूम १. ६८, १०८; ३.

१३, १६, ४७; ५. २६; ७. ५२; १०.

३६, १२०; १२. २२, २६, ८६; १३.

२; १४. ५; १६. २१, २३, २४; २०.

१२०; २४. ५१, १२६; २५. १७३.

भुईँचाल—भूमिचाल=भूकम्प २४. १५.

भुगुति—भुक्ति=भुक्ति=भोग १. १७,

३२, ३४, ३८, ४६; ३. ६२; ५. ४,

५, ५३; १२. ८, ७६; १६. ५६; २०.

१०८; २३. १४, १६, २०, २६, १२८.

भुज—भुजा १०. ११२.

भुजा—भुज १०. १०५.

भुलाइ—भूल कर (पा० भुलइ; हि० भूल;

पं० भुल—; का० बुल—; म० भुलणें)

१५. ११; २१. ३६.

भुलाना—भूल गया ६. १७; २४. १२४.

भुलाने—भूले १२. ६०.

भुलानेउ—भूल गया ६. २६.

भुलाही—भूल जाते हैं २. १०७.

भूँजइ—[√भुञ्ज=भुनक्ति; पा० भुञ्जति;

Lat. *fruo*, *frūx* = E. *fruit*,

*frugal* इत्यादि; Goth. *brūkjan* =

As. *brūkan* = Gorm. *brauchen*;

गु० मुख पाखने=जीवन के लिये  
थाना पाना] भोगदा है १. १८;

अमति=मृतता है १५. १६.

मूजा-मूना (मुख=मृतता; मुमिध=  
मूना हुआ धाम्य) २५. ११०.

मूजी-मूत कर ७. ११.

मूसो-संसार के कष्ट की रुई ६. १;  
१०. २०.

मूरा-<sup>०</sup>मुद्रन=उमुपा; दि० मूय; पं०  
मुयल; मि०, गु० मुय; म० मूक; का०  
मुयल, मि० मोय; "मुयला डुर"  
(दे० २२०, १३) १. १४, १८२; २. ४६;  
७. ४६; १३. २; १८. २०; २२. ४३.

मूषा-उमुयित [संभवतः √मुष=  
भीडना से संबद्ध; कुते की भांति  
हीनता से भाँगेने वाला; अथवा  
√मिष्ट, मिषा=मीन=मोँगना के  
साथ संबद्ध] १. ११४, १२. ११.

मूत-मूतक आगना (मूत मूत) ४. ११.

मूतरपनी-मूरणि चौर मरपति २. १२१.

मूरनी-मूरणि=अमीदान २. १२.

मूस-अम १. २. ११; मूड गई २०. १६;  
मूडता है २३. १२१.

मूसर-मूडता है ८. २१; २२. ४८.

मूसरे-मूई १२. १२.

मूसा-मूड गया ४. १४; ६. १८; १२.  
११; २०. ११; २१. ११; २३. १२१.

मूसि-मूड कर ३. २४; ४. २१; ४.

१०; मूड ७. २७, १२; मूडी हुई  
१८. १६.

मूली-मूड गई २०. १६, २२; १८. १०.

मूल-मूलो ६. ४१.

मूले-मूड गये १. ६६; २. १८१; ३.  
२४; ४. ४१, ४७; १०. १६; २०.  
६६; २२. ६१.

मैट-मुलाकात (मट मूती; मिट=मैटता)  
४. ८; १६. ४८; २२. ४८.

मे<sup>०</sup>ट-मैटता है १३. १०; १६. ८.

मे<sup>०</sup>टा-मिजा ६. ४४.

मे<sup>०</sup>टि-मैट २. ११२; २३. ७२, १२६, ११७.

मे<sup>०</sup>ड-मेय (मीक), मेय=मेर ["मेयो  
मेयो मेयलघो प्रयोऽप्येते भीरवाः  
वचाः" दे० २२१, ६] २१. १२.

मे-मेये=दुष्ट १५. २४.

मेऊ-मेद=मेघ (माघ) ७. ६१, २३. ६१.

मेद-मैद [√मिद, भिनति; वा०  
मिन्दति; Lat. findo = काटना;  
Goth. beitan = Germ. beissen]  
जो मैदा जाय=पता ७. २१.

मेद-(√मिद; तोड़ना, फोड़ना; प्रकट  
करना; जो दूसरों पर प्रकट किया  
जाय; जिस के दूसरों पर प्रकट करने  
में हा हो=रहाय) १. १००; प्रहा  
२. ७६; २५. १४४; संघ २६. १४४.

मेदी-मेद को जानने वाला २२. ६६.

मेदू-मेद=पता ७. २१.

मेरिकारी—(नगाड़ा) यजाने वाले की  
स्त्री; हि० मेर, मेरी; म० मेर; सि०  
वेरय २०. ३२.

मेरी—नगाड़ा २०. ५८.

मेस—वेप=वेस (व-य-भयथा भिस-  
विस; घ-ग, घाअण=गायण; ऋ=  
ज, ऋडिल=जडिल; ध-द, दधि=धइ  
P. 209) १. १८३; १२. ७; २१.  
१६; २२. ६; २५. ३०, ६७.

मेसु—वेप=मेस १२. ७२.

मेसू—वेप=मेस २२. १, ४५; २५. १३२.

भोकस—बुभुक्ष=भुक्क=(तु० रमश्चु=  
मूँछ=मोँछ H. 56) १. ३१.

भोग—भोग्य १. ४६; २. १५२, १५६;  
६. ८; ७. ३६; ११. ३२; १२. ३२,  
५४; १८. ५५; २४. १५०.

भोगविरिख—भोगवृक्ष ५. ४४.

भोगभुगुति—सुखोपभोग १. ३७.

भोगिनी—भोगवाली १२. ४२.

भोगिहि—भोगी से ११. ३६.

भोगी—भोगने वाला १. ७२; १८. ५५;  
२४. १०, १३१.

भोगु—भोग २०. १३६; २३. ७५.

भोगू—भोग १. १५, ६६; ११. ३८; १२.  
२८, ३८; १५. ११, ७६; १६. २६;  
२२. १२, २३.

भोज—भोज नाम का राजा ६. ८; ८. ७२.

भोजन—भोजन=खाद्य ५. ८; ८. ३६.

भोजा—भोज राजा [पा० भोज=अधीन]  
२२. ४६; २५. १४८.

भोजू—भोज राजा १०. १४७; २५. ७.

भोर—प्रातः २. ३४; १२. ८८; २३. १७६.

भोरा—अम=संशय १८. १५; वौरहा=  
वातुल २३. ११४.

भोरी—वातुल=वौरही=भोली ४. १७,  
५४; २३. १२३.

भोरू—भोर=प्रातः २४. १३३.

भोला—भोल=सरलचित्त पुरुष, जो  
सहज में ठगा जाय (भोल्, ठगना)  
१. ६५.

म.

मँ—मँ=महँ २. १६८.

मँगावई—मंगवाता है ७. ५६.

मँक—मध्य; अये० मध्यमेहे; पा० मज्क;

हि० मकि, मांक्, मंह; आसा० माजू;

का० मंक्; उ० मकि; वं० माक्;

पं० मांक्, मज्क; सि० मंक्; म०

माक्; सि० मद, शिलालेखो में मंड,

मँक्, मिंक्, (मँक्ता=वृक्ष का तना;

मँक्ता=गाड़ी का मध्यभाग) ४. ४१;

१८. ३२; २१. २८.

मँजारि—मार्जारी; प्रा० मजार, मंजार;



(P. 85) हि० मँजार, मँजाव; गु०

मौज; म० मौजर; सि० मजिर;

(JB. 47, 69, 70, 106) डे. ६०;

१३. १२.

मँजारी—माजारी (माजोर=मजार; गु०

मुंज=मूर्धन्य; मँज, मँज=मेव P. 86)

डे. ३३, ६६; डे. १, २, २२, ३०; डे. ३४.

मँजीट—मजिष्ट=मंजिट १०. ६०; २३. ६१.

मँजूमा—मजूमा=मंजूमा=मजूक ७.

१६; २५. १४०.

मँजघारा—मजघारा=(मज=मज गु०

मजघर=मजघर P. 290) १६. २२.

मँजिझारा—मज; “मजझरं मज्जम्”

(दे० 225, 17); हि० मज्जरे; पं०

मज्जेर; पं० मज्जरा; नि० मज्जरे;

गु० मौजर; म० माजरी (JB.

87, 107) ११. ४०; २२. ६.

मँजुर—मजुर=मंजुर=मजुर ग्याल

१६. ४१, ४६; १७. १, २, १४.

मँजुरा—मजुरा २०. ७१, ७२, ७६; २०.

७१; २१. १३. ६१; २३. १४६.

मँजिरिन्द—मजिरी (मंजि, गु० मंजि=

मंजि; P. 253) २३. ४४.

मँजि—मंजि (मंजु=मंज) १६. १०.

मँजाला—मज्जाला=मज्जाला २१.

मँजिर—मजिर २. १२०, १६०; डे. ८;

डे. १, ६; डे. १०, ४०; १३. २१;

२०. १११; २३. २८.

महँ—मज्ज १. ४०, २०, ७२, ८६; २.

६६, १६६, २००; डे. ७, ८, ११,

२६; डे. २६; डे. १, ७, ८, १४; डे.

४८, ६६; डे. १०, १७, ३८, ४४, ४६;

डे. ३४, २२; १०. १०, ११, ११६;

१३. १, १४, २८, ३६, ४६, ४७;

१४. २, ६, १६; १५. २६, ३१;

१६. ४१, ६०; १६. ३; १७. ६;

१८. ११, २६, ३१, ३६, ४१; १९.

१२, ६४; २०. ३४, ८२, ६२; २१.

६; २२. ७०; २३. ६२, ४४, ११६;

२४. ४७, ४९, १२६; २५. ११, ४७,

१०८, ११२, १२०, १२७, १३०.

महँ—मं ३. २६, ७०; डे. ११, १३, १६,

१२, ६४; डे. ३६, ४६, ४८, ६१,

७०; डे. २१; १०. १०; १२. १३,

४०; १८. २०; १९. २१, ४२, ४६;

२१. २२, ४३; २२. १२; २३. ११६;

२४. ३२, ३६, ४१, १२६.

महँ—मज्ज=मज्ज २५. १६६.

महँ—मज्ज=मज्ज २४. १४.

महँ—मज्ज १८. २२.

महँ—मज्ज १८. १८.

महँ—मज्ज, महँ=मंज; गु० मंजु;

मि० मंज, मंजु, मंजो; पं० मंज १३.

३; २३. ८०.

मज्जमिरी—मज्जमिरी ४. २; २०. २१.

मज्जमिरी—मज्जमिरी २. ८७.

मउन - मौन = मउण २३. १४६.

मउर - मयूर सि० मोरु; सि० मियुरु =  
मौड़ [= मयूर पंखों की आकृति के  
फूल पत्तों की टोपी जो विवाह पर  
पहरी जाती है] १२. ७५.

मकु - मया आत्मातम् = मैने कहा =  
मखा = जानों ४. ३२; ७. ३; ८.  
३१; १०. १५, ५३; १८. ५; २०.  
१०६; २१. १३; २३. १२५; २५. ७.

मकोइ - मकोय = पौधा विशेष १२. ६४.

मखदूम - मालिक १. १४४.

मगधावति - मगधावती = मागधी = मगध-  
राज की कन्या २३. १३२.

मगर - मकर १. १०; १३. २०, ४५; १५. ४.

मंगलचार - मङ्गलाचार [√मञ्जु = सौभा-  
ग्यशाली होना; तु० मञ्जु] २५. १७६.

मच्छ - मत्स्य, मश्र (तु० मश्रली; गुज०  
भाच्छली = मछली; P. 233) १.  
१०; १३. २०, ४५; १४. ६, १३;  
१५. ४; २३. १७३.

मछंदरनाथ - मत्स्येन्द्रनाथ १६. ११.

मजीठ - मजिष्ठ १०. ६०.

मजूर - मयूर ८. २४, २६; १०. १०१, १३४.

मंछ - मत्स्य = मत्स्य; (तु० मत्कुण = मंकरु,  
मत्सु = मंसु = मछु इत्यादि P. 71)  
२. ६७.

मठ - मठ = जहां विद्यार्थी तथा साधु रहते  
हैं २. ४३.

मठमँडफ - मठमण्डप २०. ६१.

मढ - मठ = मन्दिर २०. ६५, ६०; २२.  
१३; २३. ५६, ८६, १२३.

मढमाया - मठमाया = परका ऐश्वर्य १२. ७१.

मढा - मण्डित-छादित-खचित १०. १३१.

मढी - मठी = छोटा मठ; सि० मडु; पं०  
मठ; का० मर २०. ६७; २३. ३.

मंडप १६. २७, ३२, ४५, ४८; १६.  
५४; २३. १२३.

मंडफ - मण्डप [तु० मण्ड; संभवतः  
\*Maranda से; तु० सं० विघ्नदति =  
मुलायम करता है; व्युत्पत्ति देखो  
Walde, Lat. Wtb. s. v. mollis;  
मण्ड = सारभाग; शिरोभाग, मक्खन,  
मलाई, आदि] २. ४३.

मंडा - [√मृद् अथवा √मृद से; देखो  
मंडप; मर्दते; मडुइ (समडु); म०  
मौडणें; मृष्ट; मट्ट, मट; हि० मंडना,  
मौडना; सि० मंडणु; गु० मण्डवुं;  
म० मौडणें; सि० मठ = भूषण  
(JB. 86)] १. १०८.

मतइ - मत में १. ६४; मानता है १२. ४६.

मता - माता १२. ५७.

मतिमाहाँ - मतिमान् १. १७१.

मति - बुद्धि; अवे० महति ७. ४०, मत  
६१; ज्ञात ८. २५, ३३; ६. ७; १०.  
७७; ११. १४; १२. ४६, १००; १६.  
३८; २३. ४.

मती—मागमती ८. ४७, मति=बुद्धि

११; मत दुई=स्वीटन दुई ११. १४.

मये—[चाणुपाठ √मय तथा √मन्य

विखोइने; तु० Lat. *mamphur*;

Germ. *mandel* (*mangle*), E.

*mandrel*; Lith. *mentūris* (रई)

इत्यादि] सं० मयन; हि० मयना,

महना (मट्टा=तट्ट); पं० मंघया;

मि० मयय; तु० मययुं; (मट्टे); म०

मंघयें, मट्टया; बं० मयिते; का०

मयुन ११. ४१.

मर—[बं० मर; \**Mad* (तु० घने=मत=

मटा)=मौखिक धर्ये मृता, टपटना,

बर्षी से पूर्ण होना; तु० Lat. *marleo*

झीझा होना; Ohg. *marl*=मोटा

होना; सं० मेद=बर्षी; Goth.

*marls*=माघ; Ags. *marc*, Ohg.

*marc*=*g-male* इत्यादि; संमयतः

\**Mad* के माघ संबद्ध; तु० Lat.

*maletor*=बीरोग करना] धर्मिमान

११. ४६; मय १५. १८, ४०; २०. १०१.

मरुपाता—मरुपात १५. १३.

मरुन—मयय=बाम ३. २०.

मरारें—मराइ इव ७. १६.

मयु—[बं० मयु; तु० Lith. *ma-lus*

(मयु), *ma-lus* (मय); Ohg. *marc*=

Germ. *mar* (मय); संमयतः \**Mad*

(राग से पूर्ण होना,] बर्ये=मयु=मय;

पह०, घा० फा० मइ; कु० मोत;

घोस्ते० मुद, मिद; सि० मी १.

२६, १८१; २. २६; ६. २१; १७.

११; १६. ७१; २४. ८६; मयुकर,

युक्त राजा का नाम २३. १३४.

मयुकर—मयुकर=अमर ४. ११; ५.

१३; १०. ६४; ११. २६; १६. ७२.

मयुर—मयुर=मीठा २०. २७.

मन—चन्तःकरण १. ४७, ७६; २. ७६.

११२, १२६, १७३, १७६, १८१;

३. २६, ७१; ५. २, १०, १८; ७.

१६, २६; ८. १२, ६४; ९. २०, १६,

१८, ४०, ४१; १०. २४, ७३; ११.

२२, ४६; १२. २, ७६, ८७; १३.

१६; १४. २; १५. १०, १६, २७;

१६. १२, १२, ४८; १७. १३; १८.

४२, २६; १९. १२, ६३; २०. ५,

१०४; २१. ३१; २२. १३, १७,

१८, ४१, ७४, ७५, ७६, ८०; २३.

२२, ४४, १२७, १७२; २४. २१,

४२, २६; २५. २, १४, २६, ८६,

१३६, १३१, १६२.

मनर—मन=४० सेर १२. ६४.

मनमंथनी—मनमंथिनी १५. २०.

मनसकनी—मनःशक्ति १३. २६.

मनसा—मन से=मन करके १५. ४०.

मनसुद्ध—मंसूर ११. ४४.

मनद्वि—मन से १५. १२; १८. १५.

मनहुँ—मानों ७. ७०; १८. १६.

मनाइहु—मनाया २०. १३०.

मनावहु—मनाओ १८. ४८.

मनावा—मनाया १७. ६; २०. ८६; २२.

२७; २३. १.

मनि—[Fick तथा Grassmann के मत

में Lat. *monile* के साथ संयद्ध; किन्तु

Walde, Lat. Wtb. की मति भिन्न

है; देखो Zimmer, Altind. Lebn

p. 53, 263] मणि (ज्योति) १.

१२८; २. ८८, १८०, १६०; ३. ४,

८; ६. ४; १०. १३५; २०. ८७.

मनिकुंडल—मणिकुण्डल १०. ६०.

मनिहार—मणहार ४. ४६.

मनु—मन [√मन्; तु० अवे० दुस्मद्वन्त्य;

पह०; फा० दुस्मन] ४. ११.

मनुवा—मन (अथवा “मानव=मनुष्य”)

१५. ११.

मनुस—[मन्; मनुप् से; तु० Goth.

*manna* = *man*] मनुष्य=मनुस्स=

मणुस्स, पुरुष; अवे० मरयो १०. १४४.

मनोरा—मनोहर (=मङ्गल में सर्वप्रथम

गीत गाकर किया जाने वाला देव-

पूजन मनोरा कहाता है=) २०. ३५.

मयन—मदन २. ६४; १०. १५०; १७. ११.

मंत—[वै० मन्त्र; पा० मंत; √मन्;

मौलिक अर्थ दैविक वचन अथवा

निर्णय; अतः गुप्त मार्ग] २२. ४७.

मंतर—मन्त्र १२. २३.

मंत्र—विपनिवारक उपचार १. २६.

मंत्रिन्ह—मन्त्रियों २५. १०६.

मंत्री—सचिव २४. १.

मंदर—मन्दराचल २५. ६२.

मंदिर—मन्दिर ४. २०; २३. ३८.

मयंकू—मयङ्क=मृगाङ्क=चन्द्र १०. १६.

मया—माया=कल्पना ३. ७३; ७. ३३;

८. ७१; १६. ६७; २१. ४१; २२.

३६; २३. ६१, ६६, १६१.

मयारू—मायालु=दयालु [तु० पा०

ममाचति, ममायना=ममता] २२. ५७.

मर—मृतक=मुर्दा [तु० अवे० मरेत=

मर्त्य, प्रा० फा० मर्तिय; पह० मर्त;

आ० फा० मर्द; गद्दी मर्द; सी०

मीर्द; यलू० मर; कुर्दी मिर, मेर; छि

मेड] १३. ३८; मृत्वा=मरकर १६.

७१; २०. ११६.

मरइ—[वै० म्रियते, मरते; पा० मरति;

आयू० \*Mer; तु० अवे० मिर्येइते;

सं० मर्त=मर्त्य; मार=मृत्यु; Goth.

*maurthr* = *Agg. mort* = *Germ.*

*mord*; Lith. *mirti*=मरना; Lat.

*morior*=मरना; *mors* मृत्यु इसी

के साथ संबद्ध हैं; तु० मृणाति=

पीसना, मृदनाति, मर्दयति तथा

मृत्तिका] अवे० मर; प्रा० पह० मर;

पह० मूर्तन; फा० मुर्दन; छि मेर,

मुर (मरो=मौत) १. २२; मरता है  
४. ३८; मरने ७. ११; १२. १४, मरे  
१४, मरता १२; मरता है १५. ४७;  
मरे १७. १२; १६. २१; २२. ४८;  
मरने के लिये २३. ११, मरता है  
४४, ६६, १०३; मरने २४. ४४,  
मरती है ७२, मरे ११६; मरने २५.  
१२, मरे ४९.

मरउँ=मरुं १. १९; १३. १९; २१. ४०;  
२२. २६; २३. ७२; २४. १२२;  
२५. ४९.

मरऊँ=मरुं २४. ६२.

मरझिझा=मर कर जीने काका=गोला-

घोर २२. ७२.

मरझिझा=ममूझ में गोला मारने वाले  
२. ७१; १४. २२; २३. ११६, १०८.

मारन=मारने (हुए) १३. ४१; २३. ८१;  
२४. ६९, ६८.

मारनिहिं=मार्नी (बार) २०. १०३.

मारतेहुँ=मारने (हुए) भी २५. ३६.

मारन=मार ५. १२; ७. ११; ६. २१;  
११. ७, २०; १५. २९; १६. ९१;  
२२. २१; २३. १०१; २४. ४, २१,  
१८, १२३.

मारनुरा=मारनुरा=ममूझोका ११. १६.

मारना=मारण ५. ४९; १६. २२, २५. ०२.

मारनी=मारण=ममूझ २४. १२३.

मारन=(१/४, मर्म=मान=मरणा=मरुं=

मूल्य १. ६५, ६६, ७०, ७१, ७२;  
७. ६३; ८. ६९; १६. १८; २३.  
८४, ६८; २४. ६९.

मारमु=मर्म २३. ११४.

मारसि=मारते २२. २४.

मारहु=मारते ही २२. ७५.

मारहिं=मारते हैं २४. ५, ७, १८, १९०.

मरा=मृतक=मर=मुरां १३. १७.

मरायह=मराया है २४. १११.

मरि=मर २०. ८२; (मरण) २०. ८१;  
२३. ११४, ११७, १९९; २४. ६१.

मरिआर=मर जाह्ये ८. ६२.

मरीजिअ=मर जाना २४. १११.

मरोरन=मरोरते हुए १०. १२०.

मलयगिरि=मलयपर्वत २. १६; ३.  
४३; ४. २९; ६. १२; १५. ३२; १६.  
२२; २०. ९; २३. ११६; २४. ११२.

मलयगिरि १०. १२०; २४. ७१.

मलयममीर=मलय पर्वत की वायु ४. २६.

मलयममीरु=(ममीर) १०. १४६; १६. १.

मलिक=मलिक (यूनिक) १. १००.

मलीजह=मलिन होनी है (मलिन=

मलीजह=मलीज) १३. १.

मलीन=मलिन [✓मल, \*Jol=मल  
करना; मु=मं=मल; Lat. mollus  
(रजिन); Lith. mollous (दीन),  
mollus (मीला); Obg. mál=  
वाग] २. ९०; ८. ९४.

मलीना—मलिन २५. १६३.

मलेच्छ—म्लेच्छ = मलेच्छ = मिलिच्छ.

(हेच० 1. 84) = मिलिच्छु = मिच्छ,

मेच्छ; (P. 84) तु० वम्मीअ, वम्मीय

= वल्मीक, कुंमास=कुलमाप इत्यादि

(P. 296) २१. २५.

मवन—मौन=चुप ७. ६६.

मवना—मौन=चुप ७. ५६.

मसटि—मष्ट="मुष्ट=मूसा हुआ=चुराये  
धन के ऐसा संतोष" ५. ५६.

मसतक—मस्तक=मत्थअ=माथा ७. ४७.

मसवासी—मासवासी=वे संन्यासी जो  
एक जगह मास भर वास करें २. ४४.

मसि—मसी=स्याही १. ७४; अन्धकार  
१५. ७५; १८. ३६; २३. ५६, १२१.

मसिआरा—मसिकार=मशालची २५. ६८.

महरि—अहीरिन पत्नी २. ३८.

महा—[E. magnanimity; अवे० मम्न;  
मर्कत्=महान्] महान् २. १६६; ३.

२८; २५. ६०, १४६.

महाअरंभ—महावेग १५. ४५.

महाउत—महामात्र=पीलवान; गु० महा-  
वत, महात; म० महात, महावत,  
माऊत; २. १६७.

महाजन—धनिक २. ६८.

महादेओ—महादेव १६. २७, ३०, ४८;  
२०. ६५; २३. ८६, १००; २५.  
३८, ४१, ५७; २५. २५, ६६, १२७.

महादेओमढ—महादेव का मठ १६. ३०.

महापंडित—महापण्डित ३. ३७.

महापातर—महापात्र २५. ८८.

महासिद्धि—बड़ी सिद्धि १२. ८०.

महि—[√ मह; वै० महन्त्; Grassmann

के मत में √ मह का शत्रुप्रत्ययान्त;

किन्तु संभवतः "नू" मौलिक प्रत्यय

है; तु० अवे० मभन्त्; Lat. magnus;

Goth. mikils=Ohg. mihhil=E.

much] मही=पृथ्वी २. १६१; २०.

६४, ७०; २१. ५६; २४. ४०.

मही—पृथ्वी १. १५०.

महुअ—मधूक (P. 82) = महुआ के ऐसे  
रंग का घोड़ा २. १७१; २०. ४५.

महुअरि—मधुकरी = 'तुम्बी का एक बाजा  
जिससे सांघ सुग्घ हो जाता है' २०. ५६.

महुआ—मधूक २. २६; १५. ३३, ३५;  
२१. २१, २२.

महेस—महेश २२. १६, ३३; २५. २६,  
३६, ३७, ५४, ८६, ६०, १२६.

महेसइ—महेश को २३. १६६.

महेसहि—महेश पर १३. १८.

महेसी—महेशी=पार्वती २५. ३८.

महेसू—महेश २१. ६०; २२. १, ४५.

माँसी—मसिका=मक्खिआ १२. ६.

माँग—मार्ग=मग=मांग=बालों की  
मांग १०. ६, १६; मांगइ=मांगता  
है २५. ८६.

मौगर्-मागयति; मागर्; हि० माँगना;  
 सं० मंगमाया; मि० मङ्गयु; यु० मागयु;  
 म० मागयै; सं० मागिने; व० मागन;  
 मि० मगुन; का० मंगुन; गि० मंग  
 (JB 47, 88, 229, 230) मागने  
 १२. ८, मागे २७. ११, २४; मांगता  
 है २५. १९.

मौगर्त-मांगू १४. २१; २३. १२; २४. २२.

मौगर्दि-मांगते है २५. ४४.

मौगर्दु-मांगो २३. १४.

मौगा-मागर् का मूल १. ११४; ११. १२;  
 १३. १७; मांग में २०. २२; २५. ८९.

मौगि-मांग २३. १९.

मौगी-मांगर् का मूल २३. १२१.

मौगु-माग्य=मग्य=मय १२. ७१.

मौगु-[*L. munda, Goth. miljis =*  
*Obg. milti; E. miltle; Lat.*  
*munda-mundus = मय में महापद*]  
 मय्य=माय; हि० माय, मौय;  
 सं० मय; मि० मयि; म० माय,  
 मायी; मायी; सं० माय; व० मयि;  
 मि० मय, का० मय (JB, P. 335);  
 [मय्य=मयि; जहाँ एतत् कादेश  
 एव के कदापि पा] २. १८३;  
 १०. १२, १४, १८७; ११. ४१; १२.  
 १०१; २४. ९९, १२७.

मौगर्द-मय में १२. १०३.

मौगी-मयी=मय्य (माय्य) २३. २२.

मौटी-मृत्=मटी १. १०; ७. ९०.

मौति-मत् (मस्त) होकर २०. १०२.

मौते-मत्=मस्त २. १९७.

मौय-मस्तक=माय (मायग, मायव)

माया ३. ४७; १०. १२०; १४. ८.

मौयर्-माये में, पर १. १२८; २. १८०,  
 १८४; ३. ४, ६१; ६. ४, ८१, ११,

४०; १०. १२७; १२. २३, ४८, ४९.

मौयर्दि-माये पर २. ८८; ३. ४१; १०. ११२.

मौये-माये पर १०. १११; ११. २१;  
 २०. १०.

मौदर-मदख=मयंग, मियंग) मृद  
 का एक मेरु २०. १८.

मौनर्-मावो २. १८१.

मौस-मांस; पा० मंस [*Membran-*  
 यवा *Lat. membrum = (membrum*  
 = मय्यव); *Goth. mius (मांस);*  
*Oir. mir (काटना, मायलक)*]  
 ७. १७; १०. १४४; २३. ११०.

मौसु-माय=मंस=मांस (यु० मंस  
 ताव=कावताव; पंगु=मांस P. ४९)  
 १. १८४; २२. २९; २३. ९१, १०६,  
 ११०; २५. २४.

मौसु-मांस ७. १७; १२. ११; १५. १६.

मौद-मय=मैं २. २००; ३. ११, ४७;  
 ४. ४०; ८. २६; ११. २१, २७; ११.  
 २४; १५. ११; १७. ११; २३. ११८,  
 ११०; २५. २१, १०६.

माँहा—मध्य=मैं १. ७, ६८, १६३, १७१;  
२. २०; ४. २०; ५. २२, ४७; ७.  
२१; ८. ५, ७०; ९. १३; १०. ३७,  
७७; १२. २६, ६२; १५. ३५, ७०;  
२०. २; २३. १४३; २४. १५१.

माखी—मच्छिका; प्रा० मच्छिआ; पा०  
मक्खिका; का० मङ्ग; उ० मांछी; बं०  
माछी; पू० हि० मांछी; हि० मक्खी,  
मांखी; पं० मक्खी; सि० मखि; गु०  
माखा; म० मक्खु, माशी; जि० मखी  
(माछी=मच्छिआ=मच्छिका H. 143  
अवे० मक्खी) २२. ४२.

माखे—[√मृच्=लपेटना; पा० मक्ख=  
अवलेप; क्रोध] क्रुद्ध होगये २३. ४२.

माघ—माह का महीना १६. २६.

माटी—[वै० मृत्तिका, मृत्(√मृद् से);  
मट्टी; तु० पा० मंड; सं० विम्रदति;  
Osil. *mysna* = धूल; Goth.  
*mulda*; Ags. *molde*; E. *mould*;  
सं० मृदु Lat. *mollis* (छि मक्को=  
मृदु); सं० मर्दति, मृदनाति=पीसना,  
शिजन्त मर्दयति, इस्ती के साथ संबद्ध  
हैं; तु० ० Mid; Ags. *mettan*; Ohg.  
*smelzan* = E. *melt*] मृत्तिका; पा०  
मत्तिका; हि०, पं० मट्टी, मिट्टी; सि०  
मिट्टी; गु० माटी; म० माती; का०  
मेडु; उ०, बं० माटी; सि० मटि १२.  
२०, ३४; १५. ६८ १५, १६.

मात—मत्त १०. ३४, ७६; माता ३. ५.

मातइ—माता ने २२. ५०.

माता—[वै० मातर; अवे० मातर; Lat.

*māter*; Oir. *māthir*; Ohg. *muoter*;

Germ. *mutter*; E. *mother*; तु०

Lat. *mātrix*; सं० मातृका=माता

\*Ma शब्दानुकरण; तु० मम्म] अवे०

मातर; पह० मात (अर); आ०

फा० मादर; ग० माय; का० माइ,

मोय; माभ० मार, मूर; गि० माथर,

मोर; छि माची; हि० मा, माई, माऊ;

पं० माऊ; सि० माई, माऊ; गु० मा,

माई; म० माई; बं० मा; सि० मव,

मा; प्रा० माआ; सं० माए १. ५१;

३. ५१; १२. ४०; १६. १६.

माति—मत्त(=मस्त) होकर १०. ३४, ७६.

माती—मत्त(हो गई है) १०. १२५; २०.

२१, २६.

माथ—मस्तक १. १२०; ८. १५; १३.

३२; १६. २४.

माथई—[मस्तक, मस्तिष्क; पा० मथ्य;

तु० Lat. *mentum* (ठोड़ी); Cymr.

*mant* (ढाढ की हड्डी); अपत्यरूपेण

Lat. *mons*; E. *mountain*=पर्वत]

माथे पर २२. ४०.

माथा—मस्तक २३. ३१; २५. ५६.

माघउनलहि—माघवानल को २१. १४.

मान—[√मन; संभवतः “उच्चसंमति”



उत्तसे अभिमान] ८. १४; १०. १३;

मानता है १५. ७१; २५. १३५.

मानह—मन्यते, मानता है १२. ५६; २०.

८६; माने २४. ११८.

मानउँ—मानों २. ६४; ३. १६; १०.

१४०, १४१.

मानसर—मानसरोवर ४. ५७; १५. ७३,

७४, ७०.

मानसरोदक—मानसर का पानी २.

४१; ४. १, १.

मानहिं—[वै० मन्यते, मनुते; पा०

मन्यति; अवे० मन्स्येहने; भायू०

मन्ये; दु० Lat. *manini* = विचा-

रणा; *manus* > *manet*, *maneo*; Golb.

*munan* (सौजन्य), *munis* (संमति);

Old. *mun*, Agr. *mon*; Ohg.

*munna* (मिम); Agr. *munne* (हरादा);

वै० मन्य = P. *manid*] मानने हैं

२३. ६१.

मानहु—मानों १२. १३; १८. १२; २३. १६.

माना—मानह का भूत १. १७३; २.

१४६; १. ८; ८. ४१; १६. २६;

२५. १४, १६१.

मानाया—मानह = मनुष्य ७. १५.

मानि—मानह २०. ८०.

मानिह—मानिये २३. ४५.

मानिह—मानिये १. १७३; २. १०१,

१६०; ३. १८, ४६, ६४; ७. १८,

६६; १०. ४०, ६६; १५. १०.

मानी—मानह का भूत ३. १७.

मानु—मानों ८. ६६; २२. २१.

मानुस—[वै० मनुष्य √ मन्; दु० Golb.

*mannu* = मानुष, मानुष्य; हि०

मानुस, मानूस, मानस; पं० माणस;

सि० माण्डु; म० माणुस, माणस;

सि० मिनिता (पर)] १. १७, १०७,

११६; २. ११६; ३. ७६; १०. ४७;

१७. १०; २५. १७५.

मानुसह—मनुष्य १२. २४.

मानुसदण—मनुष्य ("मनुष्यों की इतने वाजा") २. ७.

मानू—मान = चादर २५. ११३.

माया—मोह; सि० मा, माघ; म० माघ

(घण) ५. ३८; ११. ५२; १२. २५,

१३. ६७; देवर्ष = धन दाता १३.

४७; २२. ४३; ममाव ११. ४६; १६.

४६; कट्या, दया १३. १२; १६. ७०.

मार—मारता है ८. ६०; ११. ४६; मारने

(राम०; Od. बाया) २४. ४४.

मारह—मारयति = मारता है ३. ७३;

मारो ५. ३२; मारते ८. ९५, ९०;

१५. १२; मारने २२. ७८; मारने

में २३. ४६, ६२; मारो २४. ४४,

५४, १२५; मारने २५. ५, २८.

मारउँ—मारुं २५. ७६.

मारग—[√ मृग = पीछा करना] पा०

मग; सं० मार्ग; हि० मग; प० मग;  
 सि० मागु; गु० माग; सि० मग  
 १. ८३, ११६, १३६; ७. ४, २८;  
 १३. ८, १६; १७. ७; १६. ६५;  
 २२. १८; २३. १४, १६, १५७.  
 मारत—मारते हैं २५. ४०.  
 मारन—मारने २५. १७६.  
 मारहिँ—मारते हैं २. १०८; १३. २०;  
 २३. ४५.  
 मारहि—मारने से २५. १०.  
 मारहु—मारो ३. ५८; २३. ४३, १८४;  
 २५. १६.  
 मारा—मारह का भूत, मारना १. ४६;  
 २. १३६; ३. ६८, ७६; ५. ३६,  
 ५४; १०. २८, २६, ४४; १६. १६,  
 २१; (मारता है) १८. ३५; २१.  
 ३३; २३. ६१, १७२; २४. ७, ३०,  
 (मारता है) ६८, ७६; २५. ६, ५१, ७०.  
 मारि—मार १. ४५; मार कर २. १०६;  
 ७. ७०; मारा ८. २६; १०. १४४;  
 १२. ४३; १५. ३६; १८. ५०; २४. ११०.  
 मारी—मार कर १८. १७.  
 मारु—मारय=मार ८. २३; १०. २५;  
 २५. ६६; मारती है २२. ७५.  
 मारु—मारय=मार ७. ३३.  
 मारे—मारह का भूत, मारने २. ४३,  
 ४८; ७. १६; ८. ६८; ६. १८, ४८;  
 १२. ६०; २४. ६८.

मारहु—मारा=मारह का भूत २३. ८८.  
 माल—माला २१. १७; २२. २; २५.  
 ४; मल=पहलवान २५. १०५.  
 मालति—मालती (=पद्मावती) ४. ८;  
 ६. ६; १०. ३; १८. १०; १६. २७;  
 २०. १०, ५०; २३. १३४.  
 मालतिमेदी—मालती पुष्प के मर्म की  
 जानने वाले २३. १७६.  
 मालती—मालह=पुष्प विशेष २. ८५.  
 माला—माला ५. १५; २२. ३.  
 मालिनि—मालिनी = मालिणी = माली  
 की स्त्री १२. ७५; २०. ३०.  
 मास—[ वै० मास, मास; अवे० माह=चन्द्र  
 तथा मास; Lat. mensis; Oir. mē;  
 Goth. mēna; E. moon = चन्द्र;  
 Obg. māno, mānöl = month;  
 \*Mā = मापना से; तु० मिनाति ]  
 २. १६०; ३. ६; १६. २६; २१. ५८.  
 मासा—मास; अवे० माह; पह०, घा०  
 फा० माह; वा० मूह; शि० मस्त;  
 सरि० मास; अफ० मई; अ्रोस्ते०  
 मय; ट० मइ; छि मेही, माह; पश्तो  
 स्पोकमई=चौद (\*मह) ८. ६७.  
 मासैक—मासैक=एक मास १३. ६.  
 मिझाँ—मिजा १. १७२.  
 मिठासू—मिष्ट=मिष्ट=मीठापन २. २६.  
 मितर—मित्र=मित्र=मीत १. ३५.  
 मितार्ह—मैत्री=मित्री=दोस्ती १. १६६.

मिरगारन—मृगारण्य=जिस वन में  
अधिक मृग रहते हैं १३. १.

मिरगावति—मृगावती २३. १३३.

मिरघट्ट—मिखाघा २०. ८०.

मिरिग—(√मृग) मृग; पा० मग, मिय;  
२. १०७; १०. १६; २०. ७१; २१. १२.

मिलह—मिखता है ३. ४४; ८. ४४;

मिखना ६. ४६; मिखे १३. १६, ६२;

मिखे १८. १२; १६. २, मिखने ६०;

२४. २७, मिखे ६०, १२०, १२६.

मिलउँ—मिलूँ ४. ४०; ६. ३७; ११.

४६; २३. ४१, ११३.

मिलन—मिखदू=मिखते १६. ७.

मिलनहि—मिखते ही ८. ६६.

मिलन २३. १६२.

मिलहि—मिखते हैं ४. १७.

मिला—मिखदू का भूत १. ६४, ७०;

३. १६; ४. ४४; ७. ६, ४०; ६.

११, १२; १०. ७४; १६. ७१; १६.

११; १६. ४, २१, १६; २०. १३२;

२१. ४८; २३. ४३, १४६, १६६;

२४. १४०; २५. १४०, १४१, १४०.

मिलार—मिखाघा १८. ११.

मिलारउँ—मिखाघा है १६. १२.

मिलारह—मिखाघा ४. २४; २०. ११८.

मिलारह—मिखाघा २४. १२७.

मिलारी—मिखते हैं २. ६६.

मिनि—मिखता १. १४६; ४. १४. ४६;

१२. ४८; १६. ६१, ६४, ७१;

२१. ८; २४. ११२, १६०; २५.

१४३; मिल १. ११०; २३. १८.

मिलिहि—मिखेगा १२. ६३.

मिली—मिखदू का भूत १६. २४.

मिले—मिखदू का भूत २. १२०; ४. १;

१५. ८; मिखने पर १६. ४; २२. ४१.

मिलेदू—मिखने पर २४. १२६.

मिस—मिष=व्याज=बहाना ४. १२;

१६. ४४; २४. ६.

मिसु—मिष=व्याज=बहाना १६. ११.

मी<sup>०</sup>धु—मृष्यु=मिष्यु (मष्यु), मीष=

मीन (पु० मीचना, म० मिषकणै;

वं० मीचया; पु० मीचयुं=वग्ग-

करता) १. २१, २७, २५. ७५, ७६, ८२.

मी<sup>०</sup>जि—घामृग्य=मीनकर २१. ८.

मीधु—मृष्यु ७. ११; १०. १२७; १३.

१६, ६३; १६. १४; २२. ७८, ८०;

२५. ६६.

मीड—मिष्ट=मिष्ट=मीठा, मिट; पु०

मिटदू, मीटदू; सि० मीट, मिट; वं०

मिट; का० म्यूट; १. २८; २. १६;

११. २७.

मीटी—मिष्ट २. २७; २५. १२६.

मीटे—मिष्ट २. ७६.

मीन—मिष=मिष १. ८६, १६६, १७६;

२०. ११७; २१. ४३.

मीन—मीष=मष्यु २. ७१; ६. १६;

१६. ६४; २१. ६; २३. १११;  
२४. ४७.

मुँदरा-मुद्रा=मुद्रा=मुदरा=मुँदरा=  
बाली; पह० मुद्राक, मुदर, मुह;  
ओस्ते० मिखुर; सि० मुँडी; मुद्रा; सि०  
मुदुव, मुद १२. ६; २०. १६; २५. १६५.

मुअइ-मरने पर २२. २६; २३. ४६;  
(मरता है) २४. ११५; २५. १८.

मुअहिँ-मरते हैं २. ६०.

मुआ-मरा (मृत; पं० मोआ; गु० मुओ;  
मुएलो; म० मेला; का० मूहु; सि०  
मळ; प्रा० मअअ, मुआ, मड  
(JB. p. 300) २५. ७०.

मुए-मरे १०. १२०, १२८; १३. ६४;  
२०. ११५; २१. ३१.

मुएँ-मरा ६. ४६.

मुएहु-मृतेऽपि=मरे पर भी २५. ६६.

मुकुट-मुकुट २. १७६.

मुकुत-[√मुच्; तु० Lith. mūkti=  
बचना; Ags. smūgan (रेंगना);  
Germ. schmiegen (रगड़ना)] मुत्त=  
स्वतन्त्र (P. 139, 140) २४. १२८.

मुकुताहलि-मुकावली (P. 154) १५. ७८.

मुख-[भायू० \*Mu (शब्दानुकरण); तु०  
Lat. mu मुखाघात; Mgh. mūgen;  
Lat. mūgio = गौ का रांभना; Ohg.  
mācen = शब्द करना; muckazen  
= चुप चुप बात करना; Ohg. mūla

= Germ. maul; Ags. mule=  
नाक; वै० मूक=चुप; Lat. mutus  
= E. mute] मुंह; पं० मुहुं; सि०  
मुहुं, मुख; सि० मुव; जि० मुय; द्वि  
मुख्या (चेहरा); पञ्चो मख्या; री  
मुख्या १. १२१, १६८, १८४; २.  
६५, १०६, १६६; ३. ३८, ४५; ४.  
२५, २६, ३५; ७. ६, २६, ५३, ६८,  
७०; ८. ६, २२, ३६, ४२, ४४; ९.  
२, ६, १६; १०. ६२, १३४, १३६;  
११. ६, ८; १२. २०; १३. ५१; १४.  
११; १६. ५७; २०. २३, २७, ८८;  
२२. १६; २३. ४८, ५७, ८०, ८६,  
१०८, १५२, १५४; २४. ७४, ७५,  
७८, ६०, ६१, ६३, १०४; २५. ४,  
१६, ३७, ४३, ६८, १४३, १६०.

मुखइ-मुखे=मुंह में १. २६.

मुखचंद-मुखचन्द्र २. ६१.

मुंठी-मुष्टि=मुठ्ठी=मूठी=मुका १७. १०.

मुंद-मुदय=मुह=मुंद=यंद २३. १६६.

मुवारक-एक नाम १. ४७.

मुरसिद-गुरु १. १५२.

मुरारी-कृष्ण २५. १००.

मुरुख-मूर्ख=मुक्ख=मुक्खल (मुरुह);

अवे० मूरक=मूर्ख १. ६४.

मुरुछाई-मूर्धित=मुच्छिद्य ११. १.

मुरुछि-मूर्धित होकर २०. १०. २४.

७१; २४. ६४;

मुहताज—मिलनागा १. १०४.

मुहम्मद—मुहम्मद १. ८६, १४२, १४६,

१६६, १७६, १८४; २. १४४; ४.

४८; १३. ६४; १४. ४०; २१. ३६.

मुहम्मद १. ८१, १०४.

मूंगा—मूंग के सस्य विद्रुम के सस्य ७.

६६; ११. ३०.

मूँठि—मुँठि=मुठी=मूठी; [मूठ, मूठा;

मि० मुठी; पं० मुठ; पं० मुठा; सि०

मिठ; का० मोय, मोठ इत्यादि

(JB, 85, 89)] २४. ७८.

मूँड—मुण्ड=मुंड=मिर २२. २.

मूँदि—मुदर=मुर=मूर=मूँद=वन्द  
कर २१. १५.

मूँदी—मुद्रिग=वन्द २०. ११; २२. ६१.

मूँदे—मूरर का मूर १०. ११४; २३. १७५.

मूँगर्दि—मुय्यग्नि=मुतागे हैं २३. १८४.

मूँगा—मुतापा २३. १८१.

मूँठि—मुँठि=मुठी (P, 303) ६. १५.

मूँठी—मुँठि=मुठी १. १०२; १०. १०६.

मूर—मूर्य=मुठ=मोठ=मोछ २.

१०४; ७. १०, १२.

मूरनि—मूर्य=मुनि २. १२. ६. १४; २०.

६६; २१. १६; २५. ११, २४, ३०.

मूरनी—मूर्य २. ६४.

मूरि—मूर्य=मूरिका २३. १४२, २४. १२८.

मूरी—मूरी १. ११; १६. ११; १६. ४४;

२४. ११०; २५. ६८.

मूदस—मूतं=मुलत्र=मुबल; हि० मूबल  
(P, 131, 287) १२. ४६.

मूल—जड़ २. १४६.

मूसर—मूमने=मुतागे [√मूर; मूवे०

मोसहु=शीघ्र; Lat, mūd = मूरा;

वि० मूब, मूर=जाना; परतो मूब,

मूर=भागना; सं० मूर=मूरा];

भा० फा० मूर; ग० मुरक; बड०

मय (क); बल० मुरक; उठ० बल०

मुरक; कु० मिश(इ)क; ट० निल

२२. ६१.

मूसहिं—मुतागे हैं ११. ४७; १३. ३१.

मूति—मुता कर ११. ४८.

मूते—मूम गये=टगे गये १५. १५.

मे०जा—मज्जा=मेज्ज=मिजा (म=६,

P, 101) मिजिवा=मज्जा (majjā

=mazika, P, 74) "अपवित्र अन्न"

मैड (पूरब मैजुका) १४. ६.

मे०टा—मेय=मिट गदा ६. २६.

मे०टि—मिया कर ८. ४८; २२. ७७.

मे०डराही—मयज्जाते हैं १४. १२.

मेखल—मेखला=मेहला=लगगी १२. ४.

मेय—मेह=बादल १. ७, ७६; २. १७;

४. २७; १६. २, १३; २२. ३१; २३.

६४; २५. ६१.

मेघपटा—बादलों की पटा ४. २६.

मेघा—[मेघ; √मिह; भाष०=Masāb=

बादल; दु० सं० मिह=कीहरा; मूवे०

मण्डग = बादल; Lith. *might* =  
कोहरा; Dutch *miggelen* = रिम-  
किम बरसना; Ags. *mist*; Oicel.  
*mistr* = E. *mist*; छि मीम = मूत्र;  
री मिसी = मूत्र √ मिह्] २. १६४.  
मेघावरि-मेघावलि=मेघों की पंक्ति २. ६३.  
मेघुदल-बादलों के अटान २५. १०२.  
मेढ-नष्ट १६. ४८; मिटता है २२. ४८.  
मेढइ-मिटता=मेढता ५. ४; मेढे २५. १७१.  
मेढा-मिटायी २५. ८४, ६३.  
मेढि-मिटार्ह ३. २, ४४; १०. ८६; २०.  
१३५; मिट=मही=मृत्तिका २४. ६४.  
मेद-[धै० मेदस्, √ मिद्=मस्त होना]  
एक सुगन्धित जड़; “मृगमद,  
कस्तूरी” सु० २. ६२, १८२; १०. १५२.  
मेदिनि-मेदिनी=मेदुणी=पृथ्वी १. १२८.  
मेरण-मिलाये १. १५८.  
मेरवइ-मिलावे ६. ५६.  
मेरवहु-मिलाइये १. १७८.  
मेरा-मेला १२. ५१; मेला २२. ४७;  
२३. १४८.  
मेराऊ-मिलाव=मिलाप १०. १०३.  
मेरावइ-मिलावे (मिलावेगा) २०. १३१.  
मेरावा-मिलाया १६. ३१; मिलाप=  
समागम २०. १२५; २१. ७.  
मेरु-उत्तर दिशाका प्रसिद्ध पर्वत १. ६,  
११०, १४८; १६. ८, २७.  
मेरुहि-मेरु में १६. २८.

मेरु-मेरु १६. २८; २४. १२६; २५. ६२.  
मेलइ-मिलाता है, डालता है २४. ६६.  
मेलउँ-मिलाऊँ २१. ४५.  
मेलहिँ-मेलते हैं २. १६६; २३. १८०.  
मेलहु-मिलो २३. १०; मेलती हो=  
लगाती हो २३. ६७.  
मेली-डाल दिया १. १४०; ५. ५१,  
५४; ७. ७०; ६. ५३; मिलाता है  
११. ५४; मिला १२. ६५; मेले=  
डाले १६. १३; मिले=ढेरा डाला  
१६. ३०; डाल दिया २१. ६; २३.  
१५२, १५५; २४. ३६.  
मेलान-मिलान (धरावरी) १२. ८३.  
मेलि-डालकर २. ८०; १८. ३५; २४.  
३२, ४५; लगा कर ४. ४३; लेकर  
२५. ५०.  
मेली-मिले २३. ४७; डाला २४. ३५, ३८.  
मेलै-मिले=एकत्र हुए २३. ७; एकत्र  
कर दिये २५. १०५.  
मेलैसि-डाल दिया ५. ३३; २०. १०६;  
२५. ६८.  
मेह-मेघ=बादल=वर्षा; मीह; अवे०  
मण्डग; पह० मिमनाक; मेरु; फा०  
मीम १६. ८;  
मेहरी-कृपा करने वाली=स्त्री १२. ५४.  
मोँति-मुक्ता; मुत्ता, मुत्ति, मोत्ति,  
मोती १. ११.  
मोँहि-मुझे १४. १६.

मो-मुके ८. २४; ६. ८, २४; १०. २४;

११. १३; २०. ७८; २२. ११, २०,

२३; २३. ११३; मम=मेरे २१. ४४.

मोख-मोच=मोक्ष १. ८८; ६. ४८.

मोरू-मोच; री मोफ, (मोक्=मोखना)

४. २१; १२. १७; २३. ४६, १८२.

मोहदरनाय-माल्येन्द्रनाथ २३. १७२.

मोह-मोहना है (मोटप्) १०. १४१.

मोति-मुश=मोता (P. 270); पा०

मुषा; उ० मोति; घं० मोति, मति;

मि० मुष; का० मोपन; म० मोती

२. २०, २४; ४. २३; ७. ६८; ११. २०.

मोतिन्द-मोतिपों ४. १२.

मोतिहि-मोती की ३. ६७.

मोती-मुश २. १०१, १४६; ३. १८,

६४; ४. २६; १०. १४, ६६; १२.

१४; १४. १०; २४. २७.

मोन-(राम०) मोच=विठरी १०. ११४.

मोर-मेरे १. १४०, १४१; ३. ४३; १२.

११, ४०, ४८; १३. १७; २३. २३;

२४. ४४, १२३, १२६, १२८; २४.

१२२; मयूर २. १६.

मोरू-मोच=मुके २३. १६; २४. ४८.

मोरउ-मोह; मोरि; मोरु; हि० मोच;

म० मोरुएँ २४. २६.

मोरहि-मेरे ८. १, ८.

मोष-मोषा, मोषती है २०. १८; मेरा

(मेरे बिचे) २१. २७.

मोरि-मेरी १७. ७, ८; २२. १२; २३. १७.

मोरी-मेरी १६. २२; २४. २८.

मोरे-मेरे ३. ६१.

मोल-मूल्य मुल, मोल (P. 237); हि०,

घं०, का० मोल; उ० मूल; घं० मुल;

सि० मुल्लु; सि० मिला; ७. १८;

१२. १६; १७. १६.

मोला-मूल्य=मोख ७. ६०.

मोह-मेम; घं०, सि० मोह; सि० मो;

का० मुहून; म० मोह, मोहो १२.

६७; १६. २.

मोहर-मोह रहा है ११. १२; २०. ७१.

मोहहि-मुण्य करती है २. ६६, मोह

जाते हैं १०७; मोहती है १०. १४२.

मोहा-मुण्य हो गया ३. ४४; मुण्य कर

दिया २४. ८७.

मोहि-मुके १. ११७; ७. २६; ६. ४०,

२६; १२. ३३; १३. १६, १४. १८;

१४. ६१, ६२; १६. २१; २०. ८०;

२१. ६४; २२. ६, २०, १२, १६;

२३. ४०; २४. २१; २४. १६; मेरे

मे ७. २२; १७. ४, ६; २१. ४३;

मेरा, मेरी ७. ६४; १६. ४०; २०.

२४; २४. १२६, १२८, १६०; २४.

८८; मुक मे २२. ८; २४. १४२.

मोहि-मुण्य होकर ३. २१; १०. ७८.

मोहिदी-मुदिदीन १. १४१.

मोही-मेरे ही ८. ७०.

मोही—मोहीं=मुके २४. ५५.

मोहूँ—मुके भी १६. ३५.

अत्रितमंडा—मार्तण्ड = सूर्य (ग्रहमंडा के अनुसार अत्रितमंड) १. १०८; २५. १२३.

य.

यह—एतद्=एहो [दे० एह, एस; तु०

एहु \*एपम्; हि० एहउं=एपकम्

P. 426] २. २३; ३. ७१; ४. १३,

२०, २३, २४; ५. १६, ३६, ४६;

६. ६; ७. ५१, ५४; ८. १७, २१,

२७, ३१; १०. ८२; ११. ५१; १२.

३३, ५१, ६१; १३. ७, १४, २५;

१४. १०; १५. ३२; १६. २२, ३३,

३६, ५७; २०. ३४, ३६, ६५, ६६;

२१. ५; २२. १४, १८, ३४, ३७,

६५; २३. २३, २८, ४८; ८५,

१६६, १६८; २४. २६, ६४, १०७,

१११, १२५, १३७, १४०; २५. ३,

७, १६, ३८, ८०, ८४, ६२, ६५.

यहु—यह २५. १५६.

युसुफ—यूसुफ १. १७०.

र.

रँग—रङ्ग १०. ६०, ६२, ६५; १८. १४;

२०. २६; २२. २०; २४. २७; २५. १६४.

रँगराती—रङ्गराजा=रङ्ग में रङ्गी हुई १०. ६३.

रँगरेजिनी—रङ्गरेज की स्त्री २०. २६.

रँगाप—रङ्गे हुए २०. २८.

रँगीली—रंगिल=रङ्गी हुई २०. १५.

रङ्गिनी—रजनी=रयणि=रैन (H. 73)=

रात्रि १. १०७; २. १६, २१, १६०;

(राम०, Gn. आछहि); ३. १७; ८.

२४, ३७; १०. १०; १३. ६; १५. ७५;

१८. २, ४, ५, ६; २३. १४२, १८४;

२४. २, ६२, १३३.

रउताई—राजपुत्र=राउत [Th. Bloch.

ZDMG. 1908, p. 372; JB. 121,

138, 152, 168] ठकुरई ४. ४७.

रकत—रक्त, रक्त, खून १. १८४; ७. २६;

६. ३६; १०. १०७, १४४; १२. ११;

१५. ३६; २२. ५६; २३. ५२, ५३, ५४,

६५, ६६, ७०, ६०, ६६, ६७, १०८,

११०, १५०; २४. १०६; २५. २०.

रखवारी—[√रख; भायू० \*Ark, तु०

Lat. arceo. इत्यादि; \*Aloq तु०

Alexander; Ags. calgian = रखा

करना; Goth. alhs = Ags. calh =

मन्दिर; तु० \*Areq पा० अगाल में]

रखवाली २. ७३; १०. ११८; २०.

३६; २१. ५७.



रंग-रङ्ग (वर्ण, प्रेमरङ्ग) सि० रंगु १. ३;

२. १६८; १०. ६०; १३. ३२; २२.

२५; २३. ११६, १४०; २४. २६.

रंगहि-रङ्ग में २३. १४६.

रंगा-रङ्ग २. ६८, १६६.

रंगू-रङ्ग २३. ११६.

रचहिँ-रचयन्ति=रचते हैं २. ६६.

रचि-रच कर २. ६२; २३. १००.

रचे-बनाये १०. ८६.

रज=[Goth. *ragum* सम्प्रेत] रजसु= रजोगुण १२. ५८.

रजदार-रामदार=रायदार २. १६६.

रजापसु-रामादेस=रायादेस ३. ५८;

७. ४६; २३. ८, १०, १०४; २४. ७६.

रतन-रत्न=रत्न १. ६२, १४६, १८१;

२. १०१; ३. २२, ३८; ६. ४, ८;

७. १८; १०. ६६, ११४, १२०;

१२. ५७; १४. १३; १६. ७८; १६.

११, १४, १६, २२; २२. २२; २४.

११६, ११६, १६३; रत्नमेन ६. ३३;

१२. २७; १६. ३३, ४१; २१. १७;

२२. २१; २४. ४२, १६२.

रतनपुर-रत्नपुर १२. १०३.

राममूर्ती-राममूर्ती=छात्र सुख बाही २४. १२१.

रत्नमेन-रत्नमेन १. १८६; ६. २, ४, ७.

४१, ६६; १२. २४; १३. १०; १६.

१०, २२, ४६, २४, १०, २४, ४४, १२६.

रतनागिरि-रत्नगिरि १६. २४.

रतनाय-रत्नवर्ण=छात्र २३. ६०.

रतनारे-रत्न=छात्र २. १६३.

रथ-[Lat. *rheda*; *rota* = पहिया; *rotundus*; E. *round*] रथ २. १२६;

१४. १; १६. ६७; २०. ६७, ११३.

रथवाह-रथ हांकने वाला २. १७६.

रथहिँ-रथों में २८. ६१.

रन-रण=युद्ध १. १७२; १०. ४८; २२.

१८; २४. २४; २४. ६६, १०६,

१०६, ११६, ११७, १२१, १२६, १७६.

रनियास-"राजिवास" = रानियों के रहने का स्थान ८. २.

रनियासु-रनवास २. १६३; १२. ४१.

रवि-रवि=सूर्य ६. ३३; १०. ६६,

१०७; १६. ७४; १६. ४, १६; १८.

१३; २०. १२४; २३. ११६, १४३;

२४. १२४.

रविहिँ-रवि को १. १०७.

रथेउँ-रथेउँ=रथ करता हूँ ७. ६४.

रस-[वै-रस; Lat. *ros* = ओस; अवे- रस (पृथ्वी का नाम) √र,

आयू-*Eros* = बहना; यथा अर्चति गु- सं- अयम] रस (आनन्द)

१. १२, २८, ६६, १६०, १६३; ३.

३६; ४. ३३, १७, ४७; ८. ६१

६२; १०. २२, ६४, ८२; १२. ११;

१६. ३६, ७७, ७६, ८०; १६. १३;

२०. १३६; २४. १२०. १४५; २५.

१४५; १४३.

रसना—जिह्वा १. ६६; १०. ७३; २५.

१४५, १४३.

रसवाता—रसवार्ता १०. ७३; १७. ६.

रसवेइली—घनवेली ४. ७.

रसवेली—घनवेली, वेला की चार जातियों में से एक ४. ३.

रसभरे—रसपूर्ण २. ७५.

रसभोगू—रसभोग १८. २०.

रसलेवा—रस लेने वाला २५. १७३.

रसा—रस १०. ६२; १७. ११; रस गया है १५. ३६; २५. १४३.

रसोई—रसयती=भोजनशाला २५. ६७.

रह—रहती है २. १६७; ७. ५४, ६६; १२. २०.

रहइ—रहता है १. ५४, ७२, १८३; २.

३१, १२०, १६०; ३. ८०; ७. ५२,

५३, ५४; ८. ६४; १०. २३, ६०,

१२२, १५५; १८. ५; १६. ४५;

२२. ४६; २३. ५, ७६, १०४; २४.

१२२; २५. १३३; रहे ३. ७३;

२२. ४४; २४. १४०; रहेगा ११.

२२; २५. १०८; रहने २३. ४७,

४८, १११; रहे २५. ६७.

रहई—रहे १८. २६.

रहउँ—रहूँ १६. ६२.

रहचह—चहचह=आनन्द के शब्द २. ३५.

रहट—अरघट=अरहट; रहट=हरट; हरँट,

(H. 172;) चर्णव्यत्यय यथा सं०

वद=पा० रहद (\*हरद से); पं०

रट, रट; सि० अरट; गु० रँट; म०

रहाट [तु० हि० घराट; छि गराट;

पश्तो गरट; बलू० घुट; खे० मत;

का० मट; जउनसरी घउरट=सं०

घरट (GM. 254)] १. ८०, १४४.

रहत—रहते ५. २८.

रहति—रहती १८. १७.

रहतेउँ—रहता=रह जाता १६. ६२.

रहन—रहना; का० रोखन; गु० रहेहुं;

सि० रहणु; पं० रहिया; थं० रहिते;

म० रहाणें, राहणें २३. १२०.

रहना—होना ४. ११; १६. ११; २५. १५६.

रहवि—रहेंगी ४. २०, २२.

रहस—रहस्य=रहस्य=एकान्त क्रीडा= सुख १६. ५.

रहसहिँ—रहसती है=क्रीडा करती है ४. १०.

रहसि—क्रीडा २. ६१; ३. १७, ३५; ४.

१७, २३; १२. ६१; २५. १४२.

रहहिँ—रहते हैं १. ३०; २. १२०, १३७,

१७५, १६५; ३. ४०; १०. ७५;

१२. ८८, १०२; १५. ७०; २५. २१.

रहहीँ—रहते हैं १. १३.

रहहु—रहो २३. ४४.

रहा—है (या; रहइ का भूत पुं० ए०)

१. २१, ६४, १२६; २. १०२; ३.

२६; ४. १३; ७. ६, ३२; ६. १६;  
१०. ४४, ८८, ६४, १२२; ११. २०;  
१३. २४; १५. ४८; १६. ६, २८,  
२६; २१. १६; २२. १४; २३. ८८,  
१४६; २४. ४०, १३६, १४३; २५.  
२४, ३३, ३५, ४६, ६६, ७१.

रदि-रह १०. १२४, १४०; २४. ६३;  
. २५. ४६.

रदिहउँ-रहूंगी १६. २२.

रही-रह का भूत श्री० ११. २०; २.  
७७, १७७, १८२; ६. ३४; १६. ४;  
२०. १६, १०१.

रहे-रह का भूत २. २३; १३. ४०;  
२५. ११२.

रहेहु-रहे हो १२. ३८.

रौक-रह=रहित २. ६१.

रौवा-रहा गया २३. ११२.

रौपा-राधिन=प्रतिष्ठित=प्रमाणित [हु०  
हि० रौपना; मि० रौपनु; तु०  
रौपनु; बं० रौपिते; का० रनुन; पं०  
रौपयें; मि० रिरुनवा; सं० रण्यपति=  
पकाला है] १६. ६२.

रौधि-रुन कर २४. १.

रौहा-राहु ४. २७.

राह-राय=मिनकी राजा से हुन म्यून  
मनिहा हो ११. ६; राजा २. १३२.

राहकउँहा-रायकीरा २. ७८; २०. ४६.

राह-[दे० राजन्=Lat. reg. तु० Lat. rj-]

em=राजा; Keltic rj-, (राजा);

Germ. rik-, (शामक); Goth.

reiki, As. rics = राय; तथा Oir.

ri=राजा; Gallic Calu-riz=रय

का राजा; Goth. reiks = Ohg.

riks = E. rich = Germ. reich;

इसके साथ ही मिलता है \*Reig.

तु० Ags. ræcean = E. reach =

Germ. reichen; देखो दे० अउ

(प्रा०उउ), अज्यते, हरज्यते=रैलना;

Lat. rego = शासन करना; Goth.

ufraþjan = सीधा करना; Ohg.

reochen = Germ. recken = E.

reach] राजा, राह; ( तु० राजन् =

रावर=राजकुल) २. ६१; २५. ४८.

राउन-राय लोगों की २. १०.

राऊ-राजा ८. १७; राय २५. २१.

राय-राय=धनी १२. ६६.

रायोन-रायण २. १०; ३. २४; १०. ३८,

४२; १२. २०; १६. २४; २०. ११३;

२३. १२८; २४. ७२; २५. ६२, ६६.

रायोनगढ-रायण का किला २०. १२६.

रायोनलका-रायण की लंका २१. ६४.

रायम-रायम [ √रय=हानि पहुँचाना

अथवा √रय=रहा करना से;

(देखो Macdonell, Vedic Mytho-

pp. 163-164) Goth. valens

. १. २१ १२६.

राख-(रख=रक्ख=राख=रख)रक्खे २१.५५.

राखइ-रक्खे ४. १६; १४. ८; १६. ३६;

रखने को २०. ११७; २१. ६४.

राखउँ-रक्खूं ३. ७५.

राखहिँ-रखते हैं २५. ७४.

राखहु-रक्खो १२. ४८.

राखा-राखइ का भूत (रखता है) १.

१६, ११६; २. ३७; ५. ४; ७. ६७;

८. ३३; ६. ६, ५१; ११. २१; २५.

६७; रक्खे १८. १६; १६. ५६; रक्षा=

राख=भस्म २३. ६८.

राखि-रख कर १५. ४०; रक्षति=रखता

है २४. २४; रख २५. ४०.

राखिअ-राखिये=रखिये ८. २३.

राखिहि-रक्खेगी ४. १६.

राखी-रक्खी ४. ३०, ४२.

राखु-रख ६. ५३.

राखे-रक्खे ८. १६; १०. ४६, ६१,

११६; २३. ४२.

राग-संगीत के छः राग १०. १४३.

रागिनी-छत्तीस रागिणी १०. १४३.

रागू-राग=मोह (रागद्वेष) ८. २७.

राघउ-राघव=रामचन्द्र १०. २७; १२. ५०.

राघउचेतन-राघवचेतन १. १८७.

राज-राज्य १. ४१, ४२, ६८, १०१,

१०४; ३. ७०; ८. १८; १०. १३६;

११. ३२, ३६; १२. १, ३२, ३८,

३६, ४८; १६. १६, १७; २२. १२;

२३. ३२; २४. १३१; २५. १५८;

राजा ३. २८; २३. २७; राजा को

२५. ७८.

राजइ-राजाओं ने १. ६८; राजा ने ३.

३३, ५७; ८. ४१; ६. १, ४६; १४.

१७; १५. ७, ५७; १६. १, ३३;

२२. ४१; २३. १, ४६, १७७; २५.

२७, १३७, १४१, १४३.

राजकुअँर-राजकुमार २३. १३३; २५.

३, ६२.

राजघर-राजगृह ६. १०; २३. ३२; २५. ६३.

राजघरिआरा-राजघरटा २. १३७.

राजदुआरू-राजद्वार २. १६१.

राजन्ह-राजाओं के ३. २७.

राजपंखि-राजपत्नी=बड़े पत्नी १४. १२.

राजपाट-राजपट्ट=राजसिंहासन २४. १५६.

राजवहन-राजवचन २५. १६५.

राजमँडारमँजूसा-राजभायडागारम-

न्जूपा=राजा के भयंकर का सन्दूक

२३. १८३.

राजमँदिर-राजमन्दिर २. १८५, १६३;

७. ४८, ६६; १६. १४.

राजराजेसुर-राजराजेश्वर २५. १४६.

राजसभा-राजा की सभा २. १७७.

राजहि-राजा से ३. ५६; राजा को ११.

१२; २१. १; २४. ३३; २५. १६२.

राजा-राभा, राश; हि०, पं० सि०,

गु० राशो, राय, राई; का० राम्;

सि० र६; म० राघो, रावो, राय १.  
 १८, ४१, ७१, १०६; २. ६, ११,  
 १६, ८६, १४७, १६२, १६४, १७८,  
 १७६, १८३, १८६; ३. ३२; ६. १;  
 ७. ४१, ४२, ६८, ७२; ८. १, ८, १७,  
 १८, २६, ३३, ६२; ९. ६, ११, २०,  
 २६, २६, ३१, ४१; १०. १, २२,  
 ६१, ६४, ११८, १२०, १४२, १४७;  
 ११. १, ६, १२, ३३, ३६, ४६, ४६;  
 १२. १, १७, २१, ६२, ६६, ६६,  
 ६६, ८१, १००; १३. ४, २२, ६७;  
 १४. ६, ८; १५. १३, ३१, ३३, ४६,  
 ७१; १६. ६, ४२, ४३; १७. १; १८.  
 १७; २०. १३, ६६, ११६, १३३;  
 २१. ३३, ३६, ४६; २२. ४६, ६३;  
 २३. ६, १२, १७, १८, २३, ४१,  
 १४६; २४. ६, ८, १६, २२, १६६;  
 २५. ७, १०, १२, ४३, ४७, ४६,  
 ६३, ६४, ६६, ६६, ७३, ७८, ८६,  
 १०, १०६, १०६, १२१, १२६,  
 १३०, १४८, १६७.

राजु-राज ६. ११.

राजू-राज १. १८; २. १०; ४. १२;  
 ७. ६०; ११. १६, १२. ६४; १३.  
 ६०; १४. ६१; २१. ४६; २४. ६.

राज-रज (= कवित्र) मा०, पा०  
 रज; उ०, वं० रज; हि० रज्ज, राज;  
 पि० राजी; गु० राजु; पि० रज

६. २, ४३; १०. ८७; २३. ६३, ६१;  
 २५. १६, १६०; रात्रि २३. ८०.

राता-रज=राज ७. २६, ४६; ८. ३६;  
 ९. ३३; १०. ६८; १२. ७; १८. १४;  
 १६. ३३, ३६, ६३; २३. ४१, ६१,  
 १०८, ११३; २४. ६३; २५. १४३;  
 अत्रुज २. ७६; १०. ६१; १६. ६३;  
 २०. ६३, १०६; २२. २०, ७६; २३.  
 ८६, ११६; सज्जित ६. १६; २२. २६.

राति-रात्रि; राति, राह; उ०, वं०, पि०  
 रात(ह); वं० रात, रात; ति० राति;  
 सि० रा, राय; (Gray, 374) १. १४;  
 ३. १७; ६. २४; २०. १२६; २४.  
 १६; रज=राज २०. ६४; २३. १४०.  
 रातिदिन-रात्रिदिनम्=रातिदिन(व);  
 रातिदिन ६. १६.

रातिदि-रात्रि=रात १६. ४४.

राती-[वं० राती; सं० रात्रि; आयु०  
 \*Lath, गु० Lat. lath=विना;  
 सं० राहु=रुज्जयमुर; Lat. lathna=  
 रात्रि देवता Migh. Inoder=घोषे-  
 बात्री] रात्रि=रात १. ६; ६. २०;  
 २०. ११०; रज=राज १०. १०६;  
 २०. १४, २६; २३. ६३, ६४, ६४;  
 अत्रुज=राती हुई २०. २६; २३.  
 ७३, १३७.

रात्रे-रज=राज २. ६३, ६८, ७६; ४.  
 ४; ७. १०, ४६, ४६; १०. १४; २०.

७; २३. ६२, ६४, १०६; ललित ८. ४६.

रानिह—राज्ञी=रानियों का १६. १५.

रानी—राज्ञी=राणी १. १८६; २. ६४,

१६४, १६६, १६७; ३. ३३, ४६,

६०, ६६, ७३; ४. ११, २६; ५. ११;

८. ३, ६, १६, ३४, ५३, ६५, ७१;

९. १२; १०. ३; १२. ५२, ५६; १६.

४१; १८. २५; १९. ४, ६, १०; ४१,

५८, ६३; २०. १०, ८१, ८६, ९७,

१३१; २३. ३२, ८५, १३६; २४.

१२६, १४५.

राम—रामचन्द्र १०. ४२; ११. १३; १२.

४४; २०. १२६; २२. ३८.

रामा—राम ३. २४; रमणी १६. २५;

२५. १६; राम की स्त्री=सीता=

रमा २०. १३३.

रामू—रामचन्द्र २५. ६५.

रायन्ह—राज=रायों की २०. १३.

रावट—आवर्त्तन=पिघल कर एक हो

जाना=राख हो जाना २१. ६४.

रासि—राशि ३. २१.

राहु ६. ३६; १०. २०, १३४; १८. ४०;

२०. १२७; २३. १२६, १४४.

राहु—राहु ८. १२; १०. २६; २०. १३४;

२४. ५६, ८३.

रिग—(ऋच स्तुतौ) ऋग्वेद १०. ७७.

रितु—[वै० ऋतु=विशेष अथवा उचित

समय; तु० ऋत, ऋति, Lat. ars

“art”; Lat. *ritus* (E. rite); Ags.

*rim* = संख्या \*Ar से; तु० वै०

ऋणोति, ऋच्छति, अर्पयति, \*Er

जिससे निष्पन्न हैं वै० अर्ण, अर्णव;

Lat. *orior*; Goth. *rinnan* = E,

*run*; Ohg. *runs*, (river)] ऋतु=

उदु; शौ० और मा० उड, रिड; पा०

उतु; सि० रुति; वज० रुत; म० रुत;

२. २४, १६०; १६. ८; २०. १, २.

रितुवाजन—ऋतु के घाजे २०. ६.

रितुराजा—ऋतुराज=वसन्त २०. ४.

रितु—ऋतु १६. ७२.

रिनि—ऋण; पा० हण ७. ३.

रिनिबंधी—ऋणबद्ध ६. ३६.

रिपु—रिड=रियु=शयु १५. १४.

रिस—रोप=क्रोध (रुप्=रुस्=रुस्) २.

१७५; ८. २०, ५६, ५७, ५८, ५९,

६०, ६१, ६२; १०. १४४; १५.

१२; २३. ४०; २५. ५२, ७३, ७५,

८८, ९१, १२८, १४६, १४७; क्रोध,

“रिष्ट=शुभ” सु० २४. ३८.

रिसहि—रोप ही ८. ६०.

रिसाइ—रिस कर २३. १२; रुट होकर

२४. ८.

रिसाई—रोप कर के ८. ५७.

रीमा—ऋधू=पा० हधू=रिम्हू=प्रसन्न

हुआ १०. १४८; २२. ३७.

रीति—रीहू=प्रकार २. १४४.

रीसा—रीम=रिस २३. २४; २५. ७४.

रीसी—रिंयां डल्ल करे बाकी; अर्या

=आर्य = “गृध्रविशेष की मादा”

सु० [गु० अर्य, रिज्ज, रिस्त; म०

रीम, रीम; गु० रीय; सि० रिज्जु;

पं० रिज्ज; का० इय] १०. १७.

रदरकयैल—रदकमल = रदाय २२. ४.

रदयाय—रदाय १२. ४.

रपयंत—रूपयन्त १. १११.

रपयंतह—रूपयानों के १. ११८.

रपयंता—रूपयान् ३. १६.

रपयंती—रूपयनी ८. २.

रपयनी—रूपयि (पद्यायनी) ८. ७.

रहिर—रयिर = लोहित ८. १६, ४६;

१०. ११, १४, ६१, १०८; २३. ८६.

रक—[दे० रुच; पा० रक (Galgor,

POr. 13, Gray 75) सं० रुच=रुच

रुच, रुच = चमकने वाला = रुच

(P. 120); मा० रक (W. Al. I.

181, 6)] हि०, गु०, म० रुक; पं०

रुच, रुक; [गु० रुक = रुपा = रुच;

पं० रुका; मि० रुयु; म० रुय;

मा० रुय, रुय (P. 257; JH. 26)

२. ४६; २१. २१; २३. ८०.

रवि—रुच ८. १६.

रया—रया [दे० रोयें √ रुय, Look,

Lat. luce = चमकना (गु० लूय =

मकल, lūnē, lūn = रुय-हि); हि०

रोचन, रुचि, रोक, रुच = प्रकाश;

अदे० रुचोचन्त = प्रकाशमान; सं०

लोक, लोके, लोचन; Lith. lū-

kti = लोचना = प्रतीक्षा करना; Obg-

licht = E. light, Oir. lúch =

विद्युत्; हि० रुच = रविदार; “रुच

मङ्ग्यो” सुरज चढ़ गया; मा० का०

रुचह = दिवस; मा० का० रोच =

दिन] चाहा १२. ७६.

रुटा—रुट हो गया ८. ४१.

रुटी—रुट हो गई ११. ४२.

रूप—रुच = लौन्दर्य १. १२२, १२७,

१४६; २. ६४, ६९, १६४, १००;

३. १, १२, १९, १४, ४४; ४. ११;

७. ४८; ८. ४, ८, ६, ६. ११;

१२. ४६; २२. २१; २४. १४७;

चाहति १. ६१; २. १, ४६, ४७,

१८१; ४. ४८, ६१; ६. १; १४.

७४; १६. २०; २०. ६१; २१. १;

२४. ११९, १४७; २४. १, १४,

१४; स्वरूप = धामा २०. १००;

रीव्य = रुपा = चांदी २. १००; रुच

१. १२४; ६. १८.

रुपर—लौन्दर्य से ८. १६; रीव्य के =

चांदी के १२. ७१.

रुपमंत्रि—गुण विशेष २. ८१.

रुपमौजरी—रुपमौजरी २०. ४१.

रुपयंत—रुपयान् १. १२८; २. १४४.

रूपहि—स्वरूप को २. ६६.

रूपा—आकृति १. ६२; ८. ११; १२. ४६.

रूसा—रुष्ट=क्रुद्ध (गु०, पं०, सि०,  
बं० रुस-; हि० रुस; प्रा० रुसइ)  
२५. १४०.

रूसे—रुष्ट हो गए १५. १५.

रूसेउ—रुस गया है ८. ५६.

रेंगहिँ—रेंगते हैं १. ११७; १५. ६८.

रे—संवाधन २. १४२; ३. ३२; ५. २४,  
४८; ७. ३४, ३६; ६. २०; ११.  
३३; १२. १६, २४, ६६, ६०; १३.  
१६, ५५; १४. ७, १७; १५. ३१;  
१८. ५५; १६. ५६; २०. ४०, ८८,  
१२०; २२. ८, ४०, ७८; २३. ३६;  
२४. ५६, ८८, १११, १६०; २५. ८०.

रेख—[√रिख=पा०लिख; Lat. *rima*;  
Olg. *riga*=*roto*] प्रा० रेह; हि०,  
पं० रेख; सि० रेघी; गु० रेग, रेख;  
म० रेघ (हु० फा० रेगमार) १. ६३.

रेखा—रेख १०. १०२; १६. ४.

रेनु—रेणु=धूलि १. १०७.

रेहु—विशेष प्रकार की मट्टी १. ७६.

रोअँ—रोम=रोआँ; सि० लूँ १८. ५१;  
२२. ५६; २३. ८६, ६५; २४. ६४;  
२५. २२.

रोअँहिँ—रोम २३. ८६.

रोअइ—[वै० रोदिति; पा० रुदति; प्रा०  
रुयइ, रोयइ, रोदसि (P. 495);

भायू० \*Roud, व्युत्पन्न \*Rou से,  
(हु० रौति P. 246, 473) हु० Lat.  
*rudo* = चिहाना; Lith. *raudà* =  
विलाप; Ohg. *riozan* = Ags.  
*reolan*] रोता है १२. ५७; २१. ८,  
१७, २१; २२. ५६; २४. ५७; २५. ८.

रोअई—रोती है २०. १२०.

रोअत—रोते ७. २६; १२. ५६; २२. ५७.

रोअनिहार—रोने वाला २५. ७१.

रोअहिँ—रोते हैं १२. ४१, ५६; २२.  
५६; २४. ८०; २५. ४३.

रोआ—रोया ४. ५५; ११. १८; २२.  
५२, ५८; २४. १०६; २५. ४२.

रोइ—रोकर ७. ३६; ११. १८; १६. २३;  
१६. ४; २३. ५२, ५६, ७२, १०४, १०८.

रोइअ—रोइये १६. ५.

रोईँ—रोइ का य० २४. ६६.

रोईँ—रोइइ का भूत स्त्री० ए० १६. २;  
रोकर २५. ४४.

रोउ—रोओ २२. ५८.

रोउव—रोना २२. ४६.

रोप—रोने से ५. ४७.

रोक—रोकड़=रुपया (रुप=रूप्य; रोक=  
रुक्+क=रोकना; चूकना=च्युत्+क;  
H. 353;) ११. १६.

रोग—(रुज्) बीमारी २. १५२; ८. ३१;  
२४. ७०, ६८, १३५.

रोगिआ—रोगी २१. ४०; २४. ६८.



रोगी-रुग् १. ७२; २४. ११२.

रोगू-रोग [ √ रुग्; भाषू = \*Long;

Lat. *lugo* = रोक करना; Lith.

*lūti* = दुःख ] १. १२.

रोग-रुग् = रोग २४. १२०.

रोगू-रुग् = रोग २४. १२०.

रोंटा-खोह = खोह; देवा = देवा; [ पु०  
पा० खेह; सं० खेह > \*खेह >  
\*खेह > खेह गया मा० रेह और  
खेह (P. 304, देखो Gölger, PGr.  
62) पु० हि० खेह; प्यान दो "रोहं  
खेहखेहपिहम्" (दे० 210, 5); हि०  
रोह, रोयी; मि० रोह; पु० रोहयी;  
म० रोहा, रोयी; सं० रयी] २३. १६.

रोह-रोहय = रुग् = ( रुह = रुग् =  
रोग ) २. १४; २४. ४१.

रोना-रोह ७. १९.

रोपा-रोह ३. १०६.

रोरा-"रोह" = रोहा = रोह = रुग्-  
कर ( √ रु का अन्वय ) १२. ११.

रोर्य-रोह १. ७२; १०. ४७; १. ४४;  
१४. ११.

रोपी-रोह = रोह; सं० रोपी; पु० रोह;  
मि०, रं० री; म० रो, रोह, रोह,  
रोह; मि० रोह १०. ४७; १२. १२.

रोपीवती-रोह १०. १११.

रोस-रोह = रुग् = ४४; १. ४६; २४.  
१०; २४. ११०.

रोसन-[ रुहे = रुह; भा० रुह =

रोह; मि० रोहन; स० रोहन;

भा० रुह; वल्गू = रोहनी; पु०

रोह, रुह, रुहनाह इत्यादि; सं०

रोहन = प्रकारमान √ रुग् ] रोहन

= मसिद्ध १. १२२.

रोसू-रोह = रुग् २४. १२४.

रोह-रोह [ रोह; पु० रुह; रोह

Lat. *ruber*; E. *red* के साथ संबद्ध;

Oicel. *ruthra* = रुधिर; Goth.

*rautha* = Germ. *rot* = E. *red* ]

यह प्रकार का मसिद्ध १४. १०.

ल.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २१. १२; २४.

११६, ११७.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २४. १२२.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २०. ४४.

लंगूर-लंगूर = लंगूर १०. ६०.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २४. १०; २४. १११.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २४. ११०.

लंगूर-लंगूर = लंगूर २४. ११०.

लंगूर-लंगूर = लंगूर १४. ४१. ४६.

लंगूर-[ रुहे = रुह; भा० रुह =

विशेषण; पा० लक्षणे (P. 312);  
वैयाकरणों के अनुसार लक्षण =  
अङ्कन (√अङ्क लक्षणे); अङ्कन से  
लाक्षणिक अर्थ हुआ दर्शन; तु०  
धातु० लक्ष दर्शने] चिह्न, निशान  
३. २४; ६. ८; १६. २०; २०. ६३.

लखाप-लखाया=दिखाया १. १५७.

लखिमन-लक्ष्मण ११. १२.

लग-[सं० लगति; पा० लगति, लगति  
तथा लङ्गति; √लग्=लगाना, दाव  
लगाना (तु० वै० लघ); लग्न=लग्ना,  
लग (RDP; किन्तु ध्यान दो  
Geiger, PGr. 136 पर); संभवतः  
Lat. *languo*; E. *languid* इसी के  
साथ संबद्ध हैं; देखो Walde, Lat.

Wtb. *languo*] लगता है २. १८४.

लगन-लग्न. ६. १३. १. १८४.

लगाप-लगाये हुए २०. २८; २३. ४६.

लगावही-लगाते हैं ३. ५२.

लगि-लग=तक १. ३६, ५२, ५३,  
१०१, १२०; २. १२८; ३. ५६,  
६०; ४. ५७; ७. ४१; ११. ६; १२;  
१४. २३; १८. ६, ३२, ४६; २०.  
३१; २३. ३०, ४२, ५६, ७६, ७७,  
१२८; २४. ६; ४१, ११२.

लगी-[लगुड; पा० लगुड; म० लाकूड;  
हि० लकूट; सं० में लगुड शब्द  
भाषाओं से आया है और सं० में

इसका रूप \*लकूत=लकुट संभाव्य  
है; तु० Lat. *lacertus* (भुजा); Old  
Prussian *alkunis* = (कुहनी);  
ध्यान दो E. *leg* पर] लगुड=  
लगी=वंशदण्ड ५. ३७.

लंक-लङ्क=कटि=कमर ३. ४७; १०.  
१३७, १३८, १४०, १४४, १५३;  
२४. ४६; लङ्का १२. ६६; २०.  
१२८; २१. ५७.

लंकदीप-कटिद्वीप=सुन्दरी की कटि  
२. ६, ५१.

लंकसिंघिनी-सिंहिनी की कटि के  
समान जिनकी कटि हो २. ५६.

लंका-लङ्का २. १०, १३५; १५. २६;  
२१. ५८, ५६; २४. १०६, १०७.

लच्छि-लक्ष्मी ३. ३०; १२. २६.

लच्छिमी-लक्ष्मी २. ६७; ६. ३.

लजाइ-लजा कर=लजित होकर ४. ४१.

लज्जानेउ-लजित होगया १०. ५०.

लज्जा-लाज १३. ४२.

लटा-लट १२. २.

लता-[तु० Lat. *lentus* = लचकदार;  
Ohg. *lindi* = मृदु; E. *lithe*; Ohg.  
*linter* = नींबू का छूट] यक्षी; प्राण-  
लता=पद्मावती १६. ४२.

लपेटा-[√लिप्; लिप्, से] १. १८३.

लपेटि-लपेट कर २५. ११७.

लरहि-लड़ते हैं १०. ३, ३६.

सराई-खराई=पुर् १. १८८.

सलाट-मस्तक (सं० सराट=सखाट,  
निटाख, निडख, निदिख; न>ख,  
गु० नइख>साइख; पा० उप्रख>  
उप्रख=उप्र+खख=सिखाही; प्रा०  
सिडाख, पा० मकाट>खकाट) म०  
निडख, निडाख, निडाख; मि०  
निराह, निहं; मि० मटख आदि  
१६. २४; २३. १६८.

सलाट-सखाट=मस्तक २४. २१.

सहर-खमते=मास होता है १७. १६.

सहना-खमन=खाम=प्राप्ति (गु०  
मि० खाहो; पं० खाह=खाम; सि०  
खमना, खमना, खाम होना) १६. १४.

सहर-साह ११. १.

सहरई-खर मे १०. २; खरें १५. ६.

सहर-खर को ४. १२, १२, १०.  
१११; १८. ११.

सहरई-खरों मे ११. १; १८. १२.

सहरि-खर १०. १४२; ११. १; १३.

२१; १५. २, ४१; २४. २४.

सहि-खगि=तक १. १६४, १६५; २.

११२, १४४; ४. १२; ४. २; ७.

११; ६. १६; ११. ४०, ४२; १२.

४१; १५. ४०, ४६, २६; २०.

११६; २२. ६२, ६६; २४. १६;

२५. ११४; पाकर २३. ४४.

साह-सगहर १. १४४; २. १०६, ११२,

१८४; ३. ४६; ४. ४४; ७. ४२,

४१; ६. २; १०. १६, १२०; १६.

३६; १८. २१; १६. २; २१. ४४;

खेर २५. ६६.

साहि-खगावेगा ४. २१.

साई-खगाई २. ११५.

साई-खगाया २. १६, ११६; ४. १५;

१२. २१; २३. १४४; खगाई=खिया

१२. २०; खगावे २३. १००.

साउ-खगायो १३. १४; २२. ४६; २३.

१४०; खगाता है २२. ४१, ४३.

साए-खगावे १०. १४२; १५. २; २३.

४६; २४. ४८.

साख-[गु० खै० खच; पा० खख / खग

=खगाना; खै० खच=घृत में दाख

खगाना; देखो Grassmann, W;

Zimmer, Altind. Leben 287]

हि० खाख; पं० खख; बं० खाक;

का० खप; सि० खक ७. ४, १२;

१०. २२; ११. १६; २४. ११; २५.

१०३, १६६, १०२.

साखा-खपा=खपित किया २२. ४१.

साग-खो है; खग=खग=खन=

खन घायला \*खग (गु० खग=

मगयति, मगति P. 197), हि०

खगना, पं० खगाया, मि० खगप;

गु० खगपुं; म० खगपे, बं०

खगिते; का० खगुन, मि० खगित

१. १६; २. १८, ३१, ३६; १६०;  
 ३. ४०; २३. ६; २५. १००; लिये  
 २२. ११; लगता है १०. ४३; लगा  
 ७. १८; ८. १६; १३. ६; १६. १३.  
 लागई—लगने से २५. ६१, लगाना =  
 लगे हुए ११५, लगे १४७.  
 लागइ—लगता है २. २०; १०. १०४;  
 ११. २; १२. २७; १४. १०; १६.  
 ५; १८. ६; २०. १०४; २४. १५८;  
 लगे २५. ८५.  
 लागउँ—लगूँ २३. १६.  
 लागहिँ—लगते हैं १. ६६; १०. ८०;  
 १८. ५१; २४. १०८; २५. ११२.  
 लागहु—लगे २३. १४.  
 लाग्हा—लगा २. ३६, १७३; १०. ३५,  
 ११६, १४१; ११. ४६; १४. ३;  
 २०. १०६; २१. ६३; २२. ३५;  
 २३. ५६, १२२, १६२; २५. १५५.  
 लागि—लगित्वा = लग कर २. ५८; ६.  
 ३४; १४. ५; १६. २८; २१. ४२;  
 २२. ६१; लिये ६. ६; १०. १४८;  
 १६. २७; २०. १३३; २१. २७; २२.  
 २६, ३७; २३. १८, २२, ८६, १११,  
 १२०; लगी २२. १६; २३. ४०;  
 लग गई २३. १४७; १३५; २५. ४.  
 लागिहइ—लगेगा ११. ४८.  
 लागहि—लगेगा २३. ४६.  
 लागीँ—लगीं ४. ४१, ५६.

लागी—लगी २. ८०; १३. ७; २०.  
 १०३; २४. १०७; २५. ३४; लम्  
 होकर = लिये १८. ४४; २२. ७;  
 २३. १३२; लगने से २१. ५२.  
 लागु—लगा, लगी, लगता है १. १६६;  
 २. ७३, ७७, ८१, ८६, १२१; ३.  
 ५३, ७४; १०. ६७; १३. ८; १६.  
 ४४; २३. १०६; २४. १०६, १४६.  
 लागे—लगे २. ४६, १५५; ५. १३;  
 १०. ६०; १६. २६, ४६; २०. ६६;  
 २१. ११; २३. १०६; २५. ३१;  
 लगने पर २५. ७३.  
 लागेउ—लगा ८. १२; २४. ५६.  
 लागेहु—लगे हो २३. ११.  
 लाज—लज्जा, लाज, पं० लज; गु०,  
 म०, उ०, घं० लाज; सि० लज ३.  
 १३; १८. ५६; २३. ४५, १२४;  
 २४. १२२; २५. ११.  
 लाजइ—लजाकर १०. ३२.  
 लाजा—लज्जा = लाज १०. ५१; २५.  
 १०; लज्जित हुआ २५. ८६.  
 लाजि—लजाकर = लज्जा से १०. ५७, ७५.  
 लाहू—लइहू; लाहू; सि० लहु; (गु०  
 लाहु = प्रेम JB. 88) १०. ११३.  
 लाभ—[ √लभ, प्राचीन √रूप रभ,  
 रभते, रम, रमस; Lat. rabies = E.  
 rabies; Lith. lobis = घन के साथ  
 संबद्ध; प्राकृत रूपों के लिये देखो

P. 484] फल २. १०४; उ. १०,

१२, २४; २२. २४.

सायक—योग्य ३. २४.

साल—रत्न २. १०१.

सायह—सायपति; हि० सायना, साय;

पं० साउषा; गु० सायुं; म० साययें;

मि० सनया; का० साय (J.D. 55,

200, 243) साता है १. २६, १४२;

सगाता है उ. २६; १५. ३; सगावे

१८. २४.

सायमि—सायसि=सगाता है २५. ७८.

सायहिं—सगाते हैं २२. ४२.

सायहु—सगाघा १२. ४३; २२. ७.

साया—सगाया २. ८६, ११७, १८७;

उ. २६; ६. २२; १०. १२१; १५.

१२; १६. २; १८. २; सगाता है

८. २६; २२. १६.

सामा—समस्त द्रव पदार्थ जो बरों में

विच्छिन्न [सम संक्षेपसमीकनयो,

गु० मि बहनी=विच्छिन्न, विमुच्छन-

रत्न; का० सन्न=विच्छिन्न; \*रहस्य

(मं० रहस्य); समसमीकन=विमुच्छन

J.D. के मत में  $<(h) \log_2 (h)$

$\log_2 < \log_2 h - \log_2 (h)$ ; गु० बहू-

बहुपुत्र=विमुच्छन] ५. १२, १६.

सादा—साम २. १०१, १३. २१; १७.

१२; २१. १०; २२. २६.

साद—सिधे [गु० हि० सिधे, मि० साह

सायवा सह; पं० सह; गु० सीधो;

पश्चि० हि० सयौ; हि० सिया=

सम्भ; II. 375] १०. ११६; १२.

२३; १३. २३; २३. १६; २५. ६६.

सिपड—सिपु=सिधे २०. १५.

सिघाउँ—सिघौं (सिघति, सिहह, सि०

पं०, वं० सिख; सि० सिपनया; का०

सीख; म० सिहयें, सिहियें २३. ६६.

सिखत—सिखन्=सिखते [मं० सिखति;

आरिखति (आग्नेय 6. 53. 7); गु०

रिखति तथा रिखति; इमी के साथ

संबद्ध हैं Lith. rakti=रीटी काटना,

हल पजाना; Ohg. rigo = Ag-

radu = E. row; धातुपाठ में केवल

“सिख सिखने” गु० सिहह] २३. १८१.

सिखनी—सिखनी=इसम १. ७७; २३. २६.

सिया—सिखह का मूल १. २७, ६२;

३. २४; उ. ४२; २०. ११४; २१.

८; २३. २६, १०४; २५. ६१.

सिखि—सिख कर १. १८६; २०. ११०;

२३. १०४, १२६; सिखा १. ७७;

सिख ६. ८.

सिखी—सिखह का मूल, सी ३. २, २६,

१०; ६. २; उ. ११; १०. १४७;

१६. २४; २३. ७०; २५. १०१, १०४.

सिखु—यदि सिखे; [“संभाव्य मरिष्य

का रूप वर्तमान के समान गुरुन भेद

को सिखे हुए होता है, पर देह प्राणी

अवधी में प्रथम पुरुष में भी मध्यम बहुवचन का रूप रहता है, जैसे "जीवन जाउ जाउ सो भँवरा" जाउ=जाय" राम० ] १. ७७.

लिखे-लिखइ का भूत १. ८५; २०.

१०७; २१. १३; २३. ६४, ७०, १८१.

लिलाट-ललाट=मस्तक १०. १७; १८. २१.

लिलाटा-ललाट २. १८०.

लिलाटू-ललाट १. ६८; २४. १२६.

लीक-रेखा १०. १०२.

लीखा-लिखा=लेखा=गणना १३.

५४; लीखा=लीख २५. ११६.

लीजिये-लीजिये १५. ५५; १८. २८.

लीप-[तु० लिम्पति, रेप=धन्य; लेप=

लेपटना; Lat. *lippus*; Lith. *limpti*

=लिपटना; Goth. *bi-leiban*; Ohg.

*biliban* = पीछे रहना; E. *leave*

तथा *live*; Germ. *leben*; प्रा०

लिपइ; पा० लिम्पति; उ० लिप-

बं० लेप-; हि० लीप-; लेप-

पं० लिप्प-, लिब-, लिम्म-; सि०

लिब-; गु० लिप-; म० लेप-]

लीपते हैं ३. ८; लीये १८. ८.

लीपी-लीपइ का भूत, स्त्री० २. ६८.

लीलइ-लीलता है=निगलता है [संभ-

वतः लीड, √लिह् से; तु० लीला=

लीलहा=लीड=चमकाना, यथा

"मयिः शरणोद्गीढः"; लीलइ=

खेल खेल में खा जाता है; लीलइ में सं० लीला (=खेल) तथा लीलहा (=लीड) दोनों का संमिश्रण प्रतीत होता है] १५. ४८.

लीला-लीलइ का भूत १५. ६३.

लीले-खा लिये ५. २३.

लीन्ह-लिया १. ८६, १४०; २. १०३;

४. २६, २७, ४४; ५. ४२; ७. ८;

६. ४६; १०. १५, १२६, १४४; ११.

८; १२. ७, ६४; १५. ८०; १६. १६,

२१; २०. ७२; २१. १६; २२. १२,

७४; २३. ५४, ६३, १०३, १६४,

१७४, १७५; २४. ८४, ८६, १०१;

२५. ३६, ६८.

लीन्हई-लीन्ह=लिये २५. १२३.

लीन्हा-लिया १. ८७, १०१; ८. ३,

३४, ६६; १०. १००; ११. २०; १३.

२७; २०. १००, १२४; २५. ३०.

लीन्ही-ली १०. १३२.

लीन्हे-लिये ५. ३; २३. ११.

लीन्हेसि-लिया ७. ३; १०. १०८;

१५. ६४; २३. १७२; २४. ८२.

लीहा-लेता है २. १३४.

लीही-लिया ४. १५.

लुकाई-लुकायित होकर=लुक कर;

"लिकइ लिहकइ निलीयते" (दे०

२४४, ७) हि० लुकना; पं० लुकना;

सि० लिकण, लुकण; म० लिक्कण;

सं० सुब्बि; मा० सुब्ब २४. १४३.  
 सुयुष-सुय=लोहय=सुयक, सोमी  
 (F. 104, 125) १५. १७, २४. ११२.  
 सुयुषे-सुमाय गये ३. ४३; १०. १२३;  
 २०. ९.  
 सुदे-सुदितन हुप=सुदे गये; सुदति;  
 (सु० Lat. *luton* = टगना) हि०,  
 मि०, सं० सुद; पं० सुद; का० सुद;  
 गु० सुद, सुद; (JB 109) ११. १२.  
 सुमी-सूटी [सूहिमापाय; सु० V/सुद,  
 सुप; सोद, सुब=विमाना; पातु-  
 पाट'सुद सुपद उपपाते'] २०. १२०.  
 सेह-सेडा १. ८, २६, १४८; २. ६७,  
 १११, ११४, १४७; ३. ७८; ४. १६,  
 १८, १०, १८, ६०; ५. २, २२,  
 ११, १७; ६. ७, १४, १७, १८,  
 ४४, ४६, २६; ८. ११, २४, २६,  
 ४०; ९. १०; १०. ११, १६, २२,  
 २३, १०३, १११, १२२, १२७;  
 १२. ६, २७, ७२, ६८; १३. १६,  
 १८, ४०, २६; १४. ११; १५. १;  
 १६. १, १६; १८. ४८; २०. २४,  
 १०, ६१, ६४, ११४; २१. २, १८;  
 २२. १६, ४६; २३. १४, १६, ७१,  
 ७३, ८७, ८८, १२०, १६४; २४.  
 २१, ६७, ७७, ६७, ६८, ११४, ११६,  
 ११८; २४. २१; ४१, ४६, १००,  
 १११, १२२, १२६, सेता है १.

१२२; ३. ६४; ४. २६; १०. ६४,  
 ११२; १५. ११; से ७. ८; १०.  
 २३; ११. २४; २१. ११२; २३.  
 १२८; छिये २०. १०७; सेवे २१.  
 १०; सेने २२. ४०.  
 सेई-सेता है ११. ४; १२. १४; १५.  
 १४; १६. ६६; सेने २३. १७, ६६.  
 सेई-सू १६. १५; २३. १७.  
 सेउ-सेवे २०. ४०; २४. १६.  
 सेऊ-सू १६. २८.  
 सेय-सेला=हिसाब १. ८८.  
 सेया-हिसाब ३. ७०; २२. ७१; जिलनि  
 =जिगह=विचार करता है १३. ४६.  
 सेन-सेते १२. १२; १५. ४४; २४.  
 १०४; सेता है २४. ६६.  
 सेदी-"अण्ड विरोध" २. ७१.  
 सेया-सेने वासा १८. ७.  
 सेसा-जवापा १. १३८.  
 सेमि-जवा कर १. ८३.  
 सेदि-सेते है १. १०७; २. ४०, ११६;  
 ४. १७, १४; १०. ३, १५, २६, ११६.  
 सेदी-सेती है २. १०६; ४. ११; १०.  
 १२६; १४. ११.  
 सेदी-सेह=सेता है १५. ७७.  
 सेहु-सो ४. १८, २५; १२. १८, २३,  
 २४, ७४, २१; २०. १७; २२. ४०;  
 २३. ११, १४, १६, २५, ४०.  
 सेहु-सेहु=सो २२. १६.

लोक-जगत (√रूच्) ६. ४०; २१.

५२; २५. १२३.

लोकचार-लोकाचार २२. ७६.

लोका-लोक २५. ६५.

लोग-लोक=नरनारी २. ५२; ११. ६;

१२. ६२, ६८; २५. ३.

लोगन्ह-लोगों ने २५. ४२.

लोगहि-लोगों १०. १३६.

लोगू-लोग १. ४४; २. ४; १२. २१;

२५. १६६.

लोहहि<sup>०</sup>-लोहते हैं \*लोलू=विलोडन;

लुब्धति; लोटइ; हि०, पं०, गु०,

बं० लोट-; सि० लोटिनो=विकीर्ण

१०. ६.

लोन-(Zimmer, Altind. Leben. 54)

लवण=सुन्दर (अव=अउ=ओ,

यथा ओहि=अवधि, ओसाश्च=अव-

श्याय P. 154) नोन, नूण ल=न,

णांगुल=लाङ्गुल, णोहल=लोहल,

नलाट=ललाट इत्यादि (P. 260)

लवण; प्रा०, पा० लोण; का०, बं०,

हि० नून, लोण; वि० लोन, नोन;

हि० नोन, लोन, लूण, नूण; पं० नूण;

सि० लूण; गु० लूण; म० लोणा;

जि० लोन; छि नम; फा० नमक;

पश्तो माल्ग=नमक (नम \*नम-

ण्यक से GM. P. 276) न. १३,

१६, ४०; नमक न. १६.

लोना-सुन्दर ३. ३६; न. ६.

लोनि-लोनी=सुन्दरी न. ७.

लोनी-सुन्दर ३. ३०; न. १३; ६. २३;

१०. ११०.

लोने-सुन्दर २. ५५; १०. ६०.

लोभ-म० लोहो (मार्दव); सि० लोव

(इच्छा) १. २०; ५. ५४; ७. ३६;

१२. ३३; २४. ५५.

लोभा-लुभा गया १०. ५४, १५३; १६. ३७.

लोभाइ-लुब्ध हो रहा २. ३१.

लोभानी-लुभा गई १. १२८.

लोचा-लोमाशिका=लोमड़ी १. २८;

१२. ७८.

लोहा-[वै० लोह; भायू० \*(o)rendh

"red" देखो रोहित लोहित, तथा

रुहिर] लोहा; म० लोखंड; गु०

लोखंड; सि० लोहु; बं० लोह; सि०

लोहो, लो; गु० लोडुं २. १७.

लोहारइ-लोहकार=लोहार ने (सि०

लुहरु; लुहारु; सि० लोवरु; हि०,

गु०, पं०, बं० लोहार) ११. न.

लोहारिनि-लोहार की स्त्री २०. २७.

व.

वइ-वह २५. ६८.

वई-उसने १. १००.



यत्न-यत् २. ६४.

यद्-यद् १. ४८, ४९, ५१, ६४, ८८;  
२. ६, २३, ७२, ११६, १२१; ३.  
२, १०, १४; ४. २०, २१, २४,  
२५; ६. ५; ७. ४८; ८. ३६, ३८,  
४१; ९. २४, १४, ३६, ४७; १०.  
३, १६, १८, २०, ४६, ५२, ५५,  
६७, ६८, ८६, ११५, ११८, १४१;  
११. १८, २१, ४६; १२. ३४; १५.  
१७; १६. ७, ४१, ४३, ५३, ५६;  
२०. ६२; २१. १, ६; २२. ४७,  
६१, ७१; २३. २७, ३१, ११२,  
११९, १७०; २४. ११५, १४५,  
१४८, १५०, १५१, १५२; १२७;  
२५. २४, १११.

यार-त्रिपरा लगे हो उपा का सद २.  
६५; १३. ३१.

यार्पद-या १०. ४१.

यिदंसह-यिदसन्=इसते १. ६६.

येई-उन्होंने २१. ६०, ४२ ६४; उन्हें  
२३. ४५.

येई-ये १. ५१, ५६, ५७, ६०, १४४,  
१५६, १६०, १००; २. ६, ८८,  
१११, ११३, ११६; ३. ६५; ४. १०;  
८. ५; १०. ५, १८, ४५, ७४, ७५,  
१०७, ११६; १३. ६१; १४. ११;  
१५. ८१; १६. ११, ४६; १८. १५,  
२१; २०. १६, ६१; २३. ६४, ८६.

१११, १६८; २४. १०८.

येई-उसने १. १००.

येही-उनमें (G.D.) "नग ज्ञाग जेहे"

जेहे=सुजे २. १८८.

व्याकरण-व्याकरण १०. ८०.

स.

संवेत-[सं० संवेत √विह=विह=

°(१) qall=स्वरह, मु० Lat. cor-  
lum (=caulom); Obg. hēlar,  
hēit; Goth. haidur; E. =hood,  
भौतिक अर्थात् द्यौः, चातु के निरु-  
भासिक तथा सामुदायिक दो रूप हैं;  
यथा (१) पिब, चब, चिह्नित,  
चिह्नित, चिह्नितसति आदि (२)  
चिन्तयति, चिन्तन आदि] संकोच,  
सिद्धोप, सदस्यजन ४. १५.

संघाना-संघान=संघ १. ६४.

संघारा-संघारा १. ११२.

संघारि-संघार २. १८६.

संघारी-२. २६, १०८; संघार ४.  
२. १११.

संघारी-संघार १. १४६; २. ४१.

सर्ह-से १२. ४१, ६७; सर=भाष २४. ४४.

सर्ह-संघार=संघ से रक्षणी है १२. ११.

सईतालिस-सप्तचत्वारिंशत्=सैंतालीस;  
का० सतताजिह; उ० सतचालिया;  
बं० शतचालिश; पं० संताली; सि०  
सतेतालीह; गु० सुडतालीस; म०  
सत्तेचालीस १. १८५.

सइ-वै० शत अवे० सत; आ० फा०  
सद; अफ० सल, सिल; कु० सद;  
ओस्से० सद; पै० प्रा०, पा० सत;  
मा० प्रा० शद; आसा० स; का०  
हत; उ० शप; बं० शय; हि०, पं०,  
सि० सौ; गु० शो; म० शं, शंभर  
१. १८५; से४.५१; म. ३२; १२.५२.

सइअद-सैयद १. १३७, १५६, १५८.  
(सैयद राजे=सैयद राजी हामिदशाह)

सइन-सेना; अवे० हणना; प्रा० फा०  
हइना; पह०, पाक० हीन २५. ११७.

सइना-सेना १०. ४२.

सउँ-से १. ४६, १५६, १७८, १६२;  
२. २६, ६१; ६२; ३. १७, ३२; ४.  
१०; ७. २०, ६४; म. १७, ३४,  
६६, ७२; ६. ८, २४; १०. ४३,  
५०, १०३; ११. २६, २७, ३३,  
४३, ५२; १२. २२, ३२, ४४, ५५;  
१३. १६; १५. १५, ३८, ४६; १६.  
३४, ३५, ३७; १७. १६; १६. ३६,  
४८, ५४; २०. १६, २४, २८; २१.  
७, ३५; २२. २०, २३, २५, ३३,  
४७, ४८, ६३, ७६; २३. ६, १४,

४४, ५७, ६८, ११३, १४४, १५७,  
१६८; २४. ७४, १००, ११०, ११२,  
११६, १३३, १३४, १४४, १५७;  
२५. १३, १५, २२, २६, ३४, ५६,  
६६, ७५, १०१, १६५.

सउँटिआ-सोंटिया=सोंटे वाला=द्वार-  
पाल २५. ६८.

सउँपा-(सम् + √पठ् + इ) समर्पित=  
सौपा; सं० समर्पयति; प्रा० सम-  
प्पिअ; हि० सौपना; गु० सौपयुं;  
म० सौपयें, सोपयें म. २०; १३. ४७.

सउँपि-सौप कर ५. २१.

सउँह-संमुख १०. १२७; १३. ४३;  
१५. २८; २३. १७१; २४. २३;  
शपथ=सौह १६. २४.

सउँजहिँ-शयज=शिकार=पशु १०. ४८.

सउँही-संमुखे हि=सामने २५. १४६.

सक-सकता है; शक्नोति, शक्यते; सकेइ,  
सकइ; हि० सकना; पं० सकणा;  
सि० सघणु; गु० शकयुं; म० सकयें;  
सि० सकि, हकि १०. १४१.

सकइ-शक्नोति=सकता है २. १८६; ३.  
५१; ६. ४५; १०. ११८, १५६;  
१५. ५३; २४. ६१.

सत-सत्य; पा० सच्च; उ०, बं० साचा;  
वज० साँच; हि० सच; पं० सच्च,  
साँच; सि० सचु, सचो; गु०, म०  
साच, सँचा; सि० सस २. १३६.

७. १६; ८. ८; १. १, १, २, ७,  
१०; १३. १०, ११, ४८, २७; १४.  
१६, २१, २२; १५. १, २, १, ७,  
२१, २२, ७३; १७. १२; १८. ४२,  
४३, ४४; २२. ४२; २४. २२, ८२;  
१५. ८१.

सतह—साथ ही १५. १, ४.

सतपै—सप्तम = सातवें २५. ७३.

सतहोला—सप्तदशक = साथ की दुखाने  
(सुखाने) बाछा १५. ४६.

सतनासा—सापनासा = सापनासा १. ७.

सतवादी—सापवादी १. ४; १६. २.

सतमाऊ—सापमाव २२. १७.

सतमाया—साप वचन १. ११६; १. ६.

सतमापी—सापमापी २५. १६१.

सतप = \*Kat = पुद करना; पु०  
सातपति, शत्रु; Gall. cat = पुद;  
अवे = अप = पुद इत्यादि; VWA,  
p. 332] शत्रु १. १५.

सतार—सातित = सातित १०. १२६.

सतारह—सातारा है ३. २०.

सतिहरा—सद्वारा २. ८४, ४. ७, २०, २१.

सती—सत = साथ बाछा = सतपति के  
साथ साथ होने वाली स्त्री ८. ४०;  
१. २; १२. ११, २३. १४; पतिव्रता  
१३. १८, २७; १५. २२; १८. ४४,  
४६; २१. ४७; २५. ११; इतिव-  
रति २. ४६.

सतुर—शत्रु ३. ५६, ८०.

सत्त—साथ १. १, २, ३, ४, ६, ८, ९;

१३. ५७; २४. २२, २४; २५. १७.

सदा—सर्वदा = हमेशा १. २१, ४२; २.

२४, ८८, १५६; १. २७; १०. २०;

१३. ६३; १६. १७; २३. १५१.

सदापर—सदाफल २. ७५; २०. ४१.

सन—संवत् १. १८२; से २५. ८२.

सनिआसी—संग्यासी २. ४४; ३. ४८;

७. ५१; ११. १७.

संत—भगवान् की कथा का प्रेमी २. ४७.

सकउं—सकूँ १७. ४.

सकति—शक्ति = समीप चरित्र ११. १०;

शक्तेति = सकता है २१. १०.

सकनियान—शक्तिवाच ११. १२.

सकनी—शक्ति [शक्, शक; शक्तेति;

शिवति अश्वत्थ प्रयोग; पु० शक्ति;

शक, शकमन्, शकट; अवे = सच-

इति; मिलति, अश्वत्थ प्रयोग;

देवो VWA p. 331] २४. १२८.

सकल—साता १. १२; २. १६६; १२.

१८; १५. ४४; १६. १०; २०. ६४,

६६, ७०; २१. २०; २२. ११; २४.

४०, १०२.

सकसि—मकते हो २३. १४४.

सकड—सकड का मूल १०. ७३; १५.

८०; २३. १२८; २५. ४६.

सकारे—सोरो १०. १०१.

७८, ११४, ११६; २१. ५४; २३.

३, १०४; २५. १५२.

सबद—शब्द; प्रा० सद; पं० सद; सि०

सदो; का०, सि० सद; म० साद;

२. ११८; ८. १६; १७. ६, १४;

१६. ६८; २०. ८२; २२. २१; २३.

१५५, १७८; २५. २३, ६६.

सबन्ध—सबने ११. २५; २०. ११३.

सबहिँ—सभी ने ११. १६; १५. ४८;

२५. १६४, १६७.

सबही ७. ८.

सबाई—सबको १२. ५६; १६. २०.

सबाई—सभी १. ५८; १२. ५६; १६. २०.

सबेरई—सुबेला ही = सबेरे ही; गु०

सबेरा, सबेळा; सि० सबेरे, सबेले,

सबेरो (J.B. 142) १५. ७२.

सब्बा—सभा २. ६३, ६४, १७८,

१८१, १८४.

सभागो—सभाग्य २. १५५; २५. ३१.

सभापति—सभाध्यक्ष २. ६३.

सम—समान (शम०) १. ११६; ६. १.

समाइ—समाती है २. १२८; ४. ३८;

१८. २३, ४१; २१. ५६; समा कर

२४. १४७; २५. ३५.

समाई—समायात = समावे १८. २६.

समाधि—ध्यानावस्था २३. १४७; २५. ३४.

समान—तुल्य ८. ८; २५. २४.

समाना—समाया २३. १६७.

समापत—समाप्त १६. ७२.

समाहिँ—समाती हैं १८. २६; २०. २२.

समाहीँ—समाते हैं १४. ११.

समीप—नजदीक २. ८; १२. ६६.

समीर—वायु २. २०; १५. ३८.

समुँद—समुद्र = समुन्दर २. १७४; १०.

३३, ३६, ४०; २२. ७२; २३.

१३६, १४८, १७४; २४. ६३; २५.

१२०; वादासी रंग का घोड़ा २. १७०.

समुझहु—समझो; हि० समझ—, समुझ;

पं०, सि० समझ—; गु० समज—;

म० समजणें; ११. २५.

समुझावहिँ—समझाती हैं ५. १७.

समुझि—समझ कर ८. २५.

समुझी—समझी ८. ६५.

समुद—समुद्र, पा० समुद, मुहुद

(P. 294); सि० मुहुद, मूद १. ७४,

७७, ७८, ११०, १३१; २. ४६; ७.

१६; ६. २१; १०. १४५, १४६;

११. १५; १२. १०४; १३. ६, २४,

२६, ३०, ३४, ३५, ३७, ३६; १४.

१, ३, ६, ६, १४, २२, २३; १५.

८, १२, १६, ३१, ३२, ३३, ४१,

४४, ४५, ४६, ४८, ४९, ५१, ६०,

६३, ७३; १८. २५, २६, ३२, ३

समुदर—समुद्र १. १४०,

१३. २०; १५. १

समुदरपंथ—समुद्र

(सं० स्व=हर कारसी में); अवे=  
अवपूतन; वद= अवपूतनो; छा=  
फा= सुपरीदन; सी= फनन; ता=  
अरर; वा= खोफूतम्; शी= शीर्तम्;  
सरि= सुफूतम्; दि ग्लोम (G.M.  
292) २०. १२१, १२८, १२६.

सपना-स्वम १३. ६४.

सपने-स्वम में ५. ८; स्वम २०. ११६.

सपनेहुँ-स्वम में भी २०. १०४.

सय-[अवे= हउवे (सारा); Lat. soli-  
dus तथा solidus (solid); solens  
=शुतचित] सवे, सव्य; पा= सव्य;  
हि= सव, पं= सव्य, सम; सि=  
समु; गु= सवि; मि= सव, हव;  
तथा हि= सारा; पं= सारा; सि=  
सातो; गु= सार्य; म= सारा १. २१,  
२४, १२, १४, १८, ४०, ४४, ४६,  
४१, ४३, ४६, ६०, ६१, ७२, ७७,  
७८, ६८, १००, १०३, ११२, ११८,  
११६, १२०, १६८, १७६; २. ४,  
८, १०, १२, ४०, ४३, ४३, ४६,  
६८, ६१, ६३, ६४, ६७, ६८, १४०,  
१४४, १४६, १४७, १६२, १६६,  
१७६, १७८, १८०, १८२, १८३,  
१८६, १८७, २००; ३. ८, ११, १८,  
१४, ४१; ४. २, १६, १७, १३,  
१४, २३, २६, ६३; ५. ४, ५, ६,  
१७, ४६; ७. १२, १२, ४३, ४६,

५१, ६६; ८. २, ७०; ९. २३, ३०,  
३५; १०. ८, ४४, ४६, ४८, ४३,  
६४, ७७, ८०, ८६, १०२, १४२,  
१४३; ११. ६; १२. १६, २०, २१,  
२३, २८, ३६, ४६, ६२, ६४, ६६,  
६८, ७०, ७१, ७२, ८१; १३. ४,  
११, १८, ४०, ४१, ६०; १४. ६;  
१५. २, ४, १६, १६, २०, २२,  
४०, ६०, ६४, ७६; १६. १४, ४३,  
४४; १७. ४, १६; १८. ६, ४७;  
१९. ४; २०. ३, ४, ६, १३, १४,  
१५, २४, ३४, ३६, ४६, ४७, ६०,  
६१, ६३, ६४, ६६, ६६, ७६, ८४,  
८१, ११६, १२८; २१. ४, ११,  
३६, ४३, ४६; २२. ७७, ७६; २३.  
४२, ६६, ७४, ८२, ८३, ८४, १०८,  
११०, १२८; २४. १०, १२, १३,  
२४, ३३, ४०, ४२, ४४, ४६, ६०,  
८३, १०८, १०९, ११२; २५. १,  
२, ८, ४३, ४४, ४६, ४३, ६३,  
७८, १००, १०३, ११४, १२६,  
१६६, १६८.

सवह-सामी १. ८, १६, ४८, ६६, १२०,  
१२१, १२४; २. ११, १६, १६,  
२१, ३१, ८७, ८८, ११४, १८८,  
२००; ३. १६; ४. २, ८; ६. ८;  
७. ४; ८. २४, ३२, ४०; १०. २२,  
१४३; १२. ४८; २०. १२, १४, ६६,

सरवन-[ \*Qlou-, श्रवण, श्रोण इत्यादि;

तु० Klou-nis = श्रोणि, श्रवे०

सञ्जोनि: Lat. clunis = जघन]

श्रवण=कान (तु० श्रवण=सुनना;

उ० शुनिषा; षं० सुनन; षं० सुणना;

सि० सुणण) १२. ३६; २३. १५५;

२५. १५२.

सरवर-सरोवर २. ५१, ५६; ४. १३,

२५, ३२, ३३, ३८; ५. १३, १४;

११. २४; २४. ६०; २५. १७३.

सरवरि-बरावरी १. ४३; २. १६८; १०. ७१.

सरसुती-सरस्वती १०. १२.

सरा-शर=शर की चिता=चिता ६. ५.

सराहा-सराहना=(शलाघा=शलाघा=

सराहा H. 185) ७. ६२; सराहना

की २५. ३७, १६७.

सरि-सादर्य=समता १. ४४, ११४,

१३१, १३५, १६६; २. ४, ५, १५८;

३. १६, ३२; १०. १६, ३१, ३२,

३३, ७२, १३७, १४४; १५. ६८;

१८. २५; २२. २४; २५. १५८;

सरित=नदी २५. १६.

सरिसरि-बरावरी २. ११६.

सरीर-शरीर ४. ६४; २४. ११२.

सरीरा-शरीर १८. १२.

सरीरू-शरीर १०. १४६; १६. ३; २३. ७८.

सरूप-स्वरूप २. ५७; १५. ६; २०.

७०; रूपसहित=सुन्दर २०. १४.

सरेखा-सलेख=श्रेष्ठ ८. ४६; सलेख

१२. १०, ६७.

सरोवर-सरोवर २. १८१; ४. १०; १६. १६.

सलारकादिम-मुहम्मद स्थानीय चार

मिर्गों में से एक का नाम १. १७१.

सलिल-पानी २२. ५३.

सलोनी-सलावण्य-सुन्दर (लोण्य=

लावण्य P. 154) ३. २; १०. ११०.

सलोने-सलावण्य=सुन्दर १. १७२.

सवैर-सरेख=याद करे ५. ७.

सवैरह-याद करता है १२. ६६; १५. १५१.

सवैरउँ-सुमिरउँ=याद करता है १.

१; २५. १८, १६०.

सवैरना-स्मरण ५. ८.

सवैरा-स्मरण=याद २५. १७.

सवैराह-स्मरण करा कर २३. ५८.

सवैरि-याद करके ८. ६; ६. १६; १६.

४२; २२. २४, २६; २३. ५२, ७०.

सवैरिआ-श्यामलक=काला १२. ७७.

सवैर-स्मरण=याद कर १५. १७.

सवा-सपाद २५. १०३.

सवार्द-सपादिका=सपादय; उ० सड-

याह; षं० सडया; हि० सपाया; षं०

सपा; म० सप्या १. १२७.

ससि-शशी=चन्द्रमा [शश, पा० सस;

Ohp. hano sa 33, hano] १. ६,

१२६; ३. १२, १४, ४३;

४६, ४७; ६. ११,

समुद्र-समुद्र १०. ४२; १५. २४.

समुद्रा-समुद्र १५. २६.

समेष्टि-समेष्ट कर १२. ६४; १५. १५;  
२४. ६४.

समेष्टेष्ट-समेष्टे से भी २१. २४.

संपुट-बन्धमुक्त (मंगूपा) २४. ८८.

संसकिरित-संरुद्ध; स० सङ्घ; प०  
भा० सङ्घ; यौ० सङ्घ (P. 76)  
२. ६५.

संसार-जगत् २. ८; १२. २१; १३.  
४८; १६. ४०.

संसाध-संसार ४. ३८; १०. ४४.

संसाध-संसार; सि० संसार; सि०  
सार १. १, ११, ४४; १६. ३०;  
२२. २४; २५. २५.

सञ्ज्ञान=सञ्ज्ञाना १. ८; ११. १०.

॥-सञ्ज्ञान ३. २४.

सञ्ज्ञानी-सञ्ज्ञाना=चतुर ३. ४६; १८.  
१२; १६. ४; २४. १५.

सञ्ज्ञाने-सञ्ज्ञान=चतुर १. २०; ३. ११.

सार-[√य, सार=सार √य हिता-  
वाम्; यय, √यय=ययना,  
किन्तु √य हितावाम् से संबद्ध;  
देखो MW. 924-93; √Kor-  
VWI. p. 410 Kor-432] ३.  
४४; २१. ११; सार-विना=वृत्त की  
विना २१. ४४, ४६; २३. १००, ११५.

सारण-सार्ण १. ४, ४४, ६१; २. १४६,

१८७; ४. ४०; ५. १६; ६. १७;

१०. ४, १६, १४६; १२. २२; १३.

४०; १४. ३, २०, २४; १५. ५, २५,

४४, ६१; १६. ४०, ४५; २०. १०८;

२१. १८, ४५; २२. २१, ६४, ४२;

२३. २०, १०२, १२६, १४५, १४६,

१४१; २४. १६, ११८; २५. १११,

१२३, १४३.

सारद-[Kol-शीत अनुभव करणा: सं०  
शिथिल; अवे सरेत; भा० फा० सार्द;  
तु० वै० शरद; अवे० सरेष्ट=वर्ष;  
ग्रो०स्मे० सार्द=ग्रीष्म (summer);  
भा० फा० सास=year; Lith.  
silus=August, Lat. calco-are=  
उप्य VWI. p. 430] अवे० सरेत;  
पद० सर्त; भा० फा० सार्द; बाबली  
शुर; यमी सर्त; अच० सौर; बलू०  
सार्द; डल० बलू० सार्थ; कुर्द सार;  
ग्रो०स्मे० शारद २४. ६०.

सारन-शरत् ४. २७; २२. १८.

सारनदीप-अवयदीप="मुन्दरी का  
कर्म" ["शरत् वाले खंडा को  
सारनदीप कहते थे। मृगोस का टीक  
मान न होने के कारण कवि ने  
सारनदीप खंडा और शिरद को  
भिन्न भिन्न माना है"] २. ५.

सारव-सर्व १. २०.

सारवदा-सर्वदा १. ४२.

सरवन-[\*Qlou-, श्रवण, श्रोण इत्यादि;

तु० Klou-nis = श्रोणि, श्रवे०

सश्रोनि; Lat. clunis = जघन]

श्रवण = कान (तु० श्रवण = सुनना;

उ० शुनिबा; ब० सुनन; पं० सुणना;

सि० सुणण) १२. ३६; २३. १५५;

२५. १५२.

सरवर-सरोवर २. ५१, ५६; ४. १३,

२५; ३२, ३३, ३८; ५. १३, १४;

११. २४; २४. ६०; २५. १७३.

सरवरि-बराबरी १. ४३; २. १६८; १०. ७१.

सरसुती-सरस्वती १०. १२.

सरा-शर = शर की चिता = चिता ६. ५.

सराहा-सराहना = (शलाघा = शलाघा =

सराहा H. 185) ७. ६२; सराहना

की २५. ३७, १६७.

सरि-सादर्य = समता १. ४४, ११४,

१३१, १३५, १६६; २. ४, ५, १५८;

३. १६, ३२; १०. १६, ३१, ३२,

३३, ७२, १३७, १४४; १५. ६८;

१८. २५; २२. २४; २५. १५८;

सरित = नदी २५. १६.

सरिसरि-बराबरी २. ११६.

सरीर-शरीर ४. ६४; २४. ११२.

सरीरा-शरीर १८. १२.

सरीरू-शरीर १०. १४६; १६. ३; २३. ७८.

सरूप-स्वरूप २. ५७; १५. ६; २०.

७०; रूपसहित = सुन्दर २०. १४.

सरेखा-सलेख = श्रेष्ठ ८. ४६; सलेख

१२. १०, ६७.

सरोवर-सरोवर २. १८१; ४. १०; १६. १६.

सलारकादिम-मुहम्मद स्थानीय चार

मित्रों में से एक का नाम १. १७१.

सलिल-पानी २२. ५३.

सलोनी-सलावण्य-सुन्दर (लोण्य =

लावण्य P. 154) ३. २; १०. ११०.

सलोने-सलावण्य = सुन्दर १. १७२.

सर्वर-स्मरेत् = याद करे ५. ७.

सर्वरइ-याद करता है १२. ६६; १५. १५१.

सर्वरउँ-सुभिरउँ = याद करता हूँ १.

१; २५. १८, १६०.

सर्वरना-स्मरण ५. ८.

सर्वरा-स्मरण = याद २५. १७.

सर्वराइ-स्मरण करा कर २३. ५८.

सर्वरि-याद करके ८. ६; ६. १६; १६.

४२; २२. २४, २६; २३. ५२, ७०.

सर्वरिआ-श्यामलक = काला १२. ७७.

सर्वरू-स्मर = याद कर १५. १७.

सवा-सपाद २५. १०३.

सवाई-सपादिका = सवाईय; उ० सउ-

याइ; वं० सउया; हि० सवाया; पं०

सवा; म० सवा १. १२७.

ससि-शशी = चन्द्रमा [शश, पा० सस;

Ohg. haso = B. haro] १. ६,

१२२; २. १२६; ३. १२, १४, ४३;

४. २६, २७, ३६, ४२; ६. ११,



समुद्र-समुद्र १०. ४२; १५. २४.

समुद्रा-समुद्र १५. २६.

समेदि-समेद का १२. ९४; १५. १५;  
२४. ९४.

समेदे-समेदने से भी २१. २४.

संपुट-बन्धुमुल (मेयूग) २४. ८८.

संसकिरित-संरुन; म० सखय; घ०  
मा० सखय; यौ० सखद (P. 76)  
२. ६५.

संसार-जगत् २. ८; १२. २१; १३.  
४८; १६. ४०.

संसार-संसार ४. १८; १०. ४४.

संसार-संसार; सि० संसार; सि०  
ससर १. १, ११, ७७; १६. १०;  
२२. २७; २५. ८५.

सयान-सजान = सयाना १. ८, ११. १०.

सयाना-सजान ३. २७.

सयानी-सजाना = सयुर ३. ४६; १८.  
१५; १६. ४; २४. ९५.

सयाने-सजान = सयुर १. ६०; ३. १३.

सर-[√स, सर=सर √स हिमा-  
याम्; शब्द, √सज = सजना,  
किन्तु √स हिमायाम् से संबद्ध;  
देखो *MAW. 926-95*; *√Kor-*  
*PAWI. p. 410 Kol- 432*] ३.  
४४; २१. ११; सर-विना = वृत्त की  
विना २१. ४७, ४८; २३. १००, ११२.

सराग-सर्ग १. ४, ७४, ६१; २. १४६,

१८७; ४. ४०; ५. १६; ६. १७;  
१०. ४, १६, १४६; १२. २२; १३.  
४०; १४. ३, २०, २४; १५. ५, २५;  
४४, ६१; १६. ४०, ४५; २०. १०८;  
२१. १८, ४५; २२. ४१, ६४, ७२;  
२३. ४०, १०२, ११६, १७५, १७६,  
१८१; २४. १६, ११८; २५. १११,  
१२१, १७१.

सरद-[*Kol-* शीत अनुभव करना; सं०  
शिशिर; अवे सरेत; आ० का० सरै;  
गु० वै० सरद; अवे० सरैम् = सर्प;  
ओस्मे० सरै = ग्रीष्म (*summer*);  
आ० का० साल = year; *Ldb.*  
*silus = August, Lat. calco-eris =*  
*उष्ण PAWI. p. 430*] अवे० सरेत;  
पद० सरै; आ० का० सरै; बारसी  
सुर; घमी सरै; अक० सोर; बलू०  
सरै; अक० बलू० सार्थ; कुर्द सार;  
ओस्मे० सारद २४. ६०.

सरन-सराय ४. २७; २२. १८.

सरनदीप-अवयदीप = "सुन्दरी का  
कथं" ["भारव बाजे चंका को  
सरनदीप कहने थे। भूगोल का ठीक  
ज्ञान न होने के कारण कवि ने  
सरनदीप चंका और सिद्ध को  
मिश्र मिश्र माना है"] २. ५.

सरद-सर्व १. २०.

सरददा-सर्वदा १. ४१.

सखी) ३. ३५; ४. ३, १०, २०,

४६, ७८.

साई—स्वामी; सामि; बं०, उ०, साईम;

सि० साई; म० साई (पति) ४. १८.

साँकर—[ तु० शृङ्खला = रज्जु;  $\sqrt{Kor}$ ,

संकल, संखला, सिखला; का० हाँहक;

उ० साँकल, साँकर; बं० शिकल,

सिकल; पं०, संगली; सि० संघर;

गु० साँकल ]  $\sqrt{K}$ , सङ्कर = एकत्री-

करण = तद्ग = कठिन १५. ५०, ५३.

साँच—साँचा १०. १००; २५. २४;

सच = सत्य १६. ४६.

साँचा—सत्य = सच ( P. 299 ); हि०

सच, साँच; पं० सच, साँचा; सि०

सचु, सचो; गु० साच; म० साच,

संचा; बं०, उ० साचा; सि० सस १.

६५; २३. ५.

साँझ—सन्ध्या; प्रा० संझा; पा० सञ्जा;

उ० साँझ; बं० साँझ, साँज; वि०,

हि० साँझ; पं० संझ; सि० संझो,

साँझी; गु० साँज; सि० संद १०. १०१.

साँटिआ—साँटिया = सौटेबर्दार १२. १७.

साँटी—सोटी = कुद्दी = सामर्थ्य १२. २०.

साँठि—चावल विशेष = द्रव्य = धन २. ११२.

साँठनाउ—नीरस (= नष्टसत्व) २. ११२;

साँठि = द्रव्य ७. ८.

साँती—शान्ति = संधि ( P. 275 ) २५. १४१.

साँबर—[ तु०  $\sqrt{Kom}$ , शम्बर, शम्बर

प्रयोग भी प्राप्त हैं; अर्थ के लिये

तु० सर्व शम्भ, साम्भ = एकत्र करना;

हिन्दी में तु० “सांभरना” एकत्र

करना = झाड़ू से इकट्ठा करना] मार्ग

के लिये संचित वस्तुजात १२. १८.

साँवरि—“संवल” = मार्गव्यय १३. २७.

साँवरन—श्यामकरण २. १२.

साँस—[ *Knos*, श्वे० सुषि; W. I. 226;

VWI. p. 474 ] श्वास १०. ११२;

१५. २०; २१. ४०; २२. ७४; २३.

१०७, १५३, १५७; २४. ७६.

साँसउ—संशय २०. ७४.

साँसहिं—श्वासे = साँस में १८. ५४.

साँसा—श्वास १. ३६; ६. ४६; १७. ७;

२२. ७५; २४. ३६, ८२.

साउज—शिकार के योग्य जीव; “भारकर

खाने योग्य जीव” सु० १. १३.

सापर—सागर; सायर; म० सायर; सि०

सयुरु = जनस्थान २२. ५४; २४. ११२.

साँकूतला—शकुन्तला = सौँदले

( P. 275 ) २१. १४.

साका—शक (संवत्) ६. ८; २४. २१.

साख—शाखा १. ७५; २४. १२०.

साख—शाखा [ *Goth. hoka; Arm.*

*Sax* VWI. 335 ] २. ३१, ३३,

१४६; ४. ३६; ५. ४, ३१; १०.

४६; ११. २१; १८. १६.

साखि—साखी २३. २३; २४. २४.

१७, १६; १०. ६६, ११४; १६. ६,  
१४, १६; १६. २३, ४१; २०. ११,  
६८, १०६, १२४; २२. ४; २३.  
१२७, १२६; २४. २७, ६६, ८०,  
८३, ११८; २६. ६८.

समिपदन—शशिवदन २४. ८४.

ससिपादन—शशिपादन, हिरण्य १८. ६.

ससिमुख—शशिमुख ४. ६१; ६. १२.

ससिरेखा—शशिरेखा=चन्द्रकिरण ४. ६२.

सगुर—[शगुर, शयू; भायू= \*Sagka  
ros, \*Sagkrā; Lat. sacer तथा  
sacerdos; Gotb. sacila तथा saci-  
lā; Ags. sacer तथा sacer  
इत्यादि] शगुर=सौहरा; सगुरा;  
सि० सगुरा, गु० समरो; म० सासरा;  
वं०, ड० सागर; सि० हुरा; तथा  
शयू=हि०, वं०, ड० साग; वं०  
सासु, सम्म, मि० सागु, गु० सागु;  
म० सागु, सि० मुद्रुष ४. १६.

सगुरद—सगुराद में ४. १३.

सदह—सदही है १. १०६; २. २३; ६.

४१; ११. १३; २२. २६; २४. १३, ६७.

सदई—सई १८. १४.

सदस—सदसाय १६. २४.

सददेऊ—सददेऊ=मुनिशि के कनिष्ठ  
भ्राता ७. ४७, ६१.

सदनाति—सदनाई बनाने वाले की  
छाँ=मेहरानी २०. १२.

सदय—सहयोग १२. २६, ३१.

सदयार्थ १२. ४३.

सदलगी—सदलम=साय अगा १२. ६६.

सदस—सदस; मा०, पा० सदस्य; का०

सास; वि० सहसर; सि० सहसु;

सि० दहसिप; दस, दाह १. १३; २.

१२, १३, ४३, १३०, १६४; १२.

६६; १४. २, ११; १६. ७३; १७.

१; १६. २६; २०. १२, १८; २४.

१२, ६४; २६. १६८.

सदसउ—सदपापि=सदछों ६. ३८.

सदसक—सदसक=हजारों २६. ११६.

सदसकिरण—सदस किरण १०. १८.

सदसन्द—सदछों ७. ७.

सदसर—सदस १६. ४३.

सदसदु—सदछों २०. १०६.

सदसदु—हजारों (से) २३. १६३.

सदस्तरपादु—सदसपादु १०. २६.

सदहु—सहने हो १३. २१.

सदा—सदह का भूल १६. १७; १६. ४६.

सदाई—सहाय=सहायक १६. ३०.

सहाय—सहायता २०. १३.

साहि—सदहर २. १२; सह १०. १४१;

साहो १८. २१, ३४.

साहिय—साहिये २४. १११.

साहियाक—सहायक=सहायक १६. ३.

सादेसी—सही; सही मि० सह; वं०,

हि० सादेसी (गु० म० सह, सय=

साधू-साय २३. ३५.  
 साध-साधता है ११.४०; साधा २३. १३४.  
 साधत-साधता १२. ३८.  
 साधना-सिद्धि २३. ३४.  
 साधव-साधोगे १२. २८.  
 साधहिँ-साधते हैं ३. ४८; २०. १०४.  
 साधा-सिद्ध किया १०. १०४; १६.  
 १४; २३. १३५; श्रद्धा=साध=  
 इच्छा १६. १६.  
 साधि-साधकर ३. ४४; श्रद्धा=इच्छा  
 १५. ३०; साधने १५. ७६.  
 साधी-साधा है १०. ४१.  
 साधु-समीचीन [तु० हि० साहु साहु-  
 कार, साउ (आदरणीय); पं० साऊ;  
 सि० साहु; गु० साहु, साउ; म०  
 साव, साउ; का० साहु] १३. ६४;  
 साधय=साध १८. ३२; साध=श्रद्धा  
 २२. ४०.  
 साधे-साधे हुए १०. ४३, ८२, ११७;  
 साधने से २३. ३४.  
 साधेउ-साधा १०. ८४.  
 सानि-शाण=सान, छुरी आदि पैताने  
 का [आ० फा० सान, अफसान, पाम,  
 प-सान  $\sqrt{koi}$  - VWI p. 454]  
 २. १०८.  
 सामा-श्याम; पा० साम १. १४.  
 सामुद्रिक-सामुद्रिक=अरु जलज से  
 शुभाशुभ बताने वाला शास्त्र ६. ३.

सामी-स्वामी ८. २६.  
 सामुद्रा-संमुख १०. ८४.  
 सायर-सागर १५. १; २३. ६६.  
 सारंगनयनी-कमल के समान नेत्रों  
 वाली २. ५६.  
 सारउ-सारिका, मैना; [ध्यान दो शर=  
 घास विशेष, शर=विविध वणों वाली  
 ( $\sqrt{शृ}$  अथवा  $\sqrt{शृ}$ =सृ;  $\sqrt{Karo}$ ;  
 तु० Lat. *caeculus* = गाढनीला  
 VWI. p. 420)] २. ३५.  
 सारस-प्रसिद्ध जलपक्षी २. ७०; २३. १४२.  
 सारा-सय १. ४६.  
 सारी-[शार,  $\sqrt{शृ}$ , पासा; शारि=  
 खिलाड़ी; शंस VWI. p. 410;  
 Ind. Stud. 15, 418; MW. p.  
 1001, 1109] पासा २. ११०,  
 १५७; साड़ी ( $\sqrt{सृ}$ , शरीर के चारों  
 ओर जाने वाली) ४. ३३; २०. १३,  
 २६; सवारी २०. ७०.  
 साल-[JB. 144; Kol., तीर; संभ-  
 वतः  $\sqrt{शृ}$  से] शल्य=तीर २४.  
 ६४, दुःख ७१.  
 साली-साल वी=पीड़ित की २४. १२८.  
 सावँ-श्याम ७. ३०, ४५; ८. ५४; १०.  
 २५, ६५, ८७.  
 सावँभुअंगिनि-श्यामभुजङ्गिनी १०. १२३.  
 सावँरि-श्यामली=काली ४. ४४.  
 सावकमुख-शावकमुख १४. १३.

साग्री—साघा ४. ४२; ८. २३, ३२;

१२. १६; २५. १११.

सागू—[√शक, शोक, शाह (शोह ?)]

शान्ता; गु० शान्ता; Goth, *hola*;

*Arm lex*, शक्य, शङ्ख; शक्ति=

बरादी; Slav, *socha*=घड़ी; Slav,

*ch*=Idg. *kh*, VVI. p. 335]

शान्ता १२. ६८.

साधो—साधनी=दुप १०. ४६.

साज—सानान १. ४८; २५. १०४;

सज्जन=तैयारी २४. ६.

साजह—सजने, सजपनि; सजेह; हि०

(सजना) साजना; पं० साजवा;

मि० मित्रिजाहू; गु० सजपुं; म०

साजपै; मि० सजेनश; (गु० साज्य=

सज, साज्य=शरफ्त) बनाना ११. ४८.

साजड—तैयार होघो १२. २१.

साजना—सजना १. ३८.

साजा—सजा २. ११, १२४, १८३, १८३,

१८६; ६. १; ६. २३; १०. २२;

१६. ४१; २०. ४; २४. ८; २५.

१०३, १२६, १४३; साज १. १०३;

सजाया ७. ४१; २४. १२६; सजा-

कर ८. ३३; सजाना=पूरा करना

१२. १००; सजाना ६ २३. ४६.

साजि—सजकर=बनकर १. ३२; १०.

११४, १२०; १२. ४, २१; २०.

१०; २३. ४६; २४. ६.

साजी—सजाई १. ८२; ३. १३०.

साजु—साज १५. ७२.

साजू—साज (तैयारी) १. १८; २. १०;

७. ४७; ११. ३६; १३. ९०; २४.

६; २५. २८.

साजे—सजाये २. ४१, ६२, १६२; २०.

६, ३६; २४. ११; सजे हुए २४. १४.

साडी—सार १५. २०.

सान—[सप्त, Lat, *septem*; Goth, *sibun*  
= E *seven*] प्रा० पा० सप्त; का०

सप्त; ड०, बं०, हि० सात; पं० सप्त;

सि० सत; गु०, म० सात; अवे० इत;

पह०, आ० पा० हप्त; बा० दुप;

ओस्मे० अप्त; ड० सप्त १. ७४;

२. ४, १३, १८६, १६२; ३. ३४;

१३. २०, १०; २२. ६४; २३. ११६.

सानड—सानों १. ६, १००; २. ८; १५. ८.

साता—सप्त=सात २०. १०६.

साय—साय=साय=साय (P. 293)

१. १०६; ३. ७७; ४. २६; ५. ४३;

१२. ४३; १३. २६; २०. २४;

२१. ३३, ४२; २३. ७२, १२८;

२४. ११६, १४०.

साया—साय ४. १४, ४३, ६१; १०.

१०८; ११. २३; १२. ४३, ९०;

१६. १३; २२. ३; २५. ४६.

सायी—साय देने वाला १३. ४७; १५.

३, ७६; २३. ३६; २४. १०.

साधू-साध २३. ३५.  
 साध-साधता है ११.४०; साधा २३.१३४.  
 साधत-साधता १२. ३८.  
 साधना-सिद्धि २३. ३४.  
 साधब-साधोगे १२. २८.  
 साधहिँ-साधते हैं ३. ४८; २०. १०४.  
 साधा-सिद्ध किया १०. १०४; १६.  
 १४; २३. १३५; धद्धा=साध=  
 इच्छा १६. १६.  
 साधि-साधकर ३. ४४; धद्धा=इच्छा  
 १५. ३०; साधने १५. ७६.  
 साधी-साधा है १०. ४१.  
 साधु-समीचीन [गु० हि० साहु साह-  
 कार, साउ (आदरणीय); पं० साऊ;  
 सि० साहु; गु० साहु, साउ; म०  
 साव, साउ; का० साहु] १३. ६४;  
 साधय=साध १८. ३२; साध=धद्धा  
 २२. ४०.  
 साधे-साधे हुए १०. ४३, ८२, ११७;  
 साधने से २३. ३४.  
 साधेउ-साधा १०. ८४.  
 सानि-शाण=सान, छुरी आदि पैनाने  
 का [आ० फा० सान, अफसान, पाम,  
 प-सान  $\sqrt{koi}$  - VWI p. 454]  
 २. १०८.  
 सामा-स्याम; पा० साम १. १४.  
 सामुद्रिक-सामुद्रिक=अज्ञ लक्षण से  
 शुभाशुभ बताने वाला शास्त्र ६. ३.

सामी-स्वामी ८. २६.  
 सामुहा-संमुख १०. ८४.  
 सायर-सागर १५. १; २३. ६६.  
 सारंगनयनी-कमल के समान नेत्रों  
 वाली २. ५६.  
 सारउ-सारिका, मैना; [ध्यान दो शर=  
 घास विशेष, शर=विविध बरों वाली  
 ( $\sqrt{शृ}$  अथवा  $\sqrt{शृ}$ =सृ;  $\sqrt{Kero}$ ;  
 गु० Lat. *caeruleus* = गाढनीला  
 VWI. p. 420)] २. ३५.  
 सारस-प्रसिद्ध जलपक्षी २.७०; २३.१४२.  
 सारा-सब १. ४६.  
 सारी-[शर,  $\sqrt{शृ}$ , पासा; शारि=  
 खिलाड़ी; शंस VWI. p. 410;  
 Ind. Stud. 15, 418; MW. p.  
 1001, 1109] पासा २. ११०,  
 १५७; साढ़ी ( $\sqrt{सृ}$ , शरीर के चारों  
 ओर जाने वाली) ४. ३३; २०. १३,  
 २६; सवारी २०. ७०.  
 साल-[JB. 144; Kōl-, तीर; संभ-  
 वतः  $\sqrt{शृ}$  से] शल्य=तीर २४.  
 ६४, दुःख ७१.  
 साली-साल की=पीठित की २४.१२८.  
 सावँ-स्याम ७. ३०, ४५; ८. ५४; १०.  
 २५, ६५, ८७.  
 सावँभुअंगिनि-श्यामभुजङ्गिनी १०.१२३.  
 सावँरि-श्यामली=काली ४. ४४.  
 सावकमुख-शावकमुख १४. १३.

सायौ—श्याम १६. ४७.

सासनर—[√शाम्=दिशाना; दु०  
शास्ति, शिष्ट; अवे० सास्ति=रहाता  
है; मं० शास्, अवे० सास्तर;  
सं० शिष्टि; अवे० सास्त्रन; Lat.  
causae = सं० शिष्ट] शास्त्र ३. ४०;  
२५. १४४.

सामु—अध ४. १३, १३.

सामुर—[दु० अदुर; पा० समुर; पं०  
सदुरा, सौहरा; मि० सदुरे; गु०,  
मं० सामरा; अवे० समुर; कु०  
सहरा; लकूर, मधीर] अदुराखप  
समुदाय ४. १३, १३, १४.

साहम—[√मह, दु० सहसा क्तिप्  
विशेष्य] ६. ४; १३. ३६.

साहि—साह १. ११४, १८०.

सिंहार—श्वार २. १०३; द. १; ३.  
३६; १०. १, २२, १६०; २०. ३,  
३, ३१.

सिंहारू—श्वार २. १६७, १२. ६०.

सिंहना—मिहना=मिहना २०. ६३.

सिंहगनन—मिहगनन १०. ११६; २०. १३१.

सिह—सीना=मिह २३. ११८.

सिह—शिष्ट ७. ४१; २५. ६३.

सिहभोक्त—शिष्टभोक्त २. ६६; ३. ४, १३.

सिहभोक्त—शिष्टभोक्त २२. २१, ३६.

सिहमात्र—शिष्ट का मात्र १६. १६.

सिह—[दु० शिष्टि; मिहना; हि०

सीसना, सीसना; पं० सिसना; सि०  
सिसनु; गु० शिसनु; मं० शिस्ते,  
शिस्ते] शिष्टा=सीस २५. ११०.

सिधर—[दु० दि० सेहरा; पं० सिहरा;  
का० शोरु; मा० सिहर; सं० शिसर=  
वर के सिर का मौड़ तथा पुष्पाव-  
लंस] शिर २२. ३४.

सिधाम्नोन्—शिष्टय=सिधायन ७. ११.

सिधायद्—शिष्टयति=सिधायता है १. १७.

सिष्टि—शिष्टा २३. ११.

सिष्टी—सीसी ७. ११.

सिष्टे—सीसे १. ८३; २०. १०७; २३. १८१.

सिग—श्वर=सिग, सीग; पं० सिगा; सि०  
मिग; गु० शिगा; मं० शिग, शीग;  
का० हेंग; सि० सिगु, सिगु, अह  
इयादि २०. ३६.

सिगार—श्वार २. १०३.

सिगाच्छार—पुष्पाविशेष २. ८४; ४. ९;  
२०. ३४.

सिगिनाद्—श्विनाद्=सीग के बाजों  
का नाद १२. ८१.

सिगी—श्वी=हरिय के सीग का बाजा  
१२. ९३.

सिह—सिह (P. 267, 405); मा० सीह;  
शापा सीह; का० सुह; हि० मिह,  
मिह, सीह १. ३१, ११७, १०२;  
१०. १४४; १३. ४६; १८. ६, ११,  
१७; २१. ११, १२; २४. ६, ११०.

सिधमुख—सिंहमुख १६. ३६.

सिधल—सिंहल २. ६७, १६५; ८. १४,  
३५; ६. १३; ११. ३६; १२. ६६;  
१३. २७; १६. १२; २३. ३.

सिधलगढ—सिंहल का किला २. १२१;  
२०. ११३; २२. ६४.

सिधलदीप—सिंहलदीप १. १८६; २.  
८, २००; ३. ३, ८, २३, २८; ६.  
७; ७. १; ८. ६; ६. १०, २५;  
१२. ४०; १३. १५, २३; १५. ५०;  
१६. २८; २०. ३.

सिधलदीपी—सिंहलदीपीय = सिंहल-  
दीप के २. ६८; ७. ४३; १०. ६३.

सिधलदीपु—सिंहलदीप २२. ७२.

सिधलनगर—सिंहलपुरी २. ८६.

सिधलपुरी—सिंहलपुरी २५. १, १६७.

सिधलरानी—सिंहलराज्ञी २०. ६५.

सिधला—सिंहले १०. ६५; २२. ११.

सिधली—सिंहल के २. १३, १५६, १६२,  
१६५; ७. ४२; २३. २८, ३६; २४. १२.

सिह—शेर २. १३२.

सितें—तें=से १५. ६१.

सिदिक—सिद्दीक १. ६०.

सिद्दीक—सिद्दीक १. ६०.

सिद्धन्ह—सिद्धों ने १. १७३.

सिद्धहि—सिद्ध के २२. ४२, ४३.

सिद्धि—[ तु० सिध्यते; सिज्मह; हि०  
सिम्, सीम्; पं० सिज्म; म० शिज्यें,

शिक्कणें = पकना, तु० सिव्यते; पा०  
सिज्जति ] १. १५६, १७३; २. ४७;

६. ७; १२. ५, ८; २०. ६१; २२.  
४१, ४२, ४८, ६०; २४. १, २, ३,  
४, ७, ८, २८, ३२, ४३, १४५,  
१५५; २५. १०४; सिद्धि १३. ५६.

सिद्धि—साधना ११. ४०; १६. ११;  
१६. ७२; २२. ४४; २३. १, १७८;  
२४. १४४.

सिद्धिगोटिका—सिद्धिगुटिका २३. १.

सिध—सिद्ध १२. ६; २१. ४६; २४. २५.

सिधार्ई—सिधारी (सिधु गत्याम्) २०. ६१.

सिधार्ई—गई २३. ८७.

सिधारा—गया २४. ६८.

सिधावउँ—जाऊँ १३. १५.

सिधि—सिद्धि ६. ४; १२. ५०; १५.  
७३; १६. २६; २३. २.

सिधिसाधक—सिद्धिसाधक=अष्टसिद्धि  
के साधने वाले २. ४८.

सिर—[ √Kor—शिरस्; Arm. sar =  
ऊंचाई; Lat. cerebrum; Ohg.  
hirni = दिमाग ] शिरस्; सिर,  
सि० सिरु; म० शिर, शीर; अवे०  
सरो; पह०, आ० फा० सर; वा०,  
संग०, मि० सर; अफ०, बलू०, कु०,  
ओस्ते० सर १. १२६; २. १६,  
२५, ६३, ८८, १३३, १७३; ७.  
७२; ६. ४१, ५३; १०. ७८, ६४,



१२८; ११. ११; १२. २, ७; १३.  
 २६; १४. २४; १६. १४; १७. १;  
 १८. १६; २१. ८, १०, १४, ४३;  
 २२. १०; २३. १४, ८०, १४४, १८०;  
 २४. १२, ४८, ४९; २५. १८, १०२.  
 सिरजना—[सजन, विमर्जन=बनाना;  
 पु० सं० विघ्नम्=विघ्नं पु० मंत्र  
 (राजना), धुम्के √विह्वम्=विघ्नम्]  
 बनाना १. ३२.  
 सिरमौर—शिरोमयूर=मिरमौर=सिर  
 पर मोर के पंखी टोपी २. १४.  
 सिताया—श्रीतयेन्=टपटा करे २१. ७.  
 सितरी—[Kital] श्री=रोषी=झांझ  
 कुन्नी २. १००.  
 मिदीर्यमी—मीपक्षमी=ससम्पन्न पक्षमी  
 १६. २१; २०. १.  
 सितरीमुकुलामोली—श्री.मुकुलामोली=  
 कबली श्री मुकुलामोली १०. १०४.  
 मिसिटि—गिटि १. ८२, १०१, १२०;  
 १. १; १२. १६.  
 मीम—मीम=मिर १७. १.  
 मुँ—सं ४. ४०.  
 मु—मी=बह २. ६०.  
 मुम—दृक्=मुमा=मुग्गा ७. १६.  
 मुमर—मोले से ३. ६४; ४. २३, ४१;  
 ७. ३७; १६. ११; २३. २४, १०३,  
 १०४, १४२, १४४; २५. ६४.  
 मुमटा—दृक्+मा=मुमता=मुग्गा

४. १६, २४, ४०; ८. ८; २५. ४१.  
 मुम्रांस—मांस=सांस २३. १०२.  
 मुय्या—युक्; हि०, पं० सुया; पु० युयो;  
 म० मुया, मुया; सि० मुय २. १४;  
 ३. १७, १६, ४७, ४६, ६०, ६१,  
 ८०; ४. १, १०, १०, ११, ४०;  
 ७. १७, २०, ४०, ४४, ४८, ४६,  
 ४०, ६६, ६७; ८. ४, ४, ६, ६,  
 १७, २१, २४, २६, २६, ११, १४,  
 ४७, ४१, ६४; ९. ४७; १०. ४१,  
 ४२, ४४; १२. ४८, ४७; १५. ७१;  
 १६. १; १६. ४८, ६४; २१. २७;  
 २३. ७१, ८२, १११, १४१, १६२;  
 २५. १४८, १६०.  
 मुकुयाँरा—मुकुमार १०. १२२.  
 मुकुयाँरी—मुकुमार २. १६४.  
 मुक्क—मुक्क ४. ४; १६. ८.  
 मुल—मुली १. २२, ४६; २. २२; ३.  
 १७, ६६, ७०; ४. १६, १७; ५. ११,  
 ४१, ४६, ४८; ७. १६; ११. २१,  
 २८, २२, १६; १२. ११, ६०; १३.  
 २७, ६१; १६. ७, १०; २०. ७,  
 ११६; २१. ६; २२. ४१; २३. ७४,  
 ७७; २४. ११६, १२०, १२६.  
 मुलपक्ष—मुल पक्ष राग ८. ४८.  
 मुसादी—मुसामि=मुसामे १. ११०.  
 मुसिमा—मुली ११. १२; १३. ११.  
 मुली २. ६१; २३. ६६.

सुसुमना—सुसुम्ना=नासिका के दोनों  
स्तर २३. १४७.  
सुगंध—सुगन्ध १. १६४; २. १८२; ६. १३.  
सुगंधकाउरि—सुगन्धकावली=गुल-  
बकावली २. ८३.  
सुगंध—सुशब्द २. ६, ८८; ८. १५; ६.  
१२, २२, २८; १०. ५३, १५२;  
२०. १२, २८.  
सुगुरु—श्रेष्ठ गुरु १. १६०.  
सुजानू—सुज्ञान=जानकार ३. ६२.  
सुति—सुष्ठु=उत्तम (शुद्ध=सुष्ठु;  
सुष्ठु P. 303) ७. ६, ८, ३०; ८.  
४०; १२. ६३, ८४; २२. ६८; २३.  
३३, ६४, ७२, ७८, ७९, २४. ६४, १२५.  
सुदबच्छ—सुदेववत्स २३. १३२.  
सुदरसन—सुदर्शन सुन्द २. ८६; ४. ४;  
२०; ५२.  
सुदिगंबर—जिनका दिशा ही वस्त्र हो=  
परमहंस, नाङ्गे आदि २. ४६.  
सुदिसिटि—सुदृष्टि १७. ८.  
सुधि—शोध=सुध=खयाल=खबर  
२०. १०१; २१. १; २२. ६०; २३. १००.  
सुनइ—सुनना ७. ७२; १०. ७६; २४. १०५.  
सुनउँ—सुनूं १. ६७; २३. १२०; २५. १६.  
सुनत—श्रवण=सुनते [Klou-, सुनता;  
Lat. inclutus; अवे० सुनतश्रोति  
सुत; सं० श्रोत्र=अवे० समोत्र=  
गीत; Goth. kliuma = श्रवण;

अवे० समोमन=वै० श्रोमत VWI.  
p. 494] ३. ४०, ५६; ७. ४८; ८.  
१६; १०. ७३; १४. ६; २३. ४१;  
२४. ६७, ६६.  
सुनतहि—सुनते ही ११. १; २३. ७६.  
सुनव—सुनेगा १२. ८६.  
सुनहु—सुनो १३. १३; २२. २०; २५.  
३६, १०६.  
सुना—सुनइ का भूत १. ६०, १८८;  
२. १०; ३. ३३, ५७; ५. ११; २०.  
१०५; २३. ७६, १७७; २५. १२२,  
१३७, १४१; सुनता है ७. ५४.  
सुनाई—सुनावइ का भूत २५. ४५.  
सुनाउ—भावय=सुनाओ ३. ५८; १२. ३३.  
सुनावत—सुनाता २३. ७२.  
सुनावहिँ—सुनाते हैं १. ६५.  
सुनावहु—सुनाओ ७. २३.  
सुनावा—सुनाया २३. १५४.  
सुनि—सुनकर १. ६६, १८४; २. १०७,  
१५२; ३. ५६; ५. ४६; ७. ३३,  
४०; ८. १८, ४१; १०. ७५; ६.  
१७, २१, ३३; १०. २४; ११. ४६;  
१२. ५२; १३. १०, १७; १४. १६,  
२५, ३३, ३५, ४६; २०. ६७,  
१२२; २१. ५६; २२. १२, ४१;  
२३. २५, ७६, १६१; २४. ६, १५३;  
२५. २६, ३७, ४७, ६२, ६६.  
सुनी—सुनइ का भूत, स्त्री० १. ६२,

१११; ३. २७; २०. ६७; २५. ६२.

सुनु-सुनु=सुनु ३. २०; ११. ११;

१२. १००; २१. ११; २३. १११;

२५. ६४, ६०.

सुने-सुने का सूत्र २. १६२.

सुनेडे-सुना १८. १८.

सुंदरि-सुन्दरी २३. १२.

सुप्र-सुप्र=सुप्र २३. १४७.

सुपन-सुपन=सुपन १२. २१.

सुपारी-सुपारी २. १२; २०. ४४.

सुपुद-सुपुद=सुपुद १५. २७.

सुपेनी-सौमिनी=सौने योग्य १३. २.

सुपल-सुपल २१. २७; २५.

१४८, १६०.

सुपामना-सुपामना=सुपाम २०. १६.

सुपामिक-सुपामिक=सुपामिक १६. १६.

सुपाम-सुपाम=सुपाम २. २०.

सुपिद-सुपिद=सुपिद १६. २६.

सुप-सुप=सुप १०. ४०; १८.

१४; सुप=सुप १८. १२.

सुपार-सुपार १. १४८.

सुपारि-सुपार २. ११०.

सुपति-सुपति १८. ४२.

सुपदे-सुपदे=सुपदे २. ४२.

सुपदे-सुपदे=सुपदे २. ४२.

सुपेद-सुपेद १. १११, ११६;

११. १६; १८. २१; १६. २४; २७.

२१; २५. ६२, ६६.

सुमेरु-सुमेरु ११. २६.

सुर-सुर=सुराज; पं=सुरा; सि=सुरा;

सु=सुरा; म=सुरा; का=सुरा २.

१०७; १०. ७४; २०. २६; देव=

महादेव २३. ११२; देव ३. ४७;

सुरा=सुरा १३. २४.

सुरंग-सुरा=सुरा २. ८१; सुन्दर

वर्ष के १०. ८१, ८२; २०. २१.

सुरंग-सुरांग २. १६८; सुन्दर वर्ष

की २. १४; १०. २७; सुरा, साव,

सुत मांग; बं=सुरांग; सि=सुरांग

२४. ११२.

सुरत-सुन्दर त १. १०१; त्रित में

सुन्दर त हो ४. ७.

सुरसरि-सुरसरि=सुरा २२. ४.

सुर-सुर १५. १६.

सुराग-सुराग=सुराग २४. १०६.

सुरागनि-सुरागनि=सुरा की सग १५. १६.

सुरागे-सुराग=सुराग २१. १२.

सुराममति-सुरा के सपामक सैरागी

२. ४४.

सुरिसेसुर-सुरासीरर=सुरासीर में

से २. ४४.

सुरसुर-सुर के सुर १. ११२.

सुरज-सुरे=सुरा (P. 254), सुरा;

सा=सुरा; दि=, पं=सुरा; मि=

सुरा, सुरा; सु=सुरा, सुरा; मि=

(६) १६२. १११; ३. १०; ६. ४;

७. ७१; ६. ३५, ३६; १०. १२,  
१८, ६१, ६६, १५८; ११. १; १४.  
१५; १६. २०; १८. ३१; २०. १२५,  
१३४; २३. ७४; २४. ५६, १३७,  
१३८; २५. ६२, १६६.  
सुरूप-सुन्दर रूप १. १२७; २. १६५,  
१६६; ३. २८; ६. १३; २२. १६.  
सुलभस्वने-सुलभ २३. १६०.  
सुलगाइ-सुलगाता है ११. ५४.  
सुलगि-सुलग कर १६. ४७.  
सुलतान-सुलतान १. ६७, १८७.  
सुलतान-नाम १. १३६.  
सुलेमाँ-सुलेमान=एक यहूदी बादशाह  
१. १०२.  
सुहेला-सहेला=सहल=सरल १६. ८.  
सुँड-शुण्ड; पा० सोण्डा; हि० सुँड;  
पं०, बं० सुँड; सि० सुँडि; गु० सुँड;  
म० सौँड २५. ११०.  
सुआ-शुक=सुआ=सूआ ३. ५८; ८.  
४०, ४२; ६. १; १०. ५०; १८.  
३६; १६. २, ६०; २३. ५२, ७१.  
सूक-शुकप्रह १. १६३; १०. ५०; २५. ६८.  
सूख-शुष्क; प्रा० सुक्ख, सुक्क; पा०  
सुक्ख; का० होख; हि० सूखा,  
(P. 302) सुक्का; पं० सुक्खा, सुक्का;  
गु० सूखो; म० सुखा, सुका; अवे०  
हुरक; प्रा० फा० उरक; पद०, आ०  
फा० सुरक; का० उक्क; वा० वक्क;

अफ० बुच; यलू० हुशघ २३. ८०.  
सूखि-सूख ५. ११; २४. ६०.  
सूखी-सूखइ का भूत २१. ४.  
सूक्त-शुध्यते=सूक्ता है ५. ५२; ८.  
२७; २०. १०४; २३. १७१; २५. ३५.  
सूक्तइ-[√शुध्=\*K̄eu (प्रकाशित  
होना) \*K̄u-dh; शुन्धति, (घोता  
है) शुध्यति (धुलता है) शिजन्त  
शोधयति (अवे० सुदु); K̄eu-bh-;  
शोभते, शुभ्र, शोभन, शुभ्र=Arm.  
surb (पवित्र) VWI, p. 386]  
शुध्यते=सूक्ता है २. ६५; ५. ५३.  
सूक्ता-सूक्तइ का भूत १. १६३; १०.  
८५; ११. ५१; १३. ४४; १६. ३८.  
सूक्ति-सूक्त १. ८४; ६. ४०.  
सूक्त-सूक्ता ७. ५.  
सूत-सूत्र; पं०, हि०, बं०, उ०, म०  
सूत; सि० सुद; गु० सुतर; सि०  
सुत; नापने का मान (दो सूत का  
एक पैन और चार पैन का एक इंच)  
१०. ४७; १२. ३७; १८. ५१; २५. २२.  
सूतहिँ-सूत ही १०. ४७.  
सूतहि-सूत २५. २२.  
सूती-[शेते; अवे० सप्टे √Koi; शया  
=शय्या, शान, भ्रमशान; शेव=प्रेम  
करना इत्यादि VWI, p. 359]  
शेते=सूतइ का भूत २०. १२२.  
सूधी-शुद्ध; हि० सुध, सुद्ध; पं० सुद्ध,

मुदा; मि० मुभि; गु० सूवं; म०  
मुदा, मुपा, मि० मुदु, दुदु; का०  
मोद ८. ४४.

शून—[√Kee, रिब, व्यवते, शवम (शक्ति);  
शवीर (=शवीर=शक्ति); शून=  
शून्य दुष्मा (शून्य दुर्ग वस्तु भीतर  
से रिक्त होना है इसलिये शून का  
अर्थ शून्य अर्थान् रिक्त); Arm. sin  
(रिक्त), sor (विद, का० शून्य);  
soul (विद); Lat. carus (रिक्त),  
concerna (विद); दे० V VII, pp.  
365-367] शून, शून्य=मुब, मुबण,  
मुबज, शून्या; म० मुना; गु० शूनं;  
सि० मुन; मि० मुन, हुन २३. २६.

शून्या—शून्य ११. २२.

शूर—अच्छाओं की जाति विशेष १. ६६,  
१०४, १११; शूर्य (दे०, पा० शूर)  
१. ११२; २. १०४; ३. २१, २०;  
८. २४; ६. १२; १६. ४१, ४४,  
२६; २०. १०६, १०२; २३. १२,  
११६, १६१; २४. १२०; २५. २६,  
१०, १०१; शूर १५. २०; २१. २१.

शूरा—[दे० शूर्य; गु० शूरा = शूर्य,  
शूर्य; भाषू० \*Steel, Lat.  
Ail, Gold, steel (शूर्य); O-r.  
112 (शूर्य)] शूर्य, पा० शूरिय २४.  
१६; २५. १४, १२०.

शून्यवीर—शून्यवीर का मुद्रा १. १००.

सूरा—[√श] शूर अर्थे० सूरा १.  
६६; १५. १; शूर्य २. १२६.

सुरि—[दे० सुब; पा० सूब] सूरी=  
कासी ११. ४४.

सूरी—सूरी २३. १०१, १०२, १०४;  
२४. ४२, ११४, १२५; २५. १, २,  
१२, ४१, ६०.

सूयज—सूर्य ३. १०; १६. ११, १४;  
२०. १११; २३. ६१.

सूरु—सूर्य ६. १७; २४. १०१; शूर  
२५. ६.

सैंतष—समेझी, इकट्ठा करेगी २०. १६.

सैंति—सैंती=से १४. ६; २४. २१.

सैंदुर—सिन्दूर=सैदुर; आमा० सैदुर,  
सिदुर; बि० सैदुर; सि० सिधुव

१०. ६, १०; २०. १४, २२, ६२,  
७०, ७७; २३. ६७.

सैंदुरलेह—सिन्दूर भूमि २०. ६४.

सैंदुरा—शार्दूब १३. ४६.

सैंदूरु—सिन्दूर १०. १२.

सैंधर—सैंध ११. ४४.

सैंधि—सैंध २२. ६२, ६३, ७१; २३.  
४, १०६, १०८, १००, १०४; २५. २०.

सेरझ—मेरा करिये १६. १७.

सेर—मेरा करके २३. १६६.

सेउ—सेरझ २. ७६; सेवा १८. ४०.

सेपई—मेरा की २३. ११.

सेष—सेष १. १४६, १४७, १४४, १४१.

सेज—शय्या=सेजा (P. 284); हि०  
सेज; उ० सज्या; गु० शेज, सज्ज;  
म० शेज ७. ५२; १३. २; १८. २;  
२३. ७५.

सेत—[Queit, Arm. *setk* श्वेत] अवे०  
स्पष्ट; पह० स्पेत; आ० फा० सिपेद;  
इस्पेद; का० अस्वेद; सरि० स्पइद;  
अफ० स्पीन, स्पेर; कु० इस्पी, स्पी;  
(तु० छि छटो; लहंदी चिट्टा; का०  
चोट; हि० चिट्टा) १. १४; २. ६८,  
१६३; १५. ६.

सेता—श्वेत ६. ४३; ११. ६; २४. ६३.

सेति—से ११. २५.

सेती—से १३. २.

सेन—सेना (√सि बन्धने) अवे० हणुना  
१. १०६.

सेरसाहि—शेरशाह बादशाह १. ६७,  
११२, १३१, १३६.

सेवँरि—वै० शिम्यल = सिंघली = शा-  
हमली; जै० प्रा० संबिल; पा०  
सिंबली; उ० शिमिल, शिमुल; बं०  
शिमुल; हि० सिंबल, सेमर; पं०  
सिम्लल (ळ); म० साँवर; गु०  
सिमलो; सिं० हंबुल ८. ५३; ६. १;  
२१. २७.

सेव—सेवा ७. ६४; १२. ४५.

सेवई—सेवा करता है १३. ८.

सेवक—सेवा करने वाला ३. ६८; २४.

२०; २५. १२८, १४७, १४६, १५४.

सेवती—पुष्प विशेष २. ८५; ४. ५;  
२०. ५४.

सेवरा—साधु विशेष; [“जो भांति भांति  
की लीला रचते हैं, मद्य को वृध  
बनाकर पी जाते हैं”] २. ४८.

सेवहि—सेवे १७. १३.

सेवा १. १५३; ३. ७१, ७४, ७५; ५.  
१८; ८. ५०, ६७; ६. १४; १०.  
१६, ६६; १२. ३६; १७. ४, ५,  
१३; १६. ६३; २०. ७६, ८६; २१.  
२५, २६; २३. ५७; २४. १४०;  
२५. १३१, १४६, १५२, १५४.

सेवाति—स्वाति नक्षत्र २३. १४१.

सेवातिहि—स्वाति को १३. ८.

सेवाती—स्वाति १८. ३३; २३. १४०.

सेसनाग—शेष नामक सर्पराज २२. ३.

सोँ—से ७. ४८; २४. १३४.

सोँधा—सुगन्धित द्रव्य २. ११४.

सोँधई—सुगन्धित द्रव्य ८. १६.

सोँधा—सुगन्धक; मागधी सुग्रंधण=  
सोंधा (H. 84) २. ११४.

सो १. ४०, ४६, ५०, ५४, ५५, ५६,  
५६, ६६, ८०, ६१, १२०, १२६,  
१४२, १५२, १६०; २. २, ३, ६,  
२६, ६४, ६५, ६८, ७२, ६१, १०१,  
१२४, १३१, १३८, १५२, १७१;  
३. ४, १२, १६, २५, २६, ३०,

१४, ४२, ६५, ७१, ७७, ८०; छ.  
 १, ४, ५, १६, १८, ४४, ४७, ५२,  
 ५७; छ. १६, १७, २१, ४६, ५०,  
 ५६, ६२; छ. ५, ८; छ. २, १२,  
 २७, ३६, ४६, ६२, ६६, ६७; छ.  
 ४, १६, १६, २६, ३२, ४०, ४६,  
 ५१, ६२; छ. ७, ११, १८, २१,  
 २४, २८, ३०, ४६, ४८, ५२, ५४;  
 छ. १२, १२, ५२, ६२, ६७, ७४,  
 ७६, ८१, ८६, ८८, १११, ११५,  
 १४१, १४६, १५१; छि. १, ११,  
 १५, १६, १८, ३०, ३१, ३२, ३८,  
 ४०, ४१, ४६, ५४; छि. २०, २७,  
 ३८, ४६, ५८, ६४, ६८, १०४;  
 छि. २१, २२, ३६, ४०, ४६, ५०,  
 ५५; छि. ६, १६, १७; छि. ७, ८,  
 ११, १५, २८, ३४, ४७, ५१, ५६,  
 ७२; छि. ६, १७, ४०, ४२, ४८;  
 छि. ८, १०, ४६, ४६; छि. २,  
 ८, २३, २४, ३८, ४६, ४८, ५१,  
 ६२; छि. १, ८, ४१, ५२, ५३, ६१,  
 ६४, ६५, ६७, ६८, १०४, १०६,  
 ११८, १२१, १२६, १२२; छि. २,  
 ५, ८, १६, १८, १८, २१, २१,  
 २६, २८, ३४; छि. ८, १२, १३,  
 १६, २०, २१, २६, ६४, ७१, ७४,  
 ७६; छि. ५, २४, २६, ४१, ५२,  
 ६६, ८६, ८१, १०२, १०६, ११४,

१२२, १२७, १५१, १५८, १६५,  
 १६८, १६८, १७५, १७७, १७८;  
 छि. ५, २१, ३२, ३६, ४६, ४६,  
 ५२, ५३, १०६, ११७, १२०, १२१,  
 १२०, १२८, १४१, १४२, १४४,  
 १४७, १५०, १६०; छि. ४, ८,  
 १२, २१, ६३, १०८, ११७, १२३,  
 १२६, १२६, १५०, १५५, १६०,  
 १६६, १७०.

सोयई—सोते हुए २३. १२६.

सोयत—सोता ११. २१.

सोयहि—सोते हैं १३. ४.

सोयहु—सोते हो २. १४२.

सोझा—सो गया २०. ८७; २१. ११;  
 २४. ७५.

खोह—खोसवि=बहं मी १. ४१, ४७; २.  
 ११; छ. ४८; छ. २४, ३२; छ.  
 ११, ६३, ६४; छि. १७; छि. ५६;  
 २०. ८६; २१. १०, ११; २२. ४६,  
 ४८, ८०; २३. १६२.

खोई—खोस का भूत पट्ट ३. १६.

खोई १. २४, ७६, ६६, १६४; २. १४१,  
 १६८; ३. ७१; छ. ५२, ७१; छ.  
 २६; छि. २, ४२; छि. ६१, ६६,  
 ८१, ८७; छि. १८, ४७; छि. १४,  
 ४६; छि. ४७; छि. ४२; २०. ८७,  
 १०८, ११२; २१. ४२; २२. ७७;  
 २३. २०, ११७, १२६, १४६; २४.

१, २०, २७, ३०, ४२, १०६, ११५,  
१४१; २५. २०, २३, १३३, १३८,  
१५१, १७५.

सोड-वह भी १. ११४, १३५; २१.  
८; २५. ७०.

सोऊ-वह भी १०. १८.

सोग-शोक (√शुच्; तु० सञ्जोक)  
५. ८.

सोच-[Kouk-शुच्=प्रकाशित होना,  
शोचना; तु० शोचति, शुच्यति,  
शोक (दुःख), शुचि (चमकदार=  
पवित्र); शुक्र=तेजस्वी; शुक्ति; अवे०  
सञ्जोचत (=ज्वलन्); आ० फा०  
सोख्तन (ज्वल्); सोग=शोक;  
अवे० सुखर; आ० फा० सुख=रक्त  
VII, p. 378] चिन्ता १४. १६;  
२४. ३८.

सोचू-सोच ३. ७८.

सोत-स्रोत २०. १०६; २३. ८६.

सोतहि-स्रोत से २३. ८६.

सोती-स्रोत १०. १४.

सोधा-शुद्ध किया २५. २२.

सोन-सुवर्ण; का० सोन; उ० सुना,  
सोना; हि०, पं० सोना; सि० सोनु;  
गु० सोनु; म० सोने १. ११६;  
शोण पुष्प २. ७१, १००; ८. ४०;  
सोनइ-सोने के २. १५४, १८५; ३. ८;  
८. १६; १६. १४, ४३; १६. २१.

सोना-सुवर्ण ३. ३६; ८. ६; शयन  
७. ३६.

सोनार-सुवर्णकार > सोणार\*सोणार=  
सुणार = सुवर्णकार (KZ. 34,  
573); व=उ=ओ, यथा अंसोत्थ,  
अस्सोत्थ, आसोत्थ=अश्वत्थ (P. 74,  
152; H. 72) अ+आ=आ, अंधार=  
अन्धकार; कंसाल = कांस्यताल (P.  
167; विस्तार के लिये देखो P. 66)  
८. ५५.

सोनारि-सुनारिन २०. २१.

सोनिजरद-पुष्प विशेष २. ८५; ४. ६;  
२०. ५२.

सोने-सुवर्ण २. ५५.

सोभा-शोभा १०. ५४, १५३, १५८;  
१६. ३७.

सोभाओन-स्वभावेन=स्वभाव से १०. ७०

सोरह-पोडश; प्रा० सोलह; पा० सोलस;  
सोरस; उ० सोहळ; वि० सोरह; हि०  
सोलह; मज० सोरह; पं० सोलां;  
सि० सोरहं; गु० सोळ; म० सोळा;  
सिं० सोलस २. १२, १६४; १२.  
५२, ६६; १६. २६.

सोहइ-\*शोभति; पै० प्रा० सोभति; पा०  
सोभति १०. १०४, १४६.

सोहराई-[रा० च० सहाराई]=सुहराती  
थीं; कण्डूयन करती थीं १२. ५३.  
सोहा-शोभित हुआ ३. ४५.



सोदाह—सोभित होवे ई २. ६०;

सुदती थी २०. २.

सोदाह—सोभायमान २०. ६१.

सोदाह—सोभित २. २०, ५७; २१. ३.

सोदाह—सोभित हुए १. ११; २. २२.

सोदाह—सोभाय = (सुदह = सुभय

P. 231) ८. २०, ६१; १०. १६;

२०. ११, ११६,

सोदाह—सोदाह से ३. १६.

सोदाह—(सुभाह=सुभाह) २३. १२२.

सोदाह—सोभाय ८. २१; सोदाह

१६. ११.

सोदाह—सोभायमान २०. २१.

सोदाह—सोभायमान=सुदाहना २.

१६; ७. ४६.

सोदाह—सोभित २. ६१; ७. १७, ४४;

१०. १२१; १६. ७६.

• श्याय—[*Asm. scop* (अम्भकार, काका)

*Ham. scop. Barb. sic. Agr.*

*Lauren* (सीका) = *E. Lauren*;

*Gold. alman* = *E. shine*]

श्याम, श्यामक, अथवा श्यामक=

कर्म विशेष, शाम=काका; (श्याम

त *Bartholomae, Order, d. Iron.*

*PAU. I. 35*); श्याम=श्याम; अथवा

श्याम; श्याम=श्याम, श्यामक; श्याम

का=श्याम; का=श्याम; श्याम=

श्याम २३. १०६, ११०.

श्याम—श्याम २३. ७०.

श्याम—श्याम १. ६०, ६७; ७. २४;

१०. ८६, ८९; १२. ६; २६. ११६.

ह.

हंकारि—हंकार=हंकार करके ४.

४१; १. ४८; हंकार करके=हंकार

कर ११. २०.

हंकारी—हंकारी ८. २०; २०. १, १२२.

हंकारेसि—हंकार २३. २२.

हंस—हंसी है, हंसति, हंसह, हंस;

हिं=हंस; पं=हंस; सिं=हंस;

गुं=हंस; मं=हंस; हंस; सिं=

हंस; कां=हंस २४. ४७.

हंसत—हंसते ८. ४; १०. ७२; २०. १२१.

हंसतामुखी—हंसत बदन २. ६१.

हंसति—हंसती हुई ४. ६४.

हंसहिं—हंसते हैं १६. ७८.

हंसा—हंस का भूत १. १०४; ८. ६;

२०. ८६; २६. २, ८, १२, ४७.

हंसि—हंस, हंसक २. १०६; १६. ४,

४; २०. ४०; २२. ११; २६. ११, १४१.

हंसी—हंस का भूत १०. ७०; हंस

२४. ४८; २६. १२०.

हंसे—हंस दिवे १४. ६.

हई—हँहि = सन्ति = हैं २५. ३८, ४०.

हइ—है १. ५४, ६२; ५. १६, २४, २७,  
४५; ७. ३२; ८. ८, २१; ९. ४८,  
५०, ५६; ११. १२, १६, ३३; १२.  
१८, ८२; १३. २४; १८. ५६; १९.  
२२, २३; २०. १३६; २१. ५५,  
६४; २२. २१, ६४; २३. २२, ३२,  
४०, ८२, १२०, १६०; २४. ३४,  
८६, १०६, १२८; २५. ४, ५६, ७२,  
९३, १६०.

हउँ—हूँ १. १४४, १६०, १७६; ३. ३२,  
६६, ७६; ७. ६, १६, २४, ३१,  
६४; ८. ७, २४, ५६, ६६; ९. १०,  
१४, २५, ३६; ११. १६; १२. १६;  
१३. ३२, ३५; १४. २१; १५. ६१;  
१६. ३२; १७. ७; १८. २४; १९.  
२१, ४८, ६२; २०. ७६, ८०, ११०,  
११२; २१. ३८, ४०, ४१, ६३,  
६४; २२. २२, २४, २६, ३२, ७७;  
२३. १७, १८, ११५, १२३, १३६,  
१३७, १४४, १५६, १६८; २४.  
४३, ४५, ४६, ५६, १५७; २५.  
२४, ५४, ६०, १२८, १४६.

हजरत—हज़रत १. १५७, १५८.

हठ—अनुरोध २२. ६६.

हडावरि—अस्थ्यावलि = हड्डियों की  
माल २२. २.

हत—आसीव = या ७. २.

हतउडा—हथौड़ा २. ६६.

हता—था ५. ४०.

हति—थी ७. ११.

हतिआ—हत्या ७. ३४; ८. ३२; १९.  
५१; २०. ११२, ११४; २२. २, ६,  
३६, ४०; २३. ४३.

हतिआर—हत्यारा १०. २६.

हतिआरिनि—हत्याकारिणी २०. ११४.

हते—थे ९. १०.

हतेउ—मार ढाला २१. ४२.

हथ—हस्त = हाथ २३. ५६.

हथोरी—हस्ततल = हथेली १०. १०७.

हनहिँ—मारते हैं २. ६२.

हनि—[हन्ति, हनन; हणइ; हिं हनना;  
सिं हणणु; गुं हणणुं; मं हणणें]  
मार कर २५. ८२.

हनिवँत—हनूमान् ११. १३; २४. १०६.

हनुवँत—हनूमान् १२. ८६; २१. ५७;  
२३. १६२; २५. ६७, ११६, १२२.

हनुवंत—हनूमान् २२. ६; २४. ७२;  
२५. ३०.

हनू—[ वैं हनु; Lat. gena = डाढ़;  
Goth. kinnus = Germ. kinn =  
E. chin; Oir. gin = मुख ]  
हनूमान् २०. १२७.

हने—[ √हन, घन = मारना; भायू.  
\*Guhon; अवे = जहन्ति = मारना;  
Lat. de-fendo = to defend ]

हया *of-fendo*; Ohg. *gundea*;  
 Agl. *gūl* = बुद्ध ] १०. ४५.  
 हंस-[*Ühans*; Lat. *anser* \**hansor*;  
 Iool. *hks*, Lith. *sasis* VWI.  
 १. ५३६] प्रा०, पा० हंस; हि० हंस,  
 हॉय; ति० हंसु; वि० हस २. ४४;  
 छ. ४१, ६४; झ. १०; १३. ३४;  
 १५. ४८; २४. १२७.  
 हंसगति-हंसगमन २०. १६.  
 हंसगार्विनी-हंसगामिनी २. ४६.  
 हस-(*सरमहू* न) ३. २१; छ. ११; ४.  
 २८, ३६, ३४; छ. २३; १०. २१;  
 १२. ४६, ४६, ६०, ८३; १३. ११;  
 १४. ७, ८; २०. १८, ३६, ८६, ८६;  
 २४. १६, २१, २३; २५. १०७,  
 १०८, ११३, ११६.  
 हसरे-हसारे २५. ११३.  
 हसहिं-४. २३; १२. ४२.  
 हसर्तु ४. ४६; २३. १४४.  
 हसर्तु ४. ४०; १२. ४२.  
 हमार-हमाग २. ००; ३. २१, ३१; १४. ८.  
 हमाग १३. ११.  
 हमारी २५. ६.  
 हय-[*Ühā* = घोड़ा; हा० हयगण =  
 घोड़े हाथी] १. १०६.  
 हर १. १६.  
 हार १. १६; १०. ६४, ६८; ११. ८.  
 हारव-[*Ühara* = हार; अने अर्थवाचक;

*zafē-zafē*; Lat. *horrea*] २४.  
 १५, ६०.  
 हरदि-[*हरि*, *हरित*, *हरिण* (पीछा) के  
 साथ संबद्ध; भाषू० \**Ühol*; गु० Lat.  
*helcus* (पीत) *holus*, (गोभी); अने०  
 अहरि = हरित; Agl. *goolo* = E.  
*yellow*] हरिद्रा; हरिहर, हसरार;  
 हि०, अ०, उ० हलदी; अ० हलुद;  
 अ० हलदी, हलद; पू० हि० हर;  
 गु० हलद, हलदर; म० हलद; का०  
 खेराद (पीत) झ. ६१.  
 हरदि-हारे हि २. ११२.  
 हरा १. १०१.  
 हारि २४. ८६.  
 हरि-[*Ühā* =, *हरि*, *हरिण*, *हरिण*,  
*हरिण* आदि] झ. ११; ११. २०;  
 १७. ७; २४. ८४, ८६; २५. १८.  
 हरिमर २. २१; ६. १६.  
 हरिवेद १६. ६.  
 हरिगतेउरि-अवर्षा २. ७७; २०. ४६.  
 हरी १२. २०, ६७; २४. १०२.  
 हयम-अपु; हलम; हि० हलमा; गु०  
 हल, हलवे; म० हल, हलम (JD.  
 ४६, १४५, १६७) १५. १७.  
 हरे २. ११३, १०१.  
 हलोरा १५. ४२.  
 हमति १. १०, १४, ४४; २. १४६,  
 १६३; १८. १८, १९; २३. १८,

३६, २७; २४. ४५, ४६; २५.

११०, ११२, ११६.

हसतिन्ह २. १६८; २५. ११४.

हसती २. १३, १६६; २२. ३.

हहिँ ७. ४३; ६. १३; १२. ८४, ६६;

१५. १६; २४. १८; २५. ४८, ११३.

हहु ७. २३; २३. १३, १४.

हाँका—हाँका=हुक्कार=प्रवार २१. ५८.

हाँका—हक्कयति; हक्कड़; हि०, गु०, मं०

हाँक—; पं० हक्क—; म० हाँकयें,

हाकयें, हकयें १२. ८६; १५. ६७;

२०. ११३.

हाँसुल—कुमैत, हिनाई घोड़ा, मेहदी के  
रंग का, जिसके पैर कुछ काले हों  
२. १७०.

हा—हा हा ११. १८.

हाजी—शेख हाजी १. १४५.

हाट—[तु० हाटक=सुवर्ण; हरि के साथ

संबद्ध; Goth. *gulth* = E. *gold*]

सं०, प्रा० हट्ट; हि० हाट; पं० हट्ट,

हाट; सि० हट्ट; गु० हाट; म० हट,

हाट; बं० हट, हाट; का० अठ २.

६८, १०३, १०५, १२०; ७. ५, २७.

हाटा—हट्ट=बाजार २. ६७; ७. १०, २८.

हाटि—हाट.में ७. १८; ८. २२.

हाड—अस्थि; अट्टि; “हड्डम् अस्थि”

(दे० 193, 13); हि०, गु०, म० हाड;

सि० हड्ड; पं०, बं० हाड, हड्ड; का०

अडिजु; सि० अट १५. ३७; २३.

११०; २५. २३.

हाडहि—हाड को २५. २३.

हातिम—मुसलमानों में विख्यात दानी

१. १३०; १३. ५४.

हाथ—[Ghasto; वै० हस्त, अवे० कस्त;

आ० फा० दस्त] प्रा०, पा० हत्थ;

आ० हाथ; का० अथ; उ० हात;

मं० हात; पं० हत्थ; सि० हथु; म०

हात; सि० अत १. ४०, १०२,

१२०, १३७; २. १०७, १११; ४.

५६; ५. ३७; १०. १२०, १५६; ११.

२४, २६, ४८; १२. ३६; १३. २३,

३२, ५६; १५. १२; १८. २८; १६.

१३, ३६; २०. २४, ४७, ५६; २१.

८, ३२; २२. ७२; २३. ११, ३०,

७२, १२८, १३६; २४. ७७, १३०;

२५. ५०, ५३, ५७, ७८, ८२, ८७.

हाथा—हस्त; कस्त; छि दोस्त=हाथ

४. १४, ४५, ५१; १०. १०८; ११.

२३; १२. ४३, ६७; १६. १५; २२.

५; २५. ४६.

हाथी—हस्ती=हत्थी; हि०, पं०, गु०,

सि० हाथी; बं०, उ० हाती; का०

होस्तु; सि० अता; म० हत्ती

१. १४३; २३. ३६; २४. १७.

हाथू—हाथ १६. ११; २३. ३५.

हानी—[√हा; \*Ghe (i) और Ghi =

शून्य होना (सं=विहायत्=छाकाश),  
सं० निहीते=प्रग्यान करना; Obg-  
g-m, g-m; A. १२, g-m-g-m (हानि);  
Gold g-m-les] हानि, हान; सं०  
हाय; मि० हायि; का० होनि (हु०  
हि० तेरी होयी छायाई=मुसीबत  
छायाई) ७. १२.

हार-माछा ४. ४३, पराजय ४. ४२, २१,  
२२, ११; ७. १४; १०. १०४; २०. २९.

हारा-हाल, दीनता २. ३८; पराजित  
हुया ४. ४३; माछा ४. २०; हार  
गया २४. १०१.

हारि-हारते हैं २. १११; हार कर १०.  
१४४; २४. ८९.

हारिल-लोहे जैसा, हरे रंग का वषी,  
जो टूट्ठी पर मही उतरता और  
बद पीतल तथा पाटल पर रहता है  
२. १८.

हारी-हार गई ८. २०; २३. १३; हार  
२३. ४४.

हारु-हार ४. २१; १२. ६०.

हारे-हार गये ३. ४०, ८. ७२; १०. १०१.

हानि-"हानिं पक्षिणम्" (दे० १३६,  
१६) "हानिपक्षिणं शीघ्रार्थम्" (३७३,  
१३); हि० हाना, हावना; सं०  
हाना; मि० हाना; गु० हावतु;  
म० हावते (JL ४७); हिक्की है  
२. १९८.

हाले-हिक्के २४. १२.

हिं-ही २४. ४६.

हिं डोरी-हिंडोला ४. १०.

हिं डोल-हिन्दोल; हिं डोला; मि०  
हिं डोरो; गु० हिं डोलो; म० हिं डोला,  
हिंडोला; सं० हिं डोला; सि० हिंडोला  
४. ४०.

हि-ही १. १०४.

हिय-[पै० हदय, हृदय और धवे० मेरे दा  
याद Lat. *hara* (धर्म) के साथ  
संबद्ध देखो KZ. XL 419)] हदय,  
हियस, हियस (P. 250); पै० मा०  
हियसक पा० हदय; धा०, उ०, मि०  
हिया; हि० हिया, हिरदा; सं० हिया,  
हिरे; मि० हिं धावे; म० हिया,  
हिये १. ९०, १८०; २. १२८; ३.  
४६; ७. ६८; ८. २०, ७०; १०.  
४२, १४१; ११. २१; १३. २४;  
१४. २२; १५. ७४; १६. १२, २७,  
४४, ५३, १०७; २३. २१; २४.  
१३, १२, २२, २९, १००, ११३.

हिये-हदय (ने, से, मे) २. १२८;  
१८. २०; १६. १, ९, ७, ४२; २४.  
१८, ८१; २४. ४, ७३.

हियार-(ने, से, मे) १. ११८; ३. ९,  
९३, ९२, ७३, ७८, ४. १२; ४.  
२९; ८. ११, २२, ४१; ९. ७, १४;  
१०. १११; १३. २, ४२; १५. १,

२०, २३; २१. ८, १६, ४०; २३.

६४, ११८; २५. १३७, १४१.

हिआ—हृदय २. १४३; १०. ७२, १०८,

११३; ११. २४; १३. ४०; १८. १५;

२१. ५६; २२. ५४; २४. ५१; २५. १४२.

हिआउ—हृदय १५. ८०.

हिआऊ—हृदय १६. ३६.

हिण—हृदय में ३. ६४; ५. ४४; ११.

१२; २३. ७७.

हित—हितकारी २०. ११८.

हितू—हित २०. ११५.

हिंदू (सम्भवतः सिन्धु के साथ संबद्ध)

१. १८८.

हिरदइ—हृदय ७. २१; १२. ८; १५.

७; २३. ८३, १६७.

हिरदहि—हृदय के २३. १६०.

हिरामनि—हीरामणि शुक्र १०. ५१.

हिरिकाइ—हिरूक=निकट=पास सदा

ले; १०. ५३.

हिलगि—हिलग कर, निकट होकर (तु०

हिलगना; म० हिलगणें) १२. ६४.

हिलोर—लहर ४. ३२; १०. ३६; १४. ५.

हिलोरा—हिलोर १०. ३६; ११. ४.

हीँछा—इच्छा ३. ७१; १६. ४८; १७.

८; १६. २२; २०. ८०, ८७.

ही—ही २१. ३२.

हीआ—हृदय १. १३८; ३. ७; १३. ४६.

हीँछि—इच्छा करके २०. ८१.

हीन—[√हा, Gha (i), तु० हानि,

अवे० क्कामि=मैं छोड़ता हूँ] त्यक्त

१२. ४६.

हीर—हीरा ४. ६४; १६. ३८.

हीरा—जवाहर २. १०१, १८७; ३. २१,

४६; १०. ५६, ६५, ६७; १५. १०,

७८; २५. १६४.

हीरामनि—शुक्र का नाम ३. ३७, ४६,

५०, ५४, ७४; ७. ६४, ६५, ६७;

८. ४२; ६. १४, १७, १६; १५.

४६; १६. ४१; १६. १, ३३, ५६,

६१; २३. ८१; २४. ११३, १२७,

१२६, १३७; २५. ४२, ४३, ४८,

१३१, १३७, १४५, १६१.

हीरामनिहि—(को, से) २४. ६६,

६७; २५. १३६.

हुत—धा (से=पंचमी विभक्ति के लिये

प्रयोग पुहुमि हुत=भूमि से) १.

५४, १६०; ३. १०; ५. १६; ७.

२५; १०. २६; १५. ७२; २०.

१०३; २२. १६, ५१, ५२; २४.

१११, १२१; २५. ७३, १२६.

हुतई—से २५. १३८.

हुता—था १. १३६.

हुते—से ८. ४३.

हुलसइ—उल्लास करता है ३. ४६.

हुलसहिँ—हुलसते हैं ४. ३४.

हुलसि—उल्लासित होकर १०. ११६.

हुतास-उत्तास २. ११; १५. ४४; २०. २.

हुतासा-हुतास २. ४०.

हुतास-हुतास २३. ४५.

हुत-हुता=होताइत २३. २.

हु-संशोधन में २४. ८६.

हुट-हुता १०. १५, ४१.

हुट-हुता १०. १५, ४१.

हुट-हुता १०. १५, ४१.

हुट-हुता १०. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

हुट-हुता १०. ४१; २०. ४१; २३. ४१.

१५, २१, २२, २६, ५१, ७२, ७३,

११२, ११८, १२६, १४१, १४५,

१४०, १७१; २. ६, १२, १४, १६,

४१, ६२, ६७, ७८; ४. १५, ४५,

४८, ६१; ५. १४, २४, ४४, ४७,

४६; ६. ५, ६, ७; ७. १, २४,

२७, ६०, ७०; ८. १७, १८, २१,

२४, २६, २९, ४८, ६९, ६४; ९.

२, १७, २९, ३४, ३५, ३७, ४८;

१०. ४, १५, १६, २०, २६, ७१,

१०४, ११८, १२७, १२९; ११. १,

४, ६, २८, ३७, ४०; १२. ५, ६,

१०, २४, ६१, ६४, ६६, ८६,

८०, ८६; १३. १७, १८, ४०, ४१;

१४. १०, ४०, ४१, ४५, ५१,

५५, ६४, ६७, ७४, ७७; १५. १६,

२६, २८; १७. १, १२, १३, १६;

१८. ७, ८, २०, २६, ४१, ४४;

१९. १, ७, २७, २८, ३४, ४७,

५०, ६०, ६८, ७१; २०. ४, ७,

१०, २०, ६२, ७२, ८१, १११,

११४; २१. १०, ११, १६, १७,

२२, २४, ३८, ४७, ४८, ५२, ५८;

२२. २४, ४१, ४८, ५१, ५२, ५३,

६६; २३. ५, १०, २०, २६, ४४,

४५, ६७, ६८, ८१, ८५, १०४,

११६, ११८, १२२, १२७, १२८,

१३१, १३२, १४०, १४१, १४४,

१४८, १४९, १६२, १७६, १८२;  
२४. १४, १६, १९, २३, २५, २६,  
३२, ३६, ५५, ५८, ६१, ६२, ६३,  
७२, ७७, ८७, १०४, १०६, १२५,  
१३३, १४२, १४७, १५४; २५.  
१३, १५, २४, ३१, ३३, ४०, ८६,  
९१, ९२, १०८, ११५, १२६, १४२,  
१६३, १७४.

होइहइ—होगा १२. ४०; २४. १८.

होइहि—होगा १. ८८; ७. ३७; १२.  
३४, ३७; १३. १७; १४. १६; १६.  
२६, ३१; २०. ३६, १३३; २२. २८.

होइही—होगा १. १३६; ४. २४.

होई—होता है १. २०, ३६, ४७, ५३,  
७६, १३१, १६४; २. ११६, १४३,  
१५१, १५८; ४. ४६; ७. ६३; ८.  
६०; १३. २३, ५६; १५. १४, २२,  
३०, ४५, ५८; १६. ४७; १८. २२,  
३३; १९. २७; २०. ३५, ६३, १०८,  
११६, १३२; २१. ५५; २३. २६,  
११७, १२६, १४६; २४. २०, २७,

३४, ११७, १४१; २५. २३, १३८.

होईं—( मैं ) होऊँ ११. ५५; १२. ८;  
१३. १६; २०. १११; २१. ४५;  
२३. २१, ५१, ६६.

होउ—होवे २४. १६०.

होऊ—होवे २३. ४३.

होण—होवे ६. १६; १६. ३७, ४८; २१.  
१७, ५०; २५. १२६, १३६, १४७, १४८.

होत—होता १. ८४; २. ३४, १८६; ५.  
३६; ७. ३८, ५६; ८. १६; ११.  
४८; १२. ३८; १३. १; १५. ४८;  
१६. ४७; १८. ३४; २१. ६४; २४.  
१८, १२८; २५. १०७.

होता—( अभविष्यत् ) १४. १६.

होति—होती २२. ७२.

होनी—कर्म, भाग्य ३. २; उत्पन्न होनी;  
३. ३०; कर्म ६. २३.

होव—होंगी १२. ४२, ६५.

होय—होता है २. १६; २४. २६, १५५.

होहिँ—होते हैं १. ७५.



# परिशिष्ट

सूची ४४ संख्या

अदार = अराज = आरे = नुकीले	७
अधारी = आधार = "बुलबुल के घड़े के आकार का एक ठांचा जिसके सहारे साधु बैठते हैं"	७
उपारि = उत्पन्न; उमर = उदती है	११
कचउरी = कटोरे	११
करती = करीब (दपलों की भाग में शरीर को सिंघाना तब समझा जाता था)	११
किलकिला = "जख के ऊपर मण्डली के लिये मेंढकाने वाला एक जलपक्षी"	४४
कुत्तार = लोइकर	४६
कौट्यानी = लाह का रस	४९
कटिना = डेर लगाती है	४४
काजू = शोत्र "गुर का बिगड़"	४४
काद = लहर	७७
कायद = की	१११
कानि = काव (१. १७.)	११६
किरचि = चतुरा होकर	१२४
केद = केन (On. केचि)	१२६
मदारे = भावा (पर्वगमदारे = विदियों के भावे में)	१०१
मटा = "पीप"	१२२
मीड = मीन (१.६)	१४६

## SELECTED BIBLIOGRAPHY.

- Sir George Grierson. (A) Analysis of Padumāvati. JRASBe.  
(B) The Padumāvati. Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1911.
- Paṇḍit Rāmjasan Padamāvat, Benares.
- Paṇḍit Bhagavān Dīn. Padamāvat. Allahabad, 1923
- Paṇḍit Rāmacandra. Jaisi Granthāvalī, Indian Press, Allahabad, 1924.
- Candrabali Pāṇḍeya, पदमावत की लिपि तथा रचनाकाल. Nāgarī Pracāriṇī Patrikā, Benares. Vol. XII. pp. 101-145.
- जायसी का जीवन वृत्त Nāgarī Pracāriṇī. Vol. XIV. Part IV. pp. 383-419.
- M. M. Gaurī Śaṅkara Hirāchand Ojhā. पदमावत का सिंहल दीप Nāgarī Pracāriṇī Patrikā, Benares. Vol. XIII, pp. 13-16.
- Lālā Sītā Rām. Malik Mohammad Jaisi, Allahabad University Studies Vol. VI. Part I. pp. 323-347.
- Pitāmbara Datta Baḍāthvāl. पदमावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद Dvivedī Abhinandana Grantha, pp. 395-401.
-

## OTHER WORKS BY THE SAME AUTHOR

A History of Hindi literature, with a critical study of the Major Poets. It clearly explains the contribution of Hindi to Word literature and gives a full and detailed survey of literary tendencies and movements, an account of development of literary forms, a narrative of the origin of the language and a consideration of foreign influences both on language and literature. Rs. 3—12—0

Rktaṇtra, a Pratiśākhya of the Sāmaveda, critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices, a commentary and Sāmvedasārvaṇukramāṇi. The notes contain a detailed comparison with the other Pratiśākhyas and Pāṇini. Rs. 20—0—0

(Vol. IIIrd. of Mehar Chand Lachhman Das Sanskrit and Prakrit Series)

### IN PRESS

Kaṭha Brāhmaṇa. The Brāhmaṇa fragments printed by L. Von Schroeder and Caland have been improved upon with the help of new Mss. and several new Brāhmaṇas added with an introduction, notes and appendices.

Etymological Word-index of Tulasī Rāmāyaṇa.

(Panjab University Oriental Publication)

### SHORTLY TO BE PUBLISHED

Atharva Pratiśākhya, with commentary critically edited with an introduction, exhaustive notes, appendices etc.

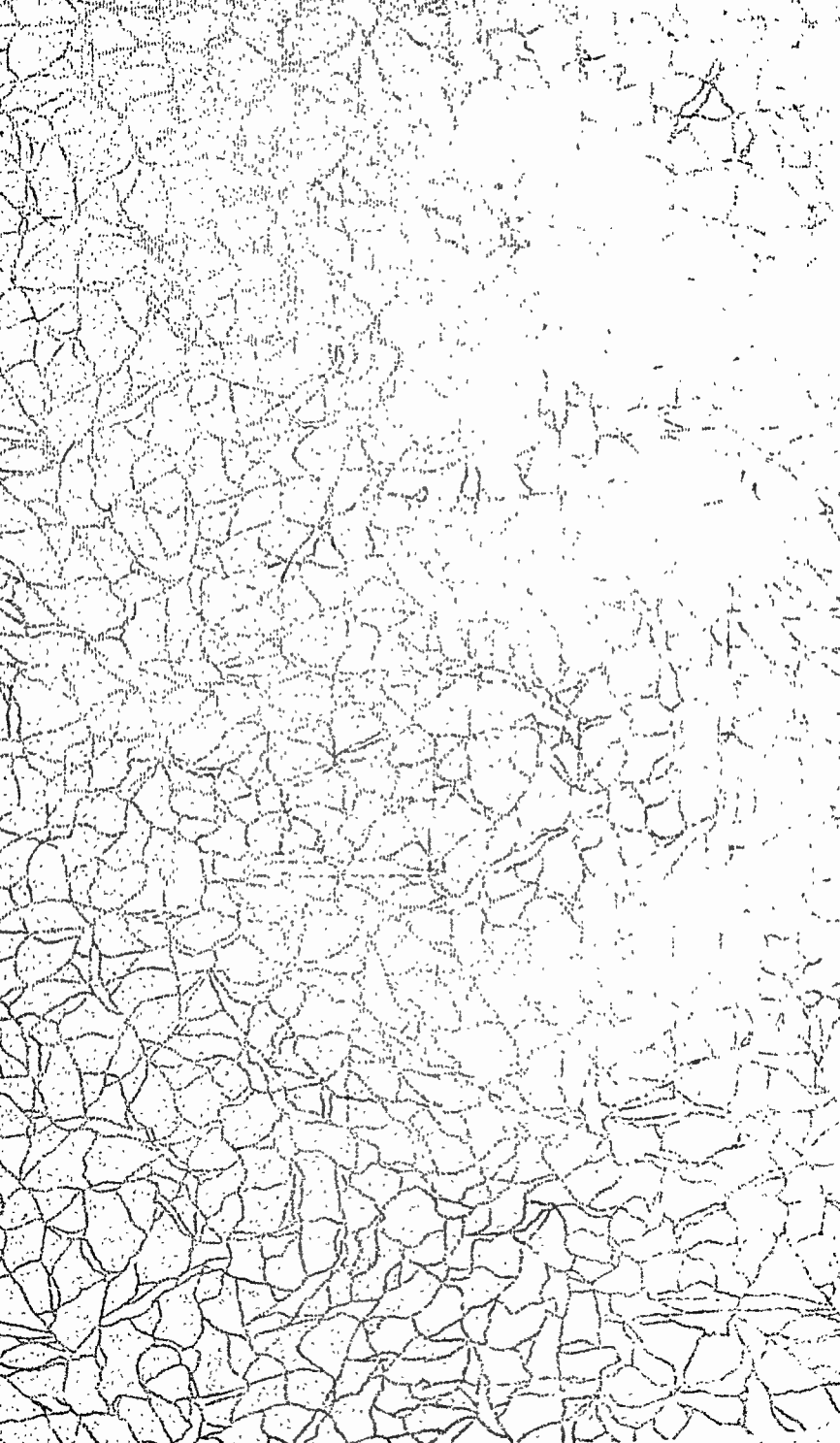
PUBLISHED BY—

M<sup>r</sup>S. MEHAR CHAND LACHHMAN DAS

Oriental Bookellers, Publishers & Printers

LAHORE (India)





कंचनपुर—कञ्चनपुर २३. १३३.

कंचनरोख—मुखरोखा १०. ११.

कटक—कडग—दल—सेना—समूह २. ११;

१२. ७२; १३. ११, १६; १४. २७.

२८, २४. १७; २५. ३२.

कटहरि—कटफल—कटदिकल—कटहर—

कटल २०. ४२.

कटाउ—(✓कल—कल—कट) कटाव—काट

काट का करने के लिये वस्तु की रचना

२. ६६, १८६.

कटाव—कटाव—कडवत—कनसिया (कट+

कचि—देही दहि) २. १०६; १०. ८३.

कटार—कटार—कटारने वाला कप, मि०

कटारो; दे० कटारी धुरिका २५. ८२.

कटारी—कटार २. ६२; २५. २०.

कटिन—कटिन; म० कटीय, कटीय, गु०

कटय; मि० कटनु. ५. ३६; ७. ४.

६. ४१, २०. ११. ७, २८, ३३.

३६, ४३; १३. १६, ४१, १५. २४;

१८. २०, २८; १६. २६; २४. ६७,

१०६.

कटार—कटार—कटिन १०. २७.

कटार—कट—कटार—कटारी; म० कट; गु०

कट, मि० कटो; मि० कटु २५. १२६.

कट—कट—(✓कटि गती “केचिनु हस्तिने

मन्वा पुमि क्ते कटर्तात्मादि कट-

लि” मि० कौ० व्या० म० कट—४२६)

मि० कटो, पं० कटो; मि० कटु,

वि० कटो—कट; १०. ११२.

कंठ—गला; मि० कंठ; मि० कट १. ६८;

७. ३०, ३१, ४५; ६. ४७; १०.

१०४; १२. ६; १६. २; २३. २५,

७५, १०६, १०६.

कंठ—कण्ठ—गले में २२. ३.

कन—कनः—कप० कडाम—कपों १८. ३८.

कनहुँ—कहीं पर २. ११७, ११६; ८. १;

१३. ३८; २०. ७८, ११२.

कनहुँ—कहीं पर २. ११६, ११६, ११८.

कदम—कदम—कडव—कदम २. ८३; ४.

७; २०. २४.

कदलिराम—कदले का रस—कदलि—कदलि

(६-३-अ P. 265) १०. १०६.

कप—कपानी १. ८, १४६, १८६; २.

११६; ३. २; ७. ७१; २०. १२२;

२३. ७६.

कपे—कपन से—कदले से ११. ४१.

कनर—कप की; कथिथ—कप की कपी ।

गु० म० कपी, काल (कप का दाना);

गु० कप, कपी, कपु; मि० कपी,

कपि; हि० कन १६. ११.

कनर—मुख २. २६, ६८, १०६; ३.

४६; ६. १२, १६; १०. १६, २२,

८६; २३. १२१; २५. ६६, ११६.

कनरकलम—मोने के कलमे २. ६१.

कनरकलम—मुखकलम—मोने का कलम

१०. १०६.

कनकपानि—सोने का पानी (—जवानी की पाण) १८. ३८.

कनकसिला—सोने की शिला २. १३५.

कनहारा—कर्णधार—पतवार को पकड़ने वाला १. १४२.

कनिआ—कन्या ३. ६, १६; कन्याराशि ३. २०.

कनिक—कनक—सोना १०. ११३.

कंत—कांत—पति—(√कम्—√चन्; हस्यत्व के लिये देखो P. 83) ८. १३, ३०, ४८, ६३, ६६; १२. ४१; १८. ८.

कंथा—कथरी (तु० Lat. centon; O. H. G. hadara; Germ. hader) ११. ४५; १२. ३०, ६४; १३. ५८; २३. ६०, १६७.

कंसासुर—कंस—कृष्ण का विरोधी असुर १०. २८.

कंसू—कंस २५. ५१.

कपूर—कर्पूर—कप्पुर; सि० कपुर०; तु०, सि; पं, हि०, बं, ओ० कपूर; फा०—काफूर २. ५०, १०२, ११४, १८२, १८७.

कपूरू—कर्पूर २. १४६.

कपोल—कबोल—गाल २. १०६; १०. ८३, ८८.

कपोला—कपोल १०. ८१.

कब—कदा ११. २२; २३. ५६; २४. ७६.

कबहुँ—कभी ३. ८०; ८. १७; १६. ३.

कवि—कवि—कह [√कृ—√स्कृ; तु० पह०

कह; फा० कह Lat. cav-ere (—सावधान होना); Germ. schauen; As. sceawian (—देखना); Eng. show]

१. १५६, १६१, १६६, १७७ १८५, १६०; ७. ४७; १२. ८०.

कवितन्ह—कवित्त—कवित्त बनाने वाले कवि १. १७६.

कविलास—कैलास—कहिलास अथवा कैलास—(तु० चहर वैर; कहरव—कैरव; P. 61) शिवपुरी—इन्द्रपुरी २. १३, १७, ६०; १५. ५६; २०. ६७; २१. ३६; २२. २४, २६.

कविलासा—कैलास २. १४८; २२. २८.

कविलासू—कैलास पर्वत १. २; २. १८५, १६३; ३. ११; ६. २५; १३. ६३; १६. १२.

कमरस्त्र—फलविशेष २. ७८; २०. ४४.

कमावा—(कर्म—कम्म—काम; सि० कमु; सि० कम; ) कमाया २४. १३६.

कया—काया—काय—शरीर (√चिञ् चयने) १. ७२, १८४; ३. ७३; १२. ८, ११; १३. ३, ५८; २०. १२०; २१. ४१; २२. २, ६०; २३. ५१, ५६, ७८, १११, १५८, १६१; २४. १३५, १४८, १४६; २५. २०, १६०.

कयापिंजर—शरीर का पिंजर २५. १४. कर—का (तु० कृत—केर, केरि अथवा केरा.

THE  
PADUMĀVATI



# PUNJAB UNIVERSITY ORIENTAL PUBLICATION

NO. 25

*First Edition 500 Copies*

*Printed by*

MR. BHANU RAM JAIN AT THE MANOHAR ELECTRIC PRESS  
64/65 MITHA BAZAR, LAHORE  
INDIA

# THE PADUMĀVATĪ

OF

MALIK MOHAMMAD JAISI

EDITED WITH AN ETYMOLOGICAL WORD-INDEX

BY

Vidyābhāskara, Vedāntaratna, Vyākaraṇatīrtha,

SURYA KANTA SHASTRI, M.A., M.O.L.

Professor, D. A. V. College

LAHORE

WITH A FOREWORD BY

THE HON'BLE MR. JUSTICE TEK CHAND M. A., LL. B.

High Court of Judicature, Lahore.

VOL. I

TEXT AND WORD-INDEX

CANTOS I—XXV.



PUBLISHED BY

THE UNIVERSITY OF THE PUNJAB

LAHORE

1934.

TO  
HIS EXCELLENCY  
SIR HERBERT WILLIAM EMERSON  
*K. C. S. I., C. I. E., C. D. E., I. C. S.*

GOVERNOR OF THE PUNJAB  
AND  
CHANCELLOR OF THE UNIVERSITY  
AS  
A HUMBLE MARK OF  
RESPECT AND ADMIRATION

By Kind Permission

# पदुमावति

मलिक मोहम्मद जायसी

सम्पादक

विद्याभास्कर, वेदान्तरत्न, व्याकरणतीर्थ,  
सूर्यकान्त शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल.  
प्रोफेसर डी. ए. वी. कालेज  
लाहौर

प्राक्कथन—

ऑनरेबल मिस्टर जस्टिस टेकचन्द एम. ए., एल एल. वी.  
हाई कोर्ट—लाहौर

प्रथम भाग

खण्ड १—२५

मूल तथा व्युत्पत्तिसहित शब्दकोष



प्रकाशक

पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर

१९३४

# CONTENTS.

Foreword.

Preface.

List of Sources.

List of abbreviations.

## Text—

१	असतुति खंड	...	...	...	...	१
२	सिंघल-दीप-वरनन खंड	...	...	...	...	१२
३	जनम खंड	....	....	...	...	२२
४	मानसरोदक खंड	...	...	...	....	२६
५	सुआ खंड	...	...	...	...	३०
६	राजा-रतनसेन-जनम खंड	...	...	...	...	३३
७	वनिजारा खंड	...	...	...	...	३४
८	नागमती-सुआ-संवाद खंड	....	....	...	...	३८
९	राजा-सुआ-संवाद खंड	....	....	...	...	४२
१०	नख-सिख खंड	...	...	...	...	४५
११	प्रेम खंड	...	....	...	...	५३
१२	जोगी खंड	...	...	...	....	५६
१३	राजा-गजपति-संवाद खंड	...	...	....	...	६१
१४	बोहित खंड	...	....	....	...	६५
१५	सात-समुद्र खंड	...	...	...	...	६७
१६	सिंघल-दीप-भाउ खंड	...	...	...	...	७१
१७	मंडप-गवैन खंड	...	...	...	...	७४
१८	पदुमावति-विश्रोग खंड	...	...	...	...	७६
१९	पदुमावति-सुआ-भेंट खंड	...	...	...	...	७९
२०	बसंत खंड	...	...	...	...	८३
२१	राजा-रतनसेन-सती खंड	...	...	....	...	९०
२२	पारवती-महेश खंड	...	...	...	....	९४
२३	राजा-गाढ़-ठेका खंड	...	...	...	...	९८
२४	मंत्री खंड	...	...	...	....	१०७
२५	सूरी खंड	...	...	....	...	११५

Word-Index.

## FOREWORD.

I have great pleasure in writing this Foreword for the *Padumāvati* of Malik Mohammad Jaisi, which has been edited with an "Etymological Word-Index" by Professor Surya Kanta Shastri, M. A., M. O. L., *Vidyābhāskara*, *Vedāntaratna*, *Vyākaraṇatīrtha*, for the Punjab University Oriental Publication Series.

The story of *Padumāvati*, the renowned queen of Chitor, is one of the most glorious episodes in the history of India and has been told by many writers. There is hardly a Hindu home throughout the length and breadth of the country, where round the family hearth are not related the various incidents connected with the life of the great *sati*: her birth in the royal palace of Rājā Gandharva Sena of Ceylon; her romantic marriage with the Sisodia Chief Ratna Sena of Chitor; the perfidy of the Brahman Rāghava who carried tales of her beauty to Alā-ud-Dīn *Khilji*, Sultan of Delhi; the infatuation of the Emperor to get hold of her and his firm resolve to storm the invincible citadel of Chitor; the inevitable war between the Mussalmans and the Hindus; the remarkable discipline and organization of the Imperial army, and the wonderful feats of gallantry by the Rajputs in their attempt to defend the last vestiges of their supremacy and protect the honour of their women; the arrest of Ratna Sena, his incarceration in Delhi and his release secured by a bold and clever ruse on the part of his devoted and faithful adherents, Gorā and Bādal; the killing of Ratna Sena by the

treacherous Deva Pāla of Kambhalner; the self-immolation of the Queen on the funeral pyre of her husband; the fall of the Fort and the triumphal march of the Emperor into the palace—anxious to realize the dream of his life by meeting the Beauty of Chitor face to face—but disappointed to find her transformed into a heap of ashes !

Contemporary chronicles naturally contain full and detailed accounts of the principal events connected with the siege and fall of Chitor. The life-story of Padmāvatī, however, has furnished a fascinating theme to the poet and the patriot, and numerous are the poems which have been composed and the songs which have been sung during the last six centuries, describing her unequalled beauty, her pious devotion to her husband, her supreme anxiety to protect and preserve her virtue, and her remarkable courage in performing *Jauhar* without pain or contrition. Of all these works, perhaps, the most remarkable is the poem composed in 1540 A. D., in the reign of Emperor Sher Shāh Sūrī, by Malik Mohammad, a descendant of the well-known saint Nizam-ud-Din, and a resident of Jais in Oudh. A pious and devout Mussalman, belonging to the *Chishtiya Nizamiya* sect, well-versed in Islamic theology and tradition, he seems to have acquired an encyclopaedic knowledge of Hindu mythology and folklore and a firm grasp of the essentials of Hindu culture and religion. For this purpose he had devoted several years to the study of Sanskrit language with renowned Hindu Pandits, and as is clear from the poem itself, he had obtained complete mastery over Sanskrit prosody and rhetoric.

Equipped with such intimate knowledge of all that was the best and noblest in the literature of Islam and Hinduism, the poet approached the subject with the reverence of a devotee, and it is not surprising that he succeeded in producing a work, which is remarkable alike for placing before us a true and faithful account of the various incidents connected with the life-story

of Padumāvati from her birth and childhood in Ceylon to her death at Chitor, as for preaching the highest lessons of universal love, self-sacrifice and devotion to duty. Throughout the poem, whether he is describing the unsurpassable bodily charms of the heroine, or the manly vigour of her husband, or the might of the Emperor, there is to be found in all that he has written a touch of spiritualism. Towards the end of the poem, he has converted his story into a mystic allegory, taking the reader from the known into the unknown, the visible into the invisible, the shadow into the reality, and after describing the last act in Padumāvati's life and the pathetic scene of the victorious Emperor looking at the funeral pyre in the palace gates of Chitor, he asks the pertinent question:—"Where is now that Ratna Sena, and where that wisdom-bearing parrot? Where is that Alāu'd-dīn, the Emperor, and where that Rāghava who told him tales? Where is that lovely swan Padumāvati? Naught of them hath remained, but their story. Happy is she whose fame is like unto hers. The flower may die, but its odour remaineth for ever!"

A poem of this kind, written by a devout Muslim saint, describing in its true perspective all that is best in Hindu culture and tradition, deserves to be widely read by the people of this country in these days of communal strife and bitterness, breathing as it does a refreshing air of toleration and evincing a keen desire to realize and appreciate the view-point of others.

While the original poem has got these remarkable characteristics, no less valuable is the Edition which Professor Surya Kanta has brought out. The text of the poem has been revised after a comparison of all available published versions and manuscripts and may be regarded as the most authoritative. The learned Editor has made an analytical study of the first half of the poem, giving the derivation of each word and showing its relation with kindred Indo-European and Indo-Iranian languages. This Edition, therefore, possesses great philological



value, affording as it does a clear view of the successive stages through which each word has passed, and giving an accurate idea of what the language of Northern India was in the sixteenth century. The Index at the end is particularly valuable, containing as it does, the Sanskrit and Prakrit equivalents of every word. The whole work discloses great industry and learning, and, I think, the authorities of the Punjab University as well as Professor Surya Kanta deserve to be congratulated on this useful publication.

Lahore, 25th June 1934.

TEK CHAND

## PREFACE

I need hardly offer an apology for bringing out an edition of Padumāvati in this age of indiscriminate communalism; for this is a book in which a Muslim saint describes one of the most glorious episodes of Hindu chivalry in a highly poetic vein.

The story of the poem is simple. Ratansēn, the king of Chitōr hears from a talking parrot—that indispensable character in the romances of mediaeval India—of the great beauty of Padumāvati; whereupon he journeys to Ceylon as a mendicant and returns home winning Padumāvati as his bride. Alāuddīn, the sovereign at Delhi also hears of the celebrated beauty and endeavours to capture Chitor in order to gain possession of her. He is unsuccessful, but Ratan is taken prisoner and held as a hostage for her surrender. He is afterwards released from captivity through the bravery of Gorā and Bādal. He then attacks King Devapāla, who had made insulting proposals to Padumāvati during his imprisonment. Devapāla is slain, but Ratansēn, who had been mortally wounded, returns to Chitōr only to die. His two wives i. e. Padumāvati and Nāgamati follow their dead lord and burn themselves on the funeral pyre. While this is happening, Alāuddīn appears at the gates of Chitōr, and though the fort is bravely defended, he captures it.

Such is the bare outline of the story which the poet by his visionary imagination, has transformed into the transcendental theme of the journey of the soul after its beloved, God. As we read the venture of the love-sick mendicant to Lankā in quest of Padumāvati, we are irresistibly reminded of the famous pilgrimage of birds to Simurgh, so beautifully set forth by Attār in his *Mantiqu'ṭ Tayr*. For like Attār the Malik is a confirmed Sūfī and considers Chitōr as nothing but the Body of man, Ratan as the Soul, the parrot as the Guru, Padumāvati as Wisdom, Rāghava as Satan, and Alauddīn as Delusion. He thus carries us from the known into the unknown, from the visible into the invisible, from the tangible into the far off, dreamy, intangible, where matter and spirit are one, where body and soul are identical. The poem, thus, is a gigantic dream, a fairy tale set to music, where imagination is turned into reality and the commonplace is not. The tale of earthly Padumāvati may become old, as it, doubtless, has become in the mouth of others, but the Padumāvati of the Malik will never grow old, because, in reality, it has never lived the life of the earth.

Needless to say that the Malik is a great mystic; but it may be observed here that his mysticism, active and ennobling principle of life as it is, never reveals a sentiment against nature, a sentiment that leads to a fear of physical beauty and takes the fair flower of life as no more than a lump of clay, giving rise thereby to a morbid delight in its humiliation. To the Malik nature is not the enemy of the soul, because it is not, in essence, separate from the ultimate principle of life. He views the visible world as illusion, a dream in the flesh, a chimera of the mind, the shadow of the spirit. The dreamer, the soul, has no contempt for his dream, that is body-life; he on the other hand regards it with extreme tenderness and deep compassion. He delights in senses; he is gratified with the charm of the body; he is amused or touched by the humorous or pathetic aspects of the world; only this pleasure and amusement are pervaded by or shot with a gentle seriousness.

And it is because of this synthetic view of life, the holy and unholy blended into one, that our poet could offer us a true picture of love; love that thrives in the body and yet transcends it; love that feeds upon the senses and is yet of the intellect; love which we call spiritual, even though it is of the earth.

The Indian mind, as mirrored in the Sanskrit love-lyrics leaves no alternative between home and the monastery, between love and renunciation. An Indian by his temperament conceives love in its concrete variety and not in its broad and ideal aspects. To him love is no more than a sense-feeling-colour, taste, touch and sound—an earthly feeling, an expanse of surging billows on which the maddened men and women are tossed about. In such a conception of life the idea of a higher love on the earthly plane finds little room.

Not that this realistic view of love is foreign to our poet. He too is swayed by the impulse of physical love; he gives a highly erotic description of the bodily charm of Padumāvati and brilliantly sets forth the various modes, expressions and make-shifts of the human love. But beneath this exuberance of sensuousness there flows a clear stream of spiritual experience, an under-current of love-divine that translates the sensuous into the spiritual and finally makes us spectators of the mighty love-drama of Puruṣa and Prakṛti. This non-conceptual, intuitive and ultimate experience, experience in which Padumāvati is Ratan and Ratan Padumāvati—the multiplicity of the varied notes of life reduced to one whole harmony—is the dominant note of the Poem.

This conception of life; this perception and realisation of the inner spring of life—animate and inanimate—lifts our poet above castes and creeds, dogmas and rites, forms and formalism, which appear to him no more than a feverish imagination of a blind man reasoning on colour. For him there is no religion but love, no observance but self-renunciation, no

formalism but self-abnegation at the feet of the beloved. In short, he views man as man and believes in universal brotherhood. There is, thus, a remarkable vein of religious toleration in the Poem, toleration which is the very basis of the modern culture.

Laudable efforts had been made by Amīr Khusro and Kabīr in the direction of inter-communal amity; with this object in view, the former tried to evolve a common vehicle of expression and the latter to demolish formalism, that had created barriers between man and man. Kabīr, on one side, waged a constant war against prevailing superstitions, rituals and litanies of all religions, on the other, he dived deep into the depths of God-love, and beheld nothing but God on all sides. This life-absorbing passion of Kabīr struck deeper roots in the Malik, and he, leaving aside the crude, destructive methods of Kabīr, pursued his constructive side with zest and zeal, and by singing the song of agonised love—the one universal sentiment—showed the unity of the heart of man and thus, ultimately, created sympathy among the Muslims for the tragic Hindu figures of Ratansēn and Padumāvati.

This sympathy, this idea of the unity of man, was further stressed by a long line of Hindu and Muslim poets, who with their soul-stirring appeals, succeeded in bringing about a happy blend of the two warring cultures, the one essentially subjective and ideal and the other objective and activistic.

Such then, in brief, is the peculiar message of the Malik, who influenced by the deep power of harmony "has seen into the life of things" and creates thereby in our mind a desire to escape from the fetters of this "too, too solid flesh", a longing to get something out of mundane existence and a firm faith in the abiding unity of life. Under this spiritual light (of unity) the Malik is seen moving on to his goal with a pessimism, which is not shallow, or outcome of a temporary

disaster, but the deep-seated indifference of the saint "who has kept vigil over man's mortality", who has drained to the dregs the cup of life's pleasures and found it bitter in the sequel. As he nears his goal, sounding his lonely protest in the uproar of atheism, awakening his fellow-mortals now in tones of poignant, sweet, melancholy, now in tones of anger, now soothing, plaintive and meditative, his pessimism turns into optimism, optimism that is not of the merry youth, unfamiliar with fret and fever, but the deliberate joy of an accomplished philosopher, who has seen with his eyes the mighty crash of the universe, a complete metamorphosis of all duality into the Oneness. It is here that the ultimate goal of the traveller lies, and here he cries halt to his weary march, becoming one with his beloved, "a flask of water broken in the sea".

As for the personality of this Saint, we know little. Mohammad was his name, and Malik his family title. He was a resident of Jais, where he is still known as the Malik. He was born in 830 (H.) in the 'Kañcānā Muhallā' of the town. His parents were of ordinary standing. Unattractive from childhood, he became hard of hearing and lost one eye by paralysis. He received no education and married a lady in Jais itself. He was blessed with children, who unfortunately died in his life-time. His brother's family yet continues. Saiyad Aśaraf was his *pīr* and he owed instruction to Sheikhs Mohidi, Burhān and others. He lived mainly on agriculture. In old age he renounced the world and travelled far and wide delivering his message of love. Now and then he visited courts, and at last settled in the dense forests of Amethi, where in 949 (H.), he was shot dead by some one, whose aim missed. This gives him an age of about 116 years. Fourteen works are attributed to him. i.e. *Postināmā*, *Kahāranāmā*, *Murāināmā*, *Mekharāvaṭ*, *Campāvatī*, *Akharāvaṭ*, *Padumāvati* and *Ākharī Kalām*; of these, *Padumāvati* and *Akharāvaṭ* alone are published.

To revert to *Padumāvati*. The great importance of the

Poem lies in the fact that its author wrote it in what was evidently the actual vernacular of his time, tinging it slightly with an admixture of a few Persian words and idioms, due to his Musalman birth and culture. It was his nationality, again, which made him use the Persian script and discard all the favourite devices of paṇḍits, who always tried to make their language correct by spelling (while they did not pronounce) vernacular words in the Sanskrit fashion. The Persian script did not lend itself to any such false antiquarianism. He spelt each word as it was pronounced. His work, therefore, is a valuable witness to the actual condition of the vernacular language of northern India in the 16th century. It is, so far as it goes, and with the exception of a few hints in Alberuni's India, the only trustworthy witness which we have. It is trustworthy, however to a certain extent only, for it often merely gives the consonantal framework of the words, the vowels, as is usual in Persian Mss. being generally omitted. Fortunately the vowels can generally be inserted correctly with the help of the Devanāgarī Mss.

The language being *sheth Audhī* and the work written in Persian script, it is very difficult both to read and to understand. It was frequently transliterated into Devanāgarī script, but the transcriptions, whether in manuscript or in print, were full of mistakes, generally guesses to make the meaning clear.

In 1911 Sir George Grierson, to whom we owe the monumental Linguistic Survey of India, brought out, in collaboration with M. M. Sudhākara Dīvedī, an annotated edition of the poem, together with exhaustive notes and a tentative English translation. The learned editors based their edition on seven Mss. (four of them being written in Persian, two in Devanāgarī and one in Kāthī characters) and by a diligent comparison of the material thus supplied, endeavoured to reproduce in Nāgarī characters, the actual forms of words written by our poet. But they could offer only the first instalment of their labours,

when destiny intervened and closed the career of the illustrious Mahāmahopādhyāya. Since then this important Poem lay incomplete and uncared for, till Hindi was recognised in some of the Indian Universities, as an elective subject in the B. A. and M. A. examinations. This necessitated a full edition of the Poem and Paṇḍit Rāmachandra of Benares brought out one in 1924, apparently rather in a hurry, which widely differed, of course, in the wrong direction, from the Calcutta edition, both with regard to its contents and linguistic matters.

In 1932 the Punjab Government set up a University Enquiry Commission, which after making a thorough examination of the large Educational problems, both of school and the colleges, made important recommendations, which included the desirability of laying a greater stress on the study and teaching of the Vernaculars. It was recommended that they should be included among the elective subjects for the B. A. and M. A. examinations; the deficiency of literary works (if there were any) was to be made up by the philological and historical study of the language.

This means that the study of the Vernaculars should be placed on a scientific basis and comparative study inaugurated in them; and this can only be done with the help of suitable reference books, on which alone can be based critical editions of standard works.

The present volume is a modest effort in this direction, although it was undertaken long before the Commission concluded its labours. In this I have been able to analyse critically, only the first twenty-five chapters of the Poem, the text of which I have carefully based on the Calcutta edition. I have, however, checked the authenticity of the edition with the help of an old Persian Ms. in the Panjab University Library, which records two or three readings on the margin, but agrees, in the main, with the Calcutta edition.



In the Index an attempt has been made to give the derivation of words, to record Indo-European equations, to give Sanskrit and Prakrit equivalents, to register equivalents in Indo-Iranian and Indian Aryan vernaculars, and occasionally to discuss and compare the forms of important words. This feature of my Index increases both its usefulness from a linguistic point of view and its practical value to the student, who will always better remember the meaning and history of a word, the derivation and equations of which are made clear to him. In derivation I have given Sanskrit roots corresponding to the vernacular roots. It may be rightly objected here, that it is a strange method to use in an Audhi Index, especially because the form of vernacular, on which Audhi is based has never passed through the stage of Sanskrit. That may be so; and it may not be possible, historically, that all Audhi words have been derived from the corresponding Sanskrit words. Nevertheless, Sanskrit forms, though arisen quite independently, may throw light upon the Audhi forms, and as roots other than those of Sanskrit have not yet been studied adequately in India, the plan adopted here will probably, at least for the present, prove more useful.

Needless to say that the plan is entirely new; the work is essentially preliminary; and the defects of the work are not a few. Take for instance the derivation. Here there is a large number of words of which I could not trace the origin; there are other words of which the derivation is doubtful, and yet others of which the derivation does not yield the required sense, but rather the reverse. But it is so in every living language. Then there is the puzzling phenomenon of nasalisation. The text of Padmāvatī as well as that of Tulasi Dasa's Rāmāyaṇa, whether in manuscript or in print, are hopelessly indiscriminate in this respect. We find both *māth*, *mām̐th*, *nāth*, *nām̐th*, *nīd*, *nīd̐d*, *jēhī*, *jēhīm̐*, *tēhī*, *tēhīm̐* and the like, used side by side. I doubt very much if the same author could have used both nasalised and non-nasalised forms of the word in one and the

same work. No serious study of such minute philological problems has yet been done in any Indian vernacular, and no edition of any standard work in any Indian vernacular can come up to the mark in this respect. I have, necessarily, deferred the treatment of such problems to the second volume of *Padumāvati*

In the text *caupāis* and *dohās* of each canto are numbered consecutively; one line being taken as one *caupāi* (as was the custom with the Malik and his followers) and one *dohā* as one single unit. This number is shown on the margin. I have also numbered *dohās* of the whole work (this number being shown after the *dohās*) for the sake of precision and ready reference. In the Index black figures stand for the canto and white for the stanzas. The letter *P* represents Pischel, whose *Grammatik* is an inexhaustible mine of correct information regarding Prakrit languages. *JB.* stands for Jules Bloch. For other abbreviations a separate list is attached herewith.

No one but those who have taken part in this sort of work will realise, what care and patient labour are involved in the collection of such material, and in the sorting, sifting and final arrangement of it. That I have been able to do this arduous task, is mainly due to the high ideals placed before me by my esteemed *ācārya* Principal (now Doctor of Literature) A. C. Woolner M. A., C. I. E., D. Litt., Vice-Chancellor of this University. A great humanist, a unique repository of what is best in the East as well as in the West, he is eminently known for his profound scholarship, original research, administrative efficiency and long and meritorious devotion to this University. Seldom were the students and teachers of a University given a more zealous guardian of their interests and seldom was a man of truer sympathy with, and a better understanding of the spirit of the East placed at the head of an Indian University. The inclusion of the present volume in the Punjab University Oriental Publication Series

is entirely due to him. I am also indebted to him for going through the final proof of the preface.

I take this opportunity of expressing my sincere gratitude to the Hon'ble Justice Bakhshi Tek Chand M. A., LL. B. for writing a foreward to this book. A man of wide culture and liberal sympathies he is always an inspiring and stimulating example unto others—especially to the noble youth of the Punjab whose imagination and heart he particularly touches by the charm of his sympathetic heart and helping hand.

For reading proofs of the book I am indebted to Pāṇḍit. Vijayanand Śāstrī, and my wife, Śrīmatī Sukhadādevī, who not only made some verbal corrections, but also offered suggestions of a more general character.

In conclusion I feel that if this book succeeds in interesting the Indian reader enough to make him study the Poem for himself and interest the students of Sanskrit and Hindi in its linguistic matters so much that they should feel impelled to further investigations along these lines, then this volume shall have justified its existence.

Lahore  
Empire Day the 24th May 1934.

}}

SŪRYA KĀNTA

## LIST OF IMMEDIATE SOURCES USED IN THE COURSE OF THE INDEX.

### INDO-EUROPEAN.

- Walde, A. Vergleichendes Wörterbuch der Indogermanischen Sprachen. 3 Vols. Leipzig. 1930.
- Brugmann, K. Kurze Vergleichende Grammatik der Indogermanischen Sprachen. Leipzig. 1922.
- Walde, A. Lateinisches Etymologisches Wörterbuch. Heidelberg. 1910.
- Grassmann, W. Wörterbuch zum R̥gveda. Leipzig. 1873.
- Meillet, A. Introduction A. L'Etude Comparative Langue des Indo-Europeennes. Paris. 1922.
- Jespersen, O. A Modern English Grammar. 3 Vols. Heidelberg. 1920.

### IRANIAN.

- Geiger, W. and Kuhn, E. Grundriss der Iranischen Philologie. 2 Vols. Strassburg. 1895-1901.
- Bartholomae, A. Altiranisches Wörterbuch. Strassburg. 1904.
- Haug, M. An old Pahlavi-Pazand Glossary. Bombay. 1870.
- Haug, M. A Zand-Pahlavi Glossary. Bombay. 1877.
- Johnson, E. L. Historical Grammar of the Ancient Persian Language. New York. 1917.
- Jackson, A. V. W. An Avesta Grammar. Stuttgart. 1933.

### NEW IRANIAN.

- Grundriss der Iranischen Philologie. 1. b. 417-423.
- Gray, L. H. Indo-Iranian Phonology. New York. 1902.
- Trumpp, R. Grammar of Pāṣṭo. London. 1873.
- Morgenstierne, G. Indo-Iranian Frontier Languages. Oslo. 1929.

### PRAKRIT.

- Pischel, R. Grammatik der Prakrit Sprachen. Strassburg. 1900.
- Pischel, R. Hemacandra. Halle. 1877-80.

- Woolner, A. C. *Introduction to Prakrit*. Lahore. 1928.  
 Davids, R. and Stede, W. *Pali Dictionary*. 1921-25.  
 Geiger, W. *Pali Literatur und Sprache*. Strassburg. 1916.  
 Muller. *A Simplified Grammar of the Pali Language*. London.  
 1884.  
 Trenckner, V. *Notes on the Milindapañho* in JPTS. 1908. 102 sq.  
 Hargovind Das. *Pāia Sadda-Mahāṇṇao*. 4 Vols. Calcutta.  
 1923-28.

## INDIAN ARYAN VERNACULARS.

- Sir George Grierson. (A) *On the Phonology of the Modern Indo-Aryan Languages*. ZDMG. Vol. XLIX, pp. 101-145; L. pp. 1-42.  
 (B) *Indo-Aryan Vernaculars*. Bulletin of the School of Oriental Studies. London Institution. Vol. I. Part I, pp. 47-81; Part II. pp. 51-85.  
 (C) *A Manual of the Kashmiri Language*. Oxford. 1911.  
 (D) *Kashmiri Phonology*. JRASBe. LXV. 280-305, 108-184.  
 (E) *Seven Grammars of the Dialects and Sub-dialects of the Bihārī Language*. Part I. Calcutta. 1883.  
 Trumpp. *A Grammar of the Sindhi Language*. London. 1872.  
 Cummings and Bailey. *Punjabi Manual*. Calcutta. 1925.  
 Kellogg. *Grammar of the Hindi Language*. Allahabad. 1876.  
 Hoernle, A. F. R. *A Grammar of the Eastern Hindi*. London. 1880.  
 Babu Rām Saksena. *Lakhimpurī—A Dialect of Modern Audhī*. JASBe. 1922.  
 Linguistic Survey of India. Vol. VI.  
 Chatterji, S. K. *Bengali Phonetics*. Bulletin of School of Oriental Studies. London Institution. Vol II, pp. 1-25.  
 Molesworth, J. T. *A Dictionary of Marāṭhī and English*. Bombay. 1837.  
 Bloch, J. *La Formation de La Langue Marathe*. Paris. 1920.  
 Beames, J. A. *Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India*. 3 Vols. London. 1872-79.

The following articles in the *Nagari Pracāriṇī Patrikā*, Benares have been consulted:—

Dhirendra Varma. हिन्दी की पूर्ववर्ती आर्यभाषाएं. Vol IV. pp. 379-390.

Bābu Rām Saksenā. भारतवर्ष की आधुनिक आर्यभाषाएं. Vol VII. pp. 121-162.

M. M. Giridhara Śarmā हिन्दी में संस्कृत शब्दों का ग्रहण Vol. X. pp. 195-231.

Gurū Prasāda. संध्यक्षरों का अपूर्ण उच्चारण Vol. XIII. pp. 47-56.

---

## LIST OF ABBREVIATIONS

### TITLES OF AUTHORS OR BOOKS

दे० = देवीनाममाला	Pais. Lang. = Paisaci Language
मु० = मुपाकर	ages
JB. = Julius Bloch	PGr. = Prakrit Grammar
GM. = George Morgenstierne	P. = Pischel
Gn. = Grierson	RPD. = Rhys. Davids, Pali Dictionary.
H. = Hoernle	VWI. = Vergleichende Wörterbuch der Indogermanischen Sprachen.
L. Wb. = Lateinisches Etymologisches Wörterbuch	(मु० = मुलना करो)
MW. = Monier Williams (Dictionary)	

### LANGUAGES COMPARED.

Arm. = Armenian	Lett. = Lettish
As., Ags., or Ang. sax. = Anglo Saxon.	Lit. or Lith. = Lithuanian
E. or Eng. = English	M. Germ. = Modern German
Cymr. = Cymrish.	Obulg. = Old Bulgarian
Germ. = German	Ohg. = Old High German
Goth. = Gothic	Oicel. = Old Icelendic
Id. = Icelendic	Oir. = Old Irish
Ital. = Italian	Russ. = Russian
Lat. = Latin	Slave. = Slavonic
अप० = अपभ्रंश = Apabhramsha	उ० = उरिया = Uriā
अफ० = अफगानी = Afghan	ओ० अयवा ओस्से० = ओस्सेटिया = Ossetish
आ०मा० = अर्धमागधी = Ardha-māgadhī	कु० = कुर्दी = Kurdish
अवे० = अवेन्त = Avesta	का० = काश्मीरी = Kāśmīrī
आ० = आसामी = Assamese	ग० = गमी = Gabrī
आ०प० = आधुनिक पारसी = New Persian	गु० = गुजराती = Gujrātī
	प० = पारि = Parachi
	वि० = विन्सी = Gypsy

जै०म० = जैन महाराष्ट्री = Jain Mahārāṣṭrī

ट० = टगोरिश = Tagaurish

रिस० = रिसगनी (= जिप्सी)

नै० = नैपाली = Nepālī

प० अथवा पह० = पहलवी = Pahalavi

पं० = पंजाबी = Punjābī

पाम्म = पाम्मंद = Pazand

पा० = पालि = Pali

पै० = पैशाची = Paisācī

प्रा० = प्राकृत = Prakrit

फा० = फारसी = Persian

बि० = बिहारी = Bihārī

ब० = बलूची = Balūcī

बं० = बंगाली = Bengālī

म० = मराठी = Marāṭhī

मा० = मागधी = Māgadhī

महा० = महाराष्ट्री = Mahārāṣṭrī

री० = ओरुमुरी = Ormuri

वा० = वाक्सी = Wākī

वै० = वैदिक = Vedic

शि० = शिन्धी = Śighnī

शौ० = शौरसेनी = Śaurasenī

संग = संगलीची = Sanglicī

सं० = संस्कृत = Saṁskṛit

सरि० = सरिकोली = Sariqolī

सि० = सिन्धी = Sindhī

सिं० = सिंहालीज = Simhālese

हि० = हिन्दी = Hindī



# INTRODUCTION

( Reserved for the Second Volume. )

पद्मावति



## अथ पदुमावति लिख्यते

अथ असत्तुति खंड ॥ १ ॥

सर्वरउँ आदि एक करतारु । जेइ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारु ॥  
कीन्हैसि प्रथम जोति परगाछ । कीन्हैसि तेहि परवत कविलाछ ॥  
कीन्हैसि अग्नि पवन जल खेहा । कीन्हैसि बहुतइ रंग उरेहा ॥  
कीन्हैसि धरती सरग पतारु । कीन्हैसि बरन बरन अउतारु ॥  
कीन्हैसि सपत दीप ब्रहमंडा । कीन्हैसि भुअन चउदह-उ खंडा ॥ 5  
कीन्हैसि दिन दिनिअर ससि राती । कीन्हैसि नखत तराग्रन पाँती ॥  
कीन्हैसि सीउ धूप अउ छाँहा । कीन्हैसि मेघ बीजु तेहि माँहा ॥  
कीन्ह सबइ अस जा कर दोसर छाज न काहि ।

पहिलइ तेइ कर नाउँ लेइ कथा करउँ अउगाहि ॥ १ ॥

कीन्हैसि सात-उ समुद अपारा । कीन्हैसि मेरु खिखिंद पहारा ॥  
कीन्हैसि नदी नार अउ भरना । कीन्हैसि मगर मच्छ बहु बरना ॥ 10  
कीन्हैसि सीप मोँति तेहि भरे । कीन्हैसि बहुतइ नग निरमरे ॥  
कीन्हैसि बन-खंड अउ जरि मूरी । कीन्हैसि तरिवर तार खजूरी ॥  
कीन्हैसि साउज आरन रहहीं । कीन्हैसि पंखि उडहिँ जहँ चहहीं ॥  
कीन्हैसि बरन सेत अउ सामा । कीन्हैसि नीँद भूख बिसरामा ॥  
कीन्हैसि पान फूल रस भोगू । कीन्हैसि बहु ओखद बहु रोगू ॥ 15

निमिखन लाग करत ओहि सबहि कीन्ह पल एक ।

गगन अंतरिख राखा बाजु खंभ बिनु टेक ॥ २ ॥

- कीन्हैसि मानुस दीन्ह चढ़ाई । कीन्हैसि अन्न भुगुति तैह पाई ॥  
 कीन्हैसि राजा भूजई राजू । कीन्हैसि हसति घोर तैहि साजू ॥  
 कीन्हैसि तैहि कहैं बहुत विराख । कीन्हैसि कौइ ठाकुर कौइ दाख ॥  
 २० कीन्हैसि दरब गरब जेहि होई । कीन्हैसि लोभ अघाइ न कोई ॥  
 कीन्हैसि जिअन सदा सब चहा । कीन्हैसि भीचुं न कोई रहा ॥  
 कीन्हैसि मुख अउ क्रोड अनंदू । कीन्हैसि दुख चिंता अउ दंदू ॥  
 कीन्हैसि कौइ भिखारि कौइ धनी । कीन्हैसि संपति विपति बहु घनी ॥  
 कीन्हैसि कौइ निमरोसी कीन्हैसि कौइ बरिआर ।  
 छारहि तई सब कीन्हैसि पुनि कीन्हैसि सब छार ॥ ३ ॥  
 २५ कीन्हैसि अगर कमतुरी बेना । कीन्हैसि भीमसेनि अउ चेना ॥  
 कीन्हैसि नाग मुखइ बिख बसा । कीन्हैसि मंत्र हरइ जो इसा ॥  
 कीन्हैसि अर्मां जिअइ जेहि पाई । कीन्हैसि बिषख भीचुं जेहि खाई ॥  
 कीन्हैसि उख भीठ रस मरी । कीन्हैसि करुइ बेलि बहु फरी ॥  
 कीन्हैसि मधु सावइ लैइ मॉखी । कीन्हैसि भवरं पंखि अउ पाँखी ॥  
 ३० कीन्हैसि लोवा उंदुर चाँटी । कीन्हैसि बहुत रहइ खनि माँटी ॥  
 कीन्हैसि राकस भूत परेता । कीन्हैसि भोकस देव दएता ॥  
 कीन्हैसि सहस अठारह बरन बरन उपराजि ।  
 भुगुति दीन्ह पुनि सब कहैं सकल साजना साजि ॥ ४ ॥  
 घनपति उहर जेहि क संसारु । सबहि देइ निति घट न मँडारु ॥  
 बापंत जगत हसति अउ पाँटा । सब कहैं भुगुति राति दिन बाँटा ॥  
 ३५ ता करि दिमिटि सबहि उपराही । मितर सवरु कौइ बिसरइ नाही ॥  
 पंसी पंग न बिसरइ कोई । परगट गुप्त जहाँ लगी होई ॥  
 भोग भुगुति पदु भौति उपारि । सबहि खिआवइ आपु न खारि ॥  
 ता कर इर जौ खाना पिमना । सब कहैं देइ भुगुति अउ जिअना ॥  
 मयहि आप ता करि हर साँझ । ओहि न काह कइ आप निरासा ॥

जुग जुग देत घटा नहीं उभइ हाथ तस कीन्ह ।

अउरु जो दीन्ह जगत मँह सो सब ता कर दीन्ह ॥ ५ ॥

40

आदि सोइ वरनउँ बड राजा । आदि-हु अंत राज जेहि छाजा ॥

सदा सरवदा राज करेई । अउ जेहि चहहि राज तेहि देई ॥

छतरि अछतरि निछतरहि छावा । दोसर नाहिँ जो सरवरि पावा ॥

परवत ढाहि देखु सब लोगू । चाँटहि करइ हसति सरि जोगू ॥

बजरहि तिन कइ मारि उडाई । तिनहि बजर कइ देइ बडाई ॥

45

काहुहि भोग भुगुति सुख सारा । काहुहि भीख भवन-दुख मारा ॥

ता कर कीन्ह न जानइ कोई । करइ सोइ मन चित्त न होई ॥

सबइ नास्ति वह असथिर अइस साज जेहि केरि ।

एक साजइ अउ भाँजइ चहइ सवाँरइ फेरि ॥ ६ ॥

अलख अरूप अवरन सो करता । वह सब सउँ सब ओहि सउँ वरता ॥

परगट गुपुत सो सब विआपी । धरमी चीन्ह चीन्ह नहिँ पापी ॥

50

ना ओहि पूत न पिता न माता । ना ओहि कुटुंब न कोई संग नाता ॥

जना न काहु न कोई ओहि जना । जहँ लगि सब ता कर सिरजना ॥

वेइ सब कीन्ह जहाँ लगि कोई । वह न कीन्ह काहु कर होई ॥

हुत पहिलइ अउ अब हइ सोई । पुनि सो रहइ रहइ नहिँ कोई ॥

अउरु जो होइ सो वाउर अंधा । दिन दुइ चारि मरइ कइ धंधा ॥

55

जो वेइ चहा सो कीन्हैसि करइ जो चाहइ कीन्ह ।

वरजन-हार न कोई सबहि चाहि जिउ दीन्ह ॥ ७ ॥

ग्रहि विधि चीन्हहु करहु गिआनू । जस पुरान मँह लिखा बखानू ॥

जीउ नाहिँ पइ जिअइ गोसाईँ । कर नाहीँ पइ करइ सवाईँ ॥

जीभ नाहिँ पइ सब किछु बोला । तन नाहीँ जो डोलाउ सो डोला ॥

सवन नाहिँ पइ सब किछु सुना । हिअ नाहीँ गुननाँ सब गुना ॥

60

नयन नाहिँ पइ सब किछु देखा । कवन भाँति अस जाइ विसेखा ॥

ना कोइ होइ हइ ओहि के रूपा । ना ओहि अस कोइ आहि अनूपा ॥  
ना ओहि ठाउँ न ओहि बिनु ठाउँ । रूप रेख बिनु निरमर नाउँ ॥

ना वह मिला न बेहरा अइस रहा भरि पूरि ।

दिसिटिवंत कहँ नीअरे अंध मुरुख कहँ दूरि ॥ ८ ॥

- 65 अउरु जो दीन्हैसि रतन अमोला । ता कर मरम न जानइ भोला ॥  
दीन्हैसि रसना अउ रस भोगू । दीन्हैसि दसन जो बिहँसइ जो ॥  
दीन्हैसि जग देखइ कहँ नयना । दीन्हैसि सवन सुनइ कहँ बयना ॥  
दीन्हैसि कंठ बोलि जेहि माँहा । दीन्हैसि कर-पल्लउ बर बाँहा ॥  
दीन्हैसि चरन अनूप चलाही । सो पइ मरम जानु जेहि नाही ॥
- 70 जोवन मरम जानु पइ पूढा । मिला न तरुनापा जग हूँदा ॥  
दुख कर मरम न जानइ राजा । दुखी जानु जा कहँ दुख बाजा ॥  
कया क मरम जानु पइ रोगी भोगी रहइ निर्वित ।

सब कर मरम गोसई जानइ जो घट घट महँ नित ॥ ९ ॥

- अति अपार करता कर करना । बरनि न पारइ काहू बरना ॥  
सात सरग जउँ कागद करई । धरती सात समुद मसि भरई ॥
- 75 जावँत जगत साख बन-बाँखा । जावँत केस रोवँ पँखि पाँखा ॥  
जावँत रोह रेह दुनिआई । मेघ पूँद अउ गगन तराई ॥  
सब लिखनी फइ लिखु संसारू । लिखि न जाइ गति समुद अपारू ॥  
अस कीन्ह सष गुन परगटा । अव-हूँ समुंद पूँद नहिँ घटा ॥  
अस जानि मन गरब न होई । गरब करइ मन बाउर सोई ॥  
पट गुनवंत गोमाई चहइ सो होइ तेहि पेग ।
- 80 अउ अस गुनी सँवारइ जो गुन करइ अनेग ॥ १० ॥

दीन्हैसि पुराण एक निरमरा । नाउँ सुहम्मद पुनिउँ करा ॥  
प्रण जोति बिधि तेहि फइ साजी । अउ तेहि प्रीति सिसिटि उपराजी ॥  
... सेवि जगत कहँ दीन्हा । भा निरमर जग मारग चीन्हा ॥

जउं नहिँ होत पुरुख उँजिआरा । स्रभि न परत पंथ अँधिआरा ॥  
 दोसरे ठाउँ दर्ई वेइ लिखे । भए धरमी जेइ पाढत सिखे ॥ 85  
 जेइ नहिँ लीन्ह जनम भरि नाऊँ । ता कहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ ॥  
 जगत बसीठ दर्ई ओहि कीन्हा । दुहुँ जग तरा नाउँ जेइ लीन्हा ॥

गुन अउगुन विधि पूछव होइहि लेख अउ जोख ।

वह विनउव आगइ होइ करव जगत कर मोख ॥ ११ ॥

चारि मीत जो मुहमद ठाऊँ । चहँ क दुहुँ जग निरमर नाऊँ ॥  
 अबा बकर सिदीक सयाने । पहिलइ सिदिक दीन वेइ आने ॥ 90  
 पुनि सो उमर खिताब सोहाए । भा जग अदल दीन जो आए ॥  
 पुनि उसमान पँडित बड गुनी । लिखा पुरान जो आयत सुनी ॥  
 चउथइ अली सिंघ बरिआरू । चढइ तो काँपइ सरग पतारू ॥  
 चारिउ एक मतइ एक वाता । एक पंथ अउ एक सँघाता ॥  
 बचन एक जो सुनावहिँ साँचा । भा परवान दुहुँ जग वाँचा ॥ 95

जो पुरान विधि पठवा सोई पढत गरंथ ।

अउरु जो भूले आवतहि तैहि सुनि लागहिँ पंथ ॥ १२ ॥

सेर-साहि देहिली सुलतानू । चारि-उ खंड तपइ जस भानू ॥  
 ओही छाज राज अउ पाटू । सब राजइ भुईँ धरा लिलाटू ॥  
 जाति सर अउ खाँडइ सरा । अउ बुधिवंत सबइ गुन पूरा ॥  
 सर-नवाँई नवो खंड भई । सात-उ दीप दुनी सब नई ॥ 100  
 तहँ लगि राज खरग वर लीन्हा । इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा ॥  
 हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी । जग कहँ जिअन दीन्ह तैहि मूठी ॥  
 अउ अति गरू पुहुमि-पति भारी । टेकि पुहुमि सब सिसिटि सँभारी ॥

दीन्ह असीस मुहम्मद करहु जुग हि जुग राज ।

पातिसाहि तुम्ह जगत के जग तुम्हार मुहताज ॥ १३ ॥

वरनउँ सर पुहुमि-पति राजा । पुहुमि न भार सहइ जेहि साजा ॥ 105



- हयमय सेन चलइ जग पूरी । परबत टूटि उडहिं होइ पूरी ॥  
 रइनि रेनु होइ रविहि गरासा । मानुस पंखि लोहिं फिरि वासा ॥  
 सुई उडि अंतरिख गइ अितमंडा । खंड खंड धरति सिसिटि ब्रहमंडा ॥  
 डोलइ गगन ईंदर डरि काँपा । चासुकि जाइ पतारहि चाँपा ॥  
 ११० मेरु घसमसइ समुद्र सुखाही । वन-खंड टूटि खेह मिलि जाही ॥  
 अगिलहि काहु पानि खर पाँटा । पछिलहि काहु न काँदउ आँटा ॥  
 जोगद नष्टउ नहिं काहुही चलत होहिं सव चूर ।  
 जवहि चढहि पुहुमी-पति सेर-साहि जग-सूर ॥ १४ ॥  
 अदल कहउँ पुहुमी जस होई । चाँटहि चलत न दुखवइ कोई ॥  
 नउसेखाँ जौ आदिल कहा । साहि अदल सरि सोउ न अहा ॥  
 ११५ अदल फीन्ह उम्मार कइ नाई । भइ आहा सगरी दुनियाई ॥  
 परी नौप फोइ छुअइ न पारा । भाग्य मानुस सोन उछारा ॥  
 गोठ सिष रेंगहिं प्रक बाटा । दूनउ पानि पिअहिं प्रक पाटा ॥  
 नीर खीर छानइ दरबारा । दूध पानि सव करइ निराता ॥  
 धरम निआउ चलइ सत-माया । दूर परी एक सम राखा ॥  
 पुहुमी सवइ असीसई जोरि जोरि कइ हाथ ।  
 १२० गोग जउँन जल जव लगि तब लगि अमरसो माथ ॥ १५ ॥  
 पुनि रुपवंत थखानउँ कहा । जावँत जगत सवइ मुख चाहा ॥  
 सासि चउदसि जौ दर्इ सेवारा । तेहु चाहि रूप उँजिआरा ॥  
 पाप जाइ जउँ दरसन दीक्षा । जग जुहारि कइ देइ असीसा ॥  
 जइस मानु जग ऊपर तपा । सवइ रूप ओहि आगइ छपा ॥  
 १२५ अस मा एर पुलउ निरमरा । सर चाहि दस आगरि करा ॥  
 सउँइ दिमटि रूप हेरि न जाई । जेइ देखा सो रहा सिर नाई ॥  
 रूप सवाई दिन दिन चढा । विधि मुरूप जग ऊपर गढा ॥  
 रुपवंत मनि भोगइ चाँद पाटि ओहि बाटि ।  
 मेदिनि दरस सोमानी अष्टतुवि चिनवइ ठाटि ॥ १६ ॥

पुनि दातार दई बड कीन्हा । अस जग दान न काहू दीन्हा ॥  
 बलि विकरम दानी बड अहे । हातिम करन तिआगी कहे ॥ 130  
 सेर-साहि सरि पूज न कोऊ । समुद सुमेरु घटाहि निति दोऊ ॥  
 दान डाँक वाजइ दरवारा । कीरति गई समुंदर पारा ॥  
 कंचन परसि सर जग भण्ड । दारिद भागि दिसंतर गण्ड ॥  
 जउ कौइ जाइ एक बेरि माँगा । जनमहु भण्ड न भूखा नाँगा ॥  
 दस असमेध जग जेइ कीन्हा । दान पुन सरि सोड न दीन्हा ॥ 135

अइस दानि जग उपजा सेर-साहि सुलतान ।

ना अस भण्ड न होइही ना कौइ देइ अस दान ॥ १७ ॥

सइअद असरफ पीर पिआरा । तेइ मोहि पंथ दीन्ह उँजिआरा ॥  
 लेसा हिअइ पेम कर दीआ । उठी जोति भा निरमर हीआ ॥  
 मारग हुता अँधेर अस्रभा । भा अँजोर सब जाना वृभा ॥  
 खार समुदर पाप मोर मेला । बोहित धरम लीन्ह कइ चेला ॥ 140  
 उन्ह मोर करिअ पोढि कइ गहा । पाण्डु तीर घाट जो अहा ॥  
 जा कहँ होइ अइस कनहारा । ता कहँ गहि लैइ लावइ पारा ॥  
 दस्तगीर गाढे कइ साथी । जहँ अउगाह देहि तहँ हाथी ॥

जहाँगीर वेइ चिसती निहकलंक जस चाँद ।

वेइ मखदूम जगत के हउँ उन्ह के घर बाँद ॥ १८ ॥

तेहि घर रतन एक निरमरा । हाजी सेख सुभागइ भरा ॥ 145  
 तेहि घर दुइ दीपक उँजिआरे । पंथ देइ कहँ दई सँवारे ॥  
 सेख सुवारक पुनिउँ करा । सेख कमाल जगत निरमरा ॥  
 दुअउ अचल धुव डोलाहि नाही । मेरु खिखिंद तिन्हहु उपराही ॥  
 दीन्ह रूप अउ जोति गोसाई । कीन्ह खंभ दुहुँ जग कइ ताई ॥  
 दुहुँ खंभ टेकी सब मही । दुहुँ के भार सिसिटि थिर रही ॥ 150  
 जो दरसइ अउ परसइ पाया । पाप हरा निरमर भइ काया ॥

सुहमद तेइ निचिंत पंथ जेहि सँग सुरसिद पीर ।

जेहि रे नाउ अउ खेवक बेगि पाउ सो तीर ॥ १६ ॥

गुरु मोहिदी खेवक मई सेवा । चलइ उठाइल जेहि कर सेवा ॥

अगुआ भण्ड सेख सुरहानू । पंथ लाइ जेहि दीन्ह गिआनू ॥

155 अलहदाद भल तेहि कर गुरु । दीन दुनी रोसन सुरुसुरु ॥

सइअद सुहमद के चेइ चेला । सिद्ध पुरुष संगम जेइ खेला ॥

दानिआल गुरु पंथ लखाए । हजरत खाज खिजिर तेइ पाए ॥

भण्ड परसन ओहि हजरत खाजे । लेइ मेरए जहँ सइअद राजे ॥

ओहि सउं मई पाई जव करनी । उघरी जीम कथा कवि बरनी ॥

चेइ सु-गुरु हउं चेला निति बिनवउं भा चेर ।

160 ओहि हुव देखइ पाण्डुँ दिरिस गोसाईँ केर ॥ २० ॥

एक नयन कवि सुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेइ कवि सुनी ॥

चौद जइस जग बिधि अउतारा । दीन्ह फलंक कीन्ह उँजिआरा ॥

जग रूमा एकइ नयनाँहा । उया खूक जस नखतन्ह माँहा ॥

जउ लहि आँवहि ढाम न होई । तउ लहि सुगंध मसाइ न सोई ॥

165 कीन्ह समुदर पानि जउ खारा । तउ अति भण्ड अमूम अपारा ॥

जउ सुमेरु विरगल बिनासा । मा कंचन गिरि लागु अकासा ॥

जउ लहि घरी फलंक न परा । कौंचु होइ नहि कंचन करा ॥

एक नयन जस दरपन अउ तेहि निरमर भाउ ।

भन रुपवंतइ पाउं गाहि छुल जाइहि कइ चाउ ॥ २१ ॥

चारि माँत कवि सुहमद पाए । जोरि मिठाई सरि पहुँचाए ॥

170 पुगुन मलिक पंडित अउ ग्यानी । पहिलइ भेद पात चेइ जानी ॥

पुनि सलार कादिम मनि-माँहा । खौंटइ दान उमइ निति पाँहा ॥

निमो मज्जाने निष अरारु । पीर रोत रन खरग जुमारु ॥

मेरा बडे बड सिद्ध बगाना । कइ अदेम सिद्धन्ह वड माना ॥

चारि-उ चतुरदस-उ गुन पढे । अउ संजोग गोसाईँ गढे ॥  
 विरिख जो आछहि चंदन पासा । चंदन होहि वेधि तेहि वासा ॥ 175

मुहमद चारि-उ मीत मिलि भग्न जो एकइ चित्तु ।

प्रहि जग साथ जो निवहा ओहि जग विछुरहि किंचु ॥ २२ ॥

जाग्रस नगर धरम-असथानू । तहाँ आइ कवि कीन्ह बखानू ॥  
 कइ विनती पंडितन्ह सउँ भजा । दूट सँवारहु मेरवहु सजा ॥  
 हउँ सब कवितन्ह कर पछ-लगा । किछु कहि चला तबल देइ डगा ॥  
 हिअ भँडार नग अहइ जो पूँजी । खोली जीभ तारु कइ कूँजी ॥ 180

रतन पदारथ बोली बोला । सुरस पेम मधु भरी अमोला ॥  
 जेहि कइ बोलि विरह कइ घाया । कहँ तेहि भूख नीँद कहँ छाया ॥  
 फेरइ भेस रहइ भा तपा । धूरि लपेटा मानिक छपा ॥

मुहमद कया जो पेम कइ ना तेहि रक्त न माँसु ।

जेहि मुख देखा तेइ हँसा सुनि तेहि आग्रउ आँसु ॥ २३ ॥

सन नउ सह सइतालिस अहे । कथा अरंभ वयन कवि कहे ॥ 185

सिंघल-दीप पदुमिनी रानी । रतन-सेन चितउर गढ आनी ॥

अलउदीन देहिली सुलतानू । राघउ-चेतन कीन्ह बखानू ॥

सुना साहि गढ छेँका आई । हिंदू तुरुकन्ह भई लराई ॥

आदि अंत जस गाथा अही । लिखि भाखा चउपाई कही ॥

कवि विआस रस कवँला पूरी । दूरि सो निअर निअर सो दूरी ॥ 190

निअरहि दूरि फूल जस काँटा । दूरि जो निअरहि जस गुर चाँटा ॥

भँवर आइ वनखंड सउँ लेइ कवँल रस वास ।

दादुर वास न पावई भलहि जो आछइ पांस ॥ २४ ॥

## अथ सिंघल-दीप-चरनन खंड ॥ २ ॥

सिंघल-दीप कथा अथ गावउँ । अउ सो पदुमिनि वरनि सुनावउँ ॥  
 परनक दरपन भौंति बिसेखा । जो जेहि रूप सो तइसइ देखा ॥  
 धनि सो दीप जहँ दीपक नारी । अउ सो पदुमिनि दइ अउतारी ॥  
 सात दीप परनइ सब लोगू । एक-उ दीप न ओहि सरि जोगू ॥  
 ५ दिया-दीप नहिँ तस जेहिआरा । सरन-दीप सरि होइ न पारा ॥  
 जेइ-दीप कहउँ तस नाहीँ । लंक-दीप नहिँ ओहि परिआहीँ ॥  
 दीप-कुंमसथल आरन परा । दीप-महुसथल मानुस-इरा ॥

सब संसार पिरिधुमीँ आए सात-उ-दीप ।

एक-उ दीप न ऊतिम सिंघल-दीप समीप ॥ २५ ॥

गैपरव-सेन सुगंध नरेयू । सो राजा वह ता कर देख ॥  
 10 लंका सुना जो रामोन राजू । ते-हु चाहि बढ ता कर साजू ॥  
 छन्नन कौंड कटक दर साजा । सबइ छतर-यति अउ गढ-राजा ॥  
 मोरइ महस पाँर पौर-सारा । सावै-करन अउ बाँक तुखारा ॥  
 मान सहस हसती सिंघली । जनु फाविलास इरावति बली ॥  
 अगु-पती क सिर-मउर कहाइ । भव-पती क ओकुस गज नावइ ॥  
 15 नर-पती क अउ कहउँ नहिँ । भू-पती क जग दोसर ईइ ॥  
 अरु पञ्चा राजा जहँ गुंड भय होइ ।  
 सबइ आए मिर नावहीँ सरिबर करइ न कोइ ॥ २६ ॥

जव-हि दीप निअरावा जाई । जनु कविलास निअर भा आई ॥  
 घन अँवराउँ लाग चहुँ पासा । उठे पुहुमि हुति लागु अकासा ॥  
 तरिवर सवइ मलय-गिरि लाई । भइ जग छाँह रइनि होइ छाई ॥  
 मलय समीर सोहाई छाँहा । जेठ जाड लागइ तेहि माँहा ॥ २०  
 ओही छाँह रइनि होइ आवइ । हरिअर सवइ अकास देखावइ ॥  
 पंथिक जउँ पहुँचइ सहि घामू । दुख विसरइ सुख होइ विसरामू ॥  
 जेइ वह पाई छाँह अनूपा । बहुरि न आइ सहहि यह धूपा ॥

अस अँवराउँ सघन घन वरानि न पारउँ अंत ।

फूलइ फरइ छव-उ रितु जानउँ सदा वसंत ॥ २७ ॥

फरे आव अति सघन सोहाए । अउ जस फरे अधिक सिर नाए ॥ २५  
 कटहर डार पीँड सउँ पाके । बडहर सो अनूप अति ताके ॥  
 खिरनी पाकि खाँड असि मीठी । जाउँनि पाकि भवँर असि डीठी ॥  
 नरिअर फरे फरी फरुहुरी । फरी जानु इंदरासन-पुरी ॥  
 पुनि महुआ चुअ अधिक मिठास । मधु जस मीठ पुहुप जस वास ॥  
 अउरु खजहजा आउ न नाऊँ । देखा सव राउन अँवराऊँ ॥ ३०  
 लाग सवइ जस अंत्रित साखा । रहइ लोभाइ सोइ जो चाखा ॥

गुआ सुपारी जाइ-फर सब फर फरे अपूरि ।

आस पास घनि इविँली अउ घन तार खजूरि ॥ २८ ॥

बसहिँ पंखि वोलाहिँ बहु भाखा । करहिँ हुलास देखि कइ साखा ॥  
 भोर होत वासहिँ चुहिचूही । वोलाहिँ पाँडकि एकइ तूही ॥  
 सारउ सुआ जो रहचह करहीँ । कुरहिँ परेवा अउ करवरहीँ ॥ ३५  
 पिउ पिउ लागइ करइ पपीहा । तुहीँ तुहीँ करि गुडरू खीहा ॥  
 कुह कुह करि कोइलि राखा । अउ भँगराज बोल बहु भाखा ॥  
 दही दही कइ महरि पुकारा । हारिल विनवइ आपनि हारा ॥  
 कुहुकहिँ मोर सोहावन लागा । होइ कोराहर बोलहिँ कागा ॥

जावैत पंखि कही सब बइठे मरि अवरौँ ।

40 आपनि आपनि भाखा लोहिँ दर्ई कर नाउँ ॥ २६ ॥

पद्म पद्म कूआँ याउरी । साजे बइठक अउ पाउँरी ॥

अउरु कुंड सब ठाउँहिँ ठाऊँ । सब तीरथ अउ तिन्ह के नाऊँ ॥

मठ मंडफ चहुँ पास सँवारे । तपा जपा सब आसन मारे ॥

कौइ सु-रिखेसुर कौइ सनिआसी । कौइ सु-राम-जति कौइ मसवासी ॥

45 कौइ सु-महेसुर जंगम जती । कौइ प्रक परखइ देखी सती ॥

कौइ ब्रह्मचरज पँथ लागे । कौइ सु-दिगंबर आबहिँ नाँगे ॥

कौइ संत सिद्ध कौइ जोगी । कौइ निरास पँथ बइठ बिओगी ॥

सेवरा सेवरा बान पर सिधि-साधक अउधूत ।

आसन मारे पइठ सब जारहिँ आतम-भूत ॥ ३० ॥

मान-सरोदफ देखे काहा । मरा समुद अस अति अउगाहा ॥

50 पानि मोति अस्ति निरमर दाग्र । अंघ्रित आनि कपूर सु-नाग्र ॥

लंक-दीप कइ सिला अनार्इ । पाँधा सरवर घाट बनार्इ ॥

सैंड सैंड सीढ़ी भईं गरेरी । उतरहिँ चढ़हिँ लोग चहुँ फेरी ॥

शूल फौल रहे हौइ राते । सहस सहस परुरिन्ह कइ छावे ॥

उलपहिँ सीप मोति उतराहीँ । चुगहिँ हंस अउ केलि कराहीँ ॥

55 फनस पंख पररहिँ अति सोने । जानउँ चितर कीन्ह गदि सोने ॥

ऊपर पाल चहुँ दिसा अंघ्रित फर सब रूख ।

देगि रूप सरवर कर गइ पिआस अउ भूख ॥ ३१ ॥

पानि मरइ आवहिँ पनिहारी । रूप सरूप पदुमिनी नारी ॥

पद्म गंध तिन्ह अंग पमाहीँ । मरै लागि तिन्ह संग किराहीँ ॥

संरु-मिषिनी सारंग-नयनी । हंस-गाविनी फोकिल-नयनी ॥

60 आवहिँ कुंड सु पौडिहिँ पाँवी । गवैन सोहाइ सु मौविहिँ माँवी ॥

कनक-कलस सुग-चंद दिपाहीँ । रहसि केलि सउँ आवहिँ जाहीँ ॥

जा सउँ घेइ हेरहिँ चखु नारी । बाँक नयन जनु हनहिँ कटारी ॥  
केस मेघावरि सिर ता पाई । चमकहिँ दसन वीजु कइ नाई ॥

मानउँ मयन मूरती अछरी वरन अनूप ।

जेहि कइ असि पनिहारी सो रानी केहि रूप ॥ ३२ ॥

ताल तलाउ सौ वरनि न जाहीं । स्रझइ वार पार तेहिँ नाहीं ॥ 65

फूले कुमुद केति उँजिआरे । जानउँ उए गगन महँ तारे ॥

उतरहिँ मेघ चढ़हिँ लैइ पानी । चमकहिँ मंछ वीजु कइ वानी ॥

पइरहिँ पंखि सौ संगहि संगी । सेत पीत राते सब रंगा ॥

चकई चकवा केलि कराहीं । निसि क विछोहा दिनहिँ मिलाहीं ॥

कुरलहिँ सारस भरे हुलासा । जिअन हमार मुअहिँ एक पासा ॥ 70

केवा सोन डेँक बग लेदी । रहे अपूरि मीन जल-भेदी ॥

नग अमोल तिन्ह तालहिँ दिनहिँ वराहिँ जस दीप ।

जो मरजीआ होइ तहँ सो पावइ वह सीप ॥ ३३ ॥

पुनि जौ लागु बहु अंत्रित वारी । फरीँ अनूप होइ रखवारी ॥

नउ-रँग नीउँ सुरंग जँभीरी । अउ वदाम बहु भेद अँजीरी ॥

गलगल तुरँज सदा-फर फरे । नारँग अति राते रस भरे ॥ 75

किसिमिसि सेउ फरे नउ पाता । दारिउँ दाख देखि मन राता ॥

लागु सौहाई हरिफा-रेउरी । उनइ रही केला कइ घउरी ॥

फरे तूत कमरख अउ नउँजी । राइ-करउँदा घेरि चिरउँजी ॥

संख-दराउ छोहारा डीठे । अउरु खजहजा खाटे मीठे ॥

पानि देहिँ खँडवानी कुअहिँ खाँड बहु मेलि ।

लागी घरी रहँट कइ सीँचहिँ अंत्रित बेलि ॥ ३४ ॥ 80

पुन फुल-वारि लागु चहुँ पासा । विरिख वेधि चंदन भइ वासा ॥

बहुत फूल फूली घन-बैइली । केवरा चंपा कुंद चवैँइली ॥

सुरँग गुलाल कदम अउ कूजा । सुगँध-वकाउरि गंधरव पूजा ॥



नागेश्वर सतिवरग नेवारी । अउ सिंगार-हार फूलवारी ॥  
 ८३ सोनिजरद फूली सेवती । रूप-मंजरी अउरु मालती ॥  
 जाही जूही बकुचन्द लावा । पुहुप सुदरसन लागु सौदावा ॥  
 मउलसिरी पेदलि अउ करना । सबइ फूल फूले बहु चरना ॥

तेहि सिर फूल चढहिं वेइ जेहि माँथहि मनि भागु ।

आछहिं सदा गुग्गुंभ भइ जनु वसेत अउ फागु ॥ ३५ ॥

सिंघल नगर देखु पुनि बसा । घनि राजा असि जा करि दसा ॥  
 ९० ऊँची पवैरी ऊँच अनासा । जनु कबिलास ईंदर कर वासा ॥  
 राउ राँक सब घर घर सुखी । जो दीखइ सो हँसता-मुखी ॥  
 राचि राचि साजे चंदन चउरा । पोते अगार मेद अउ गउरा ॥  
 सब चउपारिन्ह चंदन रँगमा । ओठेंधि सभा-पति पढे सग्मा ॥  
 जनउ समा देखौतन्हि कइ जूरी । परइ दिसिटि ईंदरासन पूरी ॥  
 ९३ सबइ गुनी पंडित अउ ग्याता । संसकिरित सब के मुख वाता ॥

आहक पंथ सँवारई जनु सिउ-सोक अनूप ।

पर पर नारी पद्मिनी मोइहिं दरसन रूप ॥ ३६ ॥

पुनि देखी सिंघल कइ हाटा । नउ-उ निद्रि लखिमी सब पाटा ॥  
 फनक हाट सब कुँइहि लीपी । चढ महांजन सिंघल-दीपी ॥  
 रचाइ हउडा रूपहि दारी । चितर कटाउ अनेक सँवारी ॥  
 १०० सोन रूप मल भण्ड पसारा । धवर सिरी पोतहिं घर-बारा ॥  
 रतन पदारथ मानिक मोती । हीरा पवैरि सो अनवन जोती ॥  
 अउ कपूर बेना कमनूरी । चंदन अगार रहा मरि पूरी ॥  
 जेइ न हाट ग्रहि लीन्ह बेमादा । ता कहँ आन हाट कित लादा ॥

कोई करइ बेसाइना फाह केर बिकाइ ।

कोई चउइ साम सउं कोई मूर गवाँइ ॥ ३७ ॥

१०३ पुनि सिंगार हाट घनि देसा । पइ सिंगार चहँ पइठी बेसा ॥

मुख तँवोल तन चीर कुसुंभी । कानन्ह कनक जराऊ खुंभी ॥  
 हाथ वीन सुनि मिरिग भुलाहीँ । सुर मोहहिँ सुनि पइग न जाहीँ ॥  
 भउँहँ धनुख तिन्ह नयन अहेरी । मारहिँ वान सानि सउँ फेरी ॥  
 अलक कपोल डोलु हँसि देहीँ । लाइ कटाछ मारि जिउ लेहीँ ॥  
 कुच कंचुकि जानउँ जुग सारी । अंचल देहिँ सुभाव-हि ढारी ॥ 110  
 केत खेलार हारि तिन्ह पासा । हाथ झारि होइ चलहिँ निरासा ॥  
 चेटक लाइ हरहिँ मन जउ लाहि गँठि होइ फेँटि ।

साँठि-नाँठि उठि भए बटाऊ ना पहिचानि न भेँटि ॥ ३८ ॥  
 लैइ लैइ फूल बइठि फुलवारी । पान अपूरव धरे सँवारी ॥  
 सोँधा सवइ बइठु लैइ गाँधी । बहुल कपूर खिरउरी वाँधी ॥  
 कतहुँ पंडित पढहिँ पुरानू । धरम पंथ कर करहिँ बखानू ॥ 115  
 कतहुँ कथा कहइ किछु कोई । कतहुँ नाँच कोड भल होई ॥  
 कतहुँ छरहटा पेखन लावा । कतहुँ पखंडी काठ नचावा ॥  
 कतहुँ नाद सवद होइ भला । कतहुँ नाटक चेटक कला ॥  
 कतहुँ काहु ठग विदिआ लाई । कतहुँ लेहिँ मानुस बउराई ॥  
 चरपट चोर गँठि-छोरा मिले रहहिँ तेहि नाँच ।

जो तेहि हाट सजग रहइ गँठि ता करि पइ वाँच ॥ ३९ ॥ 120  
 पुनि आए सिंघल-गढ पासा । का वरनउँ जनु लागु अकासा ॥  
 तरहि कुरुम वासुकि कइ पीठी । ऊपर ईंदर-लोक पर डीठी ॥  
 परा खोह चहुँ दिसि अस वाँका । काँपइ जाँव जाइ नहिँ भाँका ॥  
 अगम असुभ देखि डर खाई । परइ सौ सपत पतारहि जाई ॥  
 नउ पउरी वाँकी नउ खंडा । नउ-उ जो चढइ जाइ ब्रह्मंडा ॥ 125  
 कंचन कोट जरे कउ सीसा । नखतन्ह भरी बीजु जनु दीसा ॥  
 लंका चाहि ऊँच गढ ताका । निरखि न जाइ दिसिटि मन थाका ॥  
 हिअ न समाइ दिसिटि नहिँ जानउँ ठाढ सुमेरु ।  
 कहँ लागि कहउँ उँचाई कहँ लागि वरनउँ फेरु ॥ ४० ॥

- निति गढ़ बाँचि चलइ ससि सारा । नाहिँ त होइ पाजि रथ चूरा ॥  
 १३० पउरी नउ-उ बजर कइ साजी । सहस सहस तहँ बइठे पाजी ॥  
 फिरहिँ पाँच कौटवार सौ भवैरी । काँपइ पाउँ चँपत बेइ पँउरी ॥  
 पउरिहि पउरि सिंह गदि काटे । डरपहिँ राइ देखि तिन्ह ठाटे ॥  
 यहु विधान बेइ नाहर गटे । जनु गाजहिँ चाहहिँ सिर चटे ॥  
 टारहिँ पँथि पसारहिँ जीहा । कुंजर डरहिँ कि गुंजरि लीहा ॥  
 १३१ कनक-सिला गदि सीढ़ी लार्इ । जगमगाहिँ गढ़ ऊपर तार्इ ॥  
 नउ-उ खंड नउ पउरी अउ तेहि बजर केवार ।

चारि बसेरे सउँ चढइ सत सउँ चढइ जो पार ॥ ४१ ॥

- नयउँ पउरि पर दसउँ दुआरा । तेहि पर बाजु राज-घरिआरा ॥  
 घरी सौ बइठि गनइ घरिआरी । पहर पहर सो आपनि घारी ॥  
 जगहिँ घरी पूजइ यह मारा । घरी घरी घरिआर पुकारा ॥  
 १४० परा जौ डोंड जगत सब डोंडा । का निचिंत माँटी के भाँडा ॥  
 तुम्ह तेहि चाक चढे होइ काँचे । आग्रउ फिरइ न थिर होइ पाँचे ॥  
 घरी जौ भरइ घटइ तुम्ह आऊ । का निचिंत सोअहु रे पटाऊ ॥  
 पहरहि पहर गजर निति होई । दिआ निसोगा जागु न सोई ॥  
 मुहमद जीअन जल मरन रहँट घरी कइ रीति ।

घरी जौ आइ जीअन भरी दरी जनम गा चीति ॥ ४२ ॥

- १४१ गढ़ पर नीर खीर दुइ नदी । पानि भरहिँ जइसे दुरुपदी ।  
 अउरु इंड प्ररु मोठी चूरु । पानी अंत्रित कीचु कपूरु ॥  
 ओहि क पानि राजा यह पीया । चिरिप होइ नहिँ जउ लहि जीआ ॥  
 फंगन चिरिप एक तेहि पासा । जग कलप-तरु ईंदर कविलासा ॥  
 मून पगार सगल ओहि साया । अमर बेलि को पाउ को चाखा ॥  
 १४२ पाँद पात अउ फूल सराई । होइ डेविआर नगर जहँ तार्इ ॥  
 यह कर पारइ रावि फइ कोई । चिरिप खाइ नउ जोअन होई ॥

राजा भए भिखारी सुनि ओहि अंत्रित भोग ।

जेइ पावा सो अमर भा न किछु विआधि न रोग ॥ ४३ ॥

गढ पर बसहिँ भारि गढ-पती । असु-पति गज-पति भू-नर-पती ॥

सब क धउरहर सोनइ साजा । अउ अपने अपने घर राजा ॥

रूपवंत धनवंत सभागे । परस-पखान पउरि तिन्ह लागे ॥ 155

भोग विरास सदा सब माना । दुख चिंता कोइ जनम न जाना ॥

मँदिर मँदिर सब के चउपारी । बइठि कुअँर सब खेलाहिँ सारी ॥

पासा ढरइ खेलि भलि होई । खरग दान सरि पूज न कोई ॥

भाँट वरनि कहि कीरति भली । पावहिँ घोर हसति सिंघली ॥

मँदिर मँदिर फुलवारी चोआ चंदन वास ।

निसि दिन रहइ वसंत तहँ छवौ रितु बरहो मास ॥ ४४ ॥ 160

पुनि चलि देखा राज-दुआरु । महि घूविँ अ पाइअ नहिँ वारु ॥

हसति सिंघली बाँधे वारा । जनु सजीउ सब ठाढ पहारा ॥

कवन-उ सेत पीत रतनारे । कवन-उ हरे धूम अउ कारे ॥

वरनहिँ वरन गगन जनु मेघा । अउ तेहि गगन पीठि जस ठेँ घा ॥

सिंघल के वरनउँ सिंघली । एक एक चाहि एक एक बली ॥ 165

गिरि पहार वेइ पइगहि पेलहिँ । विरिख उचारि फारि मुख भेलहिँ ॥

माँते निमते गरजहिँ बाँधे । निसि दिन रहहिँ महाउत काँधे ॥

धरनी भार न अँगवई पाउँ धरत उठ हालि ।

कुरुम टूट फन फाटई तिन्ह हसतिन्ह के चालि ॥ ४५ ॥

पुनि बाँधे रजवार तुरंगा । का वरनउँ जस उन्ह के रंगा ॥

लीले समुंद चाल जग जाने । हाँसल भवँर किआह बखाने ॥ 170

हरे कुरंग महुअ बहु माँती । गरर कोकाह बुलाह सो पाँती ॥

तीख तुखार चाँडि अउ बाँके । तरपहिँ तबहिँ नाँचि विनु हाँके ॥

मन तहँ अगुमन डोलहिँ चागा । देत उसाँस गगन सिर लाग्ना ॥

- पावहिँ साँस समुँद पर धावहिँ । घूड न पाउँ पार होइ आवहिँ ॥  
 १७५ धिर न रहहिँ रिस लोहि चवाहीँ । भोजहिँ पूँछि सीस उपराहीँ ॥  
 अस तुहार सब देखे जनु मन के रथ-बाह ।  
 नयन पलक पहुँचावहीँ जहँ पहुँचइ कोइ चाह ॥ ४६ ॥  
 राज-सभा पुनि देख बईठी । ईदर-सभा जनु परि गइ डीठी ॥  
 धनि राजा असि सभा सँवारी । जानउँ फूलि रही फुलवारी ॥  
 मुरट पाँधि सब बढे राजा । दर निसान सब जिन्ह के बाजा ॥  
 १८० रूपवंत मनि दिपइ लिलाटा । माँथइ छात बढठ सब पाटा ॥  
 मॉनउँ कवँल सरो-वर फूले । सभा क रूप देखि मन भूले ॥  
 पान कपूर मेद कसतूरी । सुगँध बास सब रही अपूरी ॥  
 मॉम्ह ऊँच ईदरासन साजा । गंधरब-सेन बढठ तहँ राजा ॥  
 धर गगन लग ता कर सर तबइ जस आपु ।  
 सभा कवँल अस विगतइ माँथइ बढ परतापु ॥ ४७ ॥  
 १८५ साजा राज-मंदिर कबिलापु । सोनइ कर सब पुहुमि अकापु ॥  
 सात रंड घउराहर साजा । उहइ सँवारि सकइ अस राजा ॥  
 हीरा ईँटि कपूर गिलावा । अउ नग लाइ सरग लेंइ लावा ॥  
 जानैत सबइ उरेह उरेह । भौंति भौंति नग लाग उबेह ॥  
 भा कटाउ सब अनवन भौंती । चितर होत गा पाँतिन्ह पाँती ॥  
 १९० लाग राम मनि मानिक जरे । जनु दीआ दिन रहनि बरे ॥  
 देखि घउराहर फइ उँजिमारा । छपि गा चाँद मुरुज अउ तारा ॥  
 गुने गाठ परहुँठ जस तस साजे खँड सात ।  
 बीहर बीहर भाउ तस खँड खँड ऊपर जात ॥ ४८ ॥  
 पानउँ राज-मंदिर रनिवापु । अछरिन्ह भरा जानु कबिलापु ॥  
 सोतइ मरम पदुमिनी रानी । एक एक तहँ रूप बखानी ॥  
 १९५ भति मुरुप अउ भति मुकुसौरी । पान फूल के रहहिँ अचारी ॥

तिन्ह ऊपर चंपावति रानी । महा सुरूप पाट परधानी ॥  
 पाट बइठि रह किए सिँगारू । सव रानी ओहि करहिँ जौहारू ॥  
 निति नउ रंग सु-रंग मँ सोई । परथम वयस न सरवरि कोई ॥  
 सकल दीप महँ चुनि चुनि आनी । तिन्ह महँ दीपक वारह वानी ॥

कुँवरि वतीस-उ लखिखनी अस सव माँह अनूप ।

जावँत सिंघल-दीप महँ सवइ बखानहिँ रूप ॥ ४६ ॥ 200

इति सिंघल-दीप-घरनन खंड ॥ २ ॥

---

## अथ जनम खंड ॥ ३ ॥

- चंपावति जो रूप सेंवारी । पटुमावति चाहइ अउतारी ॥  
 भइ चाहइ अति कया सलोनी । मेटि न जाइ लिखी जसि होनी ॥  
 सिंपल-दीप मछउ तव नाऊँ । जो अस दिआ बरा ठेहि ठाऊँ ॥  
 प्रथम सो जोति गगन निरमई । पुनि सो पिता माँथइ मनि भई ॥  
 ५ पुनि वह जोति मातु घट आई । ठेहि ओदर आदर बहु पाई ॥  
 जस अउधानु पूर मा ताय । दिन दिन हिअइ होइ परगाय ॥  
 जस अंचल भीनइ महँ दीआ । तस उँनिआर देखावइ हीआ ॥  
 सोनइ मेदिर सेंवारही अउ चंदन सब लीप ।  
 दिआ जो मनि सिउलोक महँ उपना सिंपल-दीप ॥ ५० ॥
- मछ दस मास पूरि भइ घरी । पटुमावति कनिआ अउतरी ॥  
 १० जानउँ मुरुज किरिनि हुत फाटी । छरज करा पाटि वह बाटी ॥  
 मा निसि महँ दिन कर परगाय । सब उँनिआर मछउ कबिलाय ॥  
 इत रूप भूति परगटी । पुनिउँ ससि सो खीन होइ घटी ॥  
 घटनहि घटन अनारस भई । दुइ दिन लाज गाढे छुई गई ॥  
 पुनि जो उठी दूरज होइ नई । निरकलंक ससि बिधि निरमई ॥  
 १५ पटुम-गंध बेपा जग बाया । मरै पतंग मए चहुँ पासा ॥  
 इत रूप भइ कनिआ जेहि सरि पूज न फोइ ।  
 पनि सो देम स्पर्शता जहो जनम भय होइ ॥ ५१ ॥

भइ छठि राति छठी सुख मानी । रहसि कूद सउँ रइनि विहानी ॥  
 भा बिहान पंडित सब आए । काहि पुरान जनम अरथाए ॥  
 ऊतिम घरी जनम भा तास । चाँद उआ भुईँ दिपा अकास ॥  
 कनिआ रासि उदय जग किआ । पदुमावती नाउँ भा दिआ ॥ २०  
 सर परस सउँ भण्ड गुरीरा । किरिनि जामि उपना नग हीरा ॥  
 तेहि तई अधिक पदारथ करा । रतन जोग उपना निरमरा ॥  
 सिंघल-दीप भण्ड अउतारा । जंबू-दीप जाइ जमुआरा ॥

रामा आठ अजूधिआ लखन वतीस-उ संग ।

रावन रूप सौँ भूलेहि दीपक जइस पतंग ॥ २२ ॥

अही जनम-पतरी सो लिखी । देइ असीस बहुरे जोतिखी ॥ २५  
 पाँच वरिस महुँ भई सौ वारी । दीन्ह पुरान पढइ वइसारी ॥  
 भइ पदुमावति पंडित गुनी । चहुँ खंड के राजन्ह सुनी ॥  
 सिंघल-दीप राज घर वारी । महा सुरूप दई अउतारी ॥  
 एक पदुमिनि अउ पंडित पढी । दहुँ कैइ जोग दई असि गढी ॥  
 जा कहँ लिखी लच्छि घर होनी । सो असि पाउ पढी अउ लोनी ॥ ३०  
 सपत दीप के वर जो ओनाही । उत्तर न पावहिँ फिरि फिरि जाही ॥

राजा कहइ गरव सउँ हउँ रे ईंदर सिउ-लोक ।

को सरि मो सउँ पावई का सउँ करउँ बरोक ॥ २३ ॥

बारह वरिस माँह भइ रानी । राजइ सुना सँजोग सयानी ॥  
 सात खंड धउराहर तास । सो पदुमिनि कहँ दीन्ह निवास ॥  
 अउ दीन्ही संग सखी सहेली । जो संग करहिँ रहसि रस केली ॥ ३५  
 सबइ नउलि पिअ संग न सोई । कवल पास जनु विगसी कोई ॥  
 सुआ एक पदुमावति ठाऊँ । महा-पंडित हीरामनि नाऊँ ॥  
 दई दीन्ह पँखिहि असि जोती । नयन रतन मुख मानिक मोती ॥  
 कंचन वरन सुआ अति लोना । मानउँ मिला सौहागहि सोना ॥



रहहिँ एक सँग दुअऊ पढहिँ सासतर बेद ।

- 40 भरम्हा सीस डौलावई सुनत लाग तस बेद ॥ ५४ ॥  
 भइ उनंत पदुमावति बारी । धुज धवरी सघ करी सँवारी ॥  
 जग बेधा तेहि अंग सौ बासा । भवँर आइ लुबुधे चहुँ पासा ॥  
 बेनी नाग मलय-गिरि पइठी । ससि माँथहिँ होइ दूइज बइठी ॥  
 मउहई धनुख साधि सर फेरी । नयन कुरंगि भूलि जनु हेरी ॥  
 45 नासिक फीर कवँल मुख सोहा । पदुमिनि रूप देखि जग मोहा ॥  
 मानिक अघर दसन जनु हीरा । हिअ हुलसइ कुच कनक जँमीरा ॥  
 केहरि संक गवँन गज हारे । सुर नर देखि माँथ भुईँ धारे ॥  
 जग कोइ दिसिटि न आवई अछरी नयन अकास ।

जोगि जती सनियासी तपसाधहिँ तेहि आस ॥ ५५ ॥

- एक दिवस पदुमावति रानी । हीरामनि तई कहा सयानी ॥  
 50 सुनु हीरामनि कहउँ शुभाई । दिन दिन मदन सतावई आई ॥  
 पिता हमार न चालइ पाता । आसहिँ बोलि सकइ नहिँ माता ॥  
 देस देस के घर मोहि आवहिँ । पिता हमार न आँखि लगावहिँ ॥  
 जौवन मोर भण्ड जस गंगा । देह देह हम लागु अनंगा ॥  
 हीरामनि तब कहा शुभाई । विधि कर लिखा भेटि नहिँ जाई ॥  
 55 अगिआ देउ देखउँ फिरि देसा । तौहि लायक घर मिलइ नरेसा ॥  
 जउ सगि मई फिरि आऊँ मन चित धरहु निचारि ।  
 सुनत रहा कोइ दुरजन राजहिँ कहा विचारि ॥ ५६ ॥  
 राजइ सुना दिसिटि भइ आना । शुधि जौ देह सँग सुआ सयाना ॥  
 भण्ड रजाण्यु मारहु धया । घर सुनाउ चाँद जहँ ऊआ ॥  
 सतुर शुभा के नाऊ बारी । सुनि घाए जस घाउ मँजारी ॥  
 60 तब सगि रानी शुभा धारा । जव सगि आउ मँजारी न पावा ॥  
 रिता कि भाण्यु माँयइ मोरे । फरहु जाइ निनवई कर जोरे ॥

पंखि न कोई होइ सुजानू । जानइ भुगुति कि जानु उडानू ॥  
 सुआ जो पढइ पढाए वयना । तेहि कित बुधि जेहि हिअइ न नयना ॥  
 मानिक मोती देखि वह हिष्ट न गिआन करेइ ।

दारिउँ दाख जानि कइ तब-हिँ ठोर भरि लेइ ॥ ५७ ॥

बै तो फिरे उतर अस पावा । बिनवाँ सुअइ हिअइ डरु खावा ॥ 65  
 रानी तुम्ह जुग जुग सुख आऊँ । हउँ अब बनोवास कहँ जाऊँ ॥  
 मोतिहि जो मलीन होइ करा । पुनि सो पानि कहाँ निरमरा ॥  
 ठाकुर अंत चहइ जेहि मारा । तेहि सेवक कहँ कहाँ उवारा ॥  
 जेहि घर काल मँजारी नाँचा । पंखी नाउँ जीउ नहिँ बाँचा ॥  
 मई तुम्ह राज बहुत सुख देखा । जउँ पूँछहु देइ जाइ न लेखा ॥ 70  
 जो हीँछा मन कीन्ह सो जेँवा । यह पछिताउ चलउँ विनु सेवा ॥

मारइ सोई निसोगा डरइ न अपने दोस ।

केला केलि करइ का जो भा बेरि परोस ॥ ५८ ॥

रानी उतर दीन्ह कइ मया । जउँ जिउ जाइ रहइ किमि क्या ॥  
 हीरामनि तू परान परेवा । धोख न लागु करत तोहि सेवा ॥  
 तोहि सेवा बिछुरन नहिँ आखउँ । पीँजर हिअइ घालि कइ राखउँ ॥ 75  
 हउँ मानुस तू पंखि पिआरा । धरम पिरीति तहाँ को मारा ॥  
 का पिरीति तन माँह बिलाई । सो पिरीति जिउ साथ जो जाई ॥  
 पिरिति भार लेइ हिअइ न सोचू । ओहि पंथ भल होइ कि पोचू ॥  
 पिरिति पहार भार जो काँधा । तेहि कित छूट लाइ जिउ बाँधा ॥  
 सुआ न रहइ खुरुकि जिउइ अब-हिँ काल सो आउ ।

सतुर अहइ जो करिया कब-हुँ सो बोरइ नाउ ॥ ५९ ॥

80

रहहिँ एक सँग दुअऊ पदहिँ सासतर बेद ।

40 बरम्हा सीस डोलावई सुनत लाग तस बेद ॥ ५४ ॥

मइ उनंत पदुमावति चारी । धुज धवरी सब करी सँवारी ॥

जग बेधा तेहि अंग सौ बासा । मवँर आई लुबुधे चहुँ पासा ॥

बेनी नाग मलय-गिरि पइठी । ससि माँथहि होइ दूज बइठी ॥

मउँहई घनुख साधि सर फेरी । नयन कुरंगि भूलि जनु हेरी ॥

45 नासिक कीर कवँल मुख सोहा । पदुमिनि रूप देखि जग मोहा

मानिक अघर दसन जनु हीरा । दिअ हुलसइ कुच कनक जँभीरा

फेहरि लंक गवँन गज हारे । सुर नर देखि माँथ भुईँ धारे

जग फौद दिसिटि न आवई अछरी नयन अकास ।

जोगि जती सनिआसी तपसाधहिँ तेहिआस ॥ ५५ ॥

एक दिवस पदुमावति रानी । हीरामनि तई कहा सयानी

50 सुनु हीरामनि कहउँ शुभाई । दिन दिन मदन सतावइ आई

पिता हमार न चालइ पाता । आसहिँ सोलि सकइ नहिँ माता ॥

देस देस के घर मोहि आवहिँ । पिता हमार न आँखि लगावहिँ ॥

जोवन मोर मप्रउ जस गंगा । देह देह हम लागु अनंगा ॥

हीरामनि तब कहा शुभाई । बिधि कर लिखा मेटि नहिँ जाई ॥

55 अगिआ देउ देउउँ फिरि देसा । तौहिँ लापक घर मिलइ नरेसा ॥

जउँ लगि मई फिरि आऊँ मन चित घरहु निवारि ।

सुनत रहा फौद दुरजन राजहि कहा बिचारि ॥ ५६ ॥

राजइ सुना दिनिटि मइ आना । शुधि जौ देइ सँग मुआ सयाना ॥

मप्रउ रजाप्रु मारहु यमा । घर सुनाउ चाँद जहँ ऊआ ॥

सगुर सुमा के नाऊ चारी । सुनि धाए जस घाउ मँजारी ॥

60 तब लगि रानी सुमा दसावा । जस लगि आउ मँजारि न पावा ॥

निश दि आप्रु माँपइ मोरे । फइहु जाइ बिनवई कर जौरे ॥

मिलहिँ रहसि सब चढहिँ हिँडोरी । भूलि लेहिँ सुख बारी भोरी ॥  
 भूलि लेहु नइहर जब ताई । फिरि नहिँ भूलन दीही साई ॥  
 पुनि सासुर लैइ राखिहि तहाँ । नइहर चाह न पाउवि जहाँ ॥  
 कित यह धूप कहाँ यह छाहाँ । रहवि सखी विनु मंदिर माहाँ ॥ 20  
 गुनि पूछिहि अउ लाइहि दोख । कउनु उतर पाउवि कित मोख ॥  
 सासु ननद कित भउँहँ सकोरे । रहवि सँकोचि दुअउ कर जोरे ॥  
 कित यह रहसि जो आउवि करना । ससुरइ अंत जनम दुख भरना ॥

कित नइहर पुनि आउवि कित सासुर यह खेलि ।

आपु आपु कहँ होइहि परवि पंखि जस डेलि ॥ ६२ ॥

सरवर तीर पदुमिनी आई । खोपा छोरि केस मुख लाई ॥ 25  
 ससि मुख अंग मलय-गिरि रानी । नागिनि भाँपि लीन्ह अरघानी ॥  
 ओनए मेघ परी जग छाहाँ । ससि कइ सरन लीन्ह जनु राहाँ ॥  
 छपि गइ दिन-हिँ भानु कइ दसा । लैइ निसि नखत चाँद परगसा ॥  
 भूलि चकोर दिसिटि तहँ लावा । मेघ घटा मँहँ चंद देखावा ॥  
 दसन दाविँनी कोकिल भाखी । भउँहँ धनुख गगन लैइ राखी ॥ 30  
 नयन खँजन दुइ केलि करेही । कुच नारंग मधुकर रस लेही ॥

सरवर रूप विमोहा हिअइ हिलोर करेइ ।

पाउँ छुअइ मकु पावउँ ग्रहि मिस लहरइ देइ ॥ ६३ ॥

धरी तीर सब कंचुकि सारी । सरवर मँहँ पइठीँ सब बारी ॥  
 पाइ नीर जानउँ सब बेली । हुलसहिँ करहिँ काम कइ केली ॥  
 करिल केस विसहर विस भरे । लहरइ लेहिँ कवँल मुख धरे ॥ 35  
 उठी कोँपि जस दारिउँ दाखा । भई उन्नत पेम कइ साखा ॥  
 नवल बसंत सँवारइ करी । होइ परगट जानउँ रस भरी ॥  
 सरवर नहिँ समाइ संसारा । चाँद नहाइ पइठि लैइ तारा ॥  
 धनि सो नीर ससि तरई ऊई । अब कित दिसिटि कवँल अउ कूई ॥